श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

परिकरमा

॥ श्री किताब इलाही-दुलहिन अर्स अजीम की ॥

श्री स्यामा महारानी के परमधाम का वर्णन

इस्क का प्रकरण

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद॥ १ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं इश्क की बात कहती हूं। इश्क श्री राजजी महाराज का साक्षात् स्वरूप है जो शब्दातीत है। यदि किसी तरह से इसकी समझ आ जाए या शब्दों (कहनी) में आ जाए, तो वह चौदह तबकों को रद्द कर देगा (छोड़ देगा)।

ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।
ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनन्द अतिरंग॥ २ ॥

श्री राजजी और इश्क एक ही स्वरूप हैं, अर्थात् पारब्रह्म का स्वरूप ही इश्क का स्वरूप है। दोनों अखण्ड परमधाम का स्वरूप हैं और वहीं रहते हैं। इसी प्रकार पारब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि सदा से एक ही अंग हैं और सदा आनन्द की लीला करते हैं।

एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक।
अब कथनी कथूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक॥ ३ ॥

अपनी-अपनी अक्ल के अनुसार इस संसार में कईयों ने इश्क के प्रति अपनी व्यर्थ गाथा गाई। अब मैं इश्क की हकीकत बताती हूं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

वोए वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन॥ ४ ॥

अफसोस इस बात का है कि इतने दिन तक संसार में इश्क था ही नहीं। कईयों ने गुण, निर्गुण, आकार, निराकार में खोजा। उस तन को धिक्कार है जिसमें इश्क न हो।

इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन।
इस्क धनिएं बताया, इस्क बिना पिउ न पाया॥ ५ ॥

स्वप्न की सृष्टि में तो इश्क होता ही नहीं। चौदह लोकों में खोज लिया पर कहीं नहीं मिला। अन्त में स्वयं पारब्रह्म ने ही आकर इश्क की पहचान कराई और कहा कि इश्क के बिना धनी नहीं मिल सकते।

Nijanand App

इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रह्मांड।
और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना।। ६ ।।

परमधाम में इश्क सदा अखण्ड है। इस दुनियां में (सारे ब्रह्माण्ड में) इश्क नहीं है। इश्क का कोई नमूना ही नहीं है, क्योंकि इश्क दूसरा पैदा हो ही नहीं सकता और जो है वह पुराना नहीं होता।

इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी।
इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी।। ७ ।।

इश्क ही हम ब्रह्मसृष्टियों की पहचान है। बिना इश्क के दूल्हा स्वीकार नहीं करते (धनी मिल नहीं सकते) इश्क के न होने के कारण ही मैं अपने धनी से अलग हुई हूं। बिना इश्क अपने धनी को पहचान नहीं सकी।

वृथा गए एते दिन, जो गए इस्क बिन।
मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन।। ८ ।।

मेरा इतना जीवन जो व्यर्थ गया, केवल इश्क न होने के कारण धनी की पहचान न कर सकी। मैं मूल-मिलावा में धनी के चरणों में बैठी थी। इश्क न होने के कारण मैं उनकी शरण में नहीं रह सकी।

क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन।
अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन।। ९ ।।

बिना इश्क के मैं अब तक जिन्दा कैसे रही? मर क्यों नहीं गई? मेरे अंगों में आग क्यों नहीं लग गई? जो मुझे परमधाम याद नहीं आया।

इस्क जाने सृष्ट ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम।
जब इस्क रह्या भराए, तब धाम हिरदे चढ़ आए।। १० ।।

इश्क की पहचान ब्रह्मसृष्टियों को है। इनके अन्दर किसी प्रकार का भ्रम (संशय) रहता ही नहीं। जब वह इश्क में गर्क हो जाती हैं, तो परमधाम और श्री राजजी महाराज उनके हृदय में दिखाई देने लगते हैं।

इस्क तो कह्या सब्दातीत, जो पिउजी की इस्क सों प्रीत।
देखी इस्क की ऐसी रीत, बिना इस्क नाहीं प्रतीत।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क से प्रीति के कारण ही इश्क शब्दातीत है। इश्क का ऐसा ही तरीका है। बिना इश्क के विश्वास आता ही नहीं।

इस्क नेहेचे मिलावे पिउ, बिना इस्क न रहे याको जिउ।
ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान।। १२ ।।

इश्क निश्चित ही धनी से मिला देता है। बिना इश्क के ब्रह्मसृष्टि जिन्दा ही नहीं रह सकती। वह इश्क में गर्क होती है। यही उनकी पहचान है।

इस्क याही धनिएं बताया, इस्क याही सृष्टें गाया।
इस्क याहीमें समाया, इस्क याही सृष्टें चित ल्याया।। १३ ।।

श्री राजजी ने इश्क इन्हीं के लिए बताया है और ब्रह्मसृष्टियों ने ही इश्क करके दिखाया है, अर्थात् इन्होंने ही महिमा गाई है। श्री राजजी का इश्क इन्हीं के अन्दर समाया है और ब्रह्मसृष्टियों का चित्त सदा धनी के इश्क में ही रहता है।

Nijanand App

इस्क पिया को बतावे विलास, इस्क ले चले पिउ के पास।
इस्क मिने दरसन, इस्क होए न बिना सोहागिन।। १४ ।।

इश्क पिया के विलास की पहचान कराता है और इश्क ही धनी के पास पहुंचाता है। इश्क से धनी के दर्शन होते हैं और इश्क सुहागिनियों के अलावा दूसरों को होता ही नहीं है।

इस्क ब्रह्मसृष्टी जाने, ब्रह्मसृष्ट एही बात माने।
खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान।। १५ ।।

इश्क को ब्रह्मसृष्टियां जानती हैं। ब्रह्मसृष्टियां इश्क के अनुसार चलती हैं। इनका खाना-पीना इश्क ही है।

पिया इस्क रस, ब्रह्मसृष्ट को अरस परस।
काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ।। १६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां सदा पिया के इश्क में गर्क रहती हैं और श्री राजजी ब्रह्मसृष्टियों के इश्क में गर्क रहते हैं। इनके बिना कोई इश्क का बोझ उठा ही नहीं सकता (कोई और इश्क कर ही नहीं सकता), इसलिए इश्क कहीं और खोजने की जरूरत नहीं है।

बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे।। १७ ।।

इश्क की बहुत बड़ी बात है पर जो पा लेता है वही सुहागिनी है। ब्रह्मसृष्टि के बिना इश्क किसी को मिलता ही नहीं, क्योंकि पारब्रह्म से सम्बन्ध हुए बिना इश्क आता ही नहीं है।

धनीजी को इस्क भावे, बिना इस्क न कछू सोहावे।
यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क बिन।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज को इश्क ही अच्छा लगता है और उन्हें और कुछ सुहाता ही नहीं है, इसलिए मैंने धनी को बिना इश्क प्राप्त कर लिया है, ऐसा कोई मत कहना।

इस्क बसे पिया के अंग, इस्क रहे पिउ के संग।
प्रेम बसत पिया के चित, इस्क अखंड हमेसा नित।। १९ ।।

इश्क श्री राजजी महाराज के ही अंग में सदा रहता है। श्री राजजी महाराज के चित्त में सदा ब्रह्मसृष्टियों के प्रति प्रेम रहता है। इस कारण से इश्क परमधाम में सदा अखण्ड है।

इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार।
इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना।। २० ।।

इश्क ही क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत (अखण्ड घर) की पहचान करवाकर वहां पहुंचाता है। इश्क कभी नया या पुराना नहीं होता और न किसी नए व्यक्ति को मिलता ही है।

इस्क साहेब सों नहीं अंतर, जो अरस-परस भीतर।
ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन।। २१ ।।

इश्क आ जाने से हमारे और धाम धनी में कोई अन्तर नहीं रहता। इश्क ब्रह्मसृष्टियों को सरलता, सुगमता से प्राप्त होता है, क्योंकि यह इसी घर की रहने वाली हैं।

Nijanand App

ए औरों नाहीं दृष्ट, औरों छूटे न मोह अहं भ्रष्ट।
याको जाने ब्रह्मसृष्ट, जाको एही है इष्ट।। २२ ।।

दूसरे लोगों की यहां नजर नहीं जाती, क्योंकि उनसे झूठा मोह-अहंकार नहीं छूटता। इश्क ब्रह्मसृष्टि ही जानती है, क्योंकि इश्क ब्रह्मसृष्टि का इष्ट है।

इस्क की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन।
सो भी सुख नेहेचल, इस्क दृष्टें न रहे जरा मैल।। २३ ।।

इश्क से बहुत बड़ी बात की पहचान हो जाती है। इश्क से ही चौदह लोकों के जीवों को बहिश्तों का अखण्ड सुख मिलेगा। इश्क की नजर में संसार की चाहना नहीं रह जाती और न ही कोई विकार रह जाता है।

इस्क राखे नहीं संसार, इस्क अखंड घर दातार।
इस्क खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार।। २४ ।।

इश्क से संसार छूट जाता है और अखण्ड घर की प्राप्ति होती है। इश्क क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत धाम के दरवाजे खोल देता है।

इस्क घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक।
लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक।। २५ ।।

इश्क की चोट से अंग के टुकड़े-टुकड़े होकर हड्डियों का चूरा बन जाता है। लहू, मांस सब सूख जाता है और चित्त भूलकर भी इधर-उधर नहीं जाता।

इस्क आगूं न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया।
इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया।। २६ ।।

इश्क आने से माया नहीं रहती और यह पिण्ड-ब्रह्माण्ड भी छूट जाता है। इश्क घर की पहचान करा देता है। इश्क से ही श्री राजजी का सुख मिलता है।

कोई नहीं इस्क की जोड़, ना कोई बांधे इस्क सों होड़।
इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने।। २७ ।।

इश्क की कोई जोड़ी (बराबरी) नहीं है, इसलिए इश्क की होड़ कोई मत लगाओ। इश्क की सुध कोई नहीं जानता। सपने की दुनियां इश्क का क्या बखान करेगी?

इस्क आवे धनी का चाह्या, इस्क पिया जी ने सिखाया।
पिया इस्क सरूप बताया, इस्कें पिंड ही को पलटाया।। २८ ।।

इश्क जैसा धनी चाहते हैं, वैसा आता है। इश्क श्री राजजी महाराज ने ही सिखाया है। श्री राजजी महाराज ने हम मोमिनों को इश्क का स्वरूप बतलाया है। इश्क ने संसार की चाहना को उल्टाकर धनी की चाहना में लगाया है।

इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क दृष्टें न पाइए असत।
जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत।। २९ ।।

इश्क की बड़ी भारी शोभा है। इश्क के सामने झूठ नहीं टिक सकता। यदि किसी झूठे तन में भी इश्क आ जाए तो उसे भी इश्क अखण्ड कर देता है।

Nijanand App

इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती।
याको जाने सृष्ट ब्रह्म, जाको इस्कै करम धरम।। ३० ।।

इश्क की शोभा का कहां तक बयान करूं? इतना भी जो कहा है यहां की जबान से कहा है। इश्क को ब्रह्मसृष्टियां ही जानती हैं जिनका कर्म, धर्म सब इश्क है।

इस्क है याको आहार, और इस्कै याको वेहेवार।
इस्क है याकी दृष्ट, ए इस्कै की है सृष्ट।। ३१ ।।

ब्रह्मसृष्टियों का आहार और व्यवहार इश्क ही है। इनकी नजर भी इश्क की है, इसलिए यह इश्क की ही सृष्टि हैं।

ए तो प्रेमैं के हैं पात्र, याके प्रेमैं है दिन रात्र।
याके प्रेमैं के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर।। ३२ ।।

यह ब्रह्मसृष्टियां ही प्रेम के पात्र हैं, इसलिए रात-दिन प्रेम में मग्न रहती हैं। इनके अंकूर प्रेम के हैं और यह पारब्रह्म के नूरी अंग हैं।

याके प्रेमैं के भूखन, याके प्रेमैं के हैं तन।
याके प्रेमैं के वस्तर, ए बसत प्रेम के घर।। ३३ ।।

इनके वस्त्र, आभूषण प्रेम के हैं। इनका तन और घर प्रेम का है।

याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल।। ३४ ।।

इनका सुनना, बोलना, सेवा करना और गाना सब प्रेम का है। इनका ज्ञान भी प्रेम की जड़ है। इनकी रहनी में भी प्रेम की भूल नहीं पड़ती।

याको प्रेमैं सेहेज सुभाव, ए प्रेमैं देखे दाव।
बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए।। ३५ ।।

इनका सहज स्वभाव, हाल-चाल सब प्रेम का ही है। इनके अन्दर प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। इनके सब अंग प्रेम से सुशोभित हैं।

याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेमैं कुसलखेम।
याके प्रेम इन्द्री अंग गुन, बुध प्रकृती नहीं प्रेम बिन।। ३६ ।।

इनकी करनी का तरीका भी प्रेम है और यह प्रेम में ही मगन रहती हैं। इनके गुण, अंग, इन्द्रिय, बुद्धि और प्रकृति सभी प्रेम के हैं।

याको प्रेमैं को विस्तार, याको प्रेमैं को आचार।
याके प्रेमैं के तेज जोत, याके प्रेमैं अंग उद्दोत।। ३७ ।।

इनके अन्दर प्रेम का ही विस्तार है तथा आचार-विचार सब प्रेम के हैं। इनके मुख भी प्रेम के नूर से झलकते हैं अंग-अंग में प्रेम की मस्ती भरी है।

याको प्रेमैं है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग।
याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज।। ३८ ।।

यह प्रेम के ही आनन्द में मग्न हैं। यह आनन्द सदा अखण्ड है। इनका सिनगार प्रेम-स्नेह का है और श्री राजजी के साथ इनकी लीला भी प्रेम की होती है।

Nijanand App

याके प्रेम सेज्या सिनगार, वाको वार न पाइए पार।
प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम।। ३९ ।।

इनकी सेज्या और सिनगार सब प्रेम का है जो बेशुमार है। श्री राजजी महाराज श्री श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि का परमधाम में अरस-परस (परस्पर) प्रेम है।

प्रेम पिया जी के आउध, प्रेम स्यामा जी के अंग सुध।
ब्रह्मसृष्टी की एही विध, ए दूजे काहू ना दिध।। ४० ।।

धनी का अस्त्र प्रेम ही है, प्रेम से ही श्री श्यामाजी को स्वरूप की पहचान होती है। ब्रह्मसृष्टियों के साथ भी श्री राजजी का श्यामाजी की तरह ही प्रेम का तरीका है। यह सुख दूसरे को नहीं मिलता।

प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी।। ४१ ।।

प्रेम की फौज बड़ी शक्तिशाली है। जब यह इश्क के हथियार लेकर चढ़ाई करती है तब किसी के रोके रुकती नहीं है और कोई इसके सामने नहीं टिक सक़ता (कोई ठहर नहीं सकता)।

प्रेम आप पर कोई ना लेखे, बिना धनी काहूं न देखे।
प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग।। ४२ ।।

प्रेम में मेरा-तेरा (द्वैत) नहीं होता। प्रेम धनी के बिना और किसी को नहीं देखता। प्रेम सदा हमको धनी के साथ रखता है और अपने अंग की भी सुध नहीं लेने देता।

और सबन सों चित भंग, एक पिया जी सों रस रंग।
प्रेम पिया जी के अंग भावे, पिया बिना आपको भी उड़ावे।। ४३ ।।

प्रेम एक पिया का ही आनन्द दिलवाता है और दुनियां का साथ छुड़वाता है। प्रेम से हमें पिया प्यारे लगते हैं और पिया के बिना लगता है कि अपने आपको समाप्त कर दो।

जो कोई पिउ के अंग प्यारा, ताको निमख न करे प्रेम न्यारा।
प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे।। ४४ ।।

जिसको धनी प्यारे लगते हैं उसको प्रेम धनी से एक पल भी जुदा नहीं करता। प्रेम जो पिया को अच्छा लगता है वही कराता है और प्रीतम के दिल की चाहना के अनुसार ही करनी कराता है।

प्रेम आतम दृष्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर दृष्ट न जोड़े।
प्रेम पिया के चितसों चित न मोड़े, प्रेम और सबन सों तोड़े।। ४५ ।।

प्रेम की नजर पिया को नहीं छोड़ती और बाहर किसी से नजर नहीं जोड़ती। प्रेम ही पिया से विमुख नहीं होने देता। यह प्रेम ही बाकी सबसे नाता तुड़वा देता है।

पिया के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिया दिल सेवे।
पिया के दिल बिना सब जेहेर, औरों सों होए गयो सब वैर।। ४६ ।।

पिया के दिल में जो चाहना होती है उसी के अनुसार प्रेम चलता है। यह रात-दिन प्रीतम की दिल से सेवा करता है। प्रीतम के बिना सारी दुनियां जहर के समान लगती है तथा उसे दुनियां से दुश्मनी हो जाती है।

Nijanand App

पिया के दिल की सब जाने, पिया जी को दिल पेहेचाने।
अंग पिउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने।। ४७ ।।

प्रेम ही पिया के दिल की सब बातें जानता है और पहचानता है। अपने अंग में पिया के स्वरूप को बसाता है। प्रीतम के बिना सारा संसार अग्नि जैसा लगता है।

प्रेम अंदर ऐसी भई, नींद माहें की उड़ कहूं गई।
गुन अंग इन्द्री पख, पिया प्रेमें हुए सब लख।। ४८ ।।

प्रेम से मन के अन्दर ऐसी भावना जागृत होती है कि सारा अज्ञान का अन्धकार उड़ जाता है। हमारे गुण, अंग, इन्द्रियां और पक्ष प्रीतम को देखकर सब प्रेम के हो गए।

सब देखे पिया दिल सामी, दिल देखे अंतरजामी।
पिउ के दिल की पेहेले आवे, पिया मुख थें केहेने न पावें।। ४९ ।।

सभी ब्रह्मसृष्टियां पिया को देखकर उनके दिल की बातें जान जाती हैं। यह ऐसी अन्तर्यामी हैं कि धनी को मुख से कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इनकी इच्छा को पहले ही जान जाती हैं।

आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक।
प्रेम दिल भर हुई दिल, पिया प्रेमे रहे हिल मिल।। ५० ।।

इस तरह से मोमिनों की आतम श्री राजजी महाराज के साथ एकाकार हो गई और तिल के बराबर भी जुदाई नहीं रही। मोमिनों के दिल पिया के प्रेम से भर गए और एकाकार हो गए।

प्रेम आप न देखे कित, दृष्ट पियाई देखे जित।
निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सर्वत्र।। ५१ ।।

पिया की जहां नजर होती है मोमिन भी वहीं देखते हैं। प्रेम ही मोमिनो को अन्तरात्मा की नजर खोलकर जगा देता है और परमधाम के दर्शन कराता है।

पिया प्रेमें सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान।
प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे।। ५२ ।।

प्रेम से पिया की पहचान होती है और प्रेम से ही परमधाम के पच्चीस पक्ष नजर आते हैं। प्रेम इस तरह सुधार कर देता है कि यहां बैठे-बैठे ही अपने घर पहुंच जाते हैं।

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी।। ५३ ।।

करोड़ों कल्प के लम्बे रास्ते को प्रेम एक पलक के अन्दर पार पहुंचा देता है। जब आत्मा का प्रेम से लगाव होता है तब अन्दर की नजर जागृत हो जाती है।

जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी।
जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग।। ५४ ।।

जब सुहागिनियों को प्रेम मिल जाता है तब भवसागर (माया) की लहरें भाग जाती हैं। जब प्रेम की तरंग उठती है तो धनी का मिलन होता है।

Nijanand App

पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिया सों भिंन।
पिया प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक।।५५ ।।

इतने दिन तक अभी पहचान नहीं थी कि प्रेम पिया से अलग नहीं है। अब पिया और प्रेम एक ही हैं, का ज्ञान मिल गया। अब इसका ज्ञान सभी सुन्दरसाथ को हो जाएगा।

जब चढ़े प्रेम के रस, तब हुए धाम धनी बस।
जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनी सों संग।।५६ ।।

जब प्रेम के रस को पिया, तो धाम धनी मेरे हो गए। जब प्रेम की मस्ती आई, तो धनी का मिलन हुआ।

प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इतहीं अखंड पोहोंचाया।
प्रेम है बड़ो विस्तार, भवजल हुतो जो खार।।५७ ।।

प्रेम जिसकी नजरों में आ गया, वही अखण्ड में पहुंच गया। प्रेम का विस्तार बहुत बड़ा है। उसने खारे भवसागर से पार उतार दिया।

सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस।
प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी।।५८ ।।

प्रेम ने खारे भवसागर को अमृत बना दिया। धनी का अखण्ड सुख मिल गया। प्रेम ने ही जहां कोई नहीं पहुंच सका, वहां पहुंचा दिया। यह खबर सारे वैराट में फैल गई।

प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख।
तब छूट्या सबों से अभख, सब हुए स्याम सनमुख।।५९ ।।

प्रेम ने पारब्रह्म के दर्शन करा दिए और ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आंखें खोल दीं। तब सबकी झूठे संसार की चाहना हटी और श्री राजजी महाराज के दर्शन हुए।

जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनुभव कर लिया।
तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया।।६० ।।

जब सब अंगों में पिया का प्रेम आ जाए तो अपनी परआतम का अनुभव हो जाएगा। तब अपने पिया पर कुर्बान हो गए। पिया जो जीवन के प्रीतम हैं कभी हमसे जुदा नहीं हो सकते।

मूल अंग आया इस्क, दूजा देखे न बिना हक।
जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर।।६१ ।।

जब अपनी परआतम में इश्क आ गया, तब श्री राजजी महाराज के बिना कुछ नजर नहीं आता। जब प्रेम का प्रवाह बढ़ जाता है, पूर्ण प्रेम आ जाता है, तब परमधाम का इश्क पैदा हो जाता है।

जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल।
जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज।।६२ ।।

जब प्रेम झकझोर देता है तब अन्दर की आंखें खुल जाती हैं। जब प्रेम की लहरें समूह में आने लगीं तो परमधाम के दर्शन होने लगे।

Nijanand App

जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल।
तुम यों जिन जानो कोए, बिना सोहागिन प्रेम न होए।। ६३ ।।

जब प्रेम पूरे जोश में आया, तो अपने अंग में परमधाम की शक्ति आ गई। यह मत समझो कि सोहागिनियों के बिना किसी और को प्रेम मिल सकता है।

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार।
प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार।। ६४ ।।

प्रेम से सब दरवाजे खुल जाते हैं। क्षर के पार अक्षर, अक्षर के पार अक्षरातीत धाम तथा धाम धनी की पहचान हो जाती है। इस तरह से प्रेम सब अंगों में सिरदार (प्रमुख) है।

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के कारण ही खेल में पहुंचाया और इश्क के वास्ते ही परमधाम में मूल-मिलावा में बिठाया। अब यहां इस संसार में भी इश्क से ही अन्दर की आंखें खोलकर धनी के साथ मूल-मिलावा में साथ के दर्शन कराएंगे।

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।। ६६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि तुम प्रेम के समान दूसरे किसी को मत समझो। प्रेम की मस्ती में ही बड़ी उमंगों के साथ घर वापस आए और श्री राजजी महाराज ने गले से लगाया।

|| प्रकरण || १ || चौपाई || ६६ ||

श्री धाम को बरनन मंगला चरन

राग श्री धना श्री

ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपना मूल घर परमधाम है और वही अपना जीवन है। उसे ग्रहण करो।

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें रहित।। २ ।।

संसार के सभी धर्मग्रन्थ और वाणी शब्द के अन्दर क्षर तक ही ज्ञान देती है। उन सबमें श्रेष्ठ कलश के समान क्षर के पार बेहद का ज्ञान देने वाली यह वाणी है। इसका भी कलश अखण्ड परमधाम का वर्णन है उस पर भी ध्वजा के समान मूल-मिलावा खिलवत खाना का बयान सबसे अलग है।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन।
आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन।। ३ ।।

वेद और कतेब के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला है।

Nijanand App

जब प्रेम हुआ प्रघल, अंग आया धाम का बल।
तुम यों जिन जानो कोए, बिना सोहागिन प्रेम न होए।। ६३ ।।

जब प्रेम पूरे जोश में आया, तो अपने अंग में परमधाम की शक्ति आ गई। यह मत समझो कि सोहागिनियों के बिना किसी और को प्रेम मिल सकता है।

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार।
प्रेम धाम धनी को विचार, प्रेम सब अंगों सिरदार।। ६४ ।।

प्रेम से सब दरवाजे खुल जाते हैं। क्षर के पार अक्षर, अक्षर के पार अक्षरातीत धाम तथा धाम धनी की पहचान हो जाती है। इस तरह से प्रेम सब अंगों में सिरदार (प्रमुख) है।

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इश्क के कारण ही खेल में पहुंचाया और इश्क के वास्ते ही परमधाम में मूल-मिलावा में बिठाया। अब यहां इस संसार में भी इश्क से ही अन्दर की आंखें खोलकर धनी के साथ मूल-मिलावा में साथ के दर्शन कराएंगे।

कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।। ६६ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि तुम प्रेम के समान दूसरे किसी को मत समझो। प्रेम की मस्ती में ही बड़ी उमंगों के साथ घर वापस आए और श्री राजजी महाराज ने गले से लगाया।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६६ ।।

श्री धाम को बरनन मंगला चरन
राग श्री धना श्री

ब्रह्मसृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टी लीजियो।। १ ।। टेक ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपना मूल घर परमधाम है और वही अपना जीवन है। उसे ग्रहण करो।

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें रहित।। २ ।।

संसार के सभी धर्मग्रन्थ और वाणी शब्द के अन्दर क्षर तक ही ज्ञान देती है। उन सबमें श्रेष्ठ कलश के समान क्षर के पार बेहद का ज्ञान देने वाली यह वाणी है। इसका भी कलश अखण्ड परमधाम का वर्णन है उस पर भी ध्वजा के समान मूल-मिलावा खिलवत खाना का बयान सबसे अलग है।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन।
आदि करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन।। ३ ।।

वेद और कतेब के छिपे रहस्यों को आज दिन तक किसी ने नहीं खोला है।

Nijanand App

सुपन बुध बैकुंठ लो, या निरंजन निराकार।
सो क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार।। ४ ।।

सपने की बुद्धि से बैकुण्ठ तक का या निरंजन, निराकार तक का ज्ञान मिलता है, इसलिए यह शून्य के जीव निराकार के पार का ज्ञान कैसे ले सकते हैं?

सुपन बुध अटकल सों, वेद कतेब खोजे जिन।
मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन।। ५ ।।

वेद-कतेबों के खोज करने वाले अपनी स्वप्न की बुद्धि से अनुमान लगाकर अर्थ करते हैं। उन्होंने उनके अन्दर के रहस्यों को नहीं समझा और इसलिए बारह मात्राओं वाली संस्कृत के व्याकरण ने संशय पैदा करने वाला ज्ञान थोप दिया।

साधू बोले इन जुबां, गावें सब्दातीत बेहद।
पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सब्द।। ६ ।।

संसार में कुछ साधु लोगों ने भी अपनी जबान से बेहद का बखान किया, परन्तु क्या करते? उनके पास मोह तत्व की बुद्धि है। आगे उनके शब्दों में शक्ति नहीं है।

पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन।
ए सुन्य द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन।। ७ ।।

पांच तत्व, मोह सागर, अहंकार, चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, त्रिगुण, निराकार और निरंजन सभी माया के ही रूप हैं।

प्रकृती महाप्रले होवहीं, सब तत्व गुन निरगुन।
द्वैत उड़े कछू ना रहे, निराकार निरंजन सुंन।। ८ ।।

जब महाप्रलय होती है तो सभी तत्व, गुण, निर्गुण, निराकार, निरंजन शून्य, माया, आदि उड़ जाते हैं।

बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत।
सो जाग्रत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत।। ९ ।।

जो पार की वाणी है, वह शब्दातीत कहलाती है। इसको जागृत बुद्धि और पारब्रह्म के बिना कोई संसार का जीव नहीं जान सकता।

पैगंमर या तीर्थंकर, कई हुए अवतार।
किन क्रोध न मेट्यो विश्व को, किए नहीं निरविकार।। १० ।।

संसार में कई पैगम्बर, तीर्थंकर और अवतार हुए, परन्तु किसी ने भी संसार के विकारों को समाप्त कर झगड़ों को नहीं मिटाया।

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।। ११ ।।

इतने दिन तक संसार में सपने की ही बुद्धि थी। अब श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि लेकर स्वयं (श्री श्यामजी के मन्दिर में) नौतनपुरी में प्रगट हुए।

Nijanand App

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।। १२ ।।

अब परमधाम से हमारे साहब श्री राजजी महाराज आए हैं। उन्होंने सारी सृष्टि के संशय मिटाकर निर्मल कर दिया। वह मोहतत्व, अहंकार को मिटाकर सबको अखण्ड सुख बहिश्तों में देंगे।

सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन।
सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन।। १३ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि अब श्री राजजी महाराज के हुकम से सब धर्मग्रन्थों के तथा कुरान के छिपे भेदों के सब रहस्य मैंने खोल दिए। अब सारे सुन्दरसाथ को इससे सुख मिलेगा।

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टब्रह्म।। १४ ।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने वह तारतम कुंजी मुझे दी और कहा इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पार के दरवाजे खोलकर ब्रह्मसृष्टि को घर में बुला लाओ।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन।
अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने यहां आकर अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी है। यह पहचान मैं ब्रह्मसृष्टि को कराती हूं जो इस ज्ञान को सारे संसार में जाहिर करेगी।

तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट कारन।
आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन।। १६ ।।

तीन ब्रह्माण्ड (बृज, रास और जागनी के) ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते बने हैं। स्वयं श्री राजजी महाराज ही ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा पूरी करने आए हैं।

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक।। १७ ।।

अब इन ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से सारे जगत को पारब्रह्म के दर्शन होंगे और चौदह तबकों के लोगों को बहिश्तों में अखण्ड सुख मिलेंगे।

ख्वाब की अकल छोड़ के, कहूं अर्स के कलाम।
हक बका जाहेर करूं, अंखड सुख जे ठाम।। १८ ।।

स्वप्न की बुद्धि छोड़कर अखण्ड परमधाम की वाणी से श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करती हूं, जहां के सुख अखण्ड हैं।

दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूं जुबां अकल और।
कलाम कहूं अर्स अजीम के, महामत बैठे इन ठौर।। १९ ।।

झूठी दुनियां के झूठे ज्ञान को छोड़कर परमधाम की जागृत बुद्धि को लेकर श्री महामतिजी यहीं बैठे अखण्ड घर का ज्ञान देते हैं।

Nijanand App

ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन।। २० ।।

ला मकान, शून्य, निर्गुण तथा निरंजन (सभी निराकार के पूजक हैं) को छोड़कर अक्षर के पार जाकर परमधाम का वर्णन करना है। उसका यह मंगलाचरण है।

मंगलाचरण तमाम ।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८६ ।।

और ढाल चली

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे इश्क! तू मेरे पास आ, तो अपने दिल की तड़प पूरी कर लूं। अहं छोड़ूं और अपने निजघर (परमधाम) को देखूं। श्री राजजी के चरणों तले बैठकर आराम करूं और प्रीतम के साथ प्रेम की लीला करूं।

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं।। २ ।।

अब मैं जागृत बुद्धि अद्वैत तारतम वाणी का गान कर अपनी परआतम की फरामोशी को उड़ाऊं और सब सुन्दरसाथ को इकट्ठा जगाऊं। बाद में अक्षर को भी जागृत कर दूं।

जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित।। ३ ।।

जब माया का प्रलय हो जाता है तो अद्वैत भूमिका के बिना और कुछ नहीं रह जाता। यह वही अद्वैत भूमि है जहां श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के साथ नित्य आनन्द करते हैं।

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं।
अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं।। ४ ।।

अब इस बात को मोमिनों को बार-बार समझाऊं और सबों को प्रेम की मस्ती पिलाऊं, ताकि वह उस मस्ती में तृप्त हो जाएं और उनकी परआतम में इश्क बढ़ जाए।

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित।
किन बिध बन मोहोल मन्दिर, देखों धनी जी की लीला अंदर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज! मेरे चित्त में परमधाम देखने की चाहना लगी हुई थी कि परमधाम के वन, महल, मन्दिर तथा धाम के अन्दर मूल-मिलावा की लीला कैसी है, उसे देखूं।

विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के विलास का स्वरूप कैसा है? उसे बिना देखे शान्ति कैसे मिले? परमधाम के जल, जमीन, पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम के सब ठिकाने और अक्षर ब्रह्म की लीला कैसी है? यह देखने की चाह थी।

Nijanand App

ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन।। २० ।।

ला मकान, शून्य, निर्गुण तथा निरंजन (सभी निराकार के पूजक हैं) को छोड़कर अक्षर के पार जाकर परमधाम का वर्णन करना है। उसका यह मंगलाचरण है।

मंगलाचरण तमाम ।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८६ ।।

और ढाल चली

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे इश्क! तू मेरे पास आ, तो अपने दिल की तड़प पूरी कर लूं। अहं छोडूं और अपने निजघर (परमधाम) को देखूं। श्री राजजी के चरणों तले बैठकर आराम करूं और प्रीतम के साथ प्रेम की लीला करूं।

अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अछर को भी उठाऊं।। २ ।।

अब मैं जागृत बुद्धि अद्वैत तारतम वाणी का गान कर अपनी परआतम की फरामोशी को उड़ाऊं और सब सुन्दरसाथ को इकट्ठा जगाऊं। बाद में अक्षर को भी जागृत कर दूं।

जब प्रले प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत बिना कोई।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित।। ३ ।।

जब माया का प्रलय हो जाता है तो अद्वैत भूमिका के बिना और कुछ नहीं रह जाता। यह वही अद्वैत भूमि है जहां श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के साथ नित्य आनन्द करते हैं।

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं।
अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं।। ४ ।।

अब इस बात को मोमिनों को बार-बार समझाऊं और सबों को प्रेम की मस्ती पिलाऊं, ताकि वह उस मस्ती में तृप्त हो जाएं और उनकी परआतम में इश्क बढ़ जाए।

धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित।
किन बिध बन मोहोल मन्दिर, देखों धनी जी की लीला अंदर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज! मेरे चित्त में परमधाम देखने की चाहना लगी हुई थी कि परमधाम के वन, महल, मन्दिर तथा धाम के अन्दर मूल-मिलावा की लीला कैसी है, उसे देखूं।

विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अछर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज के विलास का स्वरूप कैसा है? उसे बिना देखे शान्ति कैसे मिले? परमधाम के जल, जमीन, पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम के सब ठिकाने और अक्षर ब्रह्म की लीला कैसी है? यह देखने की चाह थी।

Nijanand App

सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर।
धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई।।७।।

इन सबकी शोभा को अपनी नजर से और वतन को जो हमारा घर है देखने की चाह थी। धनी श्री देवचन्द्रजी ने वर्णन करके चित्त में तो बिठा दिया था, परन्तु फिर भी साक्षात् दर्शन नहीं हुए।

तुम दई जो पिया मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब विध।
और हिरदे जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊं इनों को दृढ़ाई।।८।।

हे श्री राजजी महाराज! जो अखण्ड न्यामत आपने दी है, वह सब मैंने अपने सुन्दरसाथ को बताई। मुझे हृदय में और भी जो ज्ञान प्राप्त हुआ, वह भी सुन्दरसाथ को देती हूं।

अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं।
जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए।।९।।

हे सुन्दरसाथजी! जो मुझे सतगुरु धनी श्री देवचन्द्रजी ने बताया था, पहले वह बताती हूं उसके बाद स्वयं देखकर आपको दिखांऊगी। रंग महल के सामने दो जवेरात के सुन्दर चबूतरे हैं। इनकी शोभा का वर्णन इस मुख से नहीं होता।

द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिंन।
दोनों पर नंगों के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल।।१०।।

रंग महल के आगे तीन चबूतरे हैं दो दोनों तरफ और एक अलग दोनों के ऊपर सुन्दर नगों के फूल बने हैं जिन्हें देखकर चित्त में बड़ी प्रसन्नता होती है (यह धनी देवचन्द्रजी बताते थे)।

बेला कई रंगों कई नकस, देखो एक दूजी पे सरस।
ता बीच चरनी केती कई रंग, बेलां कटाव जड़ित कई नंग।।११।।

इन चबूतरों में कई तरह की बेलों की कई रंगों की नक्शकारी है जो एक से दूसरी अच्छी लगती है। उनके बीच में सीढ़िया हैं जिनके अन्दर की बेलों में कई तरह के नग जड़े हैं और चित्रकारी बनी है।

दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जरी।
दाहिने हाथ भिंन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा।।१२।।

दोनों तरफ किनारों पर कंगूरे बने हैं और कई तरह से सिधाई में नग जड़े हैं। दाहिने हाथ पर एक अलग चबूतरा है। इन दोनों के बीच की गली में तीसरा लगता हुआ है।

ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर।
चारों तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न बरनी।।१३।।

ऊपर पेड़ों की छाया है जो पूरे चबूतरे पर छाया करती है। चारों तरफ तीन-तीन सीढ़ियां लगी हैं जिसके किनारे की शोभा बेशुमार है।

उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजा रेज।
ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत।।१४।।

चांदनी चौक की भूमि बड़ी उज्ज्वल है और वहां की रेती बिजली की चमक के समान चमकती है। इस रेत की किरणें आसमान तक जाती हैं और आसमान में जुदा-जुदा रंगों से यह किरणें टकराती हैं।

Nijanand App

सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार।
इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास।।१५ ।।

उनके टकराने से रोशनी वन पर पड़ती है और वन की रोशनी भी कम नहीं होती। यहां के मन्दिरों का तेज भी आसमान में नहीं समाता।

जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर।
जोत रोसन भरयो आसमान, किरना सके न कोई काहू भान।।१६ ।।

इन सबकी नूरी किरणें सूर्य के समान रोशनी देती हैं। उनसे शीतलता होती है। इन किरणों की रोशनी से आसमान जगमगा उठता है और कोई भी किरण दूसरी किरण को मिटा नहीं सकती, अर्थात् कोई किरण किसी से कम नहीं है।

सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सो/तो होए नहीं बरनन।
इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन क्यों होए।।१७ ।।

इस मुख से इस वन की शोभा का कैसे वर्णन करूं? इनका वर्णन सम्भव नहीं है। यहां की हर चीज सुगन्धित है। इस जबान से उसका बयान कैसे हो?

इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग।।१८ ।।

यहां पर जल और हवा की लहरों पर लहरें चलती हैं। उनकी शोभा का मैं वर्णन कैसे करूं? जल की उठती तरंगों में कई तरह के रंग दिखाई देते हैं।

चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट।।१९ ।।

चन्द्रमा और सूर्य धनी की आज्ञा पर चलते हैं। उनकी शोभा का मैं कैसे वर्णन करूं? यहां जमुनाजी के किनारे पर सात घाट हैं (केल, लिबोई, अनार, अमृत, जाम्बू, नारंगी और बट) और इनके ठीक मध्य में जमुनाजी का पाट घाट है।

तापर द्योहरी एक, जल पर पाट कठेड़ा विसेक।
चारों थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग।।२० ।।

पाट घाट के ऊपर एक द्योहरी बनी है और जल के ऊपर तीन तरफ से कठेड़ा लगा है। ऊपर के बारह थंभ जल में झलकते हैं।

आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले।
याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवें।।२१ ।।

इन बारह थंभों के नीचे जल के अन्दर चार-चार थंभों की चार हारें सोलह थंभे हैं। उन चार-चार थंभों की मेहराबों में से तीन घड़नाले निकलते हैं। इस पाट घाट की किरणें आसमान में नहीं समातीं और फिर फिर नजर घूम जाती है।

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनो बनराए।
बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं।।२२ ।।

पाट घाट के बाएं तरफ तीन घाट हैं और उनके तीनों अलग वन हैं (केल, लिबोई और अनार)। उसके बाएं तरफ बड़ा वन है। यहां श्री राजजी महाराज और सखियां कभी-कभी खेलने जाती हैं।

Nijanand App

लम्बी डारें ऊंचा बन, कई भांत हिंडोले झूलन।
तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं।। २३ ।।

वनों की डालियां लम्बी-लम्बी हैं। कई तरह के झूले (हिंडोले) लगे हैं। तीन घाट और तीन वन जो कहे हैं, दिखाती हूं और तीन वनों के नाम सुनाती हूं।

केल लिबोई और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए।। २४ ।।

तीन वन केल, लिबोई और अनार के हैं। पाट घाट के दाहिनी तरफ भी तीन वन हैं। इनके नाम बट, नारंगी और जांबू हैं। अमृत वन के सामने पाट घाट आया है।

जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए।
जमुना जी के दोऊ किनारे, बन जल पर लगी दोऊ हारें।। २५ ।।

इन घाटों के पेड़ों की डालें यमुनाजी के जल पर आकर लगती हैं और दूसरी ओर जमीन की तरफ शोभा दे रही हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे पर वन की दो हारें हैं (पुखराजी रौंस)।

आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें।
आगे बन के जो मंदिर, ताको बरनन करूं क्यों कर।। २६ ।।

दोनों किनारों पर से जमुनाजी के ऊपर पेड़ों की डालियां आधी जल पर आधी वन पर पड़ती हैं। उसके आगे जो वनों (कुंज-निकुंज) के चौरस और गोल मन्दिर हैं, उनका वर्णन कैसे करें?

बेलां बन चढ़ियां इन सूल, हुई दिवालें पात फूल।
गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग।। २७ ।।

इन कुंज वन के मंदिरों में तरह-तरह की बेलें चढ़ी हैं, पत्ते और फूलों की दिवारें बन गई हैं। हर एक के चारों तरफ खिले हुए फूलों के रंग अलग-अलग हारों में जहां जैसा चाहिए, शोभा देते हैं।

इत लता चढ़ियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन।
जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक।। २८ ।।

यहां पर बेशुमार लताएं, कुंज-निकुंज के मन्दिरों पर चढ़ी हैं और उसके ऊपर तरह-तरह के फूल खिले हैं। ऐसा लगता है जैसे सोने में तरह-तरह के जवेरों के नग जड़ दिए हों।

बीच जमुना जी के और मन्दिर, अतिबन सोभित बन के अंदर।
कई सेज्या बनी फूल बन में, कई रंग हुए सघन में।। २९ ।।

जमुनाजी के और परमधाम (रंग महल) के बीच में वनों में कुंज-निकुंज की बड़ी शोभा है। यहां वनों में फूलों की ही सेज्या बनी है और कई तरह के रंगों के फूल उस सेज्या में झलक रहे हैं।

इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनन्द इन वतन।
मिनें राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए।। ३० ।।

यहां पर ब्रह्मसृष्टियों के चालीस जुत्थ (यूथ, सैयां) कभी-कभी खेलने आती हैं और सदा आनन्द करती हैं। यहां पर श्री राजजी श्री श्यामाजी भी साथ में होते हैं और इस तरह से सब सखियों को अपार सुख मिलते हैं।

Nijanand App

पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी।
निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली।। ३१ ।।

यहां के पेड़ अलग-अलग तथा लम्बी डालियों वाले हैं जिनके नीचे घनी छाया है। यहां पर एक गली से दूसरी, दूसरी से तीसरी आपस में मिलती हैं।

कई आवत बीच आड़ियां, कई सीधियां कई टेढ़ियां।
बन गलियों में बराबर, न कहूं अधिक न छेदर।। ३२ ।।

कई गलियां आड़ी आती हैं। कई गलियां टेढ़ी आती हैं, परन्तु वृक्षों की छाया सभी पर है। छाया कम ज्यादा कहीं नहीं है।

ऊपर ढांपियां सारी सनन्ध, सोभा बनी जो दोरी बंध।
तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती।। ३३ ।।

गलियां ऊपर से ढकी हुई हैं। उनकी शोभा एक सीध में दिखाई पड़ती हैं। उनके नीचे जहां तक नजर जाती है, सुन्दर उज्ज्वल रेत की सफ़ेदी झलकती है।

जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती।
कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बड़े बड़े रे मोटे।। ३४ ।।

जमीन के ऊपर तथा नीचे रेत के कण मोतियों के समान लगते हैं। यह कहीं छोटे, कहीं बड़े-बड़े मोटे और कहीं बारीक हैं।

कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी।
कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी।। ३५ ।।

कई जगह पर हीरों की कणी जैसे लगते हैं। हर स्थान पर हर प्रकार की बेशुमार शोभा है। कहीं पर दोखूनी, कहीं तीनखूनी, कहीं चारखूनी और कहीं गोल रेती के कण दिखाई देते हैं।

ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती।
बन फूल फूले बहु रंग, झलूब रहे बोए सुगन्ध।। ३६ ।।

इस तरह से मैं रेती की शोभा किस तरह कहूं? बेशुमार शोभा है। बन में तरह-तरह के रंग के फूल खिले हैं जो झूम-झूमकर सुगन्धि बिखेर रहे हैं।

एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए।
एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर।। ३७ ।।

इन फूलों की खूबी और खुशबू दोनों का वर्णन किस जबान से करूं? एक तो सुगन्धि देते हैं दूसरा उनका तेज (शोभा) सब ठिकानों पर अपरंपार है।

तलाव जमुना जी के मध, बन के मंदिर या विध।
ए खेलन के सब ठौर, तलाव विध है और।। ३८ ।।

हौज कौसर तालाब और जमुनाजी के बीच में कुंज-निकुंज के मन्दिर इस तरह से शोभायमान हैं। यह सब खेलने के ठिकाने हैं। हौज कौसर तालाब की हकीकत तो अलग ही है।

Nijanand App

तलाव बनें लिया घेर, ऊपर द्योहरियां चौफेर।
कई पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली बारे।। ३९ ।।

हौज कौसर तालाब को बड़े वन ने चारों तरफ से घेर रखा है। ऊपर पाल के चारों तरफ (१२८) द्योहरियां हैं। किनारे पर सीढ़ियां हैं। सुन्दर चौक तथा नीचे चार दरवाजे (जाली वाले) हैं जहां से जमुनाजी हौज कौसर में प्रवेश करती हैं।

बन लेवत सोभा पाले, कई हिंडोले लम्बी डालें।
घाट पाट द्योहरी कई रंग, जल सोभा लेत तरंग।। ४० ।।

पाल के ऊपर बड़े वन की सुन्दर शोभा है जिनकी लम्बी डालियों में हिंडोले लगे हैं। सुन्दर घाटों में तथा द्योहरियों में कई तरह के रंग हैं जिनकी शोभा जल की तरंगों में दिखाई देती है।

गेहेरा अति सुन्दर जल, बीच में बन्यो है मोहोल।
जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे।। ४१ ।।

हौज कौसर तालाब का जल बड़ा सुन्दर है तथा बीच में सुन्दर टापू महल है। जल के बीच जो टापू महल आया उसके गुर्जों के बीच बड़े वन के सुन्दर वृक्ष आये हैं।

जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके।
बन को झुन्ड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक।। ४२ ।।

टापू महल के किनारे पर ताल के जल की लहरें आकर टकराती हैं। इसके मंदिरों में करोंड़ों मणियों का प्रकाश झलक रहा है। ताल की पच्छिम दिशा में झुण्ड का घाट आया है। उसके नीचे अधिक शोभा है।

झुन्ड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए।
धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए।। ४३ ।।

झुण्ड के घाट के नीचे की शोभा वर्णन नहीं हो सकती। श्री राजजी यहां आकर विराजते हैं। श्री राजजी और सब सुन्दरसाथ बैठकर सिनगार करते हैं।

इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे।
मध्य बन धाम के गिरदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए।। ४४ ।।

इस ठिकाने की शोभा बेशुमार है। जिसने देखा है उसी को आनन्द आता है। हौज कौसर तालाब और रंग महल के बीच में बड़े वन के पांच पेड़ चारों तरफ घेर कर आए हैं (बट-पीपल की चौकी के बाद दक्षिण दिशा से होते हुए पच्छिम में अन्न वन से होते हुए उत्तर में बड़े वन और केल के घाट से होते हुए पूरब में सातों घाटों के सामने पाल पर आए हैं)। इनकी शोभा एक दूसरे से चढ़ती हुई है।

बट पीपल निकट बनराए, सो देखे न दृष्ट अघाए।
ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए।। ४५ ।।

यह बड़े वन के वृक्ष बट पीपल की चौकी से लगते हुए आए हैं जिसे देखकर नजर को तृप्ति नहीं होती क्योंकि जैसे-जैसे देखते हैं शोभा और बढ़ती जाती है।

फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे।
चारों तरफों फूले फूल बन, कई रंग सोभा अति घन।। ४६ ।।

यह बड़े वन के वृक्ष रंग महल के चारों तरफ आए हैं और ऊपर-ऊपर इनकी छत्तें मिली हैं। चारों तरफ वनों में फूल खिले हैं जिसके कई रंगों से शोभा अधिक बढ़ जाती है।

Nijanand App

बरन्यो न जाए या मुख, चित्त में लिए होत है सुख।
बन में खेलें टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले।। ४७ ।।

इस शोभा का वर्णन इस मुख से सम्भव नहीं है। इसका चितवन करने से अधिक सुख मिलता है। इन वनों में पशु-पक्षी टोली-टोली में खेलते हैं। मोर और बन्दर किलोल करते हैं।

मिल मिल करें टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार।
बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढ़ी उलटी गुलाटें लेत।। ४८ ।।

मोर आपस में एक साथ आवाज करते हैं और अपने मुख से मधुर वाणी बोलते हैं। बन्दर उछल कूद करते हैं और उलटी टेढ़ी कला बाजियां खाते हैं।

तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर।
सुआ मैना करें चोपदारी, चातुरी इन आगे सब हारी।। ४९ ।।

तीतर, लवा, कोयल और चकोर पक्षियों की आवाज होती है। तोता, मैना चोपदारी करते हैं। इनकी चतुराई देखते ही बनती है।

सखियों के नाम ले ले बुलावें, धनीजी के आगे मुजरा करावें।
पंखी पिउ पिउ तुहीं तुहीं करें, कई बिध धनी को हिरदे धरें।। ५० ।।

सखियां पक्षियों के नाम ले-लेकर धनी जी के सामने बुलाकर इनकी लीला कराती हैं (मुजरा कराती हैं)। पक्षी पिउ-पिउ, तूहीं-तूहीं, धनी-धनी कहकर धनी को दिल में धारण करते हैं।

तिमरा भमरा स्वर साधें, गुंजे गान पियासों चित बांधें।
मृग कस्तूरियां घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर।। ५१ ।।

तिमरा (झींगुर) भंवरा एक स्वर से धनी से चित्त बांधकर मधुर ध्वनि करते हैं। कस्तूरी मृग चारों ओर वन में सुगन्धि बिखेरते हैं।

हाथी बाघ चीते सियाहगोस, खेलें मिलें आतम नहीं रोस।
हंस गरुड़ पंखी कई जात, नाम लेऊं केते कै भांत।। ५२ ।।

हाथी, शेर, चीता, सियार सब मिलकर खेलते हैं। किसी को किसी पर गुस्सा नहीं आता। हंस, गरुड़ तथा कई जाति के पक्षी हैं। इनके नाम कहां तक गिनाऊं?

कई मुरग सुतर कुलंग, खेल करें लड़ाई अभंग।
सीनाकस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें।। ५३ ।।

कई तरह के मुर्गे, शुतुरमुर्ग, कुरंग आपस में लड़ाई का खेल खेलते हैं। सीना कसकर गुलाटियां खाते हैं और कबूतर अपनी चाल की चालाकी दिखाते हैं।

हरन सांम्हर पस्वाड़े पाड़े, खेलें सब कोई अपने अखाड़े।
मुजरे को दोऊ समें आवें, खेल सब कोई अपना देखावें।। ५४ ।।

हिरन, सांभर विशेष तरह के पशु और पाड़े सब अपने अखाड़ों में खेल करते हैं। यह प्रातः सायं दोनों समय श्री राजजी को प्रणाम करने आते हैं और अपनी कलाएं दिखाते हैं।

Nijanand App

पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम।
अति सुन्दर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार।। ५५ ।।

अनेक नाम के पशु-पक्षी हैं जिनके बालों पर अनेक तरह के चित्र बने हैं। जिनकी बड़ी सुन्दर शोभा होती है। उनके खेल तथा बोली मन को लुभाने वाली होती है।

जमुनाजी के जो पार, बन पसु पंखी याही प्रकार।
मोहोल सामे सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कौल।। ५६ ।।

जमुनाजी की दूसरी तरफ वन में पशु-पक्षी इसी तरह के हैं। रंग महल के सामने अक्षरधाम शोभायमान है। यहां के मुख और वाणी से परमधाम की शोभा का वर्णन कैसे हो?

दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर बिराजे।
नूर किरना उठें साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी।। ५७ ।।

रंग महल और अक्षरधाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। दोनों धामों के नूर की बड़ी सुन्दर शोभा है। दोनों धामों की किरणें आमने-सामने उठती हैं जिनकी लहरें चारों तरफ सुन्दर लगती हैं।

लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और।
फिरते अछर के जो बन, लीला एकै देखियत भिंन।। ५८ ।।

दोनों धामों की लीला दो तरह की है पर स्वरूप एक है। अक्षरधाम के चारों तरफ के जो वन हैं उनमें भी लीला एक ही तरह की होती है हालांकि दिखती अलग है।

कई मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलौने।
पसु पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत।। ५९ ।।

कई पशु-पक्षियों के समूह बड़े सुहावने हैं। यह श्री राजजी और ब्रह्मसृष्टियों के खिलौने हैं। पशु-पक्षियों की टोलियां मिलकर धाम के दरवाजे के सामने चांदनी चौक में खेल करते हैं।

दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई।। ६० ।।

परमधाम के मुख्य दरवाजे के किवाड़ों के रंग दर्पण के समान हैं जिनमें सामने के वनों की सुन्दर शोभा दिखाई देती है। किवाड़ की वैनी के ऊपर नग जड़े हैं जिनकी शोभा कहने में नहीं आती।

कई कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर।
फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी।। ६१ ।।

कई तरह के कटाव, नक्काशी, जवाहरात तथा नग (रत्न) चारों तरफ जड़े सुन्दर शोभा देते हैं। दरवाजे के चारों तरफ लाल रंग की मणि का जड़ाव है जिसकी ज्योति अत्यन्त शोभा देती है।

याके तीन तरफ जो दिवाल, कई जवेर भोम रंग लाल।
गोख खिड़की जाली जवेर, कई जड़ाव दिवाल चौक चौफेर।। ६२ ।।

दरवाजे के तीन तरफ (दाएं, बाएं तथा ऊपर) लाल रंग की दीवार है जिसमें कई तरह के जवेर जड़े हैं। छोटी जाली वाली खिड़कियों और रोशनदानों में जवेरात की जाली है। उनमें कई तरह के चारों तरफ से जड़ाव भरे हैं।

Nijanand App

गिरद झरोखे के थंभ फिरते, जुदी कई जिनसों जोत धरते।
नव भोम रंग बरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन।। ६३ ।।

चारों तरफ घेरकर झरोखे तथा झरोखे के थंभ आए हैं जो कई-कई तरह के नगों से जड़े हैं। उनकी रोशनी फैल रही है। नव भोम के रंगों का ऐसा ही वर्णन है। उसके ऊपर दसवीं चांदनी की सुन्दर शोभा है।

मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उद्दोत।
दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई।। ६४ ।।

मन्दिरों के ऊपर कांगरी की शोभा है। ऐसा लगता है जैसे बिजली चमक रही हो। दरवाजे के अन्दर प्रवेश करने पर सामने रसोई की हवेली है जहां नित्य ही सभी मिलते हैं।

स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित।
बन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें तब।। ६५ ।।

इस हवेली के श्याम मन्दिर में रसोई बनती है (उत्तर की दिशा में कोने का मन्दिर छोड़कर रसोई का श्याम मन्दिर है)। उसी के साथ लगता सफेद मन्दिर है (जिसमें सीढ़ियां हैं)। वनों से घूमकर सायंकाल जब लौटते हैं तो इस हवेली में भोजन आरोगते हैं।

चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ लाड़बाई धरे जोत।
साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत।। ६६ ।।

सीढ़ियों के आगे ही सब मिलते हैं जहां लाड़बाई के जुत्थ (समूह) की सखियां रसोई बनाती हैं। बन्दर सब साग-भाजी लाते हैं और सब सखियां संवारती हैं।

कई चौक चबूतरे अंदर, कई विध गलियां मंदिर।
कई जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे।। ६७ ।।

इस तरह से अन्दर कई चौक, चबूतरे, मन्दिर हैं जिनकी दीवारों पर सुन्दर जड़ाव हैं। यहां की जबान से वहां का वर्णन कैसे करें?

कई नकस पुतली चित्रामन, कई बेल पसु पंखी बन।
कंचन कड़े जंजीरां जड़ियां, कई झलके थंभ सीढ़ियां।। ६८ ।।

दीवारों पर कई तरह की नक्काशी, पुतलियां, चित्र, बेल-बूटे, पशु-पक्षियों के आकार बने हैं। सोने के कड़ों में जंजीरें जड़ी हैं तथा थंभ और सीढ़ियों की जगमगाहट होती है।

माहें वस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई।
ताके खिल्ली किनारे भमरियां, ऊपर वस्तां अनेक विध धरियां।। ६९ ।।

मन्दिरों के अन्दर सन्दूक और सिनगार की बेशुमार वस्तुएं दिखाई देती हैं। वहां खूंटियों के किनारे पर सुन्दर बनावट दिखाई देती है जिनके ऊपर अनेक तरह के सिनगार का सामान रखा है।

ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तुम लीजो कर चितवन।
नव भोम सबों के मंदिर, देखो वस्तां अपनी चित्त धर।। ७० ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं कैसे वर्णन करूं? तुम चितवन करके देख लेना। नौ भोमों में सब सखियों के मन्दिर एक समान हैं जिनमें अपनी चितचाही वस्तुओं को देखो।

Nijanand App

सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार।
सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहू में किन॥ ७१ ॥

सेज्या तथा सिनगार के सभी सामान हैं। जिसके हृदय में जैसी चाह हो, ले लेना। हर एक मन्दिर सब सामान से भरपूर हैं। किसी भी मन्दिर में किसी प्रकार की कमी नहीं है।

हांस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पिया जी को सब्दातीत।
डब्बे तबके सीसे सीकियां, कई देत देखाई लटकतियां॥ ७२ ॥

परमधाम में धनी के हांस (हंसी, विनोद) के, विलास के, प्यार के, प्रीति के हर प्रकार के सुख मिलते हैं जो शब्दातीत हैं। उन मन्दिरों में डिब्बे, प्लेटें, शीशियां, सलाईयां कई तरह की लटक रही हैं।

चौकियां माचियां सिंघासन, कई हिंडोले जंजीर कंचन।
कई बासन धात अनेक, कई बाजंत्र विविध विसेक॥ ७३ ॥

चौकियां, पलंग, सिंहासन (दीवान), हिंडोले सोने की जंजीरों में लटक रहे हैं। कई प्रकार की धातुओं के बर्तन तथा हर तरह के बाजे शोभायमान हैं। (टी. वी., रेडियो, टू इन वन, हारमोनियम, गिटार, सितार, बेंजो, इत्यादि)।

कई झीले चाकले दुलीचे बिछोनें, कई विध तलाई सिरानें।
कई रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कई सिरख सोड़ मन पूरे॥ ७४ ॥

कई चाकले, दुलीचे, बिछौने, गद्दे, तकिए, ओढ़ने वाली चादरें, गाल के नीचे रखने वाला तकिया तथा रुई से भरी रजाइयां शोभा देती हैं।

सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नव खण्ड सबन।
दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ॥ ७५ ॥

एक शयन का तथा एक सिनगार का, हर भोम में हर सखी के लिए दो-दो मन्दिर सभी नौ भोमों में हैं। दूसरी भोम में बाएं हाथ के किनारे पर कभी-कभी भुलवनी का खेल करके। खड़ोकली में स्नान कर, चबूतरे पर सिनगार करते हैं।

इत खड़ोकली जल हिलोले, धनी साथ झीलें-झकोलें।
इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें॥ ७६ ॥

यहां पर दूसरी भोम में खड़ोकली का जल हिलोरें लेता है। यहां सब सुन्दरसाथ धनी के साथ मिलकर जल उछाल-उछाल कर स्नान करते हैं। यहीं पर सिनगार करके खेल करते हैं और जगह-जगह पर टोली-टोली मिलकर आनन्द लेते हैं।

साम सामें मन्दिरों के द्वार, नव भोम फिरती किनार।
ता बीच थंभों की दोए हार, कई रंग नंग तेज अपार॥ ७७ ॥

सभी नौ भोमों में मन्दिरों के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनके किनारे की शोभा बड़ी सुन्दर है। दोनों मन्दिरों की हारों के बीच में दो थंभों की हारें हैं जहां कई रंगों के नगों की बेशुमार रोशनी होती है।

जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई।
या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मन्दिर॥ ७८ ॥

मैंने जितनी सामग्री का वर्णन किया है वह सब देखकर आतम तृप्त नहीं होती। मन्दिर को बाहर से देखो या अन्दर से, सब एक समान की शोभा है।

Nijanand App

केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एह बिरत।
तुम लीजो दृढ़ कर चित्त, अपना जीवन है नित।।७९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं तुमको प्यार करके कहती हूं। अपने परमधाम के सारे दिन की यही लीला है। इसे अपने चित्त में धारण कर लेना, क्योंकि यही अपनी अखण्ड घर की लीला है।

श्री धाम की आठ पोहोर की बीतक

धाम के चबूतरे के ऊपर दरवाजे के सामने चार मन्दिर लम्बा दो मन्दिर चौड़ा चबूतरा, दरवाजे के सामने बीच दो मन्दिर का चौड़ा चौक, तीसरी भोम समेत हो जाते हैं। तो यहां दस मन्दिर की लम्बी चार मन्दिर चौड़ी देहेलान है। नीचे के दस थंभों पर कठेड़ा लगा है। दरवाजे के आजूबाजू के दो मन्दिर नहीं हैं। तीन-तीन मन्दिर दोनों तरफ हैं। किनारे वाला नीला, दूसरा पीला और फिर हरा है। दाहिनी तरफ हरे मन्दिर में सेज्या है। पहली गली परिकरमा की आई है। अट्ठाइस थंभ के चौक के सामने तीन सीढ़ी ऊंची हो जाती है। यहीं चार मन्दिर की लम्बी दो मन्दिर चौड़ी देहेलान है।

तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विसाल।
धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात।।८० ।।

तीसरी भोम की जो पड़साल है, वह धाम के दरवाजे के ठीक ऊपर है। यहां पर श्री राजजी महाराज पांचवीं भोम से प्रातः तीसरी भोम पर बड़े दरवाजे के ऊपर थंभों में बनी मेहराव में आकर खड़े होते हैं और अपनी नजर से सामने वाले वनों को देखते हैं।

पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार।।८१ ।।

नीचे चांदनी चौक में पशु-पक्षी मुजरा (दर्शन), प्रणाम करने आते हैं। उन सबका प्रणाम स्वीकार करके अपनी नजरों से सबको सुख पहुंचाते हैं। इसके बाद देहेलान में बैठकर सिनगार करते हैं। सखियां श्री राजजी को प्रसन्न करती हैं।

श्री स्यामाजी मन्दिर और, रंग आसमानी है वा ठौर।
चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी श्री धनी जी के पासे आवें।।८२ ।।

श्री श्यामाजी के सिनगार का मन्दिर दूसरी हार का पहला है। इसका रंग आसमानी है। चार सखियां श्री राजजी को और चार सखियां श्री श्यामा महारानीजी को सिनगार कराती हैं। सिनगार से सजकर श्री श्यामाजी श्री राजजी के पास आती हैं।

सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित्त में लिए होत है सुख।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी।।८३ ।।

यहां की शोभा का इस मुख से कैसे वर्णन करूं? इसको चित्त में लेने से ही सुख मिलता है। सखियां भी अपना सिनगार करती हैं। सखियां मांग सावधानी से संवारती हैं। बड़े प्यार से चोटी गूंथती हैं।

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूखन पेहेरावें।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावे।।८४ ।।

सखियां एक-दूसरे को सिनगार कराती हैं और आभूषण पहनाती हैं। सखियां ऐसा सिनगार करके आती हैं जैसा श्री राजजी के मन भाए।

Nijanand App

सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल।
सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी।। ८५ ।।

सखियां ऐसी लटकती चाल से आती हैं जिससे धनी बहुत प्रसन्न होते हैं। आने के बाद वह एक दूसरी से बड़े आदर से बोलती हैं।

सैयां आवत करें झनकार, पाए भूखन भोम ठमकार।
झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां।। ८६ ।।

सखियों के आने पर उनके पैरों के आभूषण बजते हैं। आभूषणों की ठमकार होती है। मस्ती से भरी हुई सखियों के सिनगार जगमगाते हैं। आनन्द में डूबी बड़े हाव-भाव से आती हैं।

कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां।
सुन्दरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां।। ८७ ।।

एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर परस्पर एक-दूसरे को मोहित करती हैं। एक-दूसरे को हंसाती हुई शोभा देती हैं।

कई फलंग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां।
कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां मचकतियां।। ८८ ।।

कई उछलती छलांगें लगाती आती हैं। कई बेलि (लताओं) की तरह कमर को हिलाती आती हैं। कई लटकती, मटकती चाल से धीरे-धीरे आती हैं। कई मस्ती से मटकती आती हैं।

कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां।
कई आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां।। ८९ ।।

एक दूसरी को ठेलती आती हैं। उनकी टोली की टोली लहरों के समान आती हैं। कई भंवर बनाती चलाती फिरती आती हैं। कई एक-दूसरे पर गिर पड़ती हैं।

कई सीधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे।। ९० ।।

कई सीधी सरकती हुई आती हैं। कई अनेक तरीकों से चलकर आती हैं। एक-दूसरे के आगे आकर सखियां चरणों में प्रणाम करती हैं।

इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं।। ९१ ।।

यहां सखियों का बड़ा मिलावा होता है। इस समय कोई अलग नहीं रहती। कोई छज्जों से, कोई जालियों से, कोई मोहोलों से, कोई ऊपर की भोम से आती हैं।

इत चार घड़ी लों बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें।
दाहिनी तरफ दूजा जो मन्दिर, आए बैठे ताके अंदर।। ९२ ।।

यहां चार घड़ी तक श्री राजजी महाराज बैठते हैं। मेवा, मिठाई आरोगते हैं। दाहिनी तरफ का जो दूसरा मन्दिर है उसके अन्दर जाकर विराजमान होते हैं।

Nijanand App

नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मन्दिरों दिवालों के तांई।। ९३ ।।

यह मन्दिर नीले-पीले रंग के मन्दिर के बीच है। यह हरे रंग का है। उसमें नीले-पीले रंग के मन्दिर की तरंगें आती हैं। इन दोनों रंगों की दीवारों के ऊपर परछाईं पड़ती है।

पैठते दाहिने हाथ जो जांही, सेज्या है या मंदिर मांहीं।
कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन।। ९४ ।।

दूसरे मन्दिर में प्रवेश करते ही दाहिनी हाथ की तरफ सुख सेज्या है। यहां छज्जे के साथ लगा सिंहासन कई जड़ाव से जड़ा है। उसमें श्री राजजी श्री श्यामाजी विराजते हैं।

झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें।
संग सखियां केतिक विराजें, या समें श्री मंडल बाजे।। ९५ ।।

वह दरवाजे के सामने मुख करके झरोखे को (कठेड़े को) पीठ देकर बैठते हैं। उनके साथ कितनी सखियां बैठती हैं। जहां पर श्री मंडल बाजा बजता है।

नवरंगबाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें।
इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावें गुन लाल।। ९६ ।।

यहां नवरंगबाई अपने साज के साथ रसीली मधुर वाणी में गाती हैं। यहां बेनबाई बांसुरी की रसीली आवाज में श्री राजजी के गुणों का गान करती हैं।

सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें।
इन समें भगवान जी इत, दरसन को आवें नित।। ९७ ।।

देहलान से कोई सखी अन्दर आती है, कोई बाहर जाती है, कोई उठती है, कोई बैठती है। इसी समय रोज अक्षर भगवान दर्शन करने आते हैं।

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें।
इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए।। ९८ ।।

झरोखे के सामने नजर करते हैं वहीं श्री राजजी महाराज अपनी नजर घुमाकर दर्शन देते हैं। अक्षरब्रह्म प्रणाम करके पीछे लौट जाते हैं। यह अक्षरब्रह्म कोई और दूसरे नहीं हैं। स्वरूप एक है लीला मात्र से दो हैं।

भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें।। ९९ ।।

अक्षर भगवान अपनी इच्छा से प्रकृति के द्वारा करोड़ों ब्रह्मांड एक पल में बनाते और मिटाते हैं, इसलिए इनकी इस लीला को बाल-चरित्र कहा है।

और एतो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं।। १०० ।।

परमधाम में तो किशोर लीला है जहां सखियां अपार सुख लेती हैं। इस लीला के सुख का कहां तक वर्णन करूं? इसके सुख का शुमार नहीं है।

Nijanand App

सखियां केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरे।। १०१ ।।

इस समय कितनी सखियां अन्न वन में शाक, पान, मेवा लेने जाती हैं। वहां चार घड़ी तक वनों में खेल करती हैं। प्रातः नौ बजे वापस आती हैं।

ए सब इच्छा सों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे।
सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें।। १०२ ।।

यहां सब सामग्री इच्छा से आती है, परन्तु सखियों को सेवा की भावना होती है। सखियां प्यार से सेवा करने में देरी करती हैं और एक-दूसरी से सेवा छीनती हैं।

निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर।
मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी वालने लागे।। १०३ ।।

देहलान में दाहिनी तरफ जो जगह है, वहां पहर दिन चढ़ते सखियां वनों से आ जाती हैं। दोनों हारों के बीच की देहलान में मिलकर पान लगाती हैं।

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन।। १०४ ।।

सभी सखियां मसाला बना-बना कर लेती देती हैं और साढ़े दस बजे तक पान लगाने वाली सखियां सब पान तैयार कर देती हैं।

बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर।
श्री राज बैठे बातां करें, श्री स्यामाजी चित्त धरें।। १०५ ।।

पान बीड़ियों के छबले भर-भरकर श्री राजजी महाराज के पलंग के नीचे चौकी पर रखती हैं। जहां पर श्री राजजी बैठकर बातें करते हैं और श्यामाजी ध्यान से सुनती हैं।

सैयां परसपर करें हांस, लेवें धनी जी को विविध विलास।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही।। १०६ ।।

ब्रह्मसृष्टियां आपस में हंसती हैं और श्री राजजी से तरह-तरह का आनन्द लेती हैं। एक दो घड़ी के बाद लाड़बाईजी आकर विनती करती हैं।

श्री धनीजी की अग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं।
श्री धनीजी ने अग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी।। १०७ ।।

लाड़बाईजी ने विनती की, हे धनीजी! आज्ञा हो, तो मैं रसोई ले आऊं। श्री धनीजी ने आज्ञा कर दी, तो सखियों ने दो चौकियां देहलान में लाकर रखीं।

सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई।
श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर।। १०८ ।।

सखियों ने दो चाकले लाकर बिछा दिए। श्री राजजी महाराज ने वस्त्र उतारकर कमर पर पिछौड़ी पहनी।

Nijanand App

श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सोहाए।
श्री राज पखाले हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ।। १०९ ।।

श्री राजजी महाराज चाकले पर आए और श्री श्यामाजी भी साथ में विराजमान हुए। श्री राजजी ने हाथ धोए। श्री श्यामाजी ने भी हाथ धोए।

सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें।
मेवा अंन ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आई।। ११० ।।

सखियां दौड़-दौड़कर जाती हैं और आरोगने की सामग्री लाती हैं। मेवा, अन्न, शाक, मिठाई और कई तरह की सामग्री लेकर आती हैं।

एक ले चली साक कटोरी, तापे छीन ले चली दूसरी।
तिनथे झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी।। १११ ।।

एक सखी साग की कटोरी लेकर चलती है। उससे दूसरी सखी छीन लेती है। तीसरी सखी उससे झटक लेती है और चौथी उससे भी लेकर दौड़ती है।

जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहू किनपे।
इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां।। ११२ ।।

जो कोई एक दूसरी से छीन लेती है तो वह रोष नहीं करती। यहां से जो लौटकर जाती है, वह जाकर और कटोरी लाती है।

यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें।
सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार।। ११३ ।।

इस तरह से सभी सखियां एक-दूसरे से लेकर बड़े प्यार से दूसरी को देती हैं। उनके चलने से मन्दिरों में आभूषण की झनकार होती है और मधुर स्वर निकलते हैं।

सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी।
कई स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन।। ११४ ।।

सब सखियां आमने-सामने दौड़ती हैं और सभी जगह दौड़ने की आवाज उठती है। उनके आभूषण कई तरह से स्वर करते हैं तथा पैर के पटकने से आभूषणों की ध्वनि निकलती है।

कई बिध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी।
इन समें की जो आवाज, सोभा धाममें रही विराज।। ११५ ।।

इस तरह से कई तरह की मीठी-मीठी आवाज सुनाई पड़ती है। जिसका इस मुख से वर्णन सम्भव नहीं है। इस समय की आवाज पूरे परमधाम में गूंजती है।

दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सोतो लिए मन के भाई।
सब खेलें हांसी करें, आए आए धनी जी के आगे धरें।। ११६ ।।

लाड़बाई दूध, दही लेकर आती हैं। वह इच्छा के अनुसार श्री राजजी और श्यामाजी ले लेते हैं। सभी सखियां आपस में हंसती-खेलती हैं और तरह-तरह की सामग्री धनीजी के आगे लाकर रखती हैं।

Nijanand App

या समें दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे भोम सब गाजे।
झारी लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रुमाल पोंछाई।। ११७ ।।

इस समय सखियों के दौड़ने से आभूषण बजते हैं। उनके पैरों की आवाज सब जगह गूंजती है। पानी का लोटा लेकर श्री राजजी के हाथ धुलाए, कुल्ला कराया तथा हाथ और मुख रूमाल से पोंछाया।

श्री स्यामाजी चल्लू करी, दोए बीड़ी दो मुख में धरी।
श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग स्यामाजी उठे ततखिन।। ११८ ।।

श्री श्यामाजी ने भी हाथ धोए, कुल्ला किया, रूमाल से पोंछा फिर श्री राजजी श्री श्यामाजी ने पान बीड़ा मुख में लिया। श्री राजजी उठकर सिंहासन पर विराजमान हुए। साथ में श्री श्यामाजी भी उठे और सिंहासन पर विराजमान हुए।

दोऊ आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए।
सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां।। ११९ ।।

युगल स्वरूप सिंहासन पर विराजमान हुए और सखियों ने चौकी और चाकले उठाए। फिर सब सखियां नीचे पहली भोम में रसोई की हवेली में भोजन करने गईं और वापस आकर श्री राजजी महाराज से पान बीड़ा लिया।

सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर।
सैयां बैठी जुदे जुदे टोले, करें रेहेस बातें दिल खोलें।। १२० ।।

इतने में दोपहर का समय हो गया। बारह बज गए। श्री राजजी, श्री श्यामाजी नीले-पीले रंग के मन्दिर में सुख सेज्या पर आकर विराजमान हुए। सब सखियां जोड़े-जोड़े में अलग-अलग बैठीं और अपने दिल की बातें खुलकर एक-दूसरे से कहने लगीं।

तित कई बिध रस उपजावें, कई विलास मंगल मिल गावें।
कई हंस हंस ताली देवें, यों कई बिध आनन्द लेवें।। १२१ ।।

वह कई तरह से आनन्द लेती हैं और श्री राजजी महाराज के विलास के सुख के मंगल गीत गाती हैं। उनमें से कई सखियां हंस-हंसकर ताली देती हैं और कई तरह का आनन्द लेती हैं।

कई बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए।
मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें।। १२२ ।।

कई नवीं भोम में छज्जों पर जाकर अंग से अंग मिलाकर बैठ जाती हैं और अपनी मधुर वाणी से एक दूसरे से प्रेम बढ़ाती हैं।

रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाए या मुख।
सरूप सोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता।। १२३ ।।

वह अनेक तरह की बातों का सुख लेती हैं। उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। सखियों के स्वरूप, शोभा, सुन्दरता, वस्त्र तथा आभूषणों की शोभा का प्रकाश चारों ओर फैलता है।

कई बैठत मिलावे आए, बैठें अंगसों अंग लगाए।
सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें।। १२४ ।।

कई मिलकर आती हैं और अंग से अंग लगाकर बैठ जाती हैं और एक-दूसरे से बड़े प्रेम में मग्न होकर बातें करती हैं।

Nijanand App

हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजीको देवें।। १२५ ।।

हंसी और विनोद की ऐसी बातें करती हैं कि अधिक प्रेम और सुख का अनुभव होता है। इस तरह से सखियां आपस में एक-दूसरी को सुख लेती-देती हैं।

कई बैठत जाए हिंडोले, अनेक करत कलोलें।
कई बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिने रंगें।। १२६ ।।

कई सखियां सातवीं और आठवीं भोम के हिंडोलों में जाकर आनन्द करती हैं। कई सखियां अन्दर शयन के मन्दिर में पलंगों पर बैठकर तरह-तरह के आनन्द की बातें करती हैं।

यों अनेक विधें सुख नित, पियाजी को सदा उपजत।
सब सैयां पोहोर पीछल, टोलें तीसरी भोम आवें चल।। १२७ ।।

इस तरह से रोज ही पियाजी के अनेक तरह के सुख सदा लेती हैं। एक पोहोर (पहर) बाद तीन बजे सायं सखियों की टोलियां तीसरी भोम में चलकर आ जाती हैं।

मंदिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब।
तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल।। १२८ ।।

जब सब सखियां नीले-पीले मन्दिर के सामने आकर खड़ी हो जाती हैं तब दरवाजा खुलता है और श्री राजश्यामाजी के दर्शन होते हैं। इसके बाद छठी भोम से सुन्दर सुखपाल आकर तीसरी भोम के छज्जे के साथ लग जाते हैं और श्री श्यामाजी श्री राजजी के साथ एक सुखपाल में बैठती हैं।

दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कई रंग।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन।। १२९ ।।

दो-दो सखियां मिलकर एक-एक सुखपाल में बैठती हैं और कई तरह के आनन्द लेती हैं। जहां जाने की इच्छा होती है वहां ले जाते हैं।

या जमुनाजी या तलावे, आए खेलें जो मन भावें।
श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे।। १३० ।।

कभी जमुनाजी, कभी हौज कौसर तालाब में आकर इच्छा के अनुरूप खेल खेलते हैं। श्री राजश्यामाजी के सुखपाल के पास ही सब सुखपाल उतार देते हैं।

जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब।। १३१ ।।

सभी जुदा-जुदा सखियों के समूह वनों में खेलते हैं और नए-नए आनन्द करते हैं। यह दो घड़ी दिन रहने तक खेलते रहते हैं।

सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें।
श्री राज स्यामाजी उठकर, उतारे हैं वस्तर।। १३२ ।।

सब सखियां श्री राजश्यामाजी के पास आकर झीलने की बात करती हैं। श्री राजश्यामाजी उठकर अपने वस्त्र उतारते हैं।

Nijanand App

पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामाजी सैयां सबन।
इत एक घड़ीलो झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें।। १३३ ।।

श्री राजश्यामाजी व सखियां सब झीलने (स्नान करने) के वस्त्र पहनते हैं और एक घड़ी तक जल में कई तरह के खेल करते नहाते हैं।

बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक।
हुओ संझाको अवसर, राज स्यामाजी बैठे सिनगार कर।। १३४ ।।

जब एक घड़ी दिन बाकी रह जाता है तब सब सिनगार करते हैं। संझा (संध्या) के समय श्री राजश्यामाजी सिनगार करके बैठते हैं।

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजीके पांउ लागे।। १३५ ।।

सब सखियां आपस में सिनगार कराती हैं तथा एक-दूसरे से आगे होकर आती हैं। मन में बड़ी उमंग भरकर श्री राजश्यामाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं।

पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास।। १३६ ।।

प्रणाम करके पीछे लौटती हैं। जैसा मन चाहता है वैसा खेलती हैं। वन के अन्दर कई तरह के फूल खिलकर सुगन्धि बिखेरते हैं जहां सखियां विलास का आनन्द लेती हैं।

ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग।। १३७ ।।

चन्द्रमा, वन, सभी वनस्पति तथा कण-कण में रोशनी सब जगह फैली है। जहां मन में उमंग लेकर सखियां कभी-कभी पियाजी के संग भी खेलती हैं।

इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगें।
इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल।। १३८ ।।

यहां वन में कई तरह के मेवा आरोग कर वन में आनन्द लिया, फिर सुखपालों में आकर बैठ गए।

इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत।
घरों आए सुखपाल सारे, राज स्यामाजी पांचमी भोम पधारे।। १३९ ।।

इतने में एक पहर रात हो गई और सुखपालों को घर की तरफ चलाया। सभी सुखपाल पांचवीं भोम के छज्जे के साथ आकर लगाए गए। श्री राजश्यामाजी पांचवीं भोम शयन के वास्ते पधारे।

पंद्रा दिन खेलें बन, पंद्रा दिन सुख भवन।
अब कहूं भवन को सुख, जो श्री धनीजी कह्यो आप मुख।। १४० ।।

पन्द्रह दिन वन में खेलते हैं और पन्द्रह दिन रंग महल के अन्दर सुख लेते हैं। रंग महल के सुखों का वर्णन करती हूं जो श्री राजजी महाराज ने अपने श्रीमुख से कहे थे।

बनथें आए सिनगार कर, संझा तले भोम मन्दिर।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी।। १४१ ।।

वन में सिनगार करने के बाद लौटे तो सायंकाल पहली हवेली में (रसोई की हवेली में) आरोग कर चौथी भोम में चढ़े। वहां नवरंगबाईजी अपने जुत्थ (समूह) के साथ नृत्य करने को तैयार हैं।

Nijanand App

निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें।। १४२ ।।

चौथी भोम की चौरस चौथी हवेली में नवरंगबाईजी नृत्य करती हैं और साथ में कई बाजे बजते हैं। नवरंगबाईजी नृत्य करती हैं और गाती हैं बाकी सखियां स्वर पूरती हैं।

कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन।
पांऊं ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे।। १४३ ।।

हाथ के और चरणों के आभूषण पड़ताल (पैरों से ताल देना) पड़ने पर बजते हैं। नवरंगबाई ऐसी कला से पांव चलाती हैं कि उनमें घूंघरियों की आवाज अच्छी निकलती है।

जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पांउं चलावें।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन।। १४४ ।।

जब पैर के दो आभूषण की आवाज बुलाती हैं तो दो बोलते हैं। यदि तीन की इच्छा होती है तो तीन बजते हैं और चार की इच्छा होती है तो चार बजते हैं। इस तरह की अदभुत कला से नवरंगबाई पैर चलाती हैं।

जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे।। १४५ ।।

जब एक झांझरी का स्वर निकालती हैं तो लगता है यही सबसे अच्छा है। बीच-बीच में आभूषणों को जैसा बुलाना चाहते हैं वह वैसा ही बजता है।

जब बोलावें सर्वा अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छब जुदी सबोंकी सोहावे।। १४६ ।।

जब वह अंगों के सब आभूषणों को बुलाना चाहती हैं तो सब आभूषण एक संग बोलते हैं। जब अलग-अलग उनके स्वरों को बुलाती हैं तो सबकी अलग आवाज ही अच्छी लगती है और शोभा देती है।

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान।
क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत।। १४७ ।।

हर एक आभूषण अलग-अलग गान करते हैं और उनके साथ ही मुख से बजने वाले बाजों की एक ही तान निकलती है। इस प्रकार का नृत्य का बखान किस मुख से कहूं? उसका आनन्द मोमिन जो चितवन करते हैं, वही जानते हैं।

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें।
सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजी के आगे बिराजे।। १४८ ।।

अनेक स्वरों में बाजे बजते हैं जिनकी ध्वनि पांव की पड़ताल से गरजती हैं। सखियां सिनगार (सज) कर धनीजी के सामने बैठी होती हैं।

निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान।
इन लीला में आयो चित्त, छोड़्यो जाए न काहूं कित।। १४९ ।।

नृत्य के समय आभूषण की आवाज से स्वर निकलते हैं जो सब सैयों (सखियों) को एक समान सुनाई देते हैं। जब इस लीला में चित्त लग जाता है तो इसे छोड़ने को दिल नहीं करता।

Nijanand App

छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटें।
इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती।। १५० ।।

जब चित्त इस लीला से छुड़ाने पर नहीं छूटता तो आत्मा की नजर कैसे हट सकती है? यहां बहुत तरह की लीलाएं होती हैं। यह सुख वही सखियां जानती हैं जिनने आनन्द लिया होता है।

थंभों दिवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत।
पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कई रंग नंग विसाल।। १५१ ।।

थंभों में, दीवारों में तथा नगों के प्रकाश में लगता है जैसे सब जगह नृत्य हो रहा है। नृत्य की हवेली के पीछे की तरफ मन्दिर और दीवारें सफेद रंग की हैं जिनमें कई रंग के नग दिखाई देते हैं।

दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दिवाल दिल साखी।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल।। १५२ ।।

दाहिने तरफ लाखी (गहरा लाल) रंग का मन्दिर है जिसमें कई तरह के कटाव दीवारों में बने हैं। बाई तरफ पीली दीवार है जिसमें काले, सफेद और लाल रंग झलकते हैं।

सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस।। १५३ ।।

सामने तीसरी हवेली की पिछली दीवार नीले रंग की दिखाई देती है। इस तरह से चारों दिशाओं से किरणें आपस में लड़ती हैं। हवेली में श्री राजजी महाराज की नजरों से नूर की बरसात होती है। इस जबान से धनी के आनन्द का क्या वर्णन करूं?

पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख अग्या करके बोलावें।
इतहीं थें अग्या करी, पांउं लाग सेज्या दिल धरी।। १५४ ।।

यह नृत्य की लीला एक पहर (प्रहर) तक चलती है। उसके बाद श्री राजजी महाराज आज्ञा करके बुलाते हैं। श्री राजजी की आज्ञा से सब सखियों ने पांव लगकर सेज्या (शयन) की इच्छा की।

दई अग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्री राज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे।। १५५ ।।

श्री राजजी महाराज ने सखियों को आज्ञा दी। सभी श्री राजजी श्री श्यामाजी के चरणों में प्रणाम कर शयन के वास्ते अपने-अपने मन्दिरों में गईं। रंग परवाली मन्दिर में श्री राजजी और श्री श्यामाजी सेज्या पर पधारे और कुछेक वस्त्र आभूषण उतारे।

ए मंदिर रंग-परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत।। १५६ ।।

इस रंग परवाली मन्दिर की लालिमा का मैं कैसे वर्णन करूं? इसमें अनेक रंगों की किरणें उठती हैं जिनकी चमक का वर्णन मुझसे नहीं कहा जाता।

पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सबों मन्दिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे।। १५७ ।।

पीछे बीस एक सखियां श्री राजजी श्री श्यामाजी के पास रह जाती हैं। यह भी सेवा करके अपने-अपने मन्दिरों में वापस आती हैं। श्री राजजी सब मन्दिरों में पधारते हैं। श्री राजजी महाराज सब सखियों के अन्दर विराजमान होते हैं वही बाहरी स्वरूप धारण कर सेज्या का सुख देते हैं।

Nijanand App

अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चितको।
सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात।। १५८ ।।

यहां रंग परवाली मन्दिर और शयन के मन्दिरों के प्रेम का कैसे बयान करूं? यहां पर सखियां अपना मनचाहा सुख लेती हैं। सारी रात सुख लेने के बाद सवेरे तीसरी भोम में आ जाती हैं।

अब कहूं या समें की बात, सो तो अति बड़ी विख्यात।
कोई होसी सनमन्धी इन घर, सो लेसी वचन चित धर।। १५९ ।।

अब इस समय की बात कहती हूं जिसकी हकीकत बहुत बड़ी है। जो परमधाम का सुन्दरसाथ होगा वह इन वचनों को चित्त में धारण करेगा।

ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार।
सनमन्धियों की एही पेहेचान, वाके सालसी सकल संधान।। १६० ।।

यह वाणी बड़ी सख्त और दिल को चुभने वाली और सार से भरी है। इसे लेकर ब्रह्मसृष्टि अक्षरधाम से पार परमधाम पहुंच जाएगी। ब्रह्मसृष्टियों की यही पहचान है कि यह वचन उनके अंग-अंग में चुभ जाएंगे।

जाको लगी सोई जाने, मुख बरनी न जाए बखाने।
खेल मांग के आइयां जित, धनी आए के बैठे तित।। १६१ ।।

यह बात जिसको चुभेगी वह समझेगा। इस मुख से उस सुख का वर्णन सम्भव नहीं है। सखियां परमधाम से खेल मांगकर यहां आई हैं, वहीं श्री राजजी महाराज उनके दिलों में विराजमान हो गए हैं।

पासे बैठके खेल देखावें, हांसी करने को आप भुलावें।
भूलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन।। १६२ ।।

श्री राजजी महाराज यहीं मोमिनों के दिल में बैठकर ही खेल दिखा रहे हैं और हमारे ऊपर हंसी करने के लिए हमें भुला रहे हैं। श्री राजजी महाराज ने हमारे मन को ऐसा भुला दिया है कि खेल देखकर हम अपने घर और धनी को भूल गए।

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन।
जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम।। १६३ ।।

श्री महामतिजी सब सुन्दरसाथ से कहते हैं कि तुम इन वचनों से घर में जाग जाओगे। जहां तुम मूल-मिलावे में मिलकर बैठी हो, वहां तुम अपने आपको और धनी को याद करो।

तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानी सों बिगत।
इत बड़ा चौक जो मध, ताकी अति बड़ी सोभा सनन्ध।। १६४ ।।

नीचे प्रथम भोम की पांचवीं गोल हवेली मूल-मिलावे के थंभों की जुगत (युक्ति) अलग है, जिसका वाणी से वर्णन करना सम्भव नहीं है। इस बड़े चौक के बीच की बहुत बड़ी शोभा है।

आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएं बाएं दोऊ पार।
जोत चारों तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर।। १६५ ।।

दाएं, बाएं, आगे, पीछे, दोनों तरफ दो-दो थंभों की हारें (कतारें) हैं और चारों तरफ जवेर झलकते हैं।

Nijanand App

मंदिर दिवालों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार।
जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे।। १६६ ।।

मन्दिरों की दीवारों की, थंभों की शोभा झलकती है। ऊपर चंद्रवा (चंदोवा) नीचे गलीचे की ज्योति आपस में टकराती हुई शोभा देती हैं।

इत अनेक विधों के जो नंग, ताकी किरना देखावें कई रंग।
आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग।। १६७।।

यहां अनेक तरह के नग (नगीने) हैं जिनकी किरणें कई रंग की दिखाई देती हैं। यह किरणें आमने-सामने से बराबर आती हैं। इन तरंगों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच।
दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम।। १६८ ।।

इस चौक के बीच सुन्दर गलीचा भी उसी नूर का बिछा है और दुलीचा भी सुन्दर नरम पश्म का है।

याकी हंसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सो जंग।
किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग।। १६९ ।।

इस दुलीचे की बेलें और फूल तथा रंग हंसते दिखाई देते हैं और जवेर (हीरा-मोती) चमकते हैं। जवेरों के साथ इसकी भी किरणें निरन्तर चलती रहती हैं।

इत धरया जो सिंघासन, राज स्यामा जी के दोऊ आसन।
ताको रंग सोभित कंचन, जड़े मानिक मोती रतन।। १७० ।।

मध्य में जो सिंहासन रखा है वह श्री राजश्यामाजी के बैठने का है। इस सिंहासन का रंग सोने जैसा है जिसमें माणिक, मोती और रत्न जड़े हैं।

पीछले तीन थंभ जो खड़े, ता बीच कई नकसों नंग जड़े।
तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे।। १७१ ।।

सिंहासन के पिछले जो तीन थंभे हैं उनके बीच कई तरह के नग जड़े हैं। बीच में जो तकिए रखे हैं उनके सिरों के ऊपर के फूलों में हरे नग जड़े हैं।

उतरती कांगरी जो हार, बने आसमानी नंग तरफ चार।
कई बेल फूल जड़े माहीं, ताकी उठत अनेक रंग झांई।। १७२ ।।

आसमानी रंग की चारों तरफ उतरती सिंहासन में कांगरी बनी है जिसमें बेल बनी है, फूल जड़े हैं और अनेक रंगों की झांई (परछाईं) उठती है।

कई रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कई देते।
बांई बगलों तकिए दोए, बेलां बारीक बरनन कैसे होए।। १७३ ।।

यहां पर कई रंगों के नग (नगीने) हैं। कहां तक कहूं? हर एक नग से कई तरंगें निकलती हैं। बाईं बगल में दो तकिए रखे हैं जिन पर बारीक बेलें बनी हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

जो जनम सारे लो कहिए, तो एक नकस को पार न पैए।
पचरंगी पाटी मिहीं भरी, कई विध खाजली माहें करी।। १७४ ।।

यहां की एक नक्काशी का भी पार नहीं मिलता। सारे जन्म वर्णन करें तो नहीं कह सकते। पांच रंग की निवार है जिसमें सुन्दर भराव है और कई तरह की चित्रकारी की गई है।

कई चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्री जुगल बिहारी।
दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे।। १७५ ।।

श्री राजश्यामाजी जिस चाकले (आसनी) पर विराजमान हैं उसमें भी कई तरह की चित्रकारी है। इन दोनों स्वरूप श्री राजश्यामाजी को चित्त में ग्रहण कर लो और फिर आत्मा में आनन्द प्राप्त करो।

आतमसों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहू न कहीजे।
फेर फेर कीजे दरसन, आतम से न्यारे न कीजे अधखिन।। १७६ ।।

इन स्वरूप को आत्मा से कभी भी न्यारा (अलग) न करें और आत्मा के अतिरिक्त किसी से कहें नहीं। फिर-फिर कर इन स्वरूपों का चितवन आत्मा में करो और आत्मा से आधे क्षण भी न्यारे (अलग) न करो।

पेहेले अंगुरी नख चरन, मस्तक लों कीजे बरनन।
सब अंग वस्तर भूखन, सोभा जाने आतम की लगन।। १७७ ।।

पहले इन दोनों स्वरूपों की चरण की अंगुरी (उंगली) के नख से मस्तक तक वर्णन करती हूं। फिर सब अंगों का, आभूषणों का जैसे आत्मा जानती है, वर्णन करूंगी।

यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार के दीजे।
गलित गात सब भीजे, जीव भान भूंन टूक कीजे।। १७८ ।।

इन दोनों स्वरूपों को चितवन में धारण करो और अंग को कुर्बान करो। इन दो स्वरूपों की सुन्दरता में अपने जीव को मगन कर दो और संसार से हटाकर टुकड़े-टुकड़े कर दो।

रंग करो विनोद हांस, सांचा सुख ल्यो प्रेम विलास।
घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम।। १७९ ।।

तब श्री राजजी से हंसी और विनोद करके सच्चे प्रेम और विलास के सुखों को लो। परमधाम में तो मेरी परआतम श्री राजजी से सदा सुख लेती है।

पर इत सुख पायो जो मेरी आतम, सो तो कबहूं न काहू जनम।
इत बैठे धनी साथ मिल, हांसी करने को देखाया खेल।। १८० ।।

पर मेरी आत्मा को जो सुख यहां मिला वह किसी को किसी भी जन्म में नहीं मिला। यहां धनी और सुन्दरसाथ मिलकर बैठे हैं और हंसी करने के वास्ते खेल दिखा रहे हैं।

आगे बारे सहस्त्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हुआ भिल।
याको क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार।। १८१ ।।

बारह हजार सखियां हिल-मिलकर बैठी हैं जैसे एक अंग हों। इनके स्वरूप और सिनगार का कैसे वर्णन हो? यह देखने वाली आत्मा ही जान सकती है।

Nijanand App

कई कोट कहूं जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार।
जैसे भूखन तैसे वस्तर, तैसी सोभा सरूप सुन्दर।। १८२ ।।

यहां की शोभा की झलकार का वर्णन करोड़ों और बेशुमार जबानों से नहीं होता, क्योंकि जैसा आभूषण वैसा वस्त्र और वैसे ही श्री राजश्यामाजी के सुन्दर स्वरूप हैं।

इत बड़े चौक मिलावे, धनी साथको बैठे खेलावें।
जो खेल मांग्या है सैयन, जो देखाया फिराएके मन।। १८३ ।।

इस मूल-मिलावे के बड़े चौक में श्री राजजी महाराज सुन्दरसाथ को बिठाकर खेल दिखा रहे हैं। ब्रह्मसृष्टियों ने जो खेल मांगा है उसे उनके मन को फिराकर दिखा रहे हैं।

धनी धाम आप बिसर्जन, खेल देखाया जो सुपन।
तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्यों ए ना फिरत।। १८४ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को भेजकर सपने का खेल दिखाया। उसमें ऐसी सुरता लग गई कि अब पीछे लौटने को चित्त नहीं करता।

धनी दिए दरसन ता कारन, करने को सैयां चेतन।
धनी आप सैयों को दई सुध, सो हम गावत अनेक विध।। १८५ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने आकर दर्शन दिया कि सखियां सावचेत (सावधान) हो जाएं। श्री राजजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को खबर दी। उसे ही मैं अनेक तरह से गा-गाकर बताती हूं।

जागियां तो भी खेल न छोड़ें, फेर फेर दुखको दौड़ें।
धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख।। १८६ ।।

जागने पर भी खेल नहीं छोड़ते। बार-बार दुःख के लिए भागते हैं। श्री राजजी महाराज घर के सुखों की याद दिलाते हैं, फिर भी यह झूठा संसार जो लग गया है नहीं छूटता।

अब आप जगाए के धनी, हांसी करसी मिनों मिने घनी।
अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन।। १८७ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं आकर जगाया और अब आपस में बहुत बड़ी हंसी करेंगे। मैं सब सुन्दरसाथ से कहती हूं कि इन वचनों से परमधाम में जाग जाओगे।

ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां बरनन।
जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम।। १८८ ।।

यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है, इसलिए श्री राजजी का, परमधाम का, ब्रह्मसृष्टियों का वर्णन सुनाया है। जहां मूल-मिलावा में तुम सब मिलकर बैठी हो, वहां अपने आपको तथा श्री राजजी महाराज को याद करो।

करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम।
याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई।। १८९ ।।

यह जो मैंने तुमको जाहिरी में दिखाया है, उसकी तो अन्तरात्मा में पहचान करो और अपने अर्श घर की याद करो जिसे तुम्हारे बिना और कोई नहीं जानता।

Nijanand App

तुम मांगी धनीपे करके खांत, ए जो धनिएं करी इनायत।
याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या तित।। १९० ।।

तुमने खेल को धनी से चाहना करके मांगा और धनी ने भी तुम्हारे ऊपर कृपा करके दिखाया है। जहां मूल-मिलावा में बैठकर खेल को मांगा था, उस पल को याद करो।

स्याम स्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत।
पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब।। १९१ ।।

अपने अन्दर की नजर से श्री राजजी, श्यामाजी की शोभा को क्यों नहीं देखते? पीछला चार घड़ी दिन बाकी था। अभी भी वही समय है।

याद करो जो कह्या मैं सब, नींद छोड़ो जो मांगी है तब।
याद करो धनीको सरूप, श्री स्यामाजी रूप अनूप।। १९२ ।।

मैंने जो तुमसे कहा है उसे याद करो। वह फरामोशी छोड़ दो जो मांगी थी। अब श्री राजजी और श्यामा महारानी के सुन्दर स्वरूपों को याद करो।

याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनों मिने जेह।
सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जे उपजत।। १९३ ।।

उस स्नेह को भी याद करो जो हम सुन्दरसाथ मिल्कर करते थे और मिलकर उस सुख का आतम में आनन्द लेते थे।

रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती।। १९४ ।।

यह प्रेम के स्वरूप बड़े रसिया हैं। इनको चित्त में धारण करो। यहां हम सब कई तरह के आनन्द के खेल खेलते थे। मैं जागृत बुद्धि लेकर तुम्हें जगाती हूं और मूल परमधाम के सुख दिखाती हूं।

प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती।
पियाजी कहें इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती।। १९५ ।।

प्रेम के पूर (प्रवाह) सागर की लहरों के समान चलाती हूं और सब सुन्दरसाथ को भी आनन्द देती हूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि धनी श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान तारतम वाणी से कराती हूं।

तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जानें धाम में पैठियां, ए तो घरही में जाग बैठियां।। १९६ ।।

इसलिए श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को प्रेम से तौल रही हैं। प्रेम की परीक्षा लेती हैं और धाम के दरवाजे को खोलती हैं। जिससे सुन्दरसाथ अनुभव करें कि हम परमधाम में ही बैठे हैं। फिर तो यह धाम में जाग ही जाएंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८२ ॥

Nijanand App

सूरत इस्क पैदा होने की

तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए।
पूर चलाऊं प्रेम को, ज्यों याही में छाक छकाए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे अन्दर इश्क पैदा करने के वास्ते अब मैं प्रयत्न करती हूं। प्रेम के ऐसे पूर चलाऊंगी (इतना अधिक प्रेम करूंगी) जिससे तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए। तुम तृप्त हो जाओ।

इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस।। २ ।।

इश्क जिस तरह से तुम्हारे अन्दर आ जाए वही तरीका अपनाऊंगी, जब तुम्हारे अन्दर परमधाम की रुचि आ जाए तब समझना कि हमारे अन्दर इश्क आ गया है।

ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए।
सो फेर फेर याद देत हों, जो गया तुमें बिसराए।। ३ ।।

इस स्वप्न की भूमि में धनी के सुख तुम्हें भूल गए हैं और वही मैं तुम्हें बार-बार याद दिलाती हूं।

कीजे याद मिलाप धनी को, और सखियों के सनेह।
रात दिन रंग प्रेम में, विलास किए हैं जेह।। ४ ।।

परमधाम में हम धनी से कैसे मिलते थे, सखियों से कैसे प्रेम करते थे और रात-दिन प्रेम में मगन होकर आनन्द लेते थे। उन्हें याद करो।

निस दिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम।। ५ ।।

रंग महल में श्री राजश्यामाजी के साथ आठों पहर सब अंगों से सुख लेते थे। उन्हें याद करो।

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन।। ६ ।।

यह अपनी आत्मा का धन है। इसे सावधान होकर चित्त में ग्रहण कर लो। वचन और कर्म से इसे एक पल के लिए भी मत छोड़ो।

एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख।। ७ ।।

अपने अखण्ड सुख याद आवें तो अपनी आत्मा जागी समझो, तो इसी से अपने को इश्क आ जाएगा और श्री राजजी के पास चले जाएंगे।

इस्क धनी को आवहीं, याही याद के माहें।
इस्क जोस सुख धनी बिना, और पैदा कहूं नाहें।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना इश्क (जोश) कहीं नहीं मिलता। धनी की याद आने पर ही उनका इश्क मिलता है।

Nijanand App

ताथें पल पल में ढिग होइए, सुख लीजे जोस इस्क।
त्यों त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक।। ९ ।।

इसलिए प्रति क्षण श्री राजजी महाराज का चितवन करें तथा इश्क और जोश का सुख लें। जैसे-जैसे तुम कपटी लोगों का संग छोड़ोगे, वैसे-वैसे तुम्हारे तन के दुःख समाप्त हो जाएंगे।

जो लों इस्क न आइया, तोलों करो उपाए।
योंही इस्क जोस आवसी, पल में देसी पट उड़ाए।। १० ।।

जब तक इश्क नहीं मिल जाता तब तक उपाय करते रहो। इसी तरह से इश्क और जोश आ जाएगा जो पल भर में तुम्हारी माया का परदा हटा देगा।

पल पल में पट उड़त है, बढ़त बढ़त अनूकरम।
इस्क आए जोस धनी के, उड़ गयो अन्तर भरम।। ११ ।।

पल-पल में श्री राजजी महाराज की जैसे याद आती है, माया का परदा हटता है। जैसे-जैसे धनी का इश्क और जोश धीरे-धीरे बढ़ता है उसी तरह से अन्दर के सब संशय मिटते जाते हैं।

निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए।
छेटी खिन ना पर सके, तब इस्क जोस अंग आए।। १२ ।।

इसलिए हर पल सुरता धनी के चरणों में रखो और एक पल के लिए भी उनसे अलग मत होओ। जब तुम्हारी सुरता एक पल के लिए भी दूर नहीं होगी तब इश्क और जोश अंग में आ जाएंगे।

इस्क पेहेले अनुभवी, निज सरूप निजधाम।
तिन खिन बेर ना होवहीं, धनी लेत असल आराम।। १३ ।।

इश्क से, पहले अपनी परआतम तथा घर का अनुभव होता है। फिर सुरता धनी के चरणों में अखण्ड आनन्द प्राप्त करती है इसमें एक क्षण की भी देरी नहीं होती।

बैठे मूल मेले मिने, धनी आगूं अंग लगाए।
अंग इस्क जी अनुभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए।। १४ ।।

हम मूल-मिलावे में धनी के सामने अंग से अंग लगाकर बैठे हैं। जिस अंग को इश्क का अनुभव हो जाता है उनकी तरफ क्यों नहीं देखते हो ?

ए वचन विलास जो पेड़ के, आए हिरदे आतम के अंग।
तब खिन बेर न लागहीं, असल चित्त एक रंग।। १५ ।।

यह मूल-मिलावा के आनन्द के वचन हैं जो मेरी आत्मा के अंग में समा गए हैं। अब एक क्षण का भी समय नहीं लगेगा, क्योंकि आत्मा और परआतम एक रूप हो गए हैं।

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जाग्रत।
खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब बिध इत।। १६ ।।

अब बैठने में, उठने में, चलने में, सोने में, स्वप्न में, जागृत अवस्था में, खाते-पीते समय, खेलते समय, सबके सुख यहां लीजिए।

Nijanand App

एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुख धाम।
अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम।। १७ ।।

ऐसा बल जब तुम करोगे तो निश्चित ही तुम्हें अखण्ड परमधाम के सुखों की ताकत मिलेगी। तुम्हारे इस तरह के अरस-परस (पारस्परिक) व्यवहार से श्री राजश्यामाजी तुम्हें अवश्य सुख देंगे।

जिन जानो ढील इस्क की, जब रस आयो अंतस्करन।
तब सुख पाइए धाम के, निस दिन रंग रमन।। १८ ।।

जब परमधाम का ऐसा आनन्द तुम्हें मिलने लगेगा फिर इश्क के आने में देर मत समझो। तब परमधाम के अखण्ड सुख मिलने लगेंगे और रात-दिन आनन्द से खेलने लगेंगे।

फेर फेर सुरत साधिए, धनी चरित्र सुख चैन।
इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन।। १९ ।।

फिर अपनी सुरता बार-बार धनी की लीला और सुखों में लगाओ। तब इश्क आने में कुछ भी देर नहीं लगेगी और तुम्हारी परआतम जाग जाएगी।

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार।
फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार।। २० ।।

श्री राजश्यामाजी के स्वरूप को बार-बार देखो बार-बार उनके सिनगार और आभूषणों को देखो। बार-बार मूल-मिलावा को देखो जहां श्री राजजी महाराज तुम्हें खुश करने के लिए बैठे हैं।

फेर फेर देखो धनी हेत की, फेर फेर रंग विलास।
फेर फेर इस्क रस प्रेम की, देखो विनोद कई हांस।। २१ ।।

बार-बार धनी के प्यार की, उनके आनन्द की, मस्ती की, उनके इश्क के रस की, प्रेम की तथा हांस (हंसी) और विनोद की बातों को बार-बार देखो।

अंदर धनी के देखिए, एक चित्त हेत रस रीत।
क्यों कहूं रंग हांस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत।। २२ ।।

एक चित्त होकर धनी के आनन्द और रस रीति को देखो। उनके आनन्द, हंसी, विनोद, सुख, प्यार, स्नेह और प्रीति जैसा वह मोमिनों से करते हैं, वह मैं कैसे बताऊं?

खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल।
ए सुख आए इस्क, बेर ना लगे एक पल।। २३ ।।

धनी के याद करने में प्रतिपल सुख होगा। यह सुख आने से इश्क आएगा। इसमें एक क्षण की भी देर नहीं लगेगी।

मैं जो दई तुमें सिखापन, सो लीजो दिल दे।
महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे ब्रह्मसृष्टियो! मैंने जो तुम्हें समझाया है उसे दिल में धारण कर लो। यही हमारे जीवन का लक्ष्य है।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३०६ ।।

Nijanand App

बन में सरूप सिनगार

वतन आपनो, ब्रह्मसृष्ट को देऊं बताए।
धाम की सुध मैं सब देऊं, ज्यों अंतस्करन में आए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपनी ब्रह्मसृष्टियों को घर की पूरी पहचान करा देती हूं जिससे उनके दिल में याद आ जाए।

इन भोम की रेती क्यों कहूं, उज्जल जोत अपार।
भोम बन आसमान लो, झलकारों झलकार।। २ ।।

इस भूमि की रेती बहुत उज्ज्वल है। इसकी किरणें पृथ्वी पर, वनों में और आसमान तक झलकती हैं।

जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान।
तिन जिमी के बन को, जुबां कहा करसी बयान।। ३ ।।

जिस जमीन के एक कण की ज्योति आसमान में नहीं समाती, तो फिर इस जमीन के वनों की शोभा यह जबान कैसे वर्णन करे?

इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास।
जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास।। ४ ।।

इस जमीन के रेत के कण की ज्योति आसमान तक जाती है, तो फिर इस जमीन के नगों (नगीनों) के प्रकाश को जबान कैसे वर्णन करे?

जोत जिमी पोहोंचे आसमान लो, आसमान पोहोंचे जोत बन।
सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन।। ५ ।।

जमीन की ज्योति आसमान तक फैलती है और आसमान से फिर ज्योति वनों से टकराती है। इस तरह चारों तरफ किरणें फैलकर सारे परमधाम में छा जाती हैं।

ए मंदिर झरोखे बन पर, झलकत हैं कई नंग।
बन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग।। ६ ।।

मन्दिरों के झरोखे वन के ऊपर कई नगों (नगीनों) से जड़े जगमगाते हैं। झरोखों के साथ वन, फूल, फल और बेलें बड़ी सुन्दर लगती हैं।

कई रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों बन।
सो छाए रही जोत आसमान में, पसु पंखी नूर रोसन।। ७ ।।

कई किस्म के रंग और नगों की झलकार जमीन, दीवारों और वनों पर होती है। यह तेज आसमान में छा जाता है जिसमें सुन्दर पशु-पक्षियों की शोभा और बढ़ जाती है।

जिमी आकास बिरिख नूर के, पात फूल फल नूर।
दिवाल झरोखे नूर के, क्यों कहूं नूर जहूर।। ८ ।।

यहां की जमीन, आकाश, वृक्ष, पत्ते, फूल, फल, झरोखे, दीवार सब नूर के हैं। इनके तेज का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

जात अलेखे पंखियों, पसु अलेखे जात।
जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात।। ९ ।।

यहां अनगिनत पशु-पक्षियों की जातियां हैं। उन जातियों में भी अनेक तरह की शोभा है। इसका वर्णन कैसे करूं?

पसु पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान।
सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बयान।। १० ।।

पशु-पक्षी बहुत सुन्दर हैं और मीठी बोली बोलते हैं। उनके बालों की तथा परों की सुन्दरता का कैसे बयान करूं?

कई विध बानी बोलहीं, कई विध जिकर सुभान।
कई दिन रातों रटत हैं, मुख मीठी कई जुबान।। ११ ।।

यह कई तरह की बोली बोलकर जिक्र-ए-सुभान करते हैं। कई तो उनमें अपनी मीठी जबान से रात-दिन श्री राजजी महाराज की रट लगाए रहते हैं।

मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुन्दर अमान।
जिन विध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान।। १२ ।।

उनमें कई सुन्दर मीठे नैनों एवं मीठे मुख की मीठी बोली से सुन्दर और प्यारे लगते हैं। वह जिस तरह से धनी रीझें उसी तरह की बोली बोलकर, खेलकर, अर्थात् तान लगाकर रिझाते हैं।

विचित्र बानी माधुरी, बन में गूंजें करें गान।
चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान।। १३ ।।

उनकी विचित्र तरह की मीठी वाणी से वन गूंज रहा है। उन सबकी चेतनता, कला और चतुराई का कैसे वर्णन करूं?

आए दरवाजे आगे खड़े, खेलोने अति घन।
स्याम स्यामाजी साथ को, पसु पंखी लेवें दरसन।। १४ ।।

यह धनी के खिलौने दरवाजे के आगे चांदनी चौक में आकर खड़े हो जाते हैं और श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ के दर्शन कर प्रणाम करते हैं।

ठौर खेलन के चित धरो, विध विध के बन माहें।
केहेती हों आगूं तुम, जो हिरदे चढ़ चढ़ आए।। १५ ।।

इन पशु-पक्षियों के खेलने के ठिकाने ध्यान से देखो जो वन में तरह-तरह के हैं। जिसकी याद बार-बार मेरे मन में आती है। मैं तुम्हारे आगे कहती हूं ताकि तुम्हें याद आ जाए।

आगूं धाम के बन भला, जमुना जी सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट।। १६ ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी के सातों घाट के वन शोभायमान हैं। तीन दाएं, तीन बाएं तथा एक बीच में जल के ऊपर पाट घाट का कठेड़ा शोभायमान है।

Nijanand App

घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जांहें।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहें।। १७ ।।

जल के ऊपर पाट घाट के पीछे अमृत वन है। इस वन की शोभा कैसे कहूं? यहां के शब्द वहां नहीं पहुंचते।

झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि।
इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि।। १८ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ पाट घाट में जल के खेल खेलते हैं। इस समय के आनन्द और रंगरलियों का कैसे वर्णन करूं?

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, अम्बर भरयो झलकार।। १९ ।।

मानिक, हीरा, पाच और पुखराज के चारों रंगों के दो-दो थंभ (स्तम्भ) पाट घाट की चारों दिशाओं के चार दरवाजे में शोभा देते हैं। पाट घाट के चारों कोनों पर चार थंभ नीलवी (नीलम) के हैं जो आसमान तक झलकते हैं।

ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर।
साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर।। २० ।।

जल के ऊपर बारह थंभों के ऊपर चांदनी आई है (छत आई है)। सुन्दरसाथ चारों तरफ फैलकर बैठते हैं।

सोभा बन संझा समें, फल फूल खुसबोए।
साथ बैठा पाट ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए।। २१ ।।

संध्या के समय वन की शोभा फल फूलों की सुगन्धि से भरी है। सब सुन्दरसाथ पाट घाट पर बैठते हैं। श्री राजश्यामाजी सुन्दरसाथ के मध्य बैठते हैं।

बीच बैठक राज स्यामाजी, साथ गिरदवाए घेर।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूं इन बेर।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में बैठते हैं। सुन्दरसाथ घेरकर बैठते हैं। सुन्दरसाथ के सिनगार के इस समय की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेड़े भराए।
जोत करी आकास लों, जानों आकास में न समाए।। २३ ।।

सुन्दरसाथ पाट घाट पर कठेड़े तक भरकर बैठे हैं। उनकी सुन्दरता की ज्योति आकाश तक फैलती है।

कई रंग नंग कठेड़े, परत जल में झांईं।
तेज जोत जो उठत, तले मावे न आकास माहीं।। २४ ।।

कठेड़े में कई तरह के रंगों के नग जड़े हैं। इनकी झलकार जल में होती है। उसकी जो किरणें उठती हैं वह आकाश में नहीं समातीं।

Nijanand App

सो झांईं जल लेहेरां लेवहीं, तिनसे लेहेरां लेवे आसमान।
कई रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान।। २५ ।।

जैसे-जैसे जल में झांई (परछाईं) लहरों के साथ हिलोरे लेती है वैसे ही उस झांई की तरंगें आकाश में हिलती हैं। इनके कई रंग की लहरें जिनका तेज एक-दूसरे रंग को दबा नहीं सकता, उठती हैं।

जल में सिनगार सखियन के, लेहेरां लेवें संग छांहें।
होए ऊंचे नीचें आसमान लो, केहेनी अचरज न आवे जुबांए।। २६ ।।

जमुनाजी के जल में सखियों के सिनगार की परछाईं लहरें लेती है और उन लहरों का तेज आसमान तक फैलता है। इस चकित करने वाली शोभा का वर्णन जबान से नहीं होता।

जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवें माहें जल।
जानों तले ब्रह्मांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल।। २७ ।।

पाट घाट की सारी शोभा जल की लहरों में झलकती है। लगता है नीचे जल में दूसरा ब्रह्माण्ड बन गया है जिसका तेज आसमान तक फैल रहा है।

बन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहें।
एक नयो अचंभोए बन्यो, केहेनी में आवत नाहें।। २८ ।।

वन की पाट घाट का तेज आसमान तक फैलता हुआ जल में दिखाई देता है। इस तरह से एक हैरानी वाली शोभा दिखाई देती है जो कहनी में नहीं आती।

ज्यों ज्यों जल लेहेरां लेवहीं, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत।
कई विध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत।। २९ ।।

जैसे-जैसे जल की लहरें हिलती हैं वैसे-वैसे पाट घाट के प्रतिबिम्ब का ब्रह्माण्ड जल में हिलता है। इसके कई तरह के तेज की किरणें आसमान तक लहराती हैं।

ए ब्रह्मांड कह्यो न जावहीं, पर समझाए न निमूने बिन।
सब्दातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन।। ३० ।।

इस प्रतिबिम्ब के ब्रह्माण्ड की शोभा वर्णन करने में नहीं आती, परन्तु नमूने के बिना कैसे समझाएं? यह शोभा शब्दातीत की है जिसका वर्णन इस झूठी जमीं में बैठकर करना है।

हर घाटों सोभा कई विध, कई जुदे जुदे सुख सनंध।
बन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध।। ३१ ।।

हर घाटों की शोभा कई तरह की है तथा कई तरह के अलग-अलग सुख हैं। अपने वनों को अच्छी तरह से देखें। यहां पर शीतलता और रसों से भरपूर सुगन्धित हवा चलती है।

क्यों कहूं सोभा बन की, और छाए रही फूल बेल।
तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल।। ३२ ।।

वनों की शोभा मैं कैसे कहूं जहां पर फूलदार बेलें छाई हैं। उनके नीचे श्री राजश्यामाजी, सखियां एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेलती हैं।

Nijanand App

जिमी बन जुबां न आवहीं, तो क्यों कहूं सिनगार जहूर।
सुन्दरता सरूपों की, कई रस सागर भर पूर।। ३३ ।।

जमीन की, वन की सिफत जबान से कही नहीं जाती है, तो सिनगारों की शोभा का वर्णन कैसे करें? श्री राजश्यामाजी के सुन्दर स्वरूपों की शोभा कई सागरों से भी अधिक भरपूर दिखाई देती है।

अब क्यों कहूं जोत सरूपों की, और सुन्दरता सिनगार।
वस्तर भूखन इन जिमी के, हुआ आकास उद्दोतकार।। ३४ ।।

अब श्री राजश्यामाजी के स्वरूपों की और सिनगार की सुन्दरता का वर्णन कैसे कहें? उनके वस्त्र और आभूषणों के नूर के तेज से आकाश जगमगा रहा है।

कई रंग के नकस, कई भांत बेल फूल माहें।
कई रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहें।। ३५ ।।

आभूषणों में कई किस्म के रंग, नक्शकारी, बेलें, फूल, जवाहरात जड़े हैं जो इस जबान से वर्णन करने में नहीं आते।

इन बेल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग।
तिन नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३६ ।।

इन बेलों के फूल की कई पंखुड़ियां हैं और हर पंखुड़ी में कई तरह के नग जड़े हैं। प्रत्येक नग में कई तरह के रंग और प्रत्येक रंग में कई तरह की तरंगें उठती हैं।

ए स्वाद आतम तो आवहीं, जो पलक न दीजे भंग।
अरस-परस एक होवहीं, परआतम आतम संग।। ३७ ।।

आत्मा को इसका स्वाद तब मिले जब नजर उधर ही लगी रहे। तब आतम और परआतम अरस-परस (परस्पर) एक होती है।

अब भूखन की मैं क्यों कहूं, जो इत हैं हेंम मनी।
कई विध की इत धात है, नंग जात नाहीं गिनी।। ३८ ।।

आभूषणों की शोभा का वर्णन मैं कैसे करूं जो वहां सोने के हैं और मणियों से जड़े हैं। आभूषण भी कई धातुओं के हैं जिनके नगों की किस्में नहीं गिनी जातीं।

क्यों कहूं इन बानी की, मुख से उचरत जे।
मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इस्क के।। ३९ ।।

यहां जो मुख से वाणी बोलते हैं उसका वर्णन कैसे करूं? मीठी-मीठी मुस्कान के साथ सभी इश्क से भरपूर वाणी बोलते हैं।

हंसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हंसत चरन।
भों भृकुटी गाल अधुर, हंसत सिनगार भूखन।। ४० ।।

सबकी आंखें, मुख, नासिका, कान, चरण, भृकुटि, भौंह, गाल, होंठ और सब सिनगार के आभूषण, हंसते हुए दिखाई देते हैं।

Nijanand App

चाल चातुरी कहा कहूं, लटक चटक भरे पाए।
मटके अंग मरोरते, कछू ए गत कही न जाए।। ४१ ।।

इनकी चतुर चाल भी लटक-चटक से भरी है और यह मटक कर अंग मरोड़ते हैं। तब यह शोभा कहने में नहीं आती।

ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान।
ए भोम बन धनी धाम को, रेहेस लीला नित्यान।। ४२ ।।

स्वरूपों की मुस्कराहट के सुख, रस भरे रंगों की चाल, सुन्दर मीठी वाणी, वह भूमि, वन, धाम धनी की नित्य लीला करने के स्थान हैं जिनके सुखों का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

अब क्यों कहूं भूखन की, और क्यों कहूं बानी मिठास।
क्यों कहूं रेहेस जो पिउ को, जो अंग अंग में उलास।। ४३ ।।

अब आभूषण की और उनसे निकलने वाली मीठी वाणी का कैसे बखान करूं? श्री राजजी महाराज के अंग-अंग में उल्लास भरा है। उस रहस्य को कैसे बताऊं?

इन जिमी इन बन में, करें खेल सरूप जो एह।
कहा कहूं इन विलास की, जो करत प्रेम सनेह।। ४४ ।।

इस जमीन और वनों में यह स्वरूप रोज ही खेलते हैं। इनके प्रेम, स्नेह और विलास का कहां तक वर्णन करूं?

कई रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूं विलास।
प्रेम प्रीत सनेह कई रीत, मीठी मुसकनी कई हांस।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ विलास के कई तरह के रस भरे आनन्द प्रेम, प्रीति, स्नेह के ढंग तथा मीठी मुस्कान और हंसी का वर्णन कैसे करूं?

नैन सों नैन लेत रंग सैनें, अरस-परस उछरंग।
उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब विध अंग।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज नैनों से नैन मिलाते हैं और मस्ती में इशारे करते हैं जिससे अरस-परस (परस्पर) आनन्द और बढ़ जाता है। छाती, मुख, नेत्र, कान, कण्ठ सब अंग सुखदायी दिखाई देते हैं।

बंके नैन समारे सर बंके, बंकी सारस भों बंकी।
बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज के तिरछे नेत्र तीर के समान चुभने वाले हैं। इनके ऊपर तिरछी भौंहें शोभायमान हैं। श्री राजजी महाराज के अनूठे वचन तीर के समान चुभते हैं (अनोखा आनंद देते हैं)। उनकी कमर लटकाकर चलने की चाल सुन्दर शोभायुक्त है।

रस लेत धाम के सरूपसों, एक दूजी को ठेल।
विविध विहार अलेखे अंगों, क्यों कहूं खुसाली खेल।। ४८ ।।

परमधाम के यह स्वरूप एक दूसरे को मस्ती में धकेलकर बड़ा आनन्द लेते हैं। वह तरह-तरह के खेल अपने अंगों से बेशुमार करते हैं जिन खेलों की खुशहाली का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

अंग इस्क इन भोम के, अलेखे अंग असल।
कई रंग रस सरूपसों, जुदे जुदे या सामिल।।४९ ।।

उस भूमि के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं और यह सभी स्वरूप एक साथ और अलग-अलग कई तरह के बेशुमार आनन्द व रस लेते हैं।

कहा कहूं वस्तर भूखन की, नूर रोसन जोत उजास।
स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस।।५० ।।

वस्त्र और आभूषणों के नूर की रोशनी का कैसे वर्णन करूं? यह श्यामश्यामाजी और श्री सुन्दरसाथ के अंग-अंग की चाहना को पूर्ण करते हैं।

ए जोत में सोभा सुन्दर, देखिए हिरदे में आन।
भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान।।५१ ।।

इस ज्योति की सुन्दर शोभा को हृदय में लेकर, देखकर, सुनकर इश्क के भर-भर कर प्याले पीने का आनन्द लो।

भोम बन तलाव सोभित, कुन्ज-बन बीच मंदिर।
कहा कहूं गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर।।५२ ।।

इन वनों की भूमि, सुन्दर हौज कौसर तालाब की शोभा, बीच में कुंज वन के फूलों के मन्दिर तथा गलियों में सुन्दर छाया, सुगन्धि और सुन्दरता सब जगह फैली है।

नरमाई इन रेत की, उज्जल जोत सुपेत।
खुसबोए कही न जावहीं, निकुन्ज- बन या रेत।।५३ ।।

निकुंज वन की रेत नरम है, उज्ज्वल है, सफेद है तथा खुशबूदार है। इसका वर्णन करने में नहीं आता है।

सोभा पाल तलाव की, कही न जाए जुबां इन।
बन द्योहरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन।।५४ ।।

हौज कौसर के तालाब की पाल की शोभा इस जबान से वर्णन करने में नहीं आती। तालाब के चारों तरफ के वन, एक सौ अट्ठाईस द्योहरी, जल तथा टापू महल की शोभा एक-दूसरे से बढ़ती जाती है।

द्योहरियां सोभित ताल की, पाल पांवड़ियां अन्दर।
सोभा कहा कहूं सब जड़ित की, बीच मोहोल जल ऊपर।।५५ ।।

हौज कौसर की पाल के ऊपर (१२४) द्योहरियां तथा नीचे की तरफ अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों की शोभा का वर्णन कैसे कहूं? सब नगों से जड़ी हैं तथा जल के अन्दर टापू महल शोभायमान है।

जुदी जुदी जुगतें सोभित, बन मोहोलों लिया घेर।
गिरद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम बन चौफेर।।५६ ।।

टापू महल के वनों के वृक्षों को तरह-तरह की शोभा ने घेर लिया है। परमधाम के नवों भोम के चारों तरफ के झरोखों के बीच रंग महल है। चारों तरफ वनों की शोभा है।

Nijanand App

याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर।।५७।।

इसी तरह से अक्षरधाम की तरफ वन, गलियां और जानवरों की शोभा है। जहां पर जानवर तरह-तरह के सुहावने खेल खेलते हैं। इन दोनों धामों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर।
क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर।।५८।।

दोनों धाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनकी सुन्दर रोशनी फैलकर आपस में टकराती है। उस शोभा का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए।
रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए।।५९।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के दोनों तरफ चबूतरों की किनारे पर बीस थंभ (दस खुले, दस अकसी) आए हैं। यह पांच रंगों के हैं (हीरा, मानिक, पुखराज, पाच और नीलवी) और झलक रहे हैं। उसकी सिफत किस मुख से बयान करें?

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक।।६०।।

धाम के द्वार के आगे दो चबूतरे हैं। नीचे चांदनी चौक में दो सुन्दर चबूतरे हैं जिनके ऊपर एक पर हरा, एक पर लाल वृक्ष आए हैं। यहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बड़ी चाहना से बैठते हैं।

भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास।
कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास।।६१।।

यहां की भूमि, वन तथा आकाश का तेज समाता नहीं है। यदि आत्मा में कुछ अनुभव हो जाए तो फिर कहा नहीं जाता।

महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए।
जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए।।६२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के ऐसे वन की हकीकत तरह-तरह से तुमको बताई है। अब जो ब्रह्मसृष्टि होंगी, यह वचन उनके हृदय में चुभ जाएंगे तो परमधाम याद आ जाएगा।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ३६८ ॥

जमुना जोए किनारे सात घाट
केल का घाट

कतरे कई केलन के, लटक रहे जल पर।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर।।१।।

केलों के कई गुच्छे जमुनाजी के जल पर लटकते हैं। वह सब एक समान शोभा देते हैं। कोई आगे पीछे नहीं है।

Nijanand App

याही भांत अछर की, बीच बन गलियां जानवर।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर।।५७ ।।

इसी तरह से अक्षरधाम की तरफ वन, गलियां और जानवरों की शोभा है। जहां पर जानवर तरह-तरह के सुहावने खेल खेलते हैं। इन दोनों धामों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर।
क्यों कहूं इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर।।५८ ।।

दोनों धाम के दरवाजे आमने-सामने हैं। इनकी सुन्दर रोशनी फैलकर आपस में टकराती है। उस शोभा का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए।
रंग पांचों नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए।।५९ ।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के दोनों तरफ चबूतरों की किनारे पर बीस थंभ (दस खुले, दस अकसी) आए हैं। यह पांच रंगों के हैं (हीरा, मानिक, पुखराज, पाच और नीलवी) और झलक रहे हैं। उसकी सिफत किस मुख से बयान करें?

द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, हक हादी रूहों ठौर सौक।।६० ।।

धाम के द्वार के आगे दो चबूतरे हैं। नीचे चांदनी चौक में दो सुन्दर चबूतरे हैं जिनके ऊपर एक पर हरा, एक पर लाल वृक्ष आए हैं। यहां पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बड़ी चाहना से बैठते हैं।

भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास।
कछुक आतम जानहीं, सो कह्यो न जाए प्रकास।।६१ ।।

यहां की भूमि, वन तथा आकाश का तेज समाता नहीं है। यदि आत्मा में कुछ अनुभव हो जाए तो फिर कहा नहीं जाता।

महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए।
जो होसी ब्रह्मसृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए।।६२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के ऐसे वन की हकीकत तरह-तरह से तुमको बताई है। अब जो ब्रह्मसृष्टि होंगी, यह वचन उनके हृदय में चुभ जाएंगे तो परमधाम याद आ जाएगा।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

जमुना जोए किनारे सात घाट
केल का घाट

कतरे कई केलन के, लटक रहे जल पर।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर।। १ ।।

केलों के कई गुच्छे जमुनाजी के जल पर लटकते हैं। वह सब एक समान शोभा देते हैं। कोई आगे पीछे नहीं है।

Nijanand App

दिवालां थंभन की, नरमाई अतंत।
छाया पात गली मन्दिरों, तले उज्जल रेत चिलकत।। २ ।।

यहां पर केलों के वृक्षों के ही थंभ हैं जो अत्यन्त नरम हैं। इनके पत्तों की छाया गली और मन्दिरों के ऊपर हैं और नीचे सुन्दर रेत चमकती है।

कई चौक ठौर खेलन के, छाया पात सीतल।
खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल।। ३ ।।

यहां खेलने के कई चौक और ठिकाने हैं। पत्तों की छाया शीतल है तथा मोती के समान निर्मल है। इसकी शोभा जबान से वर्णन करने में नहीं आती है।

कच्चे पक्के केलों कतरे, एक खूबी और खुसबोए।
जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुन्दर चौक में सोए।। ४ ।।

कच्चे और पक्के केलों के गुच्छे बड़े सुन्दर लगते हैं और खुशबू देते हैं। इनकी अलग-अलग भांति की सुन्दरता चौकों में शोभा देती है।

सैयां आवत झीलन को, निकस मन्दिरों द्वार।
ए समया कह्यो न जावहीं, सोभा सिफत अपार।। ५ ।।

यहां पर सखियां स्नान करने के लिए मन्दिरों और दरवाजों से निकलकर आती हैं। उस समय की शोभा और सिफत बेशुमार है। इसका वर्णन शब्दों में नहीं होता।

ए घाट पोहोंच्या बड़े वन को, जित हिंडोलों हींचत।
उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत।। ६ ।।

यह केल का घाट, पीछे बड़े वन तक गया है जहां पर सखियां हिंडोले झूलती हैं। पूर्व की तरफ जमुनाजी के किनारे तक फैला है। दाहिने तरफ लिबोई (नीबू) का घाट शोभा देता है।

घाट लिबोई का

छत्रियां लिबोइयन की, सुगंध सीतल अति छांहें।
पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारियां, मिल गैयां माहों माहें।। ७ ।।

लिबोई (नीबू) के घाट में पेड़ों से पेड़ की डालियां मिलने पर छतरियों के समान शोभा है। इसकी छाया शीतल और सुगन्धित है।

कई विध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार।
लटके जवेर जड़ाव ज्यों, ऐसी बन की रची किनार।। ८ ।।

उन छतरियों के नीचे नीबू के फल पानी के ऊपर लटक रहे हैं। इनकी शोभा जड़ाव जैसी लग रही है। ऐसी ही शोभा जमुनाजी के किनारे की है।

या विध फल छाया मिने, बनमें झूमत अंदर।
कहूं हारे कहूं फिरते, कई रंग चन्द्रवा सुन्दर।। ९ ।।

छतरी के नीचे छाया में सुन्दर-सुन्दर नीबू के फल लटक रहे है। किसी जगह सीधी पंक्तियां हैं, कहीं पर गोलाई में हैं। इस तरह सुन्दर चन्द्रवा के समान शोभा है।

Nijanand App

सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर।
कही न जाए लिबोई घाट की, सोभा अचरज तले भीतर।।१०।।

नीचे रेती के ऊपर छाया आने से नीबू घाट की अन्दर की शोभा हैरानी में डाल रही है।

पेड़ जुदे जुदे गेहेरी छाया, सब पेड़ों छत्री एक।
देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक।।११।।

पेड़ अलग-अलग हैं जिनकी छाया घनी है। लगता है जैसे सब पेड़ों की एक ही छतरी हो। देख-देखकर अनुभव होता है कि यह जगह सबसे अच्छी है।

धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे पास।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास।।१२।।

यह नीबू का घाट रंग महल के ईशान कोने के (सोलह हांस का) चेहेबच्चे (हौज) से आगे केल घाट तक जाता है। इस वन की शोभा जहां नित्य आनन्द की लीला होती है, कैसे कहूं?

जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग।
तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग।।१३।।

जब श्री राजश्यामाजी के साथ सखियां यहां खेलती हैं, तब इस वन की शोभा के अनेक रंग हो जाते हैं।

घाट अनार का

ए बन खूबी देत हैं, चल्या दोरी बंध हार।
फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार।।१४।।

अनार के घाट में वृक्ष एक पंक्ति में लगे हैं और फलों की शोभा जो जल के ऊपर लटकते हैं कांगरी (किनारे की चित्रकारी) के समान लगती है।

केतिक छाया जल पर, केतिक छाया बार।
ए दोऊ बराबर चली, जमुना बांध किनार।।१५।।

कुछ वृक्षों की कुछ छाया जल पर है और कुछ की किनारे पर। यह दोनों जमुनाजी के किनारे पर एक पंक्ति में चली जाती हैं।

घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान।
घट बढ़ काहूं न देखिए, छाया गेहेरी सब समान।।१६।।

अनार के घाट की भी एक छतरी के समान शोभा है। कहीं कमी बेशी नहीं है। सब जगह घनी छाया है।

जो जहां घाट बन देखिए, जानों एही बन विसेक।
एक से दूजा अधिक, सो कहां लो कहूं विवेक।।१७।।

जहां जाकर जिस भी घाट के पेड़ों को देखें, तो लगता है कि इसी घाट के पेड़ सबसे अच्छे हैं। इस तरह से एक से दूसरे की शोभा अधिक दिखाई देती है। उसका कहां तक वर्णन करूं?

Nijanand App

कहूं फूल कहूं फल बने, कहूं पात रहे अति बन।
जुदी जुदी जुगतें मंडप, जानों बहु रंग मनी कंचन।।१८।।

इस मंडप के नीचे कहीं फूल, कहीं फल, कहीं पत्ते वन में शोभा देते हैं और ऐसा लगता है जैसे सोने में बहुत रंगों के नग जड़े हों।

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल।
रोसन रेत खुसबोए बन, आए लग्या दिवाल।।१९।।

इन पेड़ों की खूबी का कैसे वर्णन करूं? देख करके बड़ी खुशी होती है। रेत चमकती है। वन खुशबू से भरा है और रंग महल की दीवार तक आया है।

अमृत बन–घाट पाट का

दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच थंभ चांदनी पाट।।२०।।

दोनों पुलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। तीन बायीं तरफ, तीन दायीं तरफ बीच में थंभों के ऊपर पाट डालकर पाट घाट बना है।

अमृत बन अति सोभित, घाट पाट का जे।
आगूं दरवाजे निकट, बन बन्या जो सुन्दर ए।।२१।।

अमृत वन जो अति सुन्दर है उसमें पाट घाट है। यह अमृत वन धाम दरवाजे के सामने बड़ी सुन्दर शोभा देता है।

कई रंग के इत बिरिख हैं, नीले पीले सेत लाल।
क्यों कहूं सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल।।२२।।

कई रंग के यहां वृक्ष हैं। नीले, पीले, सफेद, लाल वृक्षों की शोभा कमाल की है। यह इस मुख से कैसे कही जाए?

अखोड़ अंजीर बन अमृत, ऊपर छाया अंगूर।
एक छाया पात दिवाल लो, क्यों कर बरनों ए नूर।।२३।।

अखरोट, अंजीर, आम के पेड़ों पर अंगूर की बेलों की छाया है। इस घाट की छाया रंग महल की दीवार तक चली जाती है। इसकी शोभा का बखान कैसे करें?

कई रंग हैं एक पात में, कई रंग हैं फूल फल।
अब क्यों बरनों मैं इन जुबां, कई बन हैं सामिल।।२४।।

यहां एक पत्ते में कई रंग हैं। फूल और फल में कई रंग हैं। लगता है कई वन मिले हैं। इसकी शोभा वर्णन से बाहर है।

केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल।
केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल।।२५।।

कई रंग एक पत्ते में, कई रंग एक फूल और फल में और कितने ही रंग डालियों और जड़ों में हैं।

Nijanand App

ए बन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान।
आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूं भान।। २६ ।।

इस वन की किरणें आसमान तक जाती हैं और सभी रंगों की किरणें इतनी जोरदार हैं कि एक दूसरे के रंग को दबा नहीं सकतीं।

कई मेवे इन बन में, केती कहूं जिनस।
जुदे जुदे स्वाद कई विध के, जानो एक से और सरस।। २७ ।।

इस वन में कई तरह के मेवे हैं। इनके कई जिन्स हैं जिनके तरह-तरह के स्वाद एक-दूसरे से अच्छे लगते हैं।

इन पेड़ों खूबी क्यों कहूं, देख बन होइए खुसाल।
ए रेत रोसन खुसबोए बन, ए निरखत बदले हाल।। २८ ।।

इस वन की पेड़ों की सुन्दरता का कैसे बयान करूं? देखकर बड़ी खुशी होती है। यहां की रेती की चमक और वन की खुशबू हालात को बदल देती है।

घाट जांबू का

निकट घाट पाट के, सोभित है अति बन।
इन मुख खूबी क्यों कहूं, छत्रियां जांबूअन।। २९ ।।

पाट घाट अमृत वन से लगता हुआ जांबू (जामुन) का घाट बड़ी शोभा देता है। जांबू वन की छतरियों की शोभा मुख से वर्णन नहीं हो सकती।

गेहेरी छाया अति निपट, देखत नहीं आसमान।
जमुना धाम के बीच में, ए बन सोभा अमान।। ३० ।।

छाया बड़ी गहरी है कि आसमान दिखाई नहीं देता। जमुनाजी और रंग महल के बीच में इस वन की शोभा बेशुमार है।

ए मंडप जानों चंद्रवा, कहूं ऊंचा नीचा नाहें।
ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रेहेत दिल माहें।। ३१ ।।

पेड़ों का मंडप चन्द्रवा जैसा लगता है। कही ऊंचा-नीचा नहीं है। यहां की शोभा इस जबान से वर्णन करने में नहीं आती। वर्णन करने की होंस (इच्छा) दिल में ही रह जाती है।

अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूं इतका नूर।
रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूं जुबां जहूर।। ३२ ।।

इस ठिकाने पर अनेक रंग हैं जिसकी शोभा बेशुमार है। यहां जमीन प्रफुल्लित दिखाई देती है। इस जबान से यहां की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

एह सिफत न जाए कही, जिन बन कबूं न जवाल।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल।। ३३ ।।

इस जांबू वन में कभी कुछ कमी आने का सवाल ही नहीं होता। यहां की सिफत बेशुमार है। यदि इसकी कोई मिसाल हो तो खूबी का वर्णन सम्भव हो।

Nijanand App

सिफत न होवे रेत कीं, ना होवे बन सिफत।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, मेरी जुबां ना पोहोंचत।। ३४ ।।

यहां की रेती तथा वन की सिफत नहीं हो सकती। इनकी शोभा को वर्णन करने में मेरी जबान पहुंचती नहीं हद में ही रह जाती है।

घाट नारंगी का

चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध।
तलें सात सात की कांगरी, माहें नकस कई सनंध।। ३५ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर एक सीध में नारंगी फल की चार हारें (कतारें) हैं। नीचे सात-सात फलों की कंगूरे जैसे नमूना है जिसमें कई तरह की नक्शकारी की है।

खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल।
झांईं उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल।। ३६ ।।

नारंगी के फल के रंग सुहावने हैं, यह पीलापन तथा लालिमा लिए हैं। इनकी परछाई जमुनाजी के जल में सुन्दर लगती है। इस तरह का यह वन सुहावना है।

नारंग बन की छत्रियां, जाए लगी बट घाट।
फल फूल पात जड़ित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट।। ३७ ।।

नारंगी वन की छतरी बट घाट तक जाती है। इसमें फल, फूल, पत्ते जड़ाव जैसे लगते हैं। यह शोभा बड़े अचम्भे जैसी है।

एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल।
और अनेक बन आगूं भला, ए हद छोड़ चल्या दिवाल।। ३८ ।।

पूरे वन पर एक ही छाया है। रेत अति सुन्दर है। कमाल की शोभा बनी है। यह वन रंग भवन की दीवार से आगे दाहिनी तरफ है (जो बट पीपल की चौकी से लगता है।)

इन बन की सोभा अति बड़ी, आवत आतम में जोए।
इन नैन श्रवन के बल थें, मुखसे न निकसे सोए।। ३९ ।।

इस वन की शोभा आत्मा के अनुभव में जितनी अच्छी लगती है उतनी वर्णन करने में नहीं आती। यह तो कानों से, आंखों से ही अनुभव में आती है।

इन बन सोभा अपार है, कछु आतम उपजत सुख।
तिनको हिस्सो लाखमों, कह्यो न जाए या मुख।। ४० ।।

इस वन की शोभा बेशुमार है जिसे देखकर आत्मा में अपार सुख होता है। उसका एक लाखवें हिस्से का बयान भी इस मुख से नहीं होता।

घाट बट का

जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार।
निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार।। ४१ ।।

जमुनाजी के किनारे पर जो बट का वृक्ष है उसकी अनेक डालियां हैं। इसका फैलाव बहुत बड़ा है। यहां बैठकर कभी श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सिनगार करती हैं।

Nijanand App

ऊंचा निपट द्योहर ज्यों, तले हाथों डारी लगत।
डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत।।४२।।

यह घाट मन्दिर के समान ऊंचा है और नीचे डालियां हाथ की ऊंचाई तक हैं। डालों में डालियों का विस्तार है। ऐसी बेशुमार सिफत है।

जानो थंभ दिए बडवाईके, फिरते फिरते हार चार।
सोभा लेत पात फूल, ए बट बड़ो विस्तार।।४३।।

लगता है बड़वाइयां (सोर जो जमीन से लगी रहती हैं) चार हारों में घेरकर थंभ के समान शोभा देती हैं। यहां पत्ते, फूलों की शोभा का विस्तार है।

छत्री पांच ऊपरा ऊपर, जानों रचिया भोम समार।
एक भोम रेती तले, ऊपर भोम बट चार।।४४।।

इसके ऊपर पांच भोम हैं, लगता है बड़ी संवार कर बनाई हैं। पहली भोम के नीचे रेती है और चार भोमें बट की डालियों से बनी हैं।

एक पड़त झरोखे जल पर, और तरफ सब बन।
ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन।।४५।।

पूर्व की दिशा में बड़वाइयों के झरोखे जल पर आते हैं और तीन तरफ वन पर ऊपर की भोम से परमधाम दिखाई देता है। दसों दिशाओं की सुन्दर शोभा भी दिखाई देती है।

इत बोहोत ठौर खेलन के, कई जिनसें तले ऊपर।
बैठत दौड़त कूदत, खेलत कई हुनर।।४६।।

यहां खेलने के बहुत ठिकाने हैं और ऊपरा ऊपर कई जगह खेलने की बनी हैं। यहां बैठते हैं, दौड़ते हैं और उछलकूद की कई कलाएं दिखाते हैं।

ठेकत हैं कई जल में, और कूद चढ़े कई डार।
खेल करें कई भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार।।४७।।

कई सखियां जल में कूदती हैं और कूदकर डाल पकड़कर चढ़ जाती हैं और तरह-तरह के खेल अपने चंचल अंगों से मस्ती में खेलती हैं।

तरफ चारों फिरते हिंडोले, उपली लग भोम जोए।
धाम तलाव जमुना नारंगी, सखियां हींचत बट पर सोए।।४८।।

चारों तरफ ऊपर की भोम तक हिंडोले हैं। धाम, तालाब, जमुनाजी और नारंगी घाट से सखियां बट पर आकर झूलती हैं।

अतंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर।
ए बट या और बिरिख, जल छाए लिया बराबर।।४९।।

बट घाट की शोभा बेशुमार है। जिसकी छाया जल पर पड़ती है। इस बट के वृक्ष की और बड़वाइयों की छाया जल पर आ रही है।

Nijanand App

घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार।
कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार।। ५० ।।

बट का घाट बहुत बड़ा है और जमुनाजी के किनारे पर जल तक फैला है। इस तरह से दोरी बन्द हार (कतार) में यमुनाजी के किनारे पर कई तरह के वृक्ष आए हैं।

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन।। ५१ ।।

सातों घाटों का वर्णन किया। आगे बट का पुल है और उससे आगे कुंजवन की शोभा है। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो यह अपनी न्यामत है। इसे सदा चित्त में धारण करो।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४१९ ।।

कुंज बन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूं सोभा सोए।। १ ।।

दोनों पुलों के बीच में सुन्दर सात घाट शोभित है। इन दोनों पुलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कैसे कहूं?

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात।। २ ।।

दोनों पुलों के आमने-सामने के झरोखे (दरवाजे) सुन्दर शोभा देते हैं। दोनों पुल जमुनाजी के दोनों किनारे ताल जैसी शोभा देते हैं। जमुनाजी के दोनों किनारों पर जो २५० मन्दिर की पाल आई है उन पर बड़े वन की पांच हारें, पांच भोम छठी चांदनी आई है जो जमुनाजी के दो पुलों पर भोम से मिलती है इस तरह से जमुनाजी एक ताल ३५०० मन्दिर का लम्बा ५०० मन्दिर का चौड़ा लगता है।

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत।। ३ ।।

दोनों पुलों के दस घड़नाले (थंभों के बीच की जगह जहां से पानी बहता है) दस दरवाजों से निकलते हैं और ऐसा लगता है जैसे बीच में नहरें चल रही हों। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां इस पुल के महलों में अक्सर खेलते हैं।

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को।
कई विध खेल कहूं केते, आवें ना जुबां मों।। ४ ।।

जब इन महलों में आकर खेलते हैं तो श्री राजजी महाराज सखियों को कई तरह से सुख देते हैं तथा कई तरह से खेल खेलते हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

इन मोहोल आगूं घाट केल का, इस तरफ आगूं बट घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट।। ५ ।।

उत्तर की तरफ पुल के पास केल का घाट इसी तरह से दक्षिण की ओर पुल के पास बट का घाट है। पाट घाट बीच में है और दाएं-बाएं तीन-तीन घाट हैं।

Nijanand App

घाट बट को अति बड़ो, जल लिए चल्या किनार।
कई बन इत बहु विध के, जानों बने दोरी बंध हार।।५० ।।

बट का घाट बहुत बड़ा है और जमुनाजी के किनारे पर जल तक फैला है। इस तरह से दोरी बन्द हार (कतार) में यमुनाजी के किनारे पर कई तरह के वृक्ष आए हैं।

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज बन।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन।।५१ ।।

सातों घाटों का वर्णन किया। आगे बट का पुल है और उससे आगे कुंजवन की शोभा है। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो यह अपनी न्यामत है। इसे सदा चित्त में धारण करो।

|| प्रकरण || ६ || चौपाई || ४१९ ||

कुंज बन मंदिर

सातों घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूं सोभा सोए।। १ ।।

दोनों पुलों के बीच में सुन्दर सात घाट शोभित है। इन दोनों पुलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कैसे कहूं?

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात।। २ ।।

दोनों पुलों के आमने-सामने के झरोखे (दरवाजे) सुन्दर शोभा देते हैं। दोनों पुल जमुनाजी के दोनों किनारे ताल जैसी शोभा देते हैं। जमुनाजी के दोनों किनारों पर जो २५० मन्दिर की पाल आई है उन पर बड़े वन की पांच हारें, पांच भोम छठी चांदनी आई है जो जमुनाजी के दो पुलों पर भोम से मिलती है इस तरह से जमुनाजी एक ताल ३५०० मन्दिर का लम्बा ५०० मन्दिर का चौड़ा लगता है।

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत।। ३ ।।

दोनों पुलों के दस घड़नाले (थंभों के बीच की जगह जहां से पानी बहता है) दस दरवाजों से निकलते हैं और ऐसा लगता है जैसे बीच में नहरें चल रही हों। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां इस पुल के महलों में अक्सर खेलते हैं।

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैयन को।
कई विध खेल कहूं केते, आवें ना जुबां मों।। ४ ।।

जब इन महलों में आकर खेलते हैं तो श्री राजजी महाराज सखियों को कई तरह से सुख देते हैं तथा कई तरह से खेल खेलते हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

इन मोहोल आगूं घाट केल का, इस तरफ आगूं बट घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट।। ५ ।।

उत्तर की तरफ पुल के पास केल का घाट इसी तरह से दक्षिण की ओर पुल के पास बट का घाट है। पाट घाट बीच में है और दाएं-बाएं तीन-तीन घाट हैं।

Nijanand App

सात घाट को लेयके, आगूं आए अर्स द्वार।
इत पसु पंखी कई खेलत, ए सिफत न आवे सुमार।।६।।

इन सातों घाटों की शोभा रंग महल के दरवाजे के सामने है। इन वनों में पशु-पक्षी खेलते हैं जिनकी सिफत शब्दों में नहीं आती।

चल्या गया बन तालली, एकल छत्री अति भिल।
तलाव धाम के बीच में, आगूं निकस्या चल।।७।।

इन घाटों के आगे दक्षिण की दिशा में एक छतरी के समान कुंजवन हौज कौसर तालाब तक गया है। यह कुंजवन, रंग महल और हौज कौसर के बीच में होता हुआ हौज कौसर तालाब को घेरकर अक्षर धाम तक फैला है।

जमुना धाम तलाव के, बीच में कई विवेक।
कुंजवन मंदिर कई रंगों, कहा कहूं रसना एक।।८।।

जमुनाजी, रंग महल, हौज कौसर तालाब के बीच में कई तरह के रंगों से सजे कुंजवन के मन्दिर हैं। मैं अपनी इस जबान से इसकी शोभा कैसे बताऊं?

उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाहीं पार।
आकास न मावे रोसनी, झलकारों झलकार।।९।।

यहां की रेती बड़ी साफ और मोतियों के समान निर्मल है जिसके तेज का शुमार नहीं है। आकाश में इसकी रोशनी जगमगाहट करती है।

कई पुरे इन बन में, तिनके बड़े द्वार।
तिन द्वार द्वार कई गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार।।१०।।

इस कुंजवन में कई मोहल्ले (कालोनियां) हैं जिनके बड़े दरवाजे हैं। दरवाजे-दरवाजे में कई गलियां हैं और उन हर गलियों में मन्दिरों की शोभा बेशुमार है।

कई मंदिर इत फिरते, कई चारों तरफों मंदिर।
तिनमें कई विध गलियां, निकुंज बन यों कर।।११।।

यहां पर कई मन्दिर गोलाई में बने हैं। कई मन्दिर चौरस हैं। उनमें कई तरह की गलियां हैं। इस तरह कुंज-निकुंज वन शोभा देता है।

मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात।
मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात।।१२।।

इन कुंज-निकुंज मन्दिरों की दीवारें, गलियां, फल, फूल, पत्तों की नक्शकारी मन्दिरों के द्वार पर देखकर पलक झपकने की भी इच्छा नहीं होती।

कई पुरे कई छूटक, कई गलियां बने हुनर।
या गलियों या मन्दिरों, सब छाया बराबर।।१३।।

कई मोहल्ले, अलग-अलग गलियां, अलग-अलग चित्रकारियां जो मन्दिरों और गलियों में बनी हैं। इन सबकी शोभा एक जैसी बेशुमार है।

Nijanand App

इन बन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुन्दर।
फल फूल पात कई रंगों, या बाहेर या अन्दर।। १४ ।।

इस वन में बहुत तरह की बेलें बहुत सुन्दर शोभा देती हैं तथा अन्दर-बाहर से कई रंग के फल, फूल, पत्ते शोभा देते हैं।

कई छलकत जल चेहेबच्चों, करत झीलना जाए।
अतन्त खूबी इन बन की, क्यों कहूं इन जुबांए।। १५ ।।

चहबच्चों (हौज) में जल उछलता है जहां जाकर झीलना करते हैं, इस तरह से इस वन की खूबी बहुत है जो इस जबान से कहने में नहीं आती।

फूल पात जो कोमल, रगां तिनमें कोई नाहें।
तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों माहें।। १६ ।।

यहां के कोमल फूल-पत्तों में नसें नहीं हैं। ऐसे ही फूल-पत्तों की सेज चबूतरे के समान कई महलों में बनी हैं।

इत कई रंग जवेरन के, तिन कई रंगों कई नूर।
ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर।। १७ ।।

यहां कई रंग के जवेर (हीरे, मोती) झलकते हैं जिनकी शोभा अपार है। इसकी मिसाल नहीं है। इनकी शोभा की किरणें आकाश तक फैली हैं।

कई बन स्याह सुपेत हैं, कई बन हैं नीले।
कई बन लाल गुलाल हैं, कई बन हैं पीले।। १८ ।।

यहां पर कई वन काले हैं, कई सफेद, कई नीले, कई लाल, कई गुलाल व कई पीले रंग के हैं।

कई बन हैं एक रंग के, कई एक एक में रंग दस।
इन विध कई अनेक हैं, कई जुदे जुदे रंगों कई रस।। १९ ।।

कई वन एक ही रंग के हैं तथा कई में एक-एक में दस-दस रंग हैं। ऐसे कई तरह के अनेक वन हैं। उनमें अलग-अलग रंगों की शोभा बेशुमार है।

फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और बन।
आकास भरयो नूरसों, किया रेत बन रोसन।। २० ।।

फल, फूल, पत्तों की छाया व खुशबू, जमीन और वन पर फैली है। वन के ऊपर की रेत की रोशनी आकाश तक फैलती है।

अनेक मेवे कई भांत के, सो ए कहूं क्यों कर।
नाम भी अनेक मेवन के, और स्वाद भी अनेक पर।। २१ ।।

यहां कई तरह के मेवे के पेड़ हैं, उनको कैसे बताऊं, क्योंकि मेवे के पेड़ों के अनेक नाम और स्वाद हैं।

Nijanand App

कई मीठे मीठे मीठरड़े, कई फरसे फरसे मुख पर।
कई तीखे तीखे तीखरड़े, कई खट्टे खट्टे खट्टूबर।। २२ ।।

कई मीठे, फिर उससे अधिक मीठे तथा सबसे मीठे फल और मेवे हैं। इस तरह से कई खट्टे, कई उससे खट्टे और अधिक खट्टे हैं। कई फीके, उससे फीके और अधिक फीके फल और मेवे हैं और कई तीखे, अधिक तीखे और कई उससे भी अधिक तीखे मेवे और फल हैं।

इन एक एक में अनेक रस, रस रस में अनेक स्वाद।
इन विध मेवे अनेक रस, सो कहां लों बरनों आद।। २३ ।।

इन एक-एक मेवा और फल में तरह-तरह के रस हैं और उन रसों में भी अलग-अलग स्वाद हैं। इस तरह के मेवे, कई तरह के, कई रस के हैं। इनका वर्णन कैसे करूं।

कई मेवे हैं जिमी में, कई बेलियों दरखत।
कई मेवे फल की खलड़ी, कई रस बीज में उपजत।। २४ ।।

कई मेवे जमीन के हैं, कई बेलों के हैं जो वृक्षों पर चढ़ी हैं, कई मेवे फल की खाल हैं। बेर हैं, खजूर हैं और कई मेवे चिरौंजी और बादाम की तरह बीज के हैं।

बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उज्जल।
खेल खुसाली होत है, सखियां पांउं चंचल।। २५ ।।

यहां की रेत बड़ी सुन्दर है, उज्ज्वल है। यहां पर सखियां चंचलता के साथ खुश होकर खेलती हैं।

इत कई चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक।
स्याम स्यामाजी सखियनसों, खेल करें कई जौक।। २६ ।।

यहां कई चौकों के ऊपर वृक्षों की छाया है और कई चौक खुले हैं। यहां श्री राजश्यामाजी सखियों से तरह-तरह के खेल खेलते हैं और तरह-तरह की हंसी-मजाक करते हैं।

क्यों कहूं वन की रोसनी, सीतल वाए खुसबोए।
ए जुबां न केहे सके, जो सुख आतम होए।। २७ ।।

वन की रोशनी बड़ी सुन्दर है। यहां शीतल, खुशबूदार वायु है जिससे आत्मा सुखी होती है, परन्तु जबान की कहनी से बाहर है।

इन बन की हद धामलों, और झरोखों दिवाल।
इन बन में कई हिंडोले, होत रंग रसाल।। २८ ।।

कुंज वन से लगती हुई बट पीपल की चौकी के वृक्ष रंग महल की दीवार और झरोखे तक शोभा देते हैं। इस बट पीपल की चौकी में कई तरह के हिंडोले आते हैं और बड़ा आनन्द होता है।

चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान।
बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान।। २९ ।।

बट पीपल की चौकी में नीचे-ऊपर चार भोम हैं। इनके पेड़ थंभों के समान शोभा देते हैं। उनके ऊपर छतें आई हैं, सब एक ही शोभा है।

Nijanand App

घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन।
बन नारंगी चन्द्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन।। ३० ।।

बट के घाट के एक तरफ बट का पुल है, दूसरी तरफ नारंगी का घाट है जो आगे बट पीपल की चौकी से मिलता है। बट पीपल की चौकी के वृक्ष धाम की दीवार से लगते हैं।

चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर।
घट बढ़ न दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुन्दर।। ३१ ।।

इस बट पीपल की चौकी के ऊपर चार भोम हैं। शोभा घट-बढ़ कहीं नहीं है। बहुत सुन्दर है।

द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार।
माहें खट छपरें बन की, हिंडोले छातें चार।। ३२ ।।

बट पीपल की चौकी में सभी दरवाजे एक समान, सौ-सौ मन्दिर के हैं और इनके ऊपर चार छतों की शोभा है। इनमें खटछप्पर के हिंडोले एक भोम में एक सौ तीस, चार भोम में पांच सौ बीस लगे हैं।

कई हिंडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक।
चारों तरफों हार देखिए, जानों एक एक थें विसेक।। ३३ ।।

एक छत में कई हिंडोले हैं और इस तरह नीचे ऊपर छतों में कई हिंडोले हैं। चारों तरफ हिंडोलों को देखें तो एक से एक चढ़ती नजर आती हैं।

राज स्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत।
इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूं सिफत।। ३४ ।।

श्री राजश्यामाजी, सखियां कभी-कभी आकर यहां झूला झूलती हैं। उस समय वन के हिंडोलों की सिफत का वर्णन कैसे करूं?

जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन।
नरमाई फूल पात अधिक, ना तो दोऊ बराबर रोसन।। ३५ ।।

बट पीपल की चौकी की जमीन और वहां का सब वन का रस जवेरों (हीरे जवाहरातों) की तरह चमकते हैं। इनके फूल और पत्ते अत्यन्त नर्म हैं और फूल-पत्तों की रोशनी एक सी है।

चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार।
इन समें बन सोभित, माहें बिजलियां चमकार।। ३६ ।।

यहां चारों तरफ से बादल घिरकर आते हैं, बिजली चमकती है। तब वन की शोभा अधिक बढ़ जाती है।

बोए आवे सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार।
गाजत गंभीर मीठड़ा, इन समें सोहे सिनगार।। ३७ ।।

यहां की हवा बड़ी शीतल और सुगन्धित है। वर्षा ऋतु में बड़ा आनन्द आता है। बादल मीठे स्वर में गरजते हैं। इस तरह से सुन्दर शोभा दिखाई देती है।

Nijanand App

हंस चकोर मैना कोइली, करें बनमें टहुंकार।
बोलें बपैया बांबी दादुर, करें तिमरा भमरा गुंजार।। ३८ ।।

हंस, चकोर, कोयल और पपीहा, दादुर (मेढक) झींगुर (तिमरा) और भौंरा मधुर स्वरों में गुंजन करते हैं।

हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत।
अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत।। ३९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा बारह हजार सखियां हिंडोलों में झूलती हैं। ऐसे अखण्ड सुख धाम धनी के बिना कौन दे सकता है?

ए निकुंज बन सब लेयके, जाए पोहोंच्या ताल।
जमुना धाम के बीच में, ए बन है इन हाल।। ४० ।।

यह कुंज-निकुंज का वन हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और रंग महल के बीच में शोभा देता है।

जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लो पाए।
इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएं।। ४१ ।।

यहां पर बहुत बारीक रेत होने के कारण घुटने तक पैर रेत में धंस जाते हैं। यहां सब सखियां मिलकर आपस में होड़ बांधकर दौड़ती हैं।

इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गुलाटें।
कूदें दौड़े ठेकत हैं, रेत उड़ावें पांउं छांटें।। ४२ ।।

और गुलाटियां खाती हैं, कई सखियां दौड़कर उछलती हैं और पांव से रेत को उड़ाती हैं।

कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती।
हांसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पांउं रेती।। ४३ ।।

कभी श्री राजजी और सखियां दौड़ती हैं तो कभी सब सखियां मिलकर दौड़ती हैं, क्योंकि रेती में पांव धस जाने से जमुनाजी तट पर बड़ी हंसी होती है।

अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत।
ए बन स्याम स्यामाजी को, है हांसी को उद्दोत।। ४४ ।।

इस तरह से कुंजवन की रेती में तरह-तरह से बहुत खेल होते हैं। इस वन में श्री राजजी, श्री श्यामाजी हंसी के वास्ते ही आते हैं।

कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर।
पीछे हंस हंस ताली देयके, पड़त एक दूजी पर।। ४५ ।।

कभी-कभी सखियां आपस में होड़ लगाकर छलांग लगाती हैं और फिर एक-दूसरे पर ताली बजा बजाकर हंसती हैं।

एकल छत्री सब बनकी, भांत चंद्रवा जे।
फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोड़ी न जाए ए।। ४६ ।।

पूरे कुंजवन के ऊपर चंद्रवा की माफिक एक छतरी की छाया है। यहां की शोभा को देखने के लिए बार-बार इच्छा होती है और यह वन छोड़ा नहीं जाता।

Nijanand App

फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत।। ४७ ।।

यहां पर बार-बार दौड़ती हैं, छलांग लगाती हैं और गिरती हैं। फिर आपस में मिलकर एक-दूसरे की हंसी करती हैं।

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान।। ४८ ।।

सखियों के खेल का कहां तक बयान करूं जो वनों में रोज ही करती हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सब मिलकर आनन्द लेते हैं। इसकी उपमा नहीं है।

महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अब हौज कौसर के ताल की पाल (पुल, तालाब की मेड़) के ऊपर के वनों की शोभा देखो और अपने दिल में धारण करो। मैं तुमको बताती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली

अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब मैं हौज कौसर ताल का वर्णन करती हूं। तुम में से जो आ सकते हैं वह मेरे पास अन्दर आ जाओ। जो परमधाम की रूहें हैं उनको ही मैं कहती हूं कि फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात।
गिरद द्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात।। २ ।।

हौज कौसर के ताल की पाल एक हीरे की है। उसमें कई महल बने हैं। चारों तरफ घेरकर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां हैं। कई तरह के वनों की शोभा है जिनके फल, फूल और पत्ती की शोभा कैसे बताऊं?

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल।। ३ ।।

जब परमधाम से श्री राजश्यामाजी और सखियां आती हैं, तो झुण्ड के झुण्ड द्वार से तालाब पर चढ़ते हैं। यहां दो चबूतरे और दो द्योहरी उनके ऊपर बनी हैं। सीढ़ियां चढ़ते समय इन्हें देखकर बहुत खुशी होती है।

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए।। ४ ।।

यह जो दो द्योहरी बताई हैं उनके बीच दो मेहराब आई हैं। पहली मेहराब के आगे चबूतरा आया है और दूसरी मेहराब के आगे द्योहरी आई है यह मेहराबें २५० मन्दिर की चौड़ी आई हैं।

Nijanand App

फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत।। ४७ ।।

यहां पर बार-बार दौड़ती हैं, छलांग लगाती हैं और गिरती हैं। फिर आपस में मिलकर एक-दूसरे की हंसी करती हैं।

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान।। ४८ ।।

सखियों के खेल का कहां तक बयान करूं जो वनों में रोज ही करती हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां सब मिलकर आनन्द लेते हैं। इसकी उपमा नहीं है।

महामत कहे ऐ मोमिनों, देखो ताल पाल के बन।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अब हौज कौसर के ताल की पाल (पुल, तालाब की मेड़) के ऊपर के वनों की शोभा देखो और अपने दिल में धारण करो। मैं तुमको बताती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली

अब कहूं मैं ताल की, अन्दर आए सको सो आओ।
जो होवे रूह अर्स की, फेर ऐसा न पावे दाओ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब मैं हौज कौसर ताल का वर्णन करती हूं। तुम में से जो आ सकते हैं वह मेरे पास अन्दर आ जाओ। जो परमधाम की रूहें हैं उनको ही मैं कहती हूं कि फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

एक हीरे की पाल है, तिनमें कई मोहोलात।
गिरद द्योहरी कई बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात।। २ ।।

हौज कौसर के ताल की पाल एक हीरे की है। उसमें कई महल बने हैं। चारों तरफ घेरकर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां हैं। कई तरह के वनों की शोभा है जिनके फल, फूल और पत्ती की शोभा कैसे बताऊं?

जब आवत इत अर्स से, चढ़िए इन घाट ताल।
चबूतरे दोए द्योहरी, सीढ़ियां चढ़ते होत खुसाल।। ३ ।।

जब परमधाम से श्री राजश्यामाजी और सखियां आती हैं, तो झुण्ड के झुण्ड द्वार से तालाब पर चढ़ते हैं। यहां दो चबूतरे और दो द्योहरी उनके ऊपर बनी हैं। सीढ़ियां चढ़ते समय इन्हें देखकर बहुत खुशी होती है।

ए जो कही दो द्योहरी, तिन बीच पौरी दोए।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं द्योहरी सोए।। ४ ।।

यह जो दो द्योहरी बताई हैं उनके बीच दो मेहराब आई हैं। पहली मेहराब के आगे चबूतरा आया है और दूसरी मेहराब के आगे द्योहरी आई है यह मेहराबें २५० मन्दिर की चौड़ी आई हैं।

Nijanand App

इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार।
दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार।।५।।

इसके आगे पाल पर जाने के लिए (संक्रमणिका) सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। जिससे चढ़कर ऊपर पाल पर पहुंचते हैं। पाल के ऊपर भी दोनों तरफ दो चबूतरे हैं। बीच में उतना ही लम्बा चौड़ा चौक है।

ए बड़ा घाट तरफ अर्स के, फिरते तीन घाट तरफ और।
बने गिरदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर।।६।।

यह झुण्ड का बड़ा घाट है। अब हौज कौसर ताल के ऊपर तीन घाट और हैं जो चारों तरफ से पाल पर बने हैं और इनके चारों ठिकानों की अलग-अलग हकीकत है।

ताल बीच टापू बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर।
तिन गिरदवाए जल है, खूबी हौज कहूं क्यों कर।।७।।

हौज कौसर ताल के बीच टापू महल बना है। उसके चारों तरफ जल है। ऐसे हौज कौसर तालाब की खूबी का वर्णन कैसे करूं?

नेक कहूं तिनका बेवरा, चारों तरफ बन पाल।
अव्वल बड़े घाट से, ए जो हौज कौसर कह्या ताल।।८।।

चारों तरफ की पाल तथा वन की शोभा की थोड़ी सी हकीकत बताती हूं। शुरू में झुण्ड के घाट से हौज कौसर तालाब का वर्णन करूंगी।

जो झुन्ड ताल की पाल पर, ऊंचा अतंत है सोए।
फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए।।९।।

ताल की पाल के ऊपर झुण्ड का घाट पांच भोम छठी चांदनी के बराबर ऊंचा है फिर यहां पर नजर से जमीन पर देखते हैं, तो उसकी सिफत को शब्दों से कैसे वर्णन करूं?

एह झुन्ड है घाट पर, और पाल ऊपर सब बन।
फिरता आया झुन्ड लो, पोहोंच्या पावड़ियों रोसन।।१०।।

इस घाट पर पेड़ों के झुण्ड पाल के ऊपर शोभा देते हैं। फिर घूमकर झुण्ड के घाट में आ जाएं और फिर पाल के ऊपर चलें।

और झुन्ड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए।
छे छातें सीढ़ियों पर, बांधी मिल कर दोए।।११।।

पेड़ों का दूसरा झुण्ड दाहिनी तरफ है। सीढ़ियों के ऊपर पांच भोम छठी चांदनी है। दोनों तरफ के चबूतरों के ऊपर ऐसी ही एकसी शोभा बनी है।

जो कहे झुन्ड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार।
चौथे हिस्से चबूतरे, हार फिरवली खूंटों चार।।१२।।

दोनों तरफ चबूतरों के ऊपर पेड़ों के जो दो झुण्ड बताए हैं, वह दोनों चबूतरों के किनारों पर लगे हैं। चबूतरा पाल के चौथे हिस्से (२५० मन्दिर) में हैं। उन चबूतरों के चारों खूंटों (छोरों) के ऊपर पेड़ों की हार घेरकर आई हैं।

Nijanand App

चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार।
दोए द्वार दोए सीढ़ियों, चौक सोभित अति अपार।। १३ ।।

इन दोनों चबूतरों के बीच खड़े होकर देखें तो चबूतरों के ऊपर दोनों तरफ दो द्वार बने हैं और दो दरवाजे दो सीढ़ियों पर हैं। इनकी शोभा बेशुमार है।

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिस्से चार।
दो हिस्से खूंट दो दिवालों, और दो हिस्सों बीच द्वार।। १४ ।।

एक बाजू (तरफ) के चबूतरे के चार भाग करें, दो खूंटों (छोरों) के दो भाग, दो भाग में दरवाजा है, अर्थात् दरवाजा (१२५ मन्दिर का) और दोनों तरफ दो खूंटे (छोरों) ६२ १/२, ६२ १/२ मन्दिर के हैं।

चार खूंने दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिस्से।
तरफ आठ पेड़ दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए।। १५ ।।

चारों कोने के दो चबूतरे हैं और दोनों चबूतरों के चौथे हिस्से में पेड़ों की आठ दीवारें आती हैं इसकी शोभा कही नहीं जाती।

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारों खूंटों पेड़ दिवाल।
जब देखिए बीच चबूतरे, चार द्वार इसी मिसाल।। १६ ।।

इसी तरह से दोनों चबूतरों की चारों खूंटों (छोरों) पर पेड़ की दीवारें हैं। जब चबूतरों के बीच में खड़े होकर देखें तो चार दरवाजे इस तरह से बने हैं।

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार।
सोले दिवालें हुई सबे, सोभा लेत पेड़ों हार।। १७ ।।

चबूतरे के दोनों तरफ आठ खूंटे हैं और आठ ही दरवाजे बने हैं। इस तरह से मिलाकर सोलह दीवारें हो गईं, जिनके किनारे पर पेड़ों की पंक्ति शोभा देती है।

जानों तीनों चौक बराबर, बारे द्वार दिखाई देत।
चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढ़ियों पर सोभा लेत।। १८ ।।

इसी तरह से तीनों चौकों (दो चौक दो चबूतरों के, एक चौक दोनों के बीच से आया है) चौक बराबर हैं। इन तीनों में बारह द्वार दिखाई देते हैं, गिनती के दस हैं। चार-चार द्वार एक-एक चबूतरे के हैं और दो सौ पचास मंदिर के दो बड़े मेहराब आए हैं।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों।
देखे बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों।। १९ ।।

हिसाब से दोनों चबूतरों की और बीच के चौक की दस मेहराबें होती हैं। देखने में बारह दिखाई देती हैं। इस मुख से उसकी खूबी का कहां तक वर्णन करूं?

दोऊ तरफ ड्योहरियां पाल पर, पेड़ सीढ़ियों के लगती।
दो सीढ़ी ऊपर आगूं द्वारने, चौक आगूं देत खूबी।। २० ।।

पाल के ऊपर दो ड्योहरी आई हैं ड्योहरी के एक तरफ पेड़ आए हैं दूसरी तरफ घाट की सीढ़ियां हैं, सीढ़ियों के ऊपर और नीचे एक एक द्वार आया है उसके आगे २५० मन्दिर का लम्बा चौड़ा चौक शोभा देता है।

Nijanand App

एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल।
इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल।। २१ ।।

चबूतरे के एक तरफ की सीढ़ियां दूसरे चबूतरे के सामने आई हैं। इसी तरह दूसरी सभी शोभा एक समान है। इसका यहां की बुद्धि से वर्णन करना सम्भव नहीं है।

एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड़ दिवाल।
तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल।। २२ ।।

एक दरवाजा सीढ़ी पर, दूसरा पेड़ की तरफ है। तीसरा पाल पर है। चौथा ताल के महलों की तरफ है।

दो द्योहरी सोभा लेत हैं, ताल के खूंटों पर।
द्वार सामी टापूअ के, दोरी बन्ध बराबर।। २३ ।।

ताल के खूंटों के ऊपर दो द्योहरियां शोभा देती हैं। इसके ठीक सामने टापू महल का दरवाजा है जिसके दोनों तरफ दो द्योहरियां शोभा देती हैं। वह दोनों एक लाइन में दोरी बन्ध हैं।

दोऊ तरफों दो द्योहरी, उतरती जल पर।
तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छात अन्दर।। २४ ।।

दोनों तरफ की द्योहरियों से लगती मध्य में सीधी सीढ़ी जल पर जाती है। सीढ़ियों के आगे ही दो सुन्दर चबूतरे हैं। इनके ऊपर चबूतरों की छत आई है।

ए जो कही दोए द्योहरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब।
तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिसाब।। २५ ।।

यह जो दो द्योहरियां बताई हैं इन दोनों के बीच में दो मेहराब आए हैं। तीनों घाट नौ द्योहरी, तेरह द्योहरी का और झुण्ड का, इस तरह से सुन्दर शोभा देते हैं।

ए जो पावड़ियां घाटों पर, जड़ाव ज्यों झलकत।
अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत।। २६ ।।

तीनों घाटों की सीढ़ियों के जड़ाव झलकार देते हैं। इनमें अनेक रंगों की किरणें उठती हैं। इनकी लहरें आसमान तक जाती हैं।

और सीढ़ियां जो बाहेर की, छात आई लग तिन।
बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन।। २७ ।।

जो बाहर की संक्रमणी सीढ़ियां हैं उन तक पाल की छत आई है। इन बड़े चबूतरों के उपरा-ऊपर पांच भोम तक छज्जे आए हैं। यहां पर खेलने के ठिकाने हैं।

ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक।
अति बिराज्या झुन्ड तले, ऊपर छातें इन माफक।। २८ ।।

यह झुण्ड का घाट चबूतरों के कारण ही सुहावना लगता है। नीचे पेड़ों के झुण्ड और उनके ही अनुसार पांच भोम आई हैं।

Nijanand App

जब हक आवत तालको, आए बिराजत इत।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक को बैठत।। २९ ।।

जब श्री राजजी महाराज तालाब पर आते हैं, तो यहां झुण्ड के घाट में जल-क्रीड़ा करके शौक से बैठते हैं।

पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत।
ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत।। ३० ।।

पीछे, नीचे या ऊपर उमंग के साथ रूहें खेलती हैं। श्री राजजी महाराज की इस खुशी का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूंगी?

कई रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात।। ३१ ।।

यहां पेड़ों में कई रंग हैं। कई रंग पत्ते, फल और फूलों में हैं। इनकी शोभा अति अधिक है।

इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बन्ध।
खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूं सोभा सनंध।। ३२ ।।

यहां एक हीरे की पाल है। रेती नहीं है। सुगन्धि अत्यधिक है। इसकी शोभा की हकीकत कैसे बताऊं?

पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन बन छाहें।
तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए।। ३३ ।।

हीरे की पाल अति उज्ज्वल है। यह बहुत चमकती है। उसमें पेड़ों के प्रतिबिम्ब पड़ते हैं जिससे पाल की रोशनी हरे रंग के पाच के नग के समान दिखाई देती है।

ए बन बांईं तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल।
देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल।। ३४ ।।

यह बड़ा वन पाल के ऊपर घेरकर आया है जो आकाश तक झलकार देता है। इस तरह से ताल की शोभा बढ़ जाती है।

अंदर द्योहरियां पाल पर, ऊपर बन बिराज्या आए।
ए सोभा बन लेत है, ए खूबी कही न जाए।। ३५ ।।

पाल के ऊपर एक सौ अट्ठाईस द्योहरियों के ऊपर भी वन की शोभा है जिसकी खूबी कहने में नहीं आती।

ऊपर पाल जो द्योहरी, फिरती आगूं गिरदवाए।
तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए।। ३६ ।।

पाल के ऊपर की एक सौ अट्ठाईस द्योहरियां चारों तरफ घेर कर आई हैं। इन सबके आगे एक-एक चबूतरा है जिनसे दोनों तरफ सीढ़ियां उतरती हैं।

यों द्योहरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको।
हर द्योहरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों।। ३७ ।।

इसी तरह से एक सौ अट्ठाईस द्योहरियों के आगे एक सौ अट्ठाईस चबूतरे आए हैं। उन सभी चबूतरों से नीचे सीढ़ियां दोनों तरफ उतरी हैं। हर द्योहरी के चबूतरे से दोनों तरफ सीढ़ियां नीचे भोम पर उतरी हैं।

Nijanand App

दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार।
तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार।। ३८ ।।

दो सीढ़ियों के बीच, नीचे चबूतरे पर चार दरवाजे आते हैं (दो सीढ़ियों में, एक पाल में, एक ताल की तरफ)। इन सब सीढ़ियों में परकोटा लगा है। किनारे पर कांगरी बनी है।

सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब।
मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढिग आब।। ३९ ।।

सीढ़ियों के ऊपर एक सौ अट्ठाईस चबूतरे हैं। उनके नीचे भी एक सौ अट्ठाईस चबूतरे हैं। उनमें एक सौ अट्ठाईस मेहेराबें आई हैं। इन मेहेराबों के आगे जो चबूतरा है वह जल को लगता है, जो पांच सौ मन्दिर का चौड़ा है।

दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार।
तिन पर अजब कांगरी, अति सोभित पाल अपार।। ४० ।।

दो-दो सीढ़ियों के बीच में दो छोटे द्वार कहे हैं। उनके ऊपर की कांगरी पाल की शोभा को बढ़ाती है।

पाल ऊपर जो द्योहरी, बीच कठेड़ा सबन।
ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन।। ४१ ।।

पाल के ऊपर जो द्योहरियां हैं, उन सबों के बीच कठेड़ा लगा है। ऐसी सुन्दर बैठक यहां है जिसका वर्णन यहां की जबान से नहीं होता।

घाट बांईं तरफ नव द्योहरी का

घाट बांईं तरफका, चौथे हिस्से तक।
ऊपर झुंड बिराजिया, अति सोभा बुजरक।। ४२ ।।

बाईं तरफ का घाट पाल के चौथे हिस्से तक चौड़ा है (दो सौ पचास मन्दिर का है)। इसके ऊपर पेड़ों के झुण्ड की सुन्दर शोभा है।

ऊपर बनी नवद्योहरी, फिरते आए तले आठ थंभ।
अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ।। ४३ ।।

नीचे दोनों चबूतरों के कोने के ऊपर आठ थंभ आए हैं और उनके पड़ाव पर नौ द्योहरियां बनी हैं। यहां बैठक अदभुत है और आश्चर्यजनक है।

उतरती दोए द्योहरी, तिन तले दोए चबूतर।
बीच उतरती सीढ़ियां, तले चौक पानी भीतर।। ४४ ।।

पाल के ऊपर घाट की द्योहरी आई है। इनके नीचे दो चबूतरे हैं। बीच में सीधी उतरती सीढ़ियां हैं जो नीचे चौक में पानी तक जाती हैं।

फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए।
अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदे समाए।। ४५ ।।

फिर से इनका ब्यौरा बताती हूं जिससे सभी की समझ में आ जाए। अब इस तरह से बताती हूं जिससे मोमिनों के हृदय में समा जाए।

Nijanand App

पेड़ चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत।
हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत।। ४६ ।।

प्रत्येक चबूतरे पर चारों कोनों में चार पेड़ हैं जिनकी शोभा अनन्त है। किनारे पर एक डोरी (कतार) में है, परन्तु संख्या में यहां दो पेड़ ज्यादा हो गए हैं (पाल के ऊपर जो तीन पेड़ आए हैं)।

नव चौकी का मोहोल जो, ए बड़ी ठौर बीच पाल।
चौथा हिस्सा पाल का, हुई द्योहरी आगूं पड़साल।। ४७ ।।

आगे नौ द्योहरी का घाट पाल के बीच सुन्दर शोभा देता है और पाल के चौथाई हिस्से में पड़साल द्योहरी तथा चबूतरा है।

इतथें उतरती सीढ़ियां, दाएं बाएं दो द्योहरी।
हुए तीनों चौक बराबर, सीढ़ियां इतथें तले उतरी।। ४८ ।।

यहां चबूतरे से उतरती सीढ़ियां हैं जिनके दाएं-बाएं दो द्योहरी हैं। यह तीन चौक बराबर हैं और यहां से सीढ़ियां जल पर उतरती हैं।

द्योहरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर।
जल ऊपर जो चबूतरा, आई सीढ़ियां इत उतर।। ४९ ।।

द्योहरी के नीचे जो चबूतरे हैं। वह भी इसी के बराबर चौड़ाई में हैं। जल के ऊपर जो चबूतरा आया है, घाट की सीढ़ियां उतरकर चबूतरे पर आती हैं।

अब घाट छोड़ आगे चले, क्यों कहूं खूबी ए।
एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे।। ५० ।।

अब इस घाट को छोड़कर जब आगे चलते हैं तो अत्यन्त खूबी दिखाई देती है। सब पेड़ों की छाया पाल पर बराबर आई हैं और ढलकती पाल पर एक भोम नीचे छाया आई है।

और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले बन।
इन विध पेड़ बराबर, गिरदवाए सबन।। ५१ ।।

ढलकती पाल के ऊपर आखिरी दो पेड़ों की हार हैं। तीसरी हार ढलकती पाल पर वन की रोंस की तरफ आई है। इस प्रकार पांचों हारों के पेड़ चारों तरफ घटकर बराबर आए हैं।

डारी लटकी जल पर, पेड़ गिरद द्योहरी हार।
और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार।। ५२ ।।

इन पेड़ों की डालियां जल पर लटकती हैं। पेड़ भी द्योहरियों की तरह (१२८) आए हैं। पेड़ों की डालियां पाल की किनारों पर आपस में मिलती हैं।

घाट सोले द्योहरी का

जमुना तरफ ताल के, जित जल भिल्या माहें जल।
द्योहरियां इन बंध पर, जल पर सोभित मोहोल।। ५३ ।।

हौज कौसर के पूर्व की तरफ जहां जमुनाजी आकर तालाब में मिलती हैं, उसके बन्ध पर जल के ऊपर सोलह द्योहरी का घाट शोभा देता है।

Nijanand App

तले जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए।
इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत हैं धाए।। ५४ ।।

नीचे जल में चार जालीदार द्वार हैं, जहां से जल तालाब में जाता है। उसके ऊपर चार झरोखों में बैठकर देखें तो लगता है जमुनाजी का बहाव तेजी से अन्दर आता है।

चार द्योहरियां लग लग, चारों तरफों चार चार।
सोले बंध पर द्योहरी, थंभ पचीस पांच पांच हार।। ५५ ।।

चारों तरफ चार-चार पंक्ति में सोलह द्योहरी, पांच की पांच हारें (पच्चीस) थंभों के ऊपर आई हैं।

पचीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गिरदवाए।
सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए।। ५६ ।।

ऊपर के पच्चीस थंभों के नीचे सोलह थंभ घेरकर आए हैं। यह थंभ दूसरी भोम के बीच सुन्दर शोभा देते हैं।

इत कठेड़ा चारों तरफों, बीच कठेड़ा ओर।
इन बीच चारों हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर।। ५७ ।।

इन सोलह थंभों के बीच में जो आठ थंभ आए हैं उनको घेरकर कठेड़ा लगा है और अधबीच वाला थंभ नहीं है। यहां एक चौरस कुंड के समान शोभा है जहां से जल तालाब के अन्दर ही जाता है।

इत खुली भोम जल ऊपर, चारों तरफों बराबर।
चारों हिस्से हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर।। ५८ ।।

यहां जल के ऊपर छत खुली है। जमुनाजी के चार घड़नालों में से दो दाएं, बाएं घड़नालों का जल ढका है और मध्य के दो घड़नालों का जल बराबर लम्बाई-चौड़ाई में खुला है।

ऊपर बैठक तले जल, ए जो कह्या कठेड़ा गिरदवाए।
इत आए जब बैठिए, तले जल अति सोभाए।। ५९ ।।

ऊपर कठेड़ा के चारों तरफ सुन्दर बैठक है और नीचे जल बहता है। यहां आकर जब बैठते हैं तो नीचे बहते हुए जल की अधिक शोभा होती है।

चारों तरफों कुण्ड ज्यों, इत देत खूबी अति जल।
हाए हाए ए बात करते मोमिन, रूह क्यों न जात उत चल।। ६० ।।

यह खुले जल का बहाव चारों तरफ कुण्ड के समान शोभा देता है। हाय! हाय! यहां की बात करने में मोमिनों की अरवाह (रूहें) उड़ क्यों नहीं जातीं?

चार द्योहरी आगूं चबूतरा, तिन तले घड़नाले चार।
तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार।। ६१ ।।

किनारे की चार द्योहरियों के आगे पूरब-पच्छिम दोनों तरफ चबूतरे हैं जिनके नीचे चार घड़नाले बहते हैं और ऊपर चार झरोखे सुन्दर जल में झलकते हैं।

Nijanand App

आगूं पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर।
सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तले ऊपर बराबर।।६२।।

आगे पांच थंभ नीचे-ऊपर झरोखों के चबूतरे के बाद शोभा देते हैं। चारों तरफ पांच-पांच थंभों की पांच हारें आती हैं। नीचे चार झरोखे के पांच थंभ शोभा देते हैं।

ऊपर दोऊ तरफों सीढ़ियां, दोऊ तरफ उतरते द्वार।
इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभे दोऊ पार।।६३।।

ऊपर दोनों तरफ से ताल में सीढ़ियां उतरती हैं जो जालीदार दरवाजे के दाईं-बाईं तरफ हैं। नीचे जल के ऊपर चबूतरा आया है। दोनों तरफ कठेड़ा लगा है।

जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर।
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर।।६४।।

अन्दर के चार घड़नालों के जल के ऊपर सुन्दर चबूतरा है। नीचे से जल जालीदार दरवाजों से आता है। इस घाट की शोभा कैसे कही जाए?

सीढ़ियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे।
इत आगूं सबन के कठेड़ा, अति बन्या ताल पर ए।।६५।।

सीढ़ियों के ऊपर जो चबूतरा है वहां पांच थंभों में चार झरोखे बने हैं। इन सबके आगे कठेड़ा है और आगे तालाब है।

सोभा जल जो लेत है, भरयो नूर रोसन आकास।
बीच लेहेरें लगें मोहोलन को, ए क्यों कहूं खूबी खास।।६६।।

जल की शोभा का नूर आसमान तक फैलता है। बीच में जल की लहरें टापू महल से टकराती हैं। उनकी खास खूबी का कैसे बयान करूं?

खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउ ना भोम लगत।
इत खेलें रूहें पाल पर, कई विध दौड़त कूदत।।६७।।

यहां तरह-तरह के खेल खेलते हैं। यहां पांव धरती पर नहीं लगता। सखियां पाल पर कई तरह से दौड़ती कूदती हैं।

ए भोम इन विध की, पाउं न खूंचत रेत।
खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत।।६८।।

यह भूमि इस तरह की है जहां पर रेत पांव को चुभती नहीं है। यहां सखियां खेलकर नए-नए सुख लेती हैं।

आगूं बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत।
तीसरे झुंड के घाट में, खेलें खावंद रूहें समेत।।६९।।

इस घाट के आगे की शोभा अपार है। यहां श्री राजश्यामाजी रूहों के साथ में तीसरे झुण्ड के घाट में खेल खेलते हैं।

Nijanand App

घाट तेरे द्योहरी का

द्योहरी चौथे घाट की, देखें पाइयत हैं सुख।
झुण्ड बन्या इन ऊपर, खूबी क्योंकर कहूं इन मुख।।७० ।।

चौथे घाट की द्योहरियों की शोभा को देखकर अत्यन्त सुख मिलता है। उनके ऊपर भी पेड़ों के झुण्ड की शोभा है। उसकी खूबी इस मुख से कैसे कहें?

चौक पर फिरती चांदनी, आठ द्योहरी गिरदवाए।
पांच द्योहरियां बीच में, तले आठ थंभ सोभाए।।७१ ।।

आठ द्योहरियों, आठ थंभों के ऊपर फिरती हुई चांदनी आई है और पांच द्योहरियां आठ थंभों की शोभा देती हैं।

तले फिरता कठेड़ा, चारों तरफों द्वार।
तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार।।७२ ।।

चारों तरफ दरवाजे हैं जिनको छोड़कर कठेड़ा लगा है। नीचे उतरती सीढ़ियां जल में झलकती हैं।

जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढ़ती द्योहरी दोए।
आए पोहोंची थंभनको, अति सोभा घाट पर सोए।।७३ ।।

जल के ऊपर दो चबूतरे आए हैं। उनके ऊपर दो द्योहरियां आई हैं जो थंभों के ऊपर शोभायमान हैं। इस तरह से तेरह द्योहरी के घाट की अधिक शोभा है।

फेर इनका भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमिन।
ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अर्स रूहन।।७४ ।।

इनका ब्यौरा फिर से बताती हूं जिससे मोमिनों के हृदय में आ जाए। यह चौथा घाट बहुत सुन्दर है और अर्श की रूहों को बहुत सुख देता है।

तेरे चौकी बीच पाल के, आगे पालैकी पड़साल।
गिरद चौकी चार बिरिख की, सोभित झुन्ड कमाल।।७५ ।।

पाल के बीच में तेरह चौकियां हैं और आगे पाल की पड़साल है। चार-चार वृक्षों की एक चौकी आई है जिस पर गुमटियां बनी हैं। ऐसी शोभा इन पेड़ों के झुण्ड की है।

उतरी सीढ़ियां पड़साल से, चौक हुआ बीच इत।
दोऊ चौक दाएं बाएं बने, बीच दोए द्योहरी जित।।७६ ।।

पड़साल से सीढ़ियां नीचे उतरती हैं जहां बीच में एक चौक है और दाएं-बाएं दो चौक हैं जो घाट की द्योहरी के नीचे आए हैं।

इतथें आगूं सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर।
इत चौक होए सीढ़ी उतरीं, तले आए मिली चबूतर।।७७ ।।

यहां से आगे सीढ़ियां दोनों चबूतरों के बराबर हैं। जो ऊपर के चौक से सीढ़ियां दोनों तरफ उतरी हैं, वह नीचे के चबूतरे पर आकर मिलती हैं।

Nijanand App

मोमिन होए सो देखियो, तुमारा दिल कह्या अर्स।
चारों घाट लीजो दिल में, दिल ज्यों होए अरस-परस।।७८ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारे दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं, इसलिए तुम देखना, इन चारों घाटों को चित्त में लेना जिससे तुम्हें अरस-परस दिल लग जाएं।

ए पाल सारी इन भांतकी, कई विध खेल होत इत।
या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत।।७९ ।।

यह पूरी पाल इस तरह की है जहां कई तरह के खेल होते हैं। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां कभी घाटों पर और कभी पाल पर खेल खेलते हैं।

खूबी अजब इन बन की, जो बन ऊपर पाल।
द्योहरियां उलंघ के, डारें लटक रही माहें ताल।।८० ।।

यहां वन की शोभा जो पाल पर है बड़ी अजब है उन पेड़ों की डालें द्योहरियों को पारकर तालाब के जल पर लटकती हैं।

ऊपर पाल तलाव के, ऊंचा बन अमोल।
जिनकी लम्बी डारियां, तिनमें बने हिंडोल।।८१ ।।

तालाब की पाल के ऊपर वन की सुन्दर शोभा है जिनकी लम्बी-लम्बी डालियों में हिंडोले लगे हैं।

अंदर किनारे पाल पर, द्योहरियां बराबर।
सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुन्दर।।८२ ।।

पाल के अन्दर किनारे पर (एक सौ अट्ठाईस) द्योहरी आई हैं जो किनारे पर चारों तरफ सुन्दर शोभा देती हैं।

ऊपर बन बुजरक, कई हिंडोलों हींचत।
कई डारी बन झूमत, कई विध खेल करत।।८३ ।।

पाल के ऊपर वन बहुत अच्छे लगते हैं जिनमें हिंडोले लगे हैं। कई डालियां नीचे लटकती हैं जिससे कई तरह के खेल खेलते हैं।

फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर।
कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर।।८४ ।।

सब घूमकर चारों घाटों की शोभा देखकर झुण्ड के घाट पर आ गए। इन सबकी शोभा में कोई कमीबेशी नहीं है। अब पाल के अन्दर की मोहोलातों को चलकर देखो।

पाल अंदर की मोहोलात

आगूं फिरता चबूतरा, हाथ लगता आब।
लग लग द्वार ऊपर बने, जिन विध होत मेहेराब।।८५ ।।

अन्दर की तरफ एक चबूतरा है जिससे हाथ लगता पानी है और उसके ऊपर मेहराब की शक्ल में दरवाजे बने हैं।

Nijanand App

ताल में द्वार लग लग, पौरें बनी बीच पाल।
झलकत हैं थंभ अगले, सोभा लेत है ताल।। ८६ ।।

तालाब में जो द्वार पास-पास बने हैं उन दरवाजों से पाल के अन्दर जाने के रास्ते हैं और इन मेहराबों के थंभे जल में सुन्दर झांई (झलक, प्रतिबिम्ब) देते हैं।

अब क्यों कहूं पाल अंदर की, कई थंभ कई मोहोलात।
कई देहेलाने कई मंदिर, ए खूबी कही न जात।। ८७ ।।

अब पाल के अन्दर की शोभा का कैसे वर्णन करूं? यहां कई थंभ और महल हैं। कई देहलानें, कई मन्दिर हैं जिनकी खूबी कहने में नहीं आती।

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कई और।
कई बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कई ठौर।। ८८ ।।

पाल के अन्दर थंभों की दो हारें हैं और दो महलों की हारें है। यहां तरह-तरह के सामान के अलग-अलग बैठने के ठिकाने बने हैं।

एह जुगत सब पालमें, गिनती न होए हिसाब।
थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब।। ८९ ।।

पाल की इस तरह की शोभा का हिसाब नहीं है। यहां के थंभ और दरवाजे ऐसे झलकते हैं कि सपने की जबान से कहा नहीं जा सकता।

और सीढ़ियां चारों घाट की, इत दरवाजे नाहें।
तित मोहोलात है अन्दर, बिना हिसाबें माहें।। ९० ।।

चारों घाटों की सीढ़ियां सुन्दर हैं। वहां दरवाजे नहीं है। इसके अन्दर भी मोहोलातें हैं जिनका शुमार नहीं है।

चारों हिस्से ताल के, मोहोल बने इन ठाट।
और झुण्ड ऊपर चारों चौक के, ए जो बने चारों घाट।। ९१ ।।

ताल के चार हिस्से बड़े ठाट-बाट से बने हैं और चारों भागों के ऊपर वन के पेड़ों के झुण्ड चारों घाटों पर शोभा देते हैं।

घाट झुण्ड तलाव के, पावड़ियां तरफ जल।
द्योहरियां चबूतरे, सोभित इन मिसल।। ९२ ।।

इन पेड़ों के झुण्डों के समान जल की तरफ सीढ़ियां जाती हैं जिनकी दोनों तरफ द्योहरियां और चबूतरे शोभा देते हैं।

चौक थंभ कठेड़े, बैठक चारों घाटन।
जो बन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन।। ९३ ।।

चारों घाटों के बीच थंभ, उनके अन्दर लगे कठेड़े तथा पेड़ों की खूबी जो पाल के ऊपर है, उसकी खूबी का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

Nijanand App

फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी माहें दिल।
सो कहूं मैं अर्स रूहनको, देखें मोमिन सब मिल।। ९४ ।।

पाल के ऊपर की शोभा का बयान फिर से करती हूं जो दिल में आ रही है। अर्श की रूहों के वास्ते कहती हूं जिससे सब मोमिन उसे देख सकें।

द्योहरी आगूं चबूतरे, खुले झरोखे ताल पर।
सबों बिराजत कठेड़ा, नूर भराए रह्यो अंबर।। ९५ ।।

द्योहरी के आगे चबूतरे झरोखे की तरह ताल पर शोभा देते हैं, अर्थात् चबूतरों पर कठेड़ा लगा है, जिसकी शोभा आसमान में समाती नहीं है।

चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाए द्योहरियां सब।
याही विध आगूं सबों, ऊपर बन छाए रही छब।। ९६ ।।

चारों घाटों के बीच-बीच में चारों तरफ (१२४) द्योहरियां आई हैं और इन सबों के ऊपर पेड़ों की सुन्दर शोभा है।

जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर।
ऊपर बन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर।। ९७ ।।

जैसे जल की तरफ घेरकर डोरी बन्ध चबूतरे आए हैं वैसे ही ऊपर डोरी बन्ध वन की शोभा है, जो कहीं कम ज्यादा नहीं है।

सब खुले झरोखे ढ़ांप के, बन झलूब आया जल पर।
ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूह की नजर।। ९८ ।।

सब चबूतरों को ढांपकर वन की डालियां जल पर आकर लगती हैं जिनकी शोभा रूह की नजर से ही देखी जा सकती है।

ऊपर द्योहरी तले चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब।
परकोटे तले छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तले आब।। ९९ ।।

ऊपर (१२४) द्योहरियां हैं और उनके नीचे उतने ही चबूतरे हैं जिनके नीचे मेहराब शोभा देती है तथा छोटे-छोटे द्वारों में (१२४) परकोटे (कठेड़ा) लगे हैं। चारों तरफ वन की शोभा के नीचे जल की शोभा है।

आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार।
दे परिकरमा आइए, देख आइए घाट चार।। १०० ।।

जल के चबूतरे के ऊपर चारों तरफ छोटे-छोटे दरवाजे आए हैं और उनके चारों तरफ परिकरमा करते हुए चार घाटों को देखो।

महामत कहे मोमिन को, गेहेरा गंभीर जल देख।
टापू बन्यो बीच हौजके, सोभित अति विसेख।। १०१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! हौज कौसर का जल गहरा और गम्भीर है। उसके बीच सुन्दर टापू की विशेष शोभा है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५६९ ।।

Nijanand App

टापू के बीच मोहोलात चौसठ पांखड़ी की

बन्यो तालके बीचमें, चारों तरफों जल।
बन झरोखे गिरदवाए, सोभित बाग मोहोल।। १ ।।

हौज कौसर ताल के बीच में एक सुन्दर टापू महल शोभायमान है जिसके चारों तरफ जल है, वन हैं तथा महलों में झरोखे हैं।

अब कहूं ताल के मोहोल की, जल गिरदवाए गेहेरा गंभीर।
लेहेरें लगें बीच गुरज के, जल खलकत उज्जल खीर।। २ ।।

टापू महल के चारों तरफ गहरा जल है। उस जल की लहरें आकर गुर्जों से टकराती हैं और उज्ज्वल जल दूध के समान दिखाई देता है।

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी, चार द्वार बने गिरदवाए।
गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए।। ३ ।।

जिस तरह से एक फूल की चौसठ पंखुड़ियां हैं उसी तरह से इसकी शोभा है। घेरकर चारों तरफ चार द्वार आए हैं। घेरकर साठ गुर्ज आए हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती।

एक टापू बन्यो बीच जलके, मोहोल गुरज तिन पर।
द्योहरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर।। ४ ।।

जल के बीच जो टापू बना है उसके महल, गुर्ज, द्योहरियां तालाब के किनारे पर पाल पर बराबर आई हैं।

ए चौक बने चारों तरफों, और पाल ऊपर चार घाट।
चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट।। ५ ।।

टापू के चारों दिशा में चार चौक और चार घाट पाल पर शोभा देते हैं। यह चारों घाट तालाब के सामने चारों दिशाओं में आमने-सामने हैं।

द्योहरियां घाटन पर, चारों जुदी जिनस।
देख देख के देखिए, जानों एक पे और सरस।। ६ ।।

घाटों के ऊपर सुन्दर द्योहरियां अलग-अलग तरह की शोभा देती हैं। उनको देखो तो एक से दूसरी और अच्छी दिखाई पड़ती है।

पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कई मोहोलात।
अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात।। ७ ।।

पूरी पाल और टापू एक हीरे का बना है। इसमें कई महल बने हैं। उस एक हीरे की पाल में अनेक नगों के रंग झलकते हैं।

जब खूबी ताल यों देखिए, चढ़ चांदनी पर।
फिरती पाल बन द्योहरी, जल सोभित अति सुन्दर।। ८ ।।

जब तालाब की खूबी चांदनी पर चढ़कर देखते हैं तो चारों तरफ घेरकर आई (एक सौ अट्ठाईस) द्योहरियों की शोभा जल में झलकती है।

Nijanand App

तले सोभा चारों द्वारने, आगूं कठेड़े बैठक।
आराम लेवें इन ठौरों, जब आवें इत हादी हक।। ९ ।।

चारों द्वारों की शोभा अधिक है। आगे कठेड़ा लगा है। इस ठिकाने में आकर श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां कभी-कभी बैठते हैं।

बीच-बीच में बन बिराजत, गुरज छज्जे जल पर।
छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर।। १० ।।

दो गुर्जों के बीच की जगह में वन शोभा देते हैं और गुर्ज के तीन छज्जे जल पर और छः वनों पर आते हैं।

तीन छातें चौथी चांदनी, सब गुरजों पर इत।
तले छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित।। ११ ।।

इस टापू महल की गुर्जों सहित तीन भोम चौथी चांदनी है। गुर्जों के छज्जे के नीचे हाथ लगता जल है और ऊपर बड़ी शोभा है।

ए टापू जिमी जवेरकी, बीच बीच बन्या बन।
दोनों तरफों छज्जे बने, ऊपर बन रोसन।। १२ ।।

पूरे टापू की जमीन जवेर (जवाहरात) जैसी झलकती है। गुर्जों के बीच-बीच वन आया है। उन वृक्षों के दोनों तरफ छज्जे आए हैं और ऊपर से वन की सुन्दरता है।

तीनों तरफों गुरज के, छज्जे बने यों आए।
उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूं सोभा ताए।। १३ ।।

गुर्जों के तीनों तरफ छज्जे आए हैं और ऊपरा-ऊपर भी तीनों भोमों में तीन-तीन हैं। इसकी शोभा कैसे बताएं?

तीन तीन छज्जे तरफ जलके, छे छज्जे बन पर।
अन्दर गिरदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर।। १४ ।।

तीन-तीन छज्जे जल के ऊपर और छः छज्जे वन के ऊपर गुर्जो के अन्दर घेरकर चारों दिशाओं में साठ महल आए हैं। चार द्वार आए हैं। इसके ठीक मध्य में कमर भर ऊंचा चबूतरा बना है।

दो गुरजों बीच मंदिर, हर मन्दिर झरोखे।
तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के।। १५ ।।

दो गुर्जों के बीच में मन्दिर बने हैं। हर मन्दिर में ऊपरा-ऊपर तीनों भोमों में तीन झरोखे आए हैं।

गुरज गुरज तीन द्वारने, तीनों भोमों में।
कई एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढ़िए जिनों से।। १६ ।।

एक-एक गुर्ज की तीन दिशाओं में तीन दरवाजे हैं। इस तरह उसकी भी तीन भोम शोभा देती हैं। कई ठिकानों पर सीढ़ियां बनी हैं जिससे ऊपर चढ़ते हैं।

Nijanand App

सामी और हार बनी, मन्दिर सामी मन्दिर।
तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अंदर।। १७ ।।

इन साठ मन्दिरों के सामने एक थंभों की हार छोड़कर दूसरे साठ मन्दिरों की एक हार और आई है। इस तरह से साठ बाहर और साठ अन्दर हैं।

बीच चेहेबच्चा जल का, कई फुहारे छूटत।
फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतन्त।। १८ ।।

चबूतरे के मध्य भाग में एक चहबच्चा जल का आया है जिसमें कई फव्वारे लगे हैं। इस चौक के चारों तरफ के द्वार अति सुन्दर हैं।

तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मन्दिर द्वार।
बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार।। १९ ।।

तीनों भोम में चबूतरा है और चारों तरफ मन्दिरों के द्वार आए हैं। बीच में चबूतरे पर बैठक है और एक हार साठ थंभों की आई है।

कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगूं दोए।
हर मन्दिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए।। २० ।।

हर द्वार के आगे दो-दो थंभों की हार आई हैं। हर एक मन्दिर में दो-दो द्वार हैं। यह अधिक शोभा देते हैं।

साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल।
सो ए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल।। २१ ।।

साठ गुर्ज घेरकर आए हैं जो चांदनी पर जाकर खुले हैं। कमर भर ऊंची दीवार पर लाल रंग की कांगरी गुर्जों पर आई है।

ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन।
राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन।। २२ ।।

चांदनी पर कठेड़ा लगा है। बीच के चबूतरे पर सिंहासन है। वहां श्री राजजी और श्री श्यामाजी बीच में बैठते हैं। रूहें घेर कर बैठती हैं।

कबूं मिलावा नजीक, मिल बैठें गिरदवाए।
छोटा तखत दुलीचे पर, बैठीं रूहें अंगसों अंग लगाए।। २३ ।।

रूहें कभी-कभी नजदीक चबूतरे पर बैठती हैं और कभी-कभी एक-एक गुर्ज में दो-दो सौ बैठती हैं। तख्त के ऊपर दुलीचा बिछा है। सखियां वहां जुड़कर बैठती हैं।

कबूं कबूं बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार।
कबूं दो दो एक कुरसी पर, कबूं हर कुरसी चार चार।। २४ ।।

कभी-कभी सखियां सोफे, कुर्सियों पर बैठती हैं और कभी बारह हजार सखियां दो-दो एक सोफे पर बैठती हैं और कभी एक-एक सोफे पर चार-चार बैठती हैं।

Nijanand App

कबूं दो दो सै एक कुरसियों, बैठें साठों गुरजों गिरदवाए।
सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेड़े भराए।। २५ ।।

कभी दो सौ सखियां साठों गुर्जों में घेरकर कुर्सियों पर बैठती हैं। यह कुर्सियां दीवारों के साथ लगी हैं। इस तरह से कठेड़ा तक भरकर बैठने की शोभा है।

बीच तखत बिराजत, सबथें ऊंचा गज भर।
बैठक हक बड़ीरूह, सोभा लेत सब पर।। २६ ।।

बीच में श्री राजश्यामाजी तख्त पर कमर भर ऊंचे चबूतरे पर विराजते हैं जहां पर श्री राजश्यामाजी शोभायमान हैं।

हक बड़ीरूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत।
दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत।। २७ ।।

श्री राजश्यामाजी तख्त पर विराजमान होते हैं और चारों तरफ सखियां बैठती हैं। हर एक गुर्ज में दो-दो सौ के हिसाब से साठ गुर्जों में बारह हजार बैठती हैं।

चांद चौदमी रात का, बैठें चांदनी नूरजमाल।
सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल।। २८ ।।

चौदस (चतुदर्शी) की रात की चांदनी में टापू महल की चांदनी पर श्री राजश्यामाजी के सामने सखियां बैठती हैं और इस प्रकार श्री राजश्यामाजी सखियों को आनन्दित करते हैं।

अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरों सींचत।
सो रस रूहें रब का, सनमुख रोसन पीवत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी नजरे-करम से रूहों को अमृत रस पिलाते हैं। यह सखियां श्री राजजी के इस रस को सामने बैठकर नजरों से पीती हैं।

पूरन पांचों इन्द्री सरूपें, एक एकमें पांच पूरन।
हर एकमें बल पांच का, हर एक में पांच गुन।। ३० ।।

हर एक स्वरूप में पांचों इन्द्रियों को पूर्ण सुख मिलता है। यहां की हर एक इन्द्रिय में पांचों इन्द्रियों के गुण हैं।

एक एक जाहेर सब में, एक एक में चार बातन।
इन बिध रूहें मुतलक, असल अर्स के तन।। ३१ ।।

एक इन्द्रिय जाहिर है पर उसमें चारों बाकी इन्द्रियों के गुण छिपे हैं। इस प्रकार रूहों के अर्श के तन शोभित हैं।

अर्स तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर।
पूरन कहावें याही बातसें, सब विधों ए कादर।। ३२ ।।

सखियों की परआतम और आतम सब एक समान हैं और इसी वास्ते वह पूर्ण और समर्थ कहलाती हैं।

Nijanand App

सरूप बैठे सब मिल के, घेर के गिरदवाए।
सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे।। ३३ ।।

सब सखियां श्री राजश्यामाजी को घेरकर चारों तरफ बैठी हैं। सबको श्री राजजी महाराज का दिल चाहा पूर्ण सुख मिलता है।

अब और देऊं एक नमूना, इनको न पोहोंचे सोए।
पर कहे बिना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए।। ३४ ।।

अब एक और नमूने से समझाती हूं, क्योंकि कहे बिना रूहों को समझ कैसे आएगी?

एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास।
तिन जिमी के जवेर को, होसी कौन प्रकास।। ३५ ।।

इस जमीन के एक कण का भी नूर आकाश में समाता नहीं है, तो इस जमीन के जवेर (जवाहरात) का प्रकाश कैसा होगा? यह विचार करने की बात है।

सो जवेर आगूं रूहन के, कैसा देखावें नूर।
ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आगूं सूर।। ३६ ।।

एक जवेर (जवाहरात) रूहों के आगे वैसा तेज दिखलाता है जैसे सूर्य के आगे सितारे।

आगूं रूह सूरत सूर के, जवेर गए ढंपाए।
तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए।। ३७ ।।

एक सखी के सूर्य के समान तेज के सामने कई जवेर (नगीने) ढक जाते हैं तो श्यामा महारानी की शोभा का वर्णन कैसे हो?

जो रूहें अंग अर्स के, तिन चीज न कोई सोभाए।
वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए।। ३८ ।।

जो सखियों की परआतम के अंग हैं उनके समान कोई शोभा नहीं है। परमधाम में एक दिली है। दूसरा कुछ नहीं है।

वस्तर भूखन हक जातके, सो हक जातै का नूर।
कोई चीज अर्स अंग को, कर ना सके जहूर।। ३९ ।।

इन स्वरूपों के वस्त्र और आभूषण भी उनके ही समान तेज झलकाने वाले हैं। परमधाम की किसी भी चीज की उपमा यहां से नहीं दी जा सकती है।

सोभा अंग अर्स के, या वस्तर या भूखन।
होवे दिल चाह्या कई विधका, सोभा सिनगार माहें खिन।। ४० ।।

परमधाम के तनों की शोभा या वस्त्रों और आभूषणों की शोभा दिल में इच्छा के अनुसार कई तरह के सिनगार में एक पल में बदल जाती है।

सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक।
वस्तर भूखन साजके, जाए देखें नजर भर हक।। ४१ ।।

वहां के सोना और नग (नगीने) रूहों के माफिक ही तेज डालते हैं। रूहें सब वस्त्रों और आभूषणों से सजकर तैयार हो जाती हैं। तब उन्हें श्री राजजी महाराज नजर भर देखते हैं।

Nijanand App

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर।
सो आगूं हक बड़ीरूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर।। ४२ ।।

सब सिनगार सजाकर यह सखियां अपनी शोभा के साथ बैठी हैं और आगे श्री राजजी श्री श्यामाजी सुन्दर शोभायमान हैं। उनकी हकीकत कैसे वर्णन करूं?

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द।। ४३ ।।

चांदनी के मध्य सिंहासन पर रूहों के बीच श्री राजश्यामाजी बैठे हैं। इन सबके मुखारबिन्द की शोभा के तेज की तरंग चन्द्रमा की चांदनी से टकराकर एक थंभ के समान लगती है।

जेती फिरती चांदनी, भरत्यो नूर उद्दोत।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत।। ४४ ।।

जितनी घेरकर चांदनी आई है उतनी घेर में तेज ही तेज दिखाई देता है। रूहों और श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द के तेज से सामने चन्द्रमा की रोशनी तक एक थंभ जैसे दिखाई देती है।

इन नूर थंभकी रोसनी, पड़ी ताल पर जाए।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेरयो चंद गिरदवाए।। ४५ ।।

इस नूरी थंभ की रोशनी जब ताल पर पड़ती है, तो वह तेज का थंभ जल में दिखाई देता है और आसमान तक ऐसा प्रकाश करता है मानो उसने चन्द्रमा को घेर लिया हो।

जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए।
मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए।। ४६ ।।

इस थंभे का तेज और परमधाम का तेज आपस में टकराता है। उन्हीं में जमीन का तेज और वन का तेज आसमान में जाकर समा जाता है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस।। ४७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम तो परमधाम के हो। प्रेम की मस्ती के प्यारे श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाकर मस्ती से पिओ।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ६१६ ।।

फूलबाग

और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत।। १ ।।

तालाब की पाल के पीछे पच्छिम की तरफ बड़ा वन के कई वन शोभा देते हैं। यह बड़ा वन तालाब को घेरता हुआ रंग महल तक दिखाई देता है।

ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए।
कई मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाएं।। २ ।।

यह बड़ा वन तालाब को घेरकर धाम की पच्छिम की दीवार तक आता है। इन वनों में कई तरह के मेवा के वृक्ष हैं जो गिनती में नहीं आते।

Nijanand App

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठी अपना नूर।
सो आगूं हक बड़ीरूह नूर के, ए क्यों कर करूं मजकूर।।४२।।

सब सिनगार सजाकर यह सखियां अपनी शोभा के साथ बैठी हैं और आगे श्री राजजी श्री श्यामाजी सुन्दर शोभायमान हैं। उनकी हकीकत कैसे वर्णन करूं?

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द।।४३।।

चांदनी के मध्य सिंहासन पर रूहों के बीच श्री राजश्यामाजी बैठे हैं। इन सबके मुखारबिन्द की शोभा के तेज की तरंग चन्द्रमा की चांदनी से टकराकर एक थंभ के समान लगती है।

जेती फिरती चांदनी, भरयो नूर उद्दोत।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत।।४४।।

जितनी घेरकर चांदनी आई है उतनी घेर में तेज ही तेज दिखाई देता है। रूहों और श्री राजश्यामाजी के मुखारबिन्द के तेज से सामने चन्द्रमा की रोशनी तक एक थंभ जैसे दिखाई देती है।

इन नूर थंभकी रोसनी, पड़ी ताल पर जाए।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेरयो चंद गिरदवाए।।४५।।

इस नूरी थंभ की रोशनी जब ताल पर पड़ती है, तो वह तेज का थंभ जल में दिखाई देता है और आसमान तक ऐसा प्रकाश करता है मानो उसने चन्द्रमा को घेर लिया हो।

जंग करे जोत थंभ की, अर्स जोतसों आए।
मिली जोत जिमी बन की, ए नूर आसमान क्यों समाए।।४६।।

इस थंभे का तेज और परमधाम का तेज आपस में टकराता है। उन्हीं में जमीन का तेज और वन का तेज आसमान में जाकर समा जाता है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो होवे अरवा अर्स।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस-परस।।४७।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम तो परमधाम के हो। प्रेम की मस्ती के प्यारे श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाकर मस्ती से पिओ।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ६१६ ।।

फूलबाग

और पीछल पाल तलाव के, कई बन सोभा लेत।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत।।१।।

तालाब की पाल के पीछे पच्छिम की तरफ बड़ा वन के कई वन शोभा देते हैं। यह बड़ा वन तालाब को घेरता हुआ रंग महल तक दिखाई देता है।

ताल को बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए।
कई मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाएं।।२।।

यह बड़ा वन तालाब को घेरकर धाम की पच्छिम की दीवार तक आता है। इन वनों में कई तरह के मेवा के वृक्ष हैं जो गिनती में नहीं आते।

Nijanand App

तरफ पीछल धाम के, अंन बन मेवे अनंत।
फल फूल पात कंदमूल, ए कहांलों को गिनत।। ३ ।।

यह बड़े वन के पांच वृक्ष रंग महल के पीछे अन्न वन में से निकले हैं। इनके फल, फूल, पत्ते, कंदमूल की गिनती कौन कहां तक सकता है?

ऊपर झरोखे धाम के, बन आए लग्या दिवाल।
वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कह्या बन हाल।। ४ ।।

इस वन की डालियां रंग महल की दीवार से झरोखों के ऊपर आकर लगती हैं। इनकी छाया के नीचे सुन्दर रेती है। जैसा पहले कुंजवन में वर्णन किया है।

बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल।
जब आवत हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसाल।। ५ ।।

यहां रंग महल की पच्छिम की दीवार के झरोखे से लगकर फूलों के बाग बने हैं। जब श्री राजजी श्री श्यामाजी, सखियां पच्छिम दिशा के नवीं भोम के छज्जे पर आकर बैठते हैं तो रूहें यहां की शोभा देखकर बड़ी खुश होती हैं।

लग लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए।
आगूं उठत ऊंचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए।। ६ ।।

सखियां श्री राजश्यामाजी के पास छज्जे पर एक-दूसरे के पास बैठती हैं। उनके आगे फूलबाग के फव्वारे चलते नजर आते हैं जिनसे पानी मोतियों के समान गिरता नजर आता है।

आगूं सबन के फुहारे, और आगूं सबों के फूल।
देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल।। ७ ।।

कई सखियों के सामने फव्वारे चलते हैं और सभी के आगे फूलों और चहबच्चों की शोभा है जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत तेज नूर।
सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर।। ८ ।।

चहबच्चों में जल छलकता है। नहरों में सुन्दर जल तेजी से चलता है और सब बगीचों में घूमता है। यहां पेड़-पौधे की सिंचाई होती है।

जो लग्या चबूतरे चेहेबच्चा, बुजरक बड़ा विसाल।
उतरता जल इतथें, नेहेरें चलत इन हाल।। ९ ।।

जो दो बड़े चहबच्चे रंग महल के नैरित तथा वायव कोने में हैं इनसे जल निकलकर नहरों में चलता है।

विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरे लगे पोहोंचत।
इसी भांत झरोखे बगीचे, माहें रूहें केलि करत।। १० ।।

जल सब छोटे चहबच्चों से होकर आखिर तक पहुंचता है। इसी तरह से सखियां कभी-कभी झरोखों से फूलबाग में आकर खेल करती हैं।

Nijanand App

इन ऊपर छज्जे बिराजत, सिरे लगे एकै हार।
ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार।। ११ ।।

इसी फूल बाग के ऊपर रंग महल नवीं भोम में छज्जों की एक हार है। इसकी खूबी तथा किनारे पर कठेड़े की शोभा बेशुमार है।

इत खेलत कई जानवर, मृग मोर बांदर।
कई मुरग तीतर लवा लरें, कई विध कबूतर।। १२ ।।

यहां पर कई तरह के जानवर मृग, मोर, बन्दर, कई तरह के मुर्ग, तीतर, लवा और कबूतर, आदि खेलते हैं।

कई विध देत गुलाटियां, कई उलटे टेढ़े चलत।
कई कूदें फांदें उड़ें लड़ें, कई विध खेल करत।। १३ ।।

यह सब पक्षी कई तरह की गुलाटियां खाकर उलटे, टेढ़े चलकर, ऊपर-नीचे कूदकर, ऊपर उड़कर आपस में लड़ने के खेल करते हैं।

एक नाचें गावें स्वर पूरें, एक बोलत बानी रसाल।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल।। १४ ।।

एक नाचते हैं, एक गाते हैं, एक स्वर पूरते हैं, एक सुन्दर मीठी वाणी बोलते हैं। सबके नए-नए रूप-रंग दिखाई देते हैं। इस शोभा को कैसे बयान करें?

और केते कहूं जानवर, छोटे बड़े करें खेलि।
ए खुसाली खावन्द की, रूहों करावें इस्क केलि।। १५ ।।

कितने जानवर बताएं जो छोटे-बड़े सब खेल करते हैं। यह श्री राजजी महाराज को खुश करते हैं और श्री राजजी रूहों को भरपूर इश्क के खेल खिलाते हैं।

ए खेलौने खावन्द के, सब विध के सुखकार।
कोई विद्या छिपी ना रहे, जानें खेल अपार।। १६ ।।

यह सब तरह से सुख देने वाले श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। इनसे कोई कला छिपी नहीं है। बेशुमार खेल खेलते हैं।

जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत।
फिरत सैर इन बन को, जब कबूं आवें हक इत।। १७ ।।

नीचे नूरबाग में जाने के लिए दस खिड़कियां हैं। यहां से रूहें नीचे उतरती हैं और नीचे नूरबाग में घूमती हैं। कभी-कभी श्री राजजी महाराज भी यहां आ जाते हैं।

कई बन हैं फूलन के, इन बन को नाहीं सुमार।
कई भांतें रंग कई जुगतें, कई कांगरियां किनार।। १८ ।।

यहां फूलों के कई बगीचे हैं जिनकी गिनती नहीं है। कई तरह के रंग हैं और कई युक्ति से किनारे के ऊपर कांगरी की तरह फूलों की शोभा है।

Nijanand App

हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन।
हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन।। १९ ।।

यहां फूलों और चित्रों का हिसाब नहीं है। खुशबू और रंग बेशुमार हैं।

कई मेवे फलन के, कई मेवे हैं फूल।
कई मेवे डार पात के, कई मेवे कन्दमूल।। २० ।।

यहां पर कई फलों के मेवे हैं। कई मेवे फूल के हैं। कई मेवे डालों के हैं, कई पत्तों के हैं, कई मेवे कन्दमूल के हैं।

कई बन आगूं आए मिल्या, जो बन बड़ा कहियत।
ऊंचे बिरिख अति सुंदर, जित हिंडोलों हींचत।। २१ ।।

यहां नूरबाग से आकर कई बन मिले हैं। इसे बड़ा वन कहते हैं। इसमें वृक्ष ऊंचे और सुन्दर हैं और इनमें हिंडोले लटकते हैं।

कई बिरिख कई हिंडोले, कई जुदी जुदी जिनस।
स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरस-परस।। २२ ।।

कई तरह के वृक्ष हैं, कई तरह के हिंडोले हैं। सबकी अलग-अलग शोभा है। यहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां आकर सुख लेते हैं।

कहूं कहूं लम्बे हिंडोले, कहूं तिनसें बड़े अतंत।
कहूं कहूं छोटे बने, कई जुदी जुदी जुगत।। २३ ।।

कहीं-कहीं लम्बे हिंडोले आए हैं। कहीं उनसे भी बड़े और कहीं छोटे अलग-अलग तरीके के हिंडोले लगे हैं।

कहूं कहूं सेज्या हिंडोले, कहूं हिंडोले सिंघासन।
कहूं कहूं खड़ियां हींचत, यों खेल होत इन बन।। २४ ।।

कहीं सेज्या के समान, कहीं सिंहासन के समान, कहीं खड़े होकर झूलने वाले हिंडोले हैं, इस तरह का खेल हिंडोलों में झूलने का होता है।

एक सोए हिंडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत।
एक उठें एक बैठत हैं, यों जुगल केलि करत।। २५ ।।

एक सखी हिंडोले में सोकर झूलती है, एक बैठकर झूलती है, एक हिंडोले में जोड़ी-जोड़ी से एक उठकर, एक बैठकर झूला झूलती हैं। इस तरह से जोड़ी-जोड़ी झूला झूलकर सुख लेती हैं।

इन बन जिमी की रोसनी, मावत नहीं आकास।
इन रोसन हिंडोलों हींचत, क्यों कहूं खूबी खास।। २६ ।।

इस वन और जमीन की रोशनी आसमान में नहीं समाती। हिंडोलों के झूलने के तेज की सुन्दरता का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत।
महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस फूलबाग को उत्तर की तरफ से लाल चबूतरा आकर मिलता है। यहां की अक्ल से वहां की शोभा का कैसे वर्णन करें?

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ६४३ ।।

लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे की जगह

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल।
इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में फूल बाग के वायब कोने के चहबच्चे से लगा १२०० मन्दिर लम्बा ३० मन्दिर चौड़ा रंग महल की दीवार से लगता हुआ लाल चबूतरा है जिसके ऊपर बड़े वन की छाया है। नीचे सुन्दर चालीस बैठकें बनी हैं।

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर।। २ ।।

चबूतरे के किनारे पर सुन्दर कठेड़ा लगा है और उसके नीचे बड़े वन की ४१ वृक्षों की ४१ हारें आती हैं। सभी पेड़ों की दूरी एक-एक हांस की है।

पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर।
लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर।। ३ ।।

यह पेड़ लम्बे सीधे दस भोम तक गए हैं और इनकी छत रंग महल की चांदनी के छज्जों के साथ मिलती है। यहां लाल चबूतरे पर बैठकर श्री राजश्यामाजी तथा सखियां जानवरों का मुजरा देखते हैं।

जवेर ख्वाब जिमी के, ए खूब ख्वाब में लगत।
ए झूठ निमूना क्यों देऊं, अर्स बकाके दरखत।। ४ ।।

इस सपने की जमीन के नग स्वप्न की जमीन में ही अच्छे लगते हैं, इसलिए परमधाम के अखण्ड वृक्षों की शोभा को यहां का नमूना कैसे दें?

रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात।
नूर इन रोसनका, अवकासमें न समात।। ५ ।।

इन वृक्षों के पेड़, डाली या पत्तों का नूर (तेज) आकाश में नहीं समाता।

एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान।। ६ ।।

पेड़ों की एक छोटी डाली की रोशनी से आकाश भर जाता है तो फिर पूरे पेड़ की शोभा किन शब्दों से कही जाए?

जिमी रचंक रेत की, कछू दिया न निमूना जात।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात।। ७ ।।

वहां की जमीन के रेत के कण के लिए भी यहां नमूना नहीं है, तो फिर परमधाम के फल, फूल, पत्ते, झरोखे और मोहोलातों का वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या बन इत।
महामत कहे इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस फूलबाग को उत्तर की तरफ से लाल चबूतरा आकर मिलता है। यहां की अक्ल से वहां की शोभा का कैसे वर्णन करें?

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ६४३ ।।

लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे की जगह

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल।
इत छाया बड़े बन की, ए बैठक बड़ी विसाल।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में फूल बाग के वायब कोने के चहबच्चे से लगा १२०० मन्दिर लम्बा ३० मन्दिर चौड़ा रंग महल की दीवार से लगता हुआ लाल चबूतरा है जिसके ऊपर बड़े वन की छाया है। नीचे सुन्दर चालीस बैठकें बनी हैं।

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर।। २ ।।

चबूतरे के किनारे पर सुन्दर कठेड़ा लगा है और उसके नीचे बड़े वन की ४१ वृक्षों की ४१ हारें आती हैं। सभी पेड़ों की दूरी एक-एक हांस की है।

पेड़ लम्बे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर।
लम्बे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला लेत जानवर।। ३ ।।

यह पेड़ लम्बे सीधे दस भोम तक गए हैं और इनकी छत रंग महल की चांदनी के छज्जों के साथ मिलती है। यहां लाल चबूतरे पर बैठकर श्री राजश्यामाजी तथा सखियां जानवरों का मुजरा देखते हैं।

जवेर ख्वाब जिमी के, ए खूब ख्वाब में लगत।
ए झूठ निमूना क्यों देऊं, अर्स बकाके दरखत।। ४ ।।

इस सपने की जमीन के नग स्वप्न की जमीन में ही अच्छे लगते हैं, इसलिए परमधाम के अखण्ड वृक्षों की शोभा को यहां का नमूना कैसे दें?

रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात।
नूर इन रोसनका, अवकासमें न समात।। ५ ।।

इन वृक्षों के पेड़, डाली या पत्तों का नूर (तेज) आकाश में नहीं समाता।

एक डार जरे की रोसनी, भराए रही आसमान।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान।। ६ ।।

पेड़ों की एक छोटी डाली की रोशनी से आकाश भर जाता है तो फिर पूरे पेड़ की शोभा किन शब्दों से कही जाए?

जिमी रचंक रेत की, कछू दिया न निमूना जात।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात।। ७ ।।

वहां की जमीन के रेत के कण के लिए भी यहां नमूना नहीं है, तो फिर परमधाम के फल, फूल, पत्ते, झरोखे और मोहोलातों का वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

ऊपर तमाम चबूतरे, बिछाया है दुलीच।
दोऊ तरफों बैठी रूहें, हक हादी सिंघासन बीच।। ८ ।।

पूरे लाल चबूतरे पर सुन्दर दुलीचा बिछा है। श्री राजश्यामाजी के सिंहासन के दोनों तरफ सखियां बैठती हैं।

बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलावा ले।
इन अंग की अकलें, क्यों कहूं खूबी ए।। ९ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में सिंहासन पर सखियों को साथ लेकर बैठते हैं। इस संसार के तन की जबान से इस सुन्दरता का वर्णन कैसे करूं?

बैठे जुगल किसोर, ऊपर दोऊ के छत्र।
आगे जिकर करें कई विधसों, और बजावें बाजंत्र।। १० ।।

श्री राजश्यामाजी के शीश पर सिंहासन में दो छत्र लगे हैं और उनके आगे कई तरह से बाजे बजाते हुए जानवर धनी के गुण गाते हैं।

आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर।
ताके एक बालके नूरसों, रही भराए जिमी अंबर।। ११ ।।

यहां जानवरों के लश्कर (समूह) श्री राजश्यामाजी को मुजरा दिखाने आते हैं। ऐसे जानवरों के एक बाल की रोशनी से आकाश भर जाता है।

देखावत रूहन को, पसु पंखी लराए।
हंसत हक अरवाहों सों, नए नए खेल खेलाए।। १२ ।।

श्री राजजी सखियों को पशु-पक्षियों को लड़ाकर दिखाते हैं। इस तरह से नए-नए खेल दिखाकर श्री राजश्यामाजी, रूहें खुश होते हैं।

कई गरुड़ गरजें लड़ें, कई मोर मुरग कुलंग।
लड़ें चढ़ें ऊंचे आसमान लों, फेर के लड़ें जंग बंग।। १३ ।।

यहां कई गरुड़ पक्षी आवाज करते हुए लड़ते हैं। ठीक इसी तरह मोर, मुर्गे, कुलंग आकाश में लड़ते हैं और लौटकर लड़ाई की कला दिखाते हैं।

केसरी काबली हाथी, बाघ बीघ बांदर।
पस्व घोड़े दीपड़े, लड़ें सूअर सांम्हर।। १४ ।।

यहां पर बब्बर शेर, काबुली घोड़े, हाथी, बाघ, भेड़िए, बन्दर, घोड़े, तेंदुए, सांभर आपस में लड़ते हैं।

चीते चीतल बैल बकर, लड़ें बरबरे हरन।
जरख चरख रोझ रीछड़े, लड़त आवें अरन।। १५ ।।

चीते, चीतल, बैल, गाय, हिरन, लकड़बग्घा, नील गाय, रीछ, जंगली भैंसा लड़ते हुए आते हैं।

Nijanand App

लोखरी कूकरी जंबुक, लड़त हैं मेढे।
खरगोस बिल्ली मूस्क, लरें छिकारे गैंड़े।। १६ ।।

लोखरी (बिल्ली), कुकड़ी (मुर्गी), गीदड़ (सियार) भेड़, खरगोश (शशक) चूहे, लोमड़ी, छिकरा गैंडा सब आपस में लड़ाई का खेल दिखाकर अपने धनी श्री राजश्यामाजी और सखियों को रिझाते हैं।

कई जातें पसुअन की, और कई जातें जानवर।
हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूं क्यों कर।। १७ ।।

यहां कई प्रकार के पशु हैं, कई तरह के जानवर हैं जिनकी गिनती नहीं है। यह अपने खेल करके धनी को रिझाते हैं। उस शोभा को कैसे कहूं?

कई रिझावें लड़ के, कई नाच मिलावें तान।
कई उड़ें कूदें फांदहीं, कई बोलत मीठी बान।। १८ ।।

कई लड़ाई करके दिखाते हैं। कई नाच के दिखाते हैं तथा कई स्वर में स्वर मिलाकर आवाज करते हैं। कई उड़ते हैं, कूदते-फांदते हैं और कई मीठी वाणी बोलते हैं।

कई देत गुलाटियां, कई साधत स्वर समान।
कई खेलें चलें टेढ़े उलटे, कई नई नई मुख बान।। १९ ।।

कई गुलाटियां खाते हैं। कई स्वर साधकर गाते हैं। कई खेलते हैं, चलते हैं, कई टेढ़े-उलटे होते हैं और अपने मुखों से नई-नई तरह की आवाज करते हैं।

कई नाचत हैं पांउं सों, कई नचावें पर।
कई नाचत हैं उड़ते, कई हाथ चोंच सिर लर।। २० ।।

कई पैर से नाचते हैं। कई परों को नचाते हैं। कई उड़कर नाचते हैं। कई हाथ, चोंच और सिर से लड़कर रिझाते हैं।

कई हंसावत हकको, भांत भांत खेल कर।
कोई हिकमत छिपी ना रहे, ए ऐसे पसु जानवर।। २१ ।।

कई श्री राजजी को हंसकर रिझाते हैं और कई तरह-तरह के खेल करके, अर्थात् ऐसी कोई कला छिपी नहीं रह जाती जो पशु और जानवरों को मालूम न हो।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो इन मेले में बसत।
ए सोई रूहें जानहीं, जो इन हक की सोहोबत।। २२ ।।

इस सुख का वर्णन कैसे करूं? जो इस मेले में परमधाम में शामिल होते हैं उनकी आत्मा ही जानती है? जिनकी श्री राजजी महाराज से निसबत है।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल।
क्यों देऊं निमूना इनका, याको रूहें जानें तौल मोल।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज जब अपने मुख से कुछ बोलते हैं तो बेशुमार सुख होता है। उसका नमूना संसार में कैसे दें? सखियां ही इस स्वाद को जानती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत।
आराम इन इस्क का, सोई जाने जो लेत।। २४ ।।

इस सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज बड़े प्यार से देते हैं। इस इश्क के आनन्द को लेने वाले ही जानते हैं।

क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनों सों।
ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनकों।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के सामने नजर से नजर मिलाने में जो सुख श्री राजजी महाराज देते हैं, यह वही रूहें जानती हैं जिनको यह सुख मिलता है।

क्यों कहूं इन सुखकी, धनी देवें इस्कसों।
ए सोई रूहें जानहीं, हक देत हैं जिनकों।। २६ ।।

इस सुख की बातें कैसे कहूं जो श्री राजजी महाराज इश्क से देते हैं। इनको वही रूहें जानती हैं जिनको श्री राजजी महाराज देते हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत।
जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत।। २७ ।।

उस सुख का बयान कैसे करूं जो श्री राजजी महाराज प्रेम से देते हैं। इन इश्क के प्यालों को जो कोई लेता है वही इसकी लज्जत को समझता है।

क्यों कहूं सुख नजीक का, जो इन हककी सोहोबत।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ में और पास रहने में जो सुख है, वह कैसे कहें? यह वही रूहें जानती हैं, जो इसे हमेशा लेती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक रमूज करत।
ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत।। २९ ।।

जिससे श्री राजजी महाराज मजाक (रमूजें) करते हैं उस सुख को कैसे बताऊं? यह वही रूहें जानती हैं, जो वहां रहती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करें इसारत।
ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैन से समझावत।। ३० ।।

जिसको श्री राजजी महाराज इशारे करते हैं उस सुख को वही रूहें जानती हैं जो सामने श्री राजजी महाराज के इशारे समझती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत दायम।
ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब कायम।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज जो हमेशा अखण्ड सुख देते हैं उसको कैसे कहूं? यह वही रूहें जानती हैं जो अखण्ड इश्क की मस्ती पीती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करत हैं हांस।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास।। ३२ ।।

जिससे श्री राजजी महाराज हंसते हैं उस सुख को कैसे बताऊं? यह वही रूहें जानती हैं जो खासल खास हैं और खास सुख लेती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जाए हक लेत बोलाए।
सनमुख बातें करके, अमीरस नैन पिलाए।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज जिसको बुलाते हैं उसके सामने इश्क की बातें करके नैनों से अमृतरस पिलाते हैं। उस सुख का कैसे वर्णन करूं?

क्यों कहूं इन रूहनकी, जासों धनी बोलत सनमुख।
नहीं निमूना इनका, एही जानें ए सुख।। ३४ ।।

इन रूहों के सुख को क्या कहूं जिनको धनी सामने बुलाकर बातें करते हैं? इस सुख को वही रूहें जानती हैं। इसका कोई नमूना नहीं है।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो प्यारी पिउके दिल।
सनमुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल।। ३५ ।।

जो सखी श्री राजजी महाराज को दिल से प्यारी है तथा श्री राजजी महाराज के सामने जाकर बातें करती है, उस सुख को कैसे कहूं?

क्यों कहूं ताके सुखकी, हक बातें करें दिल दे।
ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनीके लें।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज अपना दिल देकर जिससे बातें करते हैं, उस इश्क के प्याले के सुख को वही रूहें जानती हैं जो धनी के हाथ से लेती हैं। उसका मैं वर्णन कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको निरखत धनी नजर।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर।। ३७ ।।

वह रूहें जिनको धनी नजर भर देख लेते हैं और वह इश्क के प्याले भर-भर धनी को देती हैं, उस सुख का बयान मैं कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हकसों नैनों नैन मिलाए।
फेर फेर प्याले लेत हैं, आगूं इन धनी के आए।। ३८ ।।

जो रूहें हक की नजर से नजर मिलाती हैं और बार-बार धनी के सामने आकर इश्क के प्याले लेती हैं, उस सुख का बयान कैसे करूं?

क्यों कहूं इन सुखकी, जो दूर बैठत हैं जाए।
तितथें धनी बोलाएके, ढिग बैठावत ताए।। ३९ ।।

जो सखी दूर जाकर बैठती है और धनी उसे वहां से बुलाकर अपने पास बिठा लेते हैं, उस सुख का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित्त।
सो धनी आगूं आएके, सामी मीठी बान बोलत।।४०।।

जिस रूह को धनी अपने चित्त से चाह लेते हैं वह धनी के आगे आकर मीठी वाणी बोलती है। उस सुख को कैसे कहूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन।
खावंद नजीक बुलाए के, बोलत मीठे बैन।।४१।।

रूहों के उस सुख को कैसे कहूं जो बार-बार श्री राजजी महाराज से नजर मिलाती हैं और श्री राजजी महाराज उन्हें पास में बुलाकर मीठी बोली बोलते हैं।

क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखें हक नजर।
बातें इस्क पिउ अंगे, पिएं प्याले भर भर।।४२।।

उस सुख का कैसे बयान करूं जिसे श्री राजजी महाराज अपनी नजर से देखते हैं। वह सखी अपने पिया से बातें करके इश्क के प्याले भर-भरकर पीती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पिउ।
नैन बैन सुख देत हैं, चुभ रेहेत माहें जिउ।।४३।।

इन रूहों के सुख को कैसे कहें जो बार-बार अपने धनी के मुख को देखती हैं और श्री राजजी महाराज के नैनों के और मीठे वचनों के सुख रूह के हृदय में चुभ जाते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो हक बड़ीरूह अंग नूर।
आठों जाम इन पिउसों, हंस हंस करें मजकूर।।४४।।

रूहों के सुख का कैसे बयान करूं जो श्री राजजी के अंग श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं और दिन-रात धनी से हंस-हंसकर बातें करती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो इन पिउ के आसिक।
भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक।।४५।।

इन रूहों के सुख को कैसे कहूं जो ऐसे धाम धनी के आशिक है जिन्हें बार-बार श्री राजजी महाराज इश्क के प्याले देते हैं और रूहें भर-भरकर इश्क के प्याले पीती हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लगे इन हकके कान।
करें मजकूर मजाक सों, साथ इन सुभान।।४६।।

उस रूह के सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज के कान में कुछ कहकर मजाक कर देती हैं?

क्यों कहूं सुख इन रूहन के, जासों खेलें हंसें सनमुख।
पार नहीं सोहागको, इनपर धनीको रुख।।४७।।

जिस रूह के साथ श्री राजजी महाराज हंसते हैं, खेलते हैं और अपनी मेहर की दृष्टि करते हैं, उस सोहागिनी के सुख का पारावार नहीं होता। मैं उसके सुख का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

क्यों कहूं सुख रूहन के, इन पिउसों रस रंग।
आठों जाम आराममें, एक जरा नहीं दिल भंग।। ४८ ।।

मैं उन रूहों के सुख का कैसे वर्णन करूं जो श्री राजजी महाराज के आनन्द में डूबी रहती हैं और चित्त को वहां से नहीं हटातीं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों पोहोर पिउ पास।
रात दिन सोहोबत में, करें हांस विलास।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज के पास जो रूहें रात-दिन सोहोबत में रहती हैं और हंसी तथा विनोद करती हैं, उनके सुख को मैं कैसे कहूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो आठों जाम दिन रात।
प्रेम प्रीत सनेह की, भर भर प्याले पिलात।। ५० ।।

उन रूहों के सुख को कैसे कहूं जिन्हें धनी आठों पहर प्रेम, प्रीति, स्नेह से भरे इश्क के प्याले पिलाते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, जिनका साकी ए।
हक प्याले इस्क के, भर भर रूहों को दे।। ५१ ।।

उन रूहों के सुख को कैसे कहूं जिनको इश्क के प्याले पिलाने वाले स्वयं श्री राजजी महाराज हैं तथा वह इश्क के प्याले लेकर भर-भरकर रूहों को देते हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो सदा सोहोबत हक जात।
जो इस्क आराम में, सो क्यों कहूं इन मुख बात।। ५२ ।।

उन रूहों के उस सुख का कैसे वर्णन करूं जो सदा एक साथ रहती हैं और जो इश्क और आराम की बातें करती हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जिनका हक खावंद।
आठों जाम रूहन पर, हक होत परसंद।। ५३ ।।

इनके सुख का कैसे बयान करूं जिनके पति श्री राजजी महाराज हैं और जो आठों पहर रूहों पर फिदा हैं।

क्यों कहूं इन सुखकी, जो ख्वाब में गैयां भूल।
याद देने सुख अर्स के, हकें भेज्या एह रसूल।। ५४ ।।

इस सुख की कैसे बात कहूं जो रूहें खेल में आकर भूल गईं और उन्हें घर के सुख याद कराने के लिए श्री राजजी महाराज ने अपने रसूल को भेजा।

क्यों कहूं सुख हांसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए।
ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी क्योंए न जाए।। ५५ ।।

इस हंसी के सुख का कैसे बयान करूं जो श्री राजजी महाराज ने स्वप्न में भुला दिया है, पर फिर भी ऊपर से बार-बार याद दिलाते हैं, परन्तु फरामोशी किसी तरह से नहीं हटती।

Nijanand App

क्यों कहूं सुख इनका, जासों हक हांसी करत।
ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत।।५६ ।।

उस सुख का कैसे बयान करूं जिस पर श्री राजजी महाराज हंसते हैं? उस हकीकत का कैसे बयान करूं जिससे श्री राजजी महाराज रूहों को खेल खिलाते हैं?

क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कई सुख।
दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाए के दुख।।५७ ।।

उन रूहों की क्या कहूं जिन्हें श्री राजजी महाराज कई तरह के सुख दिखाते हैं? अखण्ड घर (परमधाम) में खेल के दुःख को दिखाकर लज्जत देते हैं।

क्यो कहूं सुख रूहन के, जो लेवत आठों जाम।
बिना हिसाबें दिए आराम, हक का एही काम।।५८ ।।

रूहों के सुख का कैसे वर्णन करूं जिसे वह रात-दिन बिना हिसाब आनन्द लेती हैं। आनन्द देने का एक ही काम श्री राजजी महाराज का है।

वास्ते इन रूहन के, परहेज लिया हकें ए।
आठों जाम फेर फेर देऊं, सुख अर्सका जे।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम में आठों पहर दिन-रात रूहों को सुख देने का ही नियम बना रखा है।

अब क्यों कहूं इन सुखकी, लिया ऐसा परहेज हक।
जैसा बुजरक साहेब, सुख भी तिन माफक।।६० ।।

अब इस सुख का वर्णन कैसे करूं जिसे श्री राजजी महाराज ने रूहों को देने का नियम बना रखा है। श्री राजजी महाराज की जितनी बड़ी साहेबी है, सुख भी उसी के समान हैं।

ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किए न आवत।
देखो दिल विचार के, कछू तब पाओ लज्जत।।६१ ।।

यह सुख कहने में नहीं आता। दिल से विचार करके देखो तब कुछ लज्जत मिलेगी।

आराम अर्स बका मिने, हक दिल दे देवें सुख।
ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख।।६२ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज अपने दिल से रूहों को सुख देते हैं। मैं संसार के तन से (मुख से) ऐसे सुख कैसे कहूं?

ठौर बका अर्स कह्या, और खावंद नूरजमाल।
इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल।।६३ ।।

हमारे धनी (खावंद) श्री राजजी महाराज हैं और घर अखण्ड परमधाम है। इस परमधाम में रूहें (आत्माएं) कितने आनन्द और मस्ती से रहती हैं उसका कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

ए सुख रूह कछू जानहीं, पर केहेनी में आवत नाहें।
ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबाएं।। ६४ ।।

यह रूहें ही कुछ सुख समझती हैं जो कहनी में नहीं आता तो संसार के तन और जबान से कैसे कहूं?

अर्स अजीम का खावंद, रमूज करे दिल दे।
अपने अर्स अरवाहों सों, क्यों कहे जुबां इन देह।। ६५ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज रूहों को दिल से मजाक करते हैं। उसका वर्णन इस तन और जबान से कैसे करूं?

क्यों कहूं सुख हांसीय का, वास्ते हांसी किए फरामोस।
फेर फेर उठावें हांसीय को, वह टलत नहीं बेहोस।। ६६ ।।

उस हंसी के सुख का कैसे बयान करूं जिसके वास्ते श्री राजजी ने फरामोशी दी और बार-बार हंसी के वास्ते ही उठाते हैं और वह फरामोशी नहीं हटती।

आप फरामोसी देयके, ऊपर से जगावत।
क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हांसी करत।। ६७ ।।

स्वयं श्री राजजी महाराज फरामोशी देकर और ऊपर से जगाते हैं। फिर बिना हुकम के रूहें कैसे जागें? श्री राजजी महाराज इस तरह की हंसी करते हैं।

ए हांसी फरामोसीय की, होसी बड़ो विलास।
जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हांस।। ६८ ।।

इस फरामोशी की हंसी में बड़ा आनन्द होगा। जागने के बाद हंसी और आनन्द अंग में नहीं समाएगा।

अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी।
जगावते भी जागे नहीं, एही हांसी बड़ी होसी।। ६९ ।।

बहुत (अनेक) सुख देने के वास्ते ही श्री राजजी ने फरामोशी दी है और अब जगाने पर नहीं जागते। यही बड़ी हांसी (हंसी) होनी है।

अनेक सुख दिए अर्स में, सुख फरामोसी नाहीं कब।
हंस हंस गिर गिर पड़सी, ए सुख ऐसा देखाया अब।। ७० ।।

परमधाम में बहुत सुख श्री राजजी महाराज ने दिए, परन्तु फरामोशी का सुख कभी नहीं दिया है। अब यह ऐसा सुख दिया है कि सभी उठने के बाद हंस-हंसकर गिरती-पड़ती आनन्द लेंगी।

खिन एक विरहा ना सहें, सो सौ बरस सहें क्यों कर।
फरामोसी इन हक की, कोई हांसी ना इन कदर।। ७१ ।।

जो रूहें एक क्षण का वियोग सहन नहीं कर सकतीं, वह सौ वर्ष का वियोग कैसे सहें? श्री राजजी महाराज की फरामोशी ऐसी ही है। इसके सामने कोई हंसी नहीं है।

Nijanand App

ए सुख आनंद फरामोस को, कह्यो जाए ना अलेखे ए।
ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे।।७२।।

फरामोशी के आनन्द का सुख बेशुमार है जिसका कहना सम्भव नहीं है। जागने के बाद इस सुख को पीछे कोई नहीं चाहेगा, जो फरामोशी से मिला है।

सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात।
एक वल पड़्या आए बीच में, ताथें ए सुख रूहें न चाहत।।७३।।

श्री राजजी महाराज की रूहों ने बेशुमार सुख लिए, पर इस सुख की ऐसी बात है कि इसमें सबसे बड़ी कठिनाई धनी से जुदा होने की है, इसलिए रूहें इस सुख को नहीं चाहतीं।

अनेक हांसी होएसी, अनेक उपजसी सुख।
इस्क तरंग कई बढ़सी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख।।७४।।

कई प्रकार की हंसी होगी और कई तरह के सुख भी मिलेंगे। कई तरह के इश्क की तरंगें भी मिलेंगी। ऐसा यह फरामोशी का दुःख है जो हमें दिखाया है।

कई सुख हांसी फरामोस के, कई हजूर सुख खिलवत।
कई सुख पसु पंखियन के, कई सुख मोहोलों बैठत।।७५।।

इस फरामोशी के खेल की हंसी के सुख बेशुमार हैं। कई तरह के सुख श्री राजजी महाराज एकान्त में देते हैं। कई सुख पशु-पक्षियों के द्वारा वहां मिलते हैं और कई रंग महल में बैठक का सुख मिलता है।

कई सुख चबूतर के, कई कठेड़े गिलम।
कई सुख बीच तखत के, कई सुख देत बैठ खसम।।७६।।

धाम के इस लाल चबूतरे के कई सुख हैं। कई तरह के सुख कठेड़े और गिलम (गलीचा) और बीच में श्री राजजी श्री श्यामाजी के सिंहासन के मिलते हैं, जहां बैठकर श्री राजजी रूहों को आनन्द देते हैं।

कई सुख ऊपर बैठक के, कई सुख दरखतों छात।
कई सुख तले बड़े बिरिख के, झूमत हैं ऊपर मोहोलात।।७७।।

लाल चबूतरे के ऊपर चालीस हांसों की चालीस बैठकों के कई सुख हैं। कई सुख बड़े वन के वृक्षों की छाया के हैं और कई सुख उन बड़े वन के वृक्षों के हैं जो रंग महल की चांदनी से लगे हैं।

फेर कहूं सुख तले बन के, ए बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, मिल्या मधुबन किनार।।७८।।

फिर नीचे बड़ा वन है जो पूरे चबूतरे के सामने है और आगे बढ़ता हुआ मधुवन से लगता है उसके सुख को कैसे कहूं?

मधुबन की किन विध कहूं, बन जाए लग्या आसमान।
पुखराज अर्स के बीच में, ए सिफत न होए बयान।।७९।।

मधुवन के वृक्ष जो ऊपर आसमान तक गए हैं और पुखराज और रंग महल के बीचोंबीच आए हैं, उनकी सिफत का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत।
बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित॥ ८० ॥

लिबोई और केल के घाट के कोने इस बड़े वन को आकर मिलते हैं। यह बड़ा मधुवन जमुनाजी के किनारे तक जाता है।

और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर॥ ८१ ॥

फिर पुखराज पहाड़ को घेरकर दूर-दूर तक जाता है। पुखराज पहाड़ पर चढ़कर जब देखें तो लगता है कि यह पास में ही है।

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमिन।
दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन॥ ८२ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इन सुखों को एक मैं ही जानती हूं या मोमिन जानते हैं। दूसरा इनसे महान और कोई अर्श में है नहीं।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

फेर कहूं तले बनकी, जो बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार॥ १ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब उत्तर दिशा में नीचे दस हांस चौड़ा और सत्रह हांस लम्बा ताड़वन आया है जो धाम चबूतरे से आगे केल के घाट तक जाता है।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन॥ २ ॥

इस ताड़वन के अन्दर खड़ोकली का चहबच्चा एक हांस लम्बा-चौड़ा सुन्दर शोभा देता है। इसके तीन तरफ से ताड़ के वृक्षों ने आकर जल पर छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए॥ ३ ॥

ऊपर रंग महल में यहां झरोखे हैं (जो लाल चबूतरे में नहीं थे)। जो जल पर एक के ऊपर एक आए हैं। इस खड़ोकली की महिमा मुख से वर्णन करने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर॥ ४ ॥

यहां पर कई वृक्ष ताड़ के हैं, कई खजूर के तथा कई नारियल के हैं और भी नाम कहां तक लूं? बट, पीपल और ऊमर (गूलर) के भी वृक्ष हैं।

ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबन्ध ठाट॥ ५ ॥

यह ताड़वन दूर तक फैला है और केल घाट के कोने तक जाता है (अर्थात् दस मन्दिर की जगह तक जाता है)। यह केल का घाट इन ताड़वन के वृक्षों से लगता हुआ जमुनाजी के किनारे तक सीधा चला गया है।

Nijanand App

लिबोई केल के घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत।
बुजरक बन मधुबन का, मिल्या जोए किनारे जित।। ८० ।।

लिबोई और केल के घाट के कोने इस बड़े वन को आकर मिलते हैं। यह बड़ा मधुवन जमुनाजी के किनारे तक जाता है।

और फिरवल्या पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर।। ८१ ।।

फिर पुखराज पहाड़ को घेरकर दूर-दूर तक जाता है। पुखराज पहाड़ पर चढ़कर जब देखें तो लगता है कि यह पास में ही है।

सुख हक का महामत जानहीं, या जानें मोमिन।
दूजा नहीं कोई अर्स में, बिना बुजरक रूहन।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के इन सुखों को एक मैं ही जानती हूं या मोमिन जानते हैं। दूसरा इनसे महान और कोई अर्श में है नहीं।

|| प्रकरण || ११ || चौपाई || ७२५ ||

फेर कहूं तले बनकी, जो बन बड़ा विस्तार।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब उत्तर दिशा में नीचे दस हांस चौड़ा और सत्रह हांस लम्बा ताड़वन आया है जो धाम चबूतरे से आगे केल के घाट तक जाता है।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन।। २ ।।

इस ताड़वन के अन्दर खड़ोकली का चहबच्चा एक हांस लम्बा-चौड़ा सुन्दर शोभा देता है। इसके तीन तरफ से ताड़ के वृक्षों ने आकर जल पर छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए।। ३ ।।

ऊपर रंग महल में यहां झरोखे हैं (जो लाल चबूतरे में नहीं थे)। जो जल पर एक के ऊपर एक आए हैं। इस खड़ोकली की महिमा मुख से वर्णन करने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियर।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर।। ४ ।।

यहां पर कई वृक्ष ताड़ के हैं, कई खजूर के तथा कई नारियल के हैं और भी नाम कहां तक लूं? बट, पीपल और ऊमर (गूलर) के भी वृक्ष हैं।

ए बन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबन्ध ठाट।। ५ ।।

यह ताड़वन दूर तक फैला है और केल घाट के कोने तक जाता है (अर्थात् दस मन्दिर की जगह तक जाता है)। यह केल का घाट इन ताड़वन के वृक्षों से लगता हुआ जमुनाजी के किनारे तक सीधा चला गया है।

Nijanand App

जोए जमुना का जल, पहाड़ से उतरत।
तले आया कुंडमें, पहाड़ से निकसत।। ६ ।।

जमुनाजी का जल पुखराज पहाड़ से उतरता है और मूल कुण्ड से आगे निकलता है।

जमुनाजी के मूलमें, पहाड़ बन्यो चबूतर।
आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर।। ७ ।।

जमुनाजी के मूल में सुन्दर पहाड़ पर एक चबूतरा बना है। उसके आगे दूसरा निशान बंगलों का है, जहां से जल नीचे उतरता है।

पेहेले कुन्ड चबूतरा, दूजा आगूं सोए।
चारों तरफों बैठक, जल उज्जल खुसबोए।। ८ ।।

उसके आगे अधबीच का कुण्ड तथा उसके आगे ढपो चबूतरा है। इस चबूतरे के ऊपर चारों तरफ सुन्दर बैठक बनी है और नीचे से बहुत सुन्दर जल की खुशबू आती है।

चारों तरफ चबूतरा, जमुना दोऊ किनार।
ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली द्योहरी दोऊ हार।। ९ ।।

इस चबूतरे से जमुनाजी के दोनों किनारे तक मूल कुण्ड है और आगे जमुनाजी के दोनों किनारे पर द्योहरियां आई हैं।

केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार।
इन आगूं जुदी जिनस, चली द्योहरी दोऊ किनार।। १० ।।

जमुनाजी कुछ दूर तक (सवा दो लाख कोस तक) ढकी हैं। उनके नीचे जमुनाजी के दोनों किनारों पर थंभों की हार आई है। इसके आगे की शोभा अलग है। आगे अलग-अलग तरह की द्योहरियां दोनों किनारों पर जाती हैं।

ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुन्दर।
ऊपर द्योहरी जड़ाव ज्यों, जल खलकत चल्या अंदर।। ११ ।।

जमुनाजी के ऊपर इन थंभों पर जो पटाव आया है उसकी बड़ी सुन्दरता है। वह पुल जैसा है। उसके ऊपर जगमग करती द्योहरी बनी है और जल नीचे खलकता हुआ बहता है।

चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए।
यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए।। १२ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारे पाल पर दो-दो थंभों की हार आई है जिसके ऊपर पड़ाव आया है। इस तरह से जमुनाजी कुछ दूर तक ढकी चली हैं।

दोऊ किनारें बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए।
अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए।। १३ ।।

इस जगह जमुनाजी के दोनों किनारों पर बैठकें बनी हैं और चारों तरफ से वन आया है। इसकी शोभा बेशुमार है। वर्णन करने में नहीं आती।

Nijanand App

दोऊ तरफों द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर।। १४ ।।

द्योहरियों के चारों तरफ जो जमुनाजी के दोनों तरफ आई हैं, कई तरह के कंगूरे और कलश बने है। यहां की बैठक बड़ी सुन्दर है। दोनों चबूतरे जो दोनों किनारे पर जमुनाजी के पटाव के नीचे ही हैं, देखने योग्य हैं।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर।
एक द्योहरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर।। १५ ।।

यह जमुनाजी का जल हौज कौसर तालाब की तरफ उत्तर से दक्षिण को मुड़कर जाता है। जहां से जमुनाजी मरोड़ खाई हैं। उनके किनारे पर दोनों तरफ पाल के ऊपर एक महल, एक चबूतरा इस प्रकार से आए हैं जिनकी अपार शोभा है (८३ मन्दिर के लम्बे-चौड़े हैं)।

ए बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर।
दोऊ तरफों जुगतें, आए द्योहरियां ऊपर।। १६ ।।

यहां महावन और मधुवन के पेड़ों की शोभा कैसे कहूं जिनकी डालें इन महलों और चबूतरों के बराबर आई हैं और द्योहरी पर छाया आई है। यह शोभा जमुनाजी के दोनों किनारों पर आई है।

इत लंबा बन आए मिल्या, जमुना भर किनार।
इतथें छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड़ के पार।। १७ ।।

यहां पर जमुनाजी के किनारे तक महावन आकर मिला है। जिसकी छतरियों की शोभा पुखराज पहाड़ के आगे तक गई है।

दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट।
एक चौक द्योहरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट।। १८ ।।

जमुनाजी केल घाट तक सीधी आती हैं। यहां तक इनके किनारों पर द्योहरी चबूतरे आते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें।
दोऊ किनारें जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए।। १९ ।।

सातों घाटों के बीच में भी जहां दो घाट मिलते हैं द्योहरियां आई हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव जैसे चमकते हैं। इस जबान से उनका वर्णन कैसे करूं?

इतथें चले ताललों, एक द्योहरी एक चबूतर।
दोऊ तरफ या विध, जोए हौज मिली यों कर।। २० ।।

यहां से जमुनाजी ताल तक जाती हैं। उस किनारे पर भी एक के बाद एक द्योहरी, एक चबूतरे की शोभा दोनों तरफ आई हैं और जमुनाजी हौज कौसर तालाब में इस तरह से जाकर मिलती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक।
ख्वाब मन जुबानसों, क्यों कर बरनों हक।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं अपनी बुद्धि की शक्ति के प्रमाण से वर्णन करती हूं। मेरी जबान और मन झूठे संसार का है। इससे अखण्ड परमधाम की हकीकत का वर्णन कैसे किया जाए?

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ७४६ ।।

Nijanand App

मोहोल पहाड़ पुखराजी
राग श्री मारू

सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोलके आराम।
अर्स अजीमके कायम, निस-दिन एही ताम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अर्श अजीम (परमधाम) में पुखराज पहाड़ के महल को देखो। रात-दिन अपनी आत्मा की यही खुराक है।

हौज जोए अर्स जिमिएं, जो फुरमान में फुरमाए।
पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए।। २ ।।

हौज कौसर तालाब, जमुनाजी, परमधाम की जमीन जिसका कुरान में वर्णन आया है, उन सबका मूल पुखराज पहाड़ है। श्री राजजी महाराज के हुकम से बतलाती हूं।

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अर्स एक नंग।
बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग।। ३ ।।

परमधाम के बीच में एक जवेर (हीरे) का एक नग (नगीने) का यह पुखराज पहाड़ है। वैसे जवेरों के और बहुत नाम हैं और बहुत उनके रंग है।

सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कई मोहोलात।
चौड़ा ऊंचा तेज में, क्यों कहूं अर्स की बात।। ४ ।।

उन सब में एक ही नग का पुखराज पहाड़ है। उसमें कई महलों के समूह हैं। कुछ चौड़े और कुछ ऊंचे हैं। परमधाम की इस हकीकत का बयान मैं कैसे करूं?

गिरद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा।। ५ ।।

यह पुखराज पहाड़ गोल है जो नीचे से संकरा है और जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते हैं महल बराबर बढ़ते जाते हैं।

गिरदवाए फेर देखिए, आकास न माए झलकार।
मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार।। ६ ।।

चारों तरफ घूमकर देखें तो इसकी झलकार आसमान में नहीं समाती। यहां की सब हवेलियां नूर की हैं। जबान से कैसे वर्णन होगा?

हरे पीले लाल उज्जल, संग सोब्रन नूर अमान।
एक जवेर इन भोम का, भरया रोसन नूर आसमान।। ७ ।।

हरा, पीला लाल, सफेद सभी सोने के नूर जैसे अच्छे लगते हैं। इस भोम के एक जवेर की रोशनी आसमान में छा जाती है।

कई विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत बन।
कई जल धारें फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन।। ८ ।।

यहां कई तरह के महल हैं और सभी रंग के वन हैं। कई जल की धाराएं और फव्वारे चलते हैं। मेवों के बड़े अच्छे स्वाद हैं।

Nijanand App

ए पर्वत इन भांत का, नैनों निमख न छोड़या जाए।
क्यों कहूं खूबी इन जुबां, देखत रह्या हिरदे भराए।।९ ।।

यह पहाड़ इस तरीके का है कि एक क्षण के लिए भी नजर हटती नहीं है तो इस जबान से इसकी खूबी का वर्णन कैसे हो? इसे देखकर हृदय आनन्द से भर जाता है।

ऊपर सोब्रन सिखर तले, सोभित जल उतरत।
खूबी खुसबोए बन में, आए मिल्या ताल जित।।१० ।।

ऊपर का आकाशी महल सोने जैसा लगता है। वहां से जल नीचे उतरता है। वन की सुन्दरता और खुशबू हौज कौसर ताल तक जाती है, जहां यह जल जाकर समाता है।

खूबी इन पहाड़ की, ऊंचा माहें आकास।
कई मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास।।११ ।।

इस पहाड़ की ऊंचाई की खूबी आकाश में दिखाई पड़ती है। इसमें कई महल और बैठने के ठिकाने (बंगले) बने हैं और रंग महल जैसा तेज झलकता है।

दूरथें अति सुन्दर, आए देखें सोभा अतंत।
इन जुबां इन पहाड़ की, क्यों कर करे सिफत।।१२ ।।

यह दूर से ही बहुत सुन्दर लगता है और पास में आकर देखने से सुन्दरता अति प्यारी लगती है। यहां संसार की जबान से पहाड़ की सिफत कैसे बयान हो?

कई बैठक तले ऊपर, कई ठौर तले कराड़।
सोभा जल बन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड़।।१३ ।।

कई बैठकें नीचे बनी हैं तथा कई ऊपर। कई ठिकानों पर नीचे कुर्सी के चबूतरे बने हैं। जहां बैठकर जल, वन और पहाड़ अति शोभायमान दिखाई देते हैं।

उपरा ऊपर भोम अनेक, अति विराजे सोए।
खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे।।१४ ।।

यहां से एक से बढ़कर ऊपर एक अधिक भोम तक महलों की बढ़ने की शोभा है। इन महलों को देख-देखकर मन मोहित हो जाता है।

जड़या पहाड़ जानों सोने सों, जुदे जुदे जवेरन।
ए मोहोल अति सुन्दर, बड़ी बैठकें रोसन।।१५ ।।

ऐसा लगता है मानो यह पहाड़ सोने में नगों से जड़ा है। यह बहुत ही सुन्दर है। यहां की बड़ी बैठकें भी सुखदायी हैं।

माहें कई नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत।
कई फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत।।१६ ।।

यहां कई तरह से नहरें चलती हैं जो पूरे पहाड़ में घूमती हैं। कई फव्वारे और चहबच्चे हैं जो सुन्दरता को बढ़ा देते हैं।

Nijanand App

ए मोहोल बड़े अति सुन्दर, एक दूजे थें चड़त।
ज्यों ज्यों ऊपर चढ़िए, त्यों त्यों खूबी बढ़त।। १७ ।।

यहां के महलों की सुन्दरता एक-दूसरे से बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते हैं, वैसे-वैसे खूबी बढ़ती जाती है।

ए मोहोल बैठन के, अति बड़ियां पड़साल।
बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल।। १८ ।।

इन महलों में बैठने की बड़ी-बड़ी दहलाने हैं और कई बैठकों की शोभा कमाल की दिखाई देती है।

ऊपर चौक लग चांदनी, अतंत है विसाल।
नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल।। १९ ।।

चौक से लेकर चांदनी तक इनका फैलाव है। इन्हें देख-देखकर खुशी होती है। नजर पीछे नहीं हटाई जाती।

कोटक कचेहेरी बनी, फिरतियां गिरदवाए।
ए सुन्दरता इन जुबां, मोपे कही न जाए।। २० ।।

यहां घेरकर करोड़ों भवन बने हैं। इनकी सुन्दरता इस जबान से कहने में नहीं आती।

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुन्दर।
न्यारी नजर न होवहीं, चुभ रह्या रूह अन्दर।। २१ ।।

जैसे-जैसे नजर से देखते हैं, वैसे-वैसे ही अधिक सुन्दर लगते हैं। नजर किसी तरह से अलग नहीं होती, यह दृश्य आत्मा के अन्दर भर जाता है।

अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापति सिरदार।
मेला होत है इन मोहोलों, कई जातें जिनसें अपार।। २२ ।।

यहां बड़े-बड़े पशु-पक्षी वीर बहादुर सेनापति सिरदारों का मेला इन महलों में होता है जिनकी जातियां बेशुमार हैं।

रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट सोभा है इत।
ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी-खुसाली करत।। २३ ।।

जब सखियां, श्री राजजी और श्री श्यामाजी बैठते हैं तब शोभा और बढ़ जाती है। ऊपर, नीचे, बीच में सब जगह की सुन्दरता अति सुखदायी होती है।

इत सिखरें सब पहाड़ की, जानों जवेर सब नूर।
सिखरें सब आसमान लों, जानों के गंज जहूर।। २४ ।।

पूरे पहाड़ का शिखर (आकाशी महल) एक ही नग का जगमगा रहा है। इसके तेज की किरणें आसमान तक बेशुमार जाती हैं।

इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन।
उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे बरनन।। २५ ।।

इन महलों में अन्दर जाकर देखें तो छज्जों के थंभ की शोभा एक दिलकश नजारा है जिसे ऊपरा ऊपर देखने में ही कमाल का नजारा है। जबान इसका वर्णन कैसे करे?

Nijanand App

फिरता पेड़ जो पहाड़ का, तले बन्या सकड़ा ए।
फिरते थंभ चौड़े चढ़े, जाए फैल्या आसमान में जे।। २६ ।।

मध्य का पेड़ नीचे संकरा है और ऊपर फैलता जाता है। चारों तरफ चौड़ाई में थंभों की शोभा बढ़ती जाती है और यह पेड़ ऊपर चांदनी तक फैलता जाता है।

ऐसे ही थंभ तिन पर, चौड़ा अति विस्तार।
या विध चढ़ता चढ़या, गिरदवाए बनी किनार।। २७ ।।

ऐसे ही थंभ दूसरे चार शोभा देते हैं जिनकी शोभा हर एक भोम में चौड़ाई में बढ़ती जाती है और बढ़ते-बढ़ते पुखराज के किनारे तक छज्जे चले जाते हैं।

ज्यों ज्यों मोहोल ऊंचे चढ़े, तिन चौगिरद थंभ हार।
चौड़ा ऊंचा चढ़ता, चढ़ता चढ़या विस्तार।। २८ ।।

जैसे-जैसे ऊंची मंजिल पर चढ़ते हैं उनके चारों तरफ थंभों की हार बढ़ती जाती है। चौड़ाई में ऐसे ऊंचे चढ़ते हुए पूरे पहाड़ को ढांप लेते हैं।

चढ़ते मोहोल मोहोलन पर, जाए लग्या आसमान।
चढ़ती सोभा सुन्दर, ए क्यों कर कहे जुबान।। २९ ।।

इस तरह प्रत्येक चढ़ती भोम में महलों पर महल बढ़ते जाते हैं और आकाश तक शोभा बढ़ती है। यहां की शोभा का संसार की जबान से कैसे वर्णन करूं?

मोहोल बड़े सोभा बड़ी, थंभ फिरते दोरी बंध।
जोतें जोत जगमगे, क्यों कहूं सोभा सनंध।। ३० ।।

इन बड़े महलों की बड़ी शोभा है और एक ही डोरीबन्द (पंक्ति) में आए हैं। इनकी जगमगाहट की शोभा कैसे वर्णन करूं?

तले से ऊपर लग, मोहोल झरोखे पड़साल।
कई चौक थंभ कचेहेरियां, कई देहेलानें दिवाल।। ३१ ।।

नीचे से ऊपर तक महल, झरोखे और दहलानें दिखाई देती हैं। कई चौक, थंभा, भवन, दहलानों की तथा दीवार की शोभा हैं।

मोहोलन पर मोहोल विस्तरे, सोभा चढ़ती चढ़ी अतंत।
कोई मोहोल बड़े इन भांत के, सब नजरों आवत।। ३२ ।।

महल पर महल बढ़ते जाते हैं और उनकी शोभा उनके समान बढ़ती जाती है। उनमें से कोई महल इस तरह के बड़े हैं जहां से सब कुछ दिखाई देता है।

फिरते मोहोल अति बने, कई मोहोलातें जे।
कई रंगों चरनी बनी, सब एक जवेर में ए।। ३३ ।।

कई रंगों के महलों के समूह घेरकर बने हैं। कई रंगों की सीढ़ियां एक जवेर में बनी दिखाई देती हैं।

Nijanand App

हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत।
मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत।। ३४ ।।

पुखराज पहाड़ के हजार हांस हैं और ऊपर हजार गुर्ज बने हैं। अन्दर कई तरह के महल बैठक और झरोखे शोभा देते हैं।

हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग।
थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनो मिने जंग।। ३५ ।।

हजार हांस में हजार रंग दिखाई देते हैं और हर हांस में एक नए रंग की शोभा है। जमीन के नीचे थंभ से लेकर चांदनी तक इनके तेज की किरणें आपस में टकराती हैं।

ऊपर चौड़ा तले सकड़ा, दोरीबंध देखत।
तले से ऊपर लग देखिए, गिरदवाए सब सोभित।। ३६ ।।

पुखराज पहाड़ ऊपर से चौड़ा, नीचे से संकरा है। यदि नीचे से ऊपर तक देखें, तो सब महल एक गोलाई में डोरीबन्द नजर आते हैं।

मोहोल चारों तरफों, हजार हांसों माहें।
ए मोहोल पहाड़ जवेर के, क्यों केहेसी जुबांए।। ३७ ।।

महल के चारों तरफ हजार हांसों में एक जवेर के पहाड़ की शोभा इस जबान से कैसे कही जाए?

बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड़ किनार।
सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, झलकारों झलकार।। ३८ ।।

पहाड़ के किनारे घेरकर डोरीबन्द दिखाई देते हैं। इस मुख से उसकी झलकार की शोभा का कैसे वर्णन करूं?

एक नकस बरनन ना कर सकों, ए अति बड़ो बयान।
ए मोहोल पहाड़ अर्स के, कहा कहे एह जुबान।। ३९ ।।

एक नक्शकारी (चित्रकारी) का वर्णन करना सम्भव नहीं है। फिर ऐसे विशाल पहाड़ का वर्णन कैसे करें?

गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर।
कई कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर।। ४० ।।

हजार गुर्जों के बीच चांदनी की शोभा है और सब गुर्ज बराबर हैं। यहां की करोड़ जबानें भी इस सुन्दरता का बयान नहीं कर सकतीं।

तले चार गुरज बिलंद हैं, थंभ होत ज्यों कर।
चारों भोम से छात लग, आए पोहोंचे ऊपर।। ४१ ।।

नीचे चार बड़े गुर्ज खम्भे के समान हैं और चारों की बढ़ती छतें चांदनी तक आती हैं।

सो याही छात को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए।
पेड़ पांचमा बीच में, मोहोल पांचों जुदे सोभाए।। ४२ ।।

यह छतें ऐसी लगती हैं जैसे एक महल के चार थंभ हों। पांचवां पेड़ बीच में है। इन पांचों के महलों की अलग शोभा है।

Nijanand App

सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस।
देख देख पांचों देखिए, एक पे और सरस।। ४३ ।।

इन पांचों में मोहलातें हैं जिनके रंग और नग अलग-अलग किस्म के हैं। जब पांचों को एक के बाद एक देखते हैं, तो एक से दूसरा श्रेष्ठ दिखाई देता है।

कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक।
इन झूठी जिमीके साजसों, क्यों कहूं अर्स विवेक।। ४४ ।।

कैसे कहूं, क्या कहूं, मेरी जबान एक है, महल अनेक हैं। संसार की झूठी जमीन की उपमा से अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे करूं?

तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान।
ए बैठकें बका मिने, रूहें संग सुभान।। ४५ ।।

यहां से ऊपर तक थंभ, झरोखे और देहलानों की शोभा है। सखियां श्री राजजी और श्री श्यामाजी के साथ इस अखण्ड घर की बैठकों में आनन्द लेती हैं।

ए पांचों फेरके देखिए, खोलके रूह नजर।
ले भोम से लग चांदनी, खूब ऊपर खूबतर।। ४६ ।।

आत्मा की अन्तरदृष्टि से इन पांचों को फेरकर देखें तो नीचे की भोम से चांदनी तक इनकी खूबी बढ़ती ही जाती है।

एक तरफ अर्स हौज के, तरफ दूजी हौज जोए।
और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जड़ित जगमगे सोए।। ४७ ।।

पुखराजी ताल के एक तरफ रंग महल है दूसरी तरफ जमुनाजी। दो तरफ दो सीढ़ियां जगमग-जगमग करती हैं। यह सीढ़ियां घाटियों की हैं।

ए छठा पहाड़ हौज जोए का, ताके तले बड़ो विस्तार।
आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इनके पार।। ४८ ।।

जमुनाजी का पुखराजी ताल छठे पहाड़ के समान शोभा देता है जिसके नीचे बहुत बड़ा विस्तार है। इसके छज्जे ऊपरा-ऊपर बढ़कर पुखराज के छज्जों से मिल गए हैं।

तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड़ मोहोल एक।
और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक।। ४९ ।।

नीचे से छः अलग-अलग दिखाई देते हैं। ऊपर पहाड़ का महल एक है। पच्छिम तथा उत्तर में दो घाटियां हैं, इसलिए यह आठ पहाड़ की शोभा हो गई।

चरनी दोए बड़ी कही, जो बड़े गुरज दरम्यान।
आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान।। ५० ।।

दो बड़ी सीढ़ियां (घाटियां) चांदनी पर दो बड़े गुर्जों में आकर मिलती हैं। जमीन से ऊपर तक इन सीढ़ियों की शोभा जबान से वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

बड़ियां ऊंची आसमान लों, और खूबी देत अति जोर।
जोत जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर।।५१।।

यह दोनों सीढ़ियां (घाटियां) सीधी आसमान तक जाती हैं। इनकी शोभा अत्यन्त अधिक है। इनके जवेरों की झलकार अधिक है। किनारे दोनों एक सीध में हैं।

दोऊ सीढ़ियों के सिरे पर, दोए दरवाजे बुजरक।
दोऊ तरफों दो दिवालें, सोभी वाही माफक।।५२।।

दोनों सीढ़ियों के ऊपर दो बड़े दरवाजे आए हैं। दोनों तरफ की दीवारें दरवाजे के अनुसार हैं।

दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार।
सो चारों तरफों जगमगे, सोभा अलेखे अपार।।५३।।

यहां पर दो दरवाजे और हैं। चांदनी के ऊपर इस तरह से चार दरवाजे चारों दिशाओं में हैं। यह चारों तरफ जगमगा रहे हैं जिससे शोभा और अधिक हो गई है। (नोटः दो दरवाजे सीढ़ियों के, एक दरवाजा पूरब की दिशा बंगलों का और एक दरवाजा दक्षिण में रंग महल की तरफ।)

गुरज दोए हर द्वारने, इत बड़े दरबार।
सो तेज जोत नूर को, कह्यो न जाए सुमार।।५४।।

हर द्वार के ऊपर दो बड़ी गुर्जे हैं जिनके तेज की रोशनी बेशुमार है।

ए जो गिरदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार।
जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार।।५५।।

हजार गुर्जों के बीच में चांदनी के ऊपर महल बने हैं जिनकी किरणें आसमान तक झलकती हैं।

ए अति बड़े मोहोल किनारे, और कंगूरे अति सोभित।
सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत।।५६।।

यह महल बहुत बड़े हैं जिन पर सुन्दर कंगूरे शोभा देते हैं। इन महलों की शोभा यहां की जबान कैसे वर्णन करें?

हौज जोए इन पहाड़ से, सो पीछे कहूं सिफत।
बड़े मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकास में अतंत।।५७।।

जमुनाजी का तालाब (हौज, पुखराजी ताल) का वर्णन बाद में करूंगी। यहां पर महलों पर महल बने हैं जिनकी खूबी आकाश तक फैली है।

इन मोहोल ऊपर जो चांदनी, तिन पर जो मोहोलात।
सो विस्तार है अति बड़ा, या मुख कह्यो न जात।।५८।।

महलों के ऊपर चांदनी है। चांदनी के ऊपर भी सुन्दर जवेरात के महल बने हैं। इनका विस्तार बहुत भारी है। इनका वर्णन करना असम्भव है।

इन पहाड़ ऊपर मोहोलात जो, ऊंचा बड़ा विस्तार।
गिरद झरोखे ऊपर तले, याको क्यों कर होए निरवार।।५९।।

पुखराज पहाड़ के ऊपर आकाशी महल का बड़ा विस्तार है। इसके चारों तरफ ऊपर-नीचे हवेलियों में झरोखे हैं जो बेशुमार हैं।

Nijanand App

चारों तरफों दरवाजे, आगूं चौखूंटे चबूतर।
थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर।। ६० ।।

चारों दिशाओं में दरवाजे के आगे चौखूना (चार कोने वाला) चबूतरा है। इन चारों के चारों कोनों पर चार थंभ हैं और आठों चबूतरों के ऊपर आठ द्योहरियां आई हैं।

चारों तरफों द्वारने, और चारों खूंटों गुरज चार।
कहा कहूं अंदर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार।। ६१ ।।

चारों तरफ के दरवाजों के अतिरिक्त चारों कोनों पर चार गुर्ज हैं। महल के अन्दर की शोभा क्या कहूं? बेशुमार है।

इनके आठ चबूतरे, तिन आठों पर आठ गुरज।
आकासमें जाए जगमगे, करें जंग जोत सूरज।। ६२ ।।

आठों चबूतरों के आठ गुर्ज आकाश में जगमगाते हैं जिनकी किरणें सूर्य से टकराती हैं।

इन आठों बीच चार द्वार ने, कई सोभा लेत अपार।
कठेड़ा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार।। ६३ ।।

इन आठों के बीच चार दरवाजों में कई तरह की शोभा है। आठों चबूतरों पर चारों तरफ से कठेड़ा लगा है। ऐसे सुन्दर चार द्वार हैं।

चार गुरज चार खूंट के, माहें मोहोल फिरते गिरदवाए।
फिरते झरोखे सिरे लगे, आसमान में पोहोंचे आए।। ६४ ।।

चार गुर्ज आकाशी महल के चारों कोनों पर हैं। अन्दर घेरकर मोहोलात हैं (जो तेरह की तेरह हारें हैं, १६९)। इन सबके झरोखे घेरकर आए हैं। यह अति सुन्दर हैं और इनकी आसमान जैसी ऊंचाई है।

आठों खांचों के गुरज जो, छ्यानब्बे गुरज कहे।
बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए।। ६५ ।।

आठों खांचों के गुर्ज ९६ हैं। बारह गुर्जों का वर्णन हो चुका है। सब एक सौ आठ गुर्ज हुए।

सब मोहोल अति सुन्दर, चौखूंटे एक सौ चार।
चार गिरद चार खूंट के, एक सौ आठ यों सुमार।। ६६ ।।

यह महल बहुत सुन्दर हैं। चौखूने एक सौ चार गुर्ज हैं और चार कोने के गुर्ज पांच पहल के हैं। सब एक सौ आठ हुए।

दिवालां आकास लों, करे जोत जोत सों जंग।
बिलंद झरोखे कई थंभ, हिसाब ना जिनस रंग।। ६७ ।।

इस आकाशी महल की दीवारों का तेज आपस में टकराता है। इनमें कई बड़े-बड़े झरोखे हैं और थंभ हैं जिनके रंग बेशुमार हैं।

चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए।
कई रंग नंग थंभ जवेरके, चारों तरफों झरोखे।। ६८ ।।

आकाशी महल के चार तरफ की शोभा बेशुमार है। कई रंग के नगीनों के थंभ जवेरात के हैं और और चारों तरफ झरोखे हैं।

Nijanand App

एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान।
कलस रोसन कई तिन पर, सो जाए न कहे जुबान।।६९ ।।

आकाशी महल के एक सौ आठ गुर्ज ऊपर आसमान में शोभा देते हैं। इन गुर्जों में कलशों की जो चमक है उसकी शोभा का वर्णन यहां की जबान से कैसे बयान करें?

माहें मोहोल कई विध के, कई कचेहेरी देहेलान।
कई मन्दिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान।।७० ।।

उसके अन्दर कई तरह के महल हैं। कई तरह के मन्दिर, दहलानें, हवेलियां और बैठकें हैं। इनका कैसे बयान करें?

कई अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे।
खुसबोए फूल मेवे कई, माहें बैठक कई बगीचे।।७१ ।।

हवेलियों के अन्दर चहबच्चा हैं, नहरें चलती हैं। कई तरह के खुशबूदार फूल हैं, मेवा हैं और बगीचों में बैठकें हैं।

बाहेर देखाई माफक, अंदर बड़ा विस्तार।
पहाड़ ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार।।७२ ।।

बाहर की शोभा देखने योग्य है। अन्दर का विस्तार बहुत भारी है। पुखराजी पहाड़ के ऊपर इस आकाशी महल की शोभा बेशुमार है।

बड़े द्वार बड़े चबूतरे, इत सोने के कमाड़।
जड़ाव चारों द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड़।।७३ ।।

पुखराज के चबूतरे के ऊपर चार बड़े दरवाजे हैं जिनमें सोने के किवाड़ लगे हैं। दरवाजे सुन्दर जड़ावदार हैं। पूरा पुखराजी पहाड़ एक ही नग का दिखाई देता है।

इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन।
सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूह मोमिन।।७४ ।।

श्री राजजी महाराज सखियों को आनन्दित करने के लिए यहां आते हैं। यह अखण्ड सुख सपने के संसार में वाणी के द्वारा देती हूं। उसकी लज्जत मोमिनों की आत्मा ही जानती है।

चरनी आठों चबूतरे, और ऊपर आठों के छात।
बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात।।७५ ।।

सीढ़ियों (घाटियों) के दो नीचे तथा दो ऊपर चार चबूतरे एक में और चार दूसरी सीढ़ी में हैं। इन आठ चबूतरों पर छत आई है। चारों दरवाजों के ऊपर बड़े-बड़े छज्जे आए हैं और घेरकर महलों के छज्जे आए हैं।

कई कलस कई कंगूरे, आसमान में रोसन।
खूबी हक के अर्स की, इत क्यों कहूं जुबां इन।।७६ ।।

यहां पर कई कलश तथा कई कंगूरे आए हैं जो आसमान में जगमगा रहे हैं। श्री राजजी महाराज के परमधाम की इस खूबी का इस जबान से कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

जवेर अर्स जिमी के, और सोना भी जिमी अर्स।
जिमी रेत या दरखत, सब अर्स जिमी एक रस।। ७७ ।।

परमधाम के जवेर, सोना, रेती, पेड़ और सब जमीन एक रस हैं।

अर्स तरफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए।
बांईं तरफ और पीछली, ए कही सीढ़ियां दोए।। ७८ ।।

पुखराजी पहाड़ के दाहिने तरफ रंग महल है। पूरब की दिशा में जमुनाजी का पुखराजी ताल है तथा उत्तर और पच्छिम में दो सीढ़ियां (घाटियों) की शोभा है।

अब कहूं इनका बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक।
ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक।। ७९ ।।

अब इनका ब्यौरा बताती हूं। यह सब मोहोलातें एक ही नग (नगीने) की हैं जिसको दिल में धारण करना मैं हकीकत का बयान करती हूं।

ए चारों तरफ कहे पहाड़ के, बीच गुरज बड़े थंभ चार।
ए आठ निसान गिरद के, लीजो रूहें दिल विचार।। ८० ।।

पुखराज पहाड़ के चारों तरफ आठ निशान का वर्णन आया है। बीच में चार पेड़ थंभ के समान हैं। एक बीच का पानी का थंभा और दो घाटियों के तथा एक बंगले का यह आठ निशान पहाड़ के समान दिखाई देते हैं। हे रूहो! इसको दिल में विचार करके ग्रहण करना।

और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर।
देत खूबी बीच अकास के, अवकास सबे जहूर।। ८१ ।।

पुखराज पहाड़ की शोभा उसके ऊपर आकाशी महल की शोभा आकाश में जगमग करती हैं।

एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन।
कंगूरे कलस ऊपर कई, देख होत खुसाल मोमिन।। ८२ ।।

यह एक सौ आठ गुर्ज आकाशी महल के ऊपर झलक रहे हैं जिनमें कंगूरे और कलशों की शोभा देखकर मोमिन खुश होते हैं।

इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।
ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए।। ८३ ।।

आकाशी महल के (१६९) महल आए हैं। उनके भवनों की शोभा का करोड़वां हिस्सा भी वर्णन करने में नहीं आता। यह खूबी शब्दातीत है। हे रूहो! अपने दिल से देखना।

आगूं जल अति सोभित, तले गिरदवाए पाल।
तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूं खूबी इन ताल।। ८४ ।।

पुखराजी पहाड़ के आगे पुखराजी ताल की शोभा है जिसके चारों तरफ नीचे पाल बनी है और पाल के चारों तरफ वन आए हैं। इस ताल की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

ए जवेर अर्स जिमीके, सब्दमें न आवत।
ए मोमिन देखो रूहसों, जुबां न पोहोंचे सिफत।। ८५ ।।

यह परमधाम की जमीन के जवेरात हैं। हे मोमिनो! अपनी आत्मा से देखो। इनकी शोभा का वर्णन करने में यहां की जबान नहीं पहुंचती।

Nijanand App

नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए।। ८६ ।।

जिन मोमिनों ने इस ज्ञान को ले लिया है, वही इसे जानते हैं। उन्हें ही रंग महल, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी की पहचान है।

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन।। ८७ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह रात-दिन यहीं खेलती हैं। वह ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर की जर्रा-जर्रा की हकीकत जानती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! पहाड़ की सिफत का बयान कैसे करूं? जो श्री राजजी महाराज तथा अखण्ड घर के निसबती हैं उनको ही इसकी लज्जत आएगी।

|| प्रकरण || १३ || चौपाई || ८३४ ||

ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अर्स अरवाए।
रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए।। १ ।।

आकाशी महल के नीचे पुखराजी ताल है। हे परमधाम की रूहो श्री राजजी महाराज के साथ रहकर इसकी शोभा को देखो और एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज के चरणों से अलग मत होना।

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार।
तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार।। २ ।।

पहाड़ के पुखराजी ताल का विस्तार बहुत बड़ा है। इसके नीचे बड़े-बड़े मोहोलात हैं। उसकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार।
हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार।। ३ ।।

यहां बड़ी-बड़ी दहलानें है, पड़साल हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठती हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें जब बैठते हैं तो वहां की शोभा बेशुमार हो जाती है।

थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग।
बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग।। ४ ।।

यहां जवेरात के बड़े-बड़े थंभ हैं जिनमें कई तरह के रंग हैं। बहुत से कई रंगों के छज्जे हैं जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांईं।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं।। ५ ।।

कई छज्जे ताल के ऊपर हैं जिसकी झांई जल में पड़ती है। मोहोल की परछाई भी जल में दिखाई देती है। यहां की जबान से इस हकीकत का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

नसीहत लई जिन मोमिनों, ए तरफ जानें सोए।
अर्स हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए।। ८६ ।।

जिन मोमिनों ने इस ज्ञान को ले लिया है, वही इसे जानते हैं। उन्हें ही रंग महल, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी की पहचान है।

जो अरवाहें अर्स की, सो यामें खेलें रात दिन।
ऊपर तले मांहें बाहेर, ए जरे जरा जाने मोमिन।। ८७ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह रात-दिन यहीं खेलती हैं। वह ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर की जर्रा-जर्रा की हकीकत जानती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! पहाड़ की सिफत का बयान कैसे करूं? जो श्री राजजी महाराज तथा अखण्ड घर के निसबती हैं उनको ही इसकी लज्जत आएगी।

|| प्रकरण || १३ || चौपाई || ८३४ ||

ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अर्स अरवाए।
रहिए संग सुभान के, छोड़िए नहीं पल पाए।। १ ।।

आकाशी महल के नीचे पुखराजी ताल है। हे परमधाम की रूहो श्री राजजी महाराज के साथ रहकर इसकी शोभा को देखो और एक पल के लिए भी श्री राजजी महाराज के चरणों से अलग मत होना।

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार।
तले बड़े मोहोलात के, सो नेक कहूं विचार।। २ ।।

पहाड़ के पुखराजी ताल का विस्तार बहुत बड़ा है। इसके नीचे बड़े-बड़े मोहोलात हैं। उसकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार।
हक हादी रूहन की, नाहीं सिफत सुमार।। ३ ।।

यहां बड़ी-बड़ी दहलानें है, पड़साल हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठती हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें जब बैठते हैं तो वहां की शोभा बेशुमार हो जाती है।

थंभ बड़े जवेरन के, कहूं सो केते रंग।
बोहोत छज्जे कई रंगों के, करे जोत जोत सों जंग।। ४ ।।

यहां जवेरात के बड़े-बड़े थंभ हैं जिनमें कई तरह के रंग हैं। बहुत से कई रंगों के छज्जे हैं जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं।

कई छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल में झांईं।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं।। ५ ।।

कई छज्जे ताल के ऊपर हैं जिसकी झांईं जल में पड़ती है। मोहोल की परछाई भी जल में दिखाई देती है। यहां की जबान से इस हकीकत का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

अंदर मोहोल नेहेरें चलें, चारों तरफों फिरत।
इन सबमें सोभा देय के, पुखराजें पोहोंचत।। ६ ।।

आकाशी महल की चांदनी में बीच के पानी वाले पेड़ से पानी सभी महलों में, बगीचों में से उतरता हुआ आता है और ऊपर पुखराज की चांदनी पर पहुंचता है। यहां से पानी पुखराजी ताल में पहुंचता है।

तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात।
बड़े छज्जे तरफ पहाड़ के, दोऊ बाजू दरखतों छात।। ७ ।।

पुखराज ताल के तीन तरफ अलग-अलग मोहलातें शोभा देती हैं। बड़े बंगलों से पुखराज पहाड़ तक बड़े-बड़े छज्जे जाते हैं तथा उनके दोनों तरफ वन आया है (पांच-पांच पेड़)। यह वन और जवेरों के महल बड़े ऊंचे हैं। उनका थोड़ा सा बयान करती हूं।

मोहोल दोऊ छातों पर, तिन परे भी बड़े वन।
ए बन मोहोल अति बिलन्द, पर नेक करूं रोसन।। ८ ।।

तालाब के दोनों तरफ बंगलों की छतों पर जवेरात के महल तथा महावन के वृक्ष आए हैं। यह वन तथा महल विशाल हैं। थोड़ी हकीकत इनकी भी बताती हूं।

दोऊ बाजू बन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत।
पीछे मोहोल पर बड़े मोहोल, तिनकी जुदी बड़ी सिफत।। ९ ।।

महल के दोनों तरफ महावन के पांच-पांच पेड़ों की शोभा है। महलों पर महल आए हैं। इनकी भी अलग सिफत है।

आगूं दोऊ सिरे गुरज दोए, माहें छज्जे कई किनार।
दोऊ बीच में पानी उतरत, गिरत चादरें चार।। १० ।।

पुखराज पहाड़ और बंगलों के बीच दो गुर्ज आए हैं। इनके किनारे पर छज्जे शोभायमान हैं। इन दोनों गुर्जों के बीच में जमुनाजी का पानी पुखराजी पहाड़ से चार चादरों में गिरता है।

सो चारों जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार।
सोभा लेत और गरजत, सो सोले भई सुमार।। ११ ।।

पुखराज ताल से चारों चादरें (झरने) ऊपरा-ऊपर पूरब की तरफ अधबीच के कुण्ड में सोलह धाराओं में गिरता है जहां पर दो लाख कोस की ऊंचाई से पानी के गिरने का कारण बड़ी गर्जना होती है।

दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जाली द्वार।
थंभ झरोखे दोऊ तरफों, ए सोभा अति अपार।। १२ ।।

पानी की धाराओं के दोनों तरफ दो गुर्ज आए हैं जहां सोलह जालीदार दरवाजे से पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है। इन चार नहरों पर दोनों तरफ थंभ और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा अपार है।

तले बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान।
क्यों कहूं इन मोहोलात की, खेलें रूहें हादी सुभान।। १३ ।।

नीचे बैठकर जब देखते हैं तो ऐसा लगता है कि गुर्ज आसमान तक गए हैं। इन मोहोलातों की शोभा का बखान कैसे करूं, जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें खेलती हैं।

Nijanand App

मोहोल बड़े बीच गुरजों के, खूबी लेत तरफ दोए।
एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरों सोए।। १४ ।।

दोनों गुर्जों के बीच में चार धाराओं के किनारे पर दोनों तरफ बड़े-बड़े महलों की शोभा है। ताल की तरफ भी ऐसी शोभा है और अधबीच के कुण्ड की तरफ जहां चादरें गिरती हैं, ऐसी ही शोभा है।

तले चारों सीढ़ी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार।
सो चारों उपरा ऊपर, इन विध पड़त धार।। १५ ।।

पहली भोम में चार, दूसरी में चार, तीसरी में चार और चौथी में चार इस तरह से सोलह धाराओं द्वारा पानी अधबीच के कुण्ड में गिरता है।

सो धारें पड़त बीच कुण्ड के, कुण्ड पर मोहोल गिरदवाए।
दोऊ बाजू छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए।। १६ ।।

यह सोलह धाराएं अधबीच के कुण्ड में गिरती है जहां पर घेरकर खास महल आए हैं। उन महलों के दोनों तरफ मधुवन के पांच-पांच पेड़ आए हैं।

चारों तरफ झरोखे कुण्ड के, बीच चादरें खूबी देत।
बड़े देहेलान कचेहेरियां, हक रूहें खुसाली लेत।। १७ ।।

महलों के झरोखों से सोलह चादरों (झरनों) की खूबी अति सुन्दर दिखाई देती है। बड़ी देहलान और कचहरियों की शोभा का आनन्द श्री राजश्यामाजी और सखियां लेती हैं।

खास मोहोल कुण्ड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल।
सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ गिरत ऊंचे नल।। १८ ।।

अधबीच के कुण्ड में जहां जल हिलोरें लेता है, उसके किनारे पर खास महल आए हैं। पुखराज पहाड़ से पानी उतरता-उतरता नलों की भांति सोलह चादरों से गिरता है।

बंगले

बिराजे बंगले, ए जो मोहोल तले ताल।
बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल।। १९ ।।

श्री राजश्यामाजी, सखियां पुखराजी ताल के नीचे कभी-कभी बंगलों में आकर बैठते हैं। यहां पर श्री श्यामाजी बारह हजार सखियों को साथ लेकर श्री राजजी के साथ मस्ती से खेलती हैं।

पहाड़ तले कई कुण्ड हैं, कई विध पानी फिरत।
कई जिनसें केती कहूं, नेहेरें साम सामी चलत।। २० ।।

इन बंगलों में पुखराजी ताल के नीचे कई कुण्ड बने हैं जहां पर पानी घूमता है और आमने-सामने नहरें चलती हैं।

कई नेहेरें फिरें माहें फिरतियां, कई आड़ियां आवत।
एक बड़ी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत।। २१ ।।

कई नहरें अन्दर घूमती हैं, कई आड़ी आती हैं, कई बाहर जाती हैं और एक बड़ी नहर में पानी आकर तेज बहाव में आगे चलता है।

Nijanand App

खास बिरिख कई विध के, सो केते कहूं विवेक।
तले पहाड़ छाया मिने, जानों ए बिरिख अति विसेक।। २२ ।।

यहां कई तरह के वृक्ष हैं। उनका कहां तक बयान करूं? उन वृक्षों के नीचे पहाड़ की शोभा है।

बन सुन्दर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर।
ए बन छाया का देखे पीछे, जानो ऐसा न कोई और।। २३ ।।

बंगलों में चबूतरे के ऊपर वन की बड़ी सुन्दर शोभा है जिसे देखकर लगता है कि इससे अच्छी और कोई जगह नहीं है।

थंभ बड़े बड़ी जाएगा, पहाड़ तले चहुंओर।
ए खूबी कही न जावहीं, बन सोभित नेहेरें जोर।। २४ ।।

बंगलों के पहाड़ के नीचे चारों तरफ चार थंभों की बड़ी शोभा है। इन वनों के बीच में चार नहरों की सुन्दर शोभा कहने में नहीं आती।

बीच बीच दोरी बंध, अड़तालीस बंगले।
हर हारें अड़तालीस, ए बैठक पहाड़ तले।। २५ ।।

बंगलों के चबूतरे के ऊपर अड़तालीस बंगलों तथा अड़तालीस चहबच्चों की अड़तालीस हारें एक सीध में हैं।

बराबर नेहेरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत।
झूठी जुबां इन देहकी, क्यों कर कहे ए जुगत।। २६ ।।

चहबच्चों में नहरें बराबर चलती हैं और वृक्षों की भी बड़ी सुन्दर शोभा है। यहां के झूठे तन की झूठी जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड़ सों आए।
जुदे जुदे जवेरन को, नूर पहाड़ तले न समाए।। २७ ।।

चारों तरफ ऊपर पहाड़ (बंगला) तक बराबर दोरीबन्ध यह शोभा आई है। यहां अलग-अलग जवेर के रंगों का तेज बंगला के पहाड़ के नीचे समाता नहीं है।

छात पांचमी पोहोंची पहाड़लों, बड़े बंगले बड़ी दिवाल।
बड़े छज्जे चारों तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल।। २८ ।।

बंगलों की पांच भोम हैं। इन बंगलों की दीवार के ऊपर चारों तरफ से छज्जे निकलते हैं जिसको देखकर दिल बड़ा खुश होता है।

कई रंगों जरी पसमी, कई दुलीचे रंग केते।
सोभित हैं सबों बैठकें, कई नकस बेल फूल जेते।। २९ ।।

कई रंग के पश्म के दुलीचे शोभा देते हैं। हर जगह बैठकें बनी हुई हैं और उनमें बेल, फूल और पत्तों की नक्शकारी है।

Nijanand App

दो तीन चार पुड़े चौकियां, कई जवेरों झलकत।
सीसे प्याले डब्बे तबके, कई वस्तें धरियां इत।। ३० ।।

कई दो रास्ते (दोपुड़े) कई तीन रास्ते (त्रिपुड़े) कई चार रास्ते (चौपुड़े) आए हैं जहां जवेरों की झलकार होती है। इन बंगलों में दर्पण, प्याले, डिब्बे, सिनगार की सामग्री रखी है।

कई सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र।
कई ठौर कदेले कुरसियां, कई तखत खूबतर।। ३१ ।।

कई जगह सादे सिंहासन हैं। कईयों के ऊपर छत्र हैं। कई जगह पर गदेला (गद्दे) कुर्सियां हैं और कई जगह पर सुन्दर तख्त हैं।

कई एक ठौरों हिंडोले, कई सेज बिछोने पलंग।
कई जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग।। ३२ ।।

कई जगह पर हिंडोले चलते हैं और कई ठिकानों पर पलंग पर सेज्या के बिछौने लगे हैं। यहां जवेरात (जवाहरात) की किरणें आपस में टकराती हैं।

कई सोभित हैं सांकलें, माहें डब्बे पुतलियां तबक।
इत रूहें संग स्यामाजी, बीच बिराजत हक।। ३३ ।।

कई सांकलें (जंजीरें) शोभा देती हैं। उनके अन्दर डिब्बे, तश्तरियों और पुतलियों की चित्रकारी है। यहां श्री राजश्यामाजी रूहों के साथ बैठते हैं।

कई सीढ़ियां सोब्रन की, कई हीरा मानिक पुखराज।
उपली भोमे चौकी पर, कई धरे संदूकें साज।। ३४ ।।

कई सीढ़ियां सोने की हैं। कई हीरे, माणिक और पुखराज की हैं। बंगलों की ऊपर की भोम में चौकी पर कई सन्दूकें और सिनगार सामग्री रखी है।

कई सोभित साखें कमाड़ियां, जोर जवेर झलकार।
घोड़े कड़े बेनी जंजीरां, रोसन करत अपार।। ३५ ।।

चौखट और किवाड़ों में कई तरह के जवाहरात झलकार कर रहे हैं। इन किवाड़ों की बेनी और बेड़े (चौखट की लम्बी पट्टी) कड़े, जंजीर सुन्दर शोभा देते हैं।

हर बंगले विस्तार बड़ा, आगूं बड़े दरबार।
कई मोहोलों कई मंदिरों, कहों कहां लग कहूं न सुमार।। ३६ ।।

हर एक बंगले का विस्तार बहुत भारी है। उसके अन्दर कई महल हैं, कई मन्दिर हैं। उनकी गिनती कहां तक बताऊं?

ए बन जवेर अर्स के, खूबी कहा कहे जुबान।
बीच बैठक चबूतरे, सुख रूहें संग सुभान।। ३७ ।।

परमधाम के वन जवाहरातों के हैं। उनकी खूबी यहां की जबान से कैसे बताएं? बंगलों के बीच चबूतरों पर सुन्दर बैठक बनी है जहां श्री राजजी रूहों के साथ सुख लेते हैं।

Nijanand App

चारों तरफों नेहेरें चलें, बीच कठेड़े चबूतर।
चेहेबच्चे बीच बीच बन, ए सिफत कहूं क्यों कर।। ३८ ।।

बंगलों के चबूतरे के चारों तरफ नहरें चलती हैं और किनारे पर कठेड़ा लगा है। चहबच्चे, नहरें वन में शोभा देते हैं। इसकी सिफत कैसे कहूं?

कई मोहोल नेहेरें किनारें, कई बनमें बिराजत।
भांत भांत कई विध के, ए किन विध करूं सिफत।। ३९ ।।

कई महल नहरों के किनारे पर बने हैं। कई वनों के अन्दर यह तरह-तरह से शोभा युक्त हैं। इनकी महिमा कैसे गाऊं?

बन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए।
ए अर्स जवेर देख्या चाहे, सो ए बन देखो आए।। ४० ।।

इस जमीन की, वन की, महलों की, नहरों की हकीकत कहने में नहीं आती। जिन्हें परमधाम के जवाहरातों के नग देखने हों वह इस वन में आकर देख लो।

जैसा पहाड़ तैसी जिमी, और तैसेही दरखत।
ए मोहोल ऐसे जवेरनके, जुबां क्यों कर करे सिफत।। ४१ ।।

जैसे बंगलों का पहाड़ है वैसे ही यहां की जमीन है और वैसे ही वृक्ष हैं। वैसे ही नगों के महल हैं। इनकी शोभा का बयान यहां की जबान से कैसे हो?

ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए।
और सब्द तो निकसे, जो और ठौर कोई होए।। ४२ ।।

यह सब नूर तत्व का है और इसकी शोभा वहीं पर है। इसका कहीं और नमूना हो, तो शब्दों से उपमा देकर बयान करें।

ए दरखत नेहेरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल।
याही विध बड़े पहाड़ लग, सुख रूहें नूरजमाल।। ४३ ।।

यहां के वृक्ष, नहरें और चहबच्चा, खेलने के ठिकाने सभी कमाल के हैं। इस तरह से पुखराजी पहाड़ तक पूरी शोभा है। यहां पर श्री राजश्यामाजी, रूहें आनन्द लेती हैं।

पेहेली तरफ का जो बन, बड़े मेहेराव आगूं दरखत।
ए बन मेवे केते कहूं, अर्स अजीम की न्यामत।। ४४ ।।

बंगलाजी को घेरकर बीच में चार थंभों में मेहराबें तथा घेरकर पांच-पांच लम्बे पेड़ आए हैं। इन वनों में कई तरह के मेवे हैं। यही परमधाम की न्यामत है।

जहां लो नजरों देखिए, ए बड़े बिरिख अति विस्तार।
मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसु पंखी को पार।। ४५ ।।

जहां तक नजर दौड़ाते हैं, इन बड़े वृक्षों का बड़ा विस्तार है। इसमें मेवा, महल, छतें हैं और पशु-पक्षी बेशुमार हैं।

Nijanand App

सोई जिमी उज्जल अति सोभित, ए जो पहाड़ नजीक या दूर।
आकास भरयो रोसनी, कहां लग कहूं ए नूर।।४६।।

पहाड़ के नजदीक की हो या दूर की हो, जमीन बड़ी उज्ज्वल शोभा देती है। इस उज्ज्वलता की तंरगें आकाश तक फैलती हैं। इनका कहां तक वर्णन करें?

आकास भरयो खुसबोय सों, वाए तेज खुसबोए।
जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए।।४७।।

पूरा आकाश खुशबूदार तेज हवा से भर जाता है। जहां कहीं देखो, सब जगह खुशबू है। यहां तक कि चन्द्रमा और सूर्य से भी सुगन्धि आती है।

पेड़ बोए पात बोए, बोए फल फूल डार।
जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार।।४८।।

पेड़, पत्ता, फल, फूल, डालें, जल, जमीन सभी कुछ सुगन्धित हैं। इसका शुमार नहीं है।

जित देखूं तित खुसबोए, पहाड़ जवेर बोए नूर।
रस धात रेजा रेज जो, खुसबोए सबे जहूर।।४९।।

जहां देखो वहीं सुगन्धि है। चाहे पहाड़ हों या जवाहरात हों, धातु हों, कण-कण सब खुशबूदार है।

कई रेहेत अंदर जानवर, कई विध बोलें बान।
ए खूबी खुसाली हक की, जुदी जुदी कई जुबान।।५०।।

अन्दर कई जानवर रहते हैं जो कई तरह से बोलते हैं। श्री राजजी महाराज की खूब खुशालियां कई तरह की अलग-अलग बोलियां बोलकर रिझाती हैं।

पसु सबे खुसबोए सों, खुसबोए सबे जानवर।
तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर।।५१।।

पशु और जानवर सब सुगन्धियों से भरपूर हैं। उनके तन, अंग-अंग के जोड़, बाल तथा पर सब खुशबूदार हैं।

वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूं खुसबोए।
इन खूबी खुसबोए को, सब्द न पोहोंचे कोए।।५२।।

रूहों के वस्त्र, आभूषणों की खुशबू का कैसे बयान करूं? यहां का कोई शब्द नहीं मिलता।

हकीकत तले पहाड़ की, ए जो नेक कही जुगत।
ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत।।५३।।

बंगले के पहाड़ के नीचे की यह छोटी सी युक्ति बताई है। यहां विस्तार बहुत ज्यादा है जो जबान से वर्णन करने में नहीं आता।

जिन जानों रूहन को, अर्स में सेवक नाहें।
हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहें।।५४।।

ऐसा नहीं समझना कि परमधाम में रूहों के सेवक नहीं है। उनके दिल में जो बात होती है वह सब हुकम से पूरी हो जाती है।

Nijanand App

एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक।
बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक।। ५५ ।।

एक-एक मोमिन के बेशुमार सेवक हैं। इनकी साहेबी परमधाम में बड़ी है और उनके सेवक भी उन्हीं के अनुसार महिमा वाले हैं।

पुतलियां जवेरन की, सोभा सुन्दरता अत।
कहूं केती सेवा बंदगी, सब अग्या सों करत।। ५६ ।।

जवाहरात की पुतलियों की शोभा अति सुन्दर है। यह सब भी सेवा और बन्दगी में आगे रहती हैं और हुकम से सब काम करती हैं।

या बिध सब जानवर, और केते कहूं पसुअन।
सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन।। ५७ ।।

इस तरह से सभी जानवर और पशु जिसको जैसा शोभा देता है, बन्दगी करता है।

हुकमें होवे सब बंदगी, आगूं इन रूहन।
हंसें खेलें नाचें गाएं, कई विध करें रोसन।। ५८ ।।

रूहों के हुकम के आगे सब बन्दगी सेवा करते हैं। वह हंसते हैं, खेलते हैं, नाचते हैं, गाते हैं तथा कई तरह से रूहों को रिझाते हैं।

पसु पंखी जवेरन के, अति सोभा अर्स में लेत।
सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत।। ५९ ।।

ऐसे जवाहरात के पशु-पक्षी परमधाम की शोभा हैं। यह सभी रूहों की इच्छानुसार सेवा करते हैं।

कई पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन।
हजार दौड़ें एक हुकमें, आगूं इन रूहन।। ६० ।।

यहां जवाहरात की पुतलियां रूहों के हुकम पर खड़ी रहती हैं। एक हुकम करने में रूहों के सामने हजारों दौड़ती हैं।

हर रूहों आगूं दौड़ हीं, कई खूबी लेत खुसाल।
रात दिन कबूं न काहिली, रहें हमेसा बीच हाल।। ६१ ।।

यह जवाहरातों की पुतलियां हर एक रूह के आगे दौड़कर खूब आनन्द करती हैं। रात-दिन कभी इनमें सुस्ती नहीं आती हमेशा सेवा में मग्न रहती हैं।

बंदियां खूब खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन।
काम कर दसों दिस, आए खड़ियां वाही खिन।। ६२ ।।

यह जवाहरातों की पुतलियां खूब खुशालियों की सेवा में हाजिर रहती हैं और मन की चाल की तरह दौड़ती हैं। यह दसों दिशाओं में काम कर उसी क्षण में आकर खड़ी हो जाती हैं।

ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हुकम बरदार।
एक रूह मनमें चितवे, वह जी जी करें हजार।। ६३ ।।

यह खूब खुशालियां रूहों के मन के अनुसार हुकम में खड़ी रहती हैं। रूहें जैसा मन में सोचती हैं वह हजारों की संख्या में 'जी-जी' करके दौड़ती हैं।

Nijanand App

मुख केहेने की हाजत ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल।
सो काम कर ल्यावें खिन में, ऐसा इनों का बल।।६४ ।।

मुख से कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। रूहों के दिल में जो इच्छा होती है, खूब खुशालियों में इतनी ताकत है कि एक क्षण में वह उसे पूरा करके आ जाती हैं।

सरूप रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें।
ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आएं।।६५ ।।

यह खूब खुशालियां रूहों के मन के स्वरूप हैं। रूहों के मन में जो चाहना पैदा होती है, ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर कहीं की भी इच्छा हो, एक पल में काम करके ले आती हैं।

कई ले खड़ियां रूमाल, कई ले खड़ियां पान डब्बे।
बंदियां बारे हजार की, आगूं अलेखे।।६६ ।।

कई रूमाल लिए खड़ी हैं। कई पान के डिब्बे लिए खड़ी हैं। इस प्रकार बारह हजार रूहों के बेशुमार सेवक हैं।

कई वस्तां आगूं ले खड़ियां, वस्तर भूखन कई साज।
ए साहेबी अर्स अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज।।६७ ।।

यह खूब खुशालियां कई वस्तुएं जैसे वस्त्र, आभूषण और साज लेकर सेवा में खड़ी रहती हैं। परमधाम की रूहों की ऐसी साहेबी है जो स्वप्न के राज्य में भी नहीं है।

ए खूबी इन अर्सकी, क्यों कहूं इन जुबान।
कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान।।६८ ।।

परमधाम की खूबी का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं? यह साहेबी अखण्ड सुख देने वाली है। इसे रूहें ही जानती हैं।

ए बातें केती कहूं, अर्स के जो सुख।
साहेबी इन रूहन की, इत बरनन याही मुख।।६९ ।।

परमधाम के सुखों का कहां तक बयान करूं? रूहों की साहेबी यहां के मुख से बयान नहीं की जाती।

जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल।
जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल।।७० ।।

यह जवाहरात की पुतलियां, जो रूहों की सेवक हैं, इनकी ताकत को देखो। इनकी हकीकत को जानना हो तो अपनी जागृत बुद्धि से देखो।

मैं तुमें पूछों मोमिनो, जो तुम हो अर्स के।
तुम अपनी रूहसों विचार के, जबाव दयो मुझे ए।।७१ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से पूछते हैं कि यदि तुम अर्श के हो तो अपनी आत्मा से विचार कर मुझे यह उत्तर दो।

Nijanand App

उड़त पर के वाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उड़ाए।
एक छोटी चिड़िया अर्स की, ताकी लड़ाई क्यों कही जाए।।७२।।

परमधाम की एक छोटी चिड़िया के पर उड़ाने की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं, तो उन चिड़ियों की लड़ाई का वर्णन कैसे करूं?

कोट ब्रह्मांड पर के वाउ से, अर्स चिड़िया देवे उड़ाए।
तो इन अर्स के फील को, बल देखो चित्त ल्याए।।७३।।

परमधाम की चिड़िया के पर की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं, तो परमधाम के हाथी की ताकत को जरा चित्त में लेकर देखो।

खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों।
बड़ा फील लड़े अर्स का, कहो कौन जीते इनमों।।७४।।

जवाहरात का खरगोश (ससला) रूह के मन की इच्छा पर चलता है। परमधाम के हाथियों से खरगोश लड़ता है। बताओ दोनों में कौन जीतता है?

रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुन्दर।
दिल चाहे पेहेरे भूखन, दिल चाहे वस्तर।।७५।।

यह जानवर रूह की इच्छा के अनुसार बोलते हैं और रूहों की दिल चाही सुन्दर शोभा, वस्त्र, आभूषण पहनकर, बताते हैं।

करें दिल चाही सब बंदगी, चित चाह्या चलत।
दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत।।७६।।

सब रूहों के मन के अनुसार ही सेवा करते हैं। इनके चित्त के अनुसार ही चलते हैं और अपना बल, शक्ति और तेज दिखाते हैं। रूहों के दिल के अनुसार ही गुणगान करते हैं।

सब वस्तां आगे ले खड़ियां, ज्यों पातसाही लवाजम।
आगूं चेतन दिल से, खड़ियां सनमुख एक कदम।।७७।।

सभी वस्तुएं लेकर खूब खुशालियां आगे वैसे ही खड़ी रहती हैं जैसे बादशाह के सामने हजूरी लोग खड़े होते हैं। यह सभी पहले से ही जानते हैं, इसलिए वह एक पांव पर सदा हुकम के इन्तजार में खड़ी हैं।

रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित चितवन।
दिल चाही अकल इन्द्रियां, करें दिल चाही रोसन।।७८।।

वह अपने रूप, रंग रूहों के दिल के अनुसार बनाते हैं और उनके दिल के अनुसार उनकी विचारधारा, बुद्धि व इन्द्रियां काम करती हैं।

ए जो खूब खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल।
ए जो हर रूहों के आगे खड़ी, बांध अपनी मिसल।।७९।।

यह सभी खूब खुशालियों के स्वरूप रूहों के दिल हैं जो अपनी-अपनी जमात में हर रूह के सामने खड़ी होती हैं।

Nijanand App

क्यों कर कहूं ए साहेबी, ए जो रूहें करत अर्स माहें।
हकें कई देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए न निमूना क्यांहें।। ८० ।।

परमधाम के बीच इनकी साहेबी का कैसे वर्णन करूं? श्री राजजी महाराज ने कई ब्रह्माण्ड दिखाए (बृज, रास और जागनी) पर कहीं ऐसा नमूना नहीं मिला।

झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर।
नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे ना पटंतर।। ८१ ।।

सत्य परमधाम की शोभा के आगे यह झूठे संसार की झूठी उपमा कैसे लगे? संसार मिट जाने वाला है, परमधाम अखण्ड है, इसलिए झूठ की उपमा अखण्ड को नहीं लगती।

ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगूं रूहन।
ए खरगोस रूहों के दिल का, लड़े साथ अर्स फीलन।। ८२ ।।

रूह की साहेबी के सामने दुनियां खेल के कबूतर के समान है। परमधाम में रूहों के मन का स्वरूप खरगोश अर्श के हाथियों के साथ लड़ता है।

ए जो फौज रूहों के दिलकी, सो आवत सांच समान।
तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान।। ८३ ।।

यहां रूहों के दिल की सेना सदा अखण्ड है। उनके आगे यहां के ब्रह्मा, विष्णु, महेश मरने-मिटने वाले जीवों के समान हैं।

उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल।
कई कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात माहें एक पल।। ८४ ।।

यह खरगोश रूहों के दिल की शक्ति से इतने ताकतवर होते हैं कि करोड़ों ब्रह्माण्ड के खाविंद, आदि नारायण (महाविष्णु) तो एक पल में ही उड़ जाते हैं।

ए सुध अर्स में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन।
तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमिन।। ८५ ।।

इस साहेबी और अपने इस मरातबे की खबर रूहों को परमधाम में नहीं थी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने रूहों को मेहर का खेल दिखाया। इतनी बड़ी रूहों की साहेबी है।

नजरों होत अछर के, कोट चले जात माहें खिन।
मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन।। ८६ ।।

अक्षर ब्रह्म की नजर में करोड़ों ब्रह्माण्ड एक क्षण में पैदा होकर मिट जाते हैं। यह बात मैंने अपने धनी के मुखारबिन्द से सुनी है।

एक इन वचन का बसबसा, तबका रेहेता था मेरे मन।
लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन।। ८७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस बात का संशय मेरे मन में लगा हुआ था कि महालक्ष्मीजी का गुजरान कैसे होता है?

Nijanand App

खेल दुनियां अर्स खेलौने, करें बाल चरित्र भगवान।
या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान।।८८ ।।

परमधाम के सामने यह दुनियां खिलौने के समान है जो अक्षर ब्रह्म की बाल लीला है। जब अक्षर भगवान के खेल बनाने की लीला में लक्ष्मीजी वह साथ नहीं देतीं और न ही रूहों जैसी साहेबी है, तो वैसे कैसे रहती होगी?

सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक।
दिलमें संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक।।८९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह मेरा संशय मिट गया। जिस दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हों उसमें संशय कैसे रह सकता है?

अर्स कह्या दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर।
सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर।।९० ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है और अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भी इन्हीं को दी है। इससे मूल-मिलावे के, खिलवतखाने और सम्बन्ध में कोई संशय नहीं रह गए तो फिर इस बात की जानकारी क्यों न हो जाए?

जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन।
वाहेदत में ना तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन।।९१ ।।

रूहों की जैसी साहेबी परमधाम में है, लक्ष्मीजी को भी इसी तरह समझें। इनकी एकदिली में कोई फर्क नहीं है, इसकी जानकारी रूहों को ही है जिनका तन परमधाम में है।

ए बातें बका अर्स की, बिना रूहें न जाने कोए।
ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए।।९२ ।।

यह बातें अखण्ड परमधाम की हैं। रूहों के बिना इसे और कोई नहीं जानता। यह बातें श्री राजजी महाराज की हैं रूहों के बिना कोई हो तो समझे।

निपट बड़े सुख अर्स के, इत आवत नहीं जुबांए।
देख माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अर्स माहें।।९३ ।।

परमधाम के सुख अखण्ड हैं जिनका बयान इस जबान से नहीं हो सकता। माया में झूठा नमूना देखकर जब घर जाएंगे, तब यहां की बातें परमधाम में करेंगे।

महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत।
सो केहेवे आगूं अर्स तन के, अपने दिल अर्स में लेत।।९४ ।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से कहते हैं कि जिनको श्री राजजी महाराज प्यार करके अपने इलम से जगा देते हैं, वही मोमिन दूसरे मोमिनों को जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से जगावे। जो मोमिन इस हकीकत को अपने अर्श-दिल में ले लेते हैं, उन्हीं मोमिनों की जमात श्री निजानन्द सम्प्रदाय कहलाती है।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ९२८ ।।

Nijanand App

जमुनाजी का मूलकुंड कठेड़ा चबूतरा ढांपी खुली सात घाट।।
किनारे मोहोल जोए के, तुम मिल देखो मोमिन।
पाउ पलक न छोड़िए, अपना एही जीवन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जमुनाजी के किनारे के महल बड़े सुन्दर हैं। वहां से एक क्षण के लिए भी अपने चित्त को न हटाएं। सब मोमिन मिलकर देखो यही अपना जीवन है।

अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे।
केताक फैल्या तले दरखतों, और निकसी नेहेर बड़ी ए।। २ ।।

अधबीच के कुण्ड से जल नीचे उतर कर आता है। वृक्षों के नीचे एक भाग फैल जाता है और बाकी नहरों से आकर पानी बड़ी नहर में मिल जाता है।

जोए जमुनाका जल जो, पहाड़ से निकसत।
सो पोहोंच्या तले चबूतरे, ए बैठक अति सोभित।। ३ ।।

जमुनाजी का जल पहाड़ से निकलकर ढपो चबूतरे के नीचे पहुंचता है, जहां सुन्दर बैठक बनी है।

तीनों तरफों कठेड़ा, ऊपर छाया दरखत।
सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत।। ४ ।।

ढपो चबूतरे के तीन तरफ कठेड़ा लगा है और ऊपर पुखराजी रोंस के वनों की छाया है। यहां के सुख की लज्जत रूहें लेती हैं।

जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर।
और कुण्ड एक इत बन्यो, जहां से जल चल्या उतर।। ५ ।।

जमुनाजी के मूल की नहर, जो पुखराज की तलहटी से पूरब (दिशा) में आई है, उसी में पहाड़ से उतरकर जल ढपो चबूतरे के नीचे मिल जाता है। यहां से आगे उतर कर मूलकुण्ड से आगे आता है।

इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए।
तीनों तरफों कठेड़ा, जल उज्जल खुसबोए।। ६ ।।

मूल कुण्ड के ऊपर चारों तरफ बैठक बनी है जिसकी शोभा अपार है। तीन तरफ कठेड़ा है, आगे जल की खुशबू आती है।

जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों, कहा कहूं झलकार।
ए कुण्ड कठेड़ा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार।। ७ ।।

यहां अलग-अलग रंग जवाहरातों की तरह झलकते हैं जिससे मूल कुण्ड, कठेड़े व चबूतरे की शोभा बेशुमार है।

अब कुण्ड से पुल आगूं चल्या, ढांपिल दोऊ किनार।
दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार।। ८ ।।

अब मूल कुण्ड से आगे जमुनाजी निकलती हैं जहां से जमुनाजी के दोनों किनारे ढके है। दो-दो थंभों की हार के ऊपर पुल बना है। नीचे कई बैठकें बनी हैं।

Nijanand App

बड़े दरखत कुण्ड लों, ऊपर छाया सीतल।
अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल।। ९ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ मूल कुण्ड के ऊपर छाया करते हैं। जल के दोनों तरफ महल आए हैं जिन पर वृक्षों की छाया है।

इत दोऊ तरफों कठेड़ा, ऊपर सोभित जल निरमल।
जहां लग जल ढांप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल।। १० ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर (जो एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस ढंपी है) दोनों तरफ कठेड़े आया है। यहां की अक्ल से उसे कैसे बयान करें?

दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेड़े दोए।
बीच थंभ लगते चले, सोभा लेत अति सोए।। ११ ।।

मूल कुण्ड के किनारे जहां से जमुनाजी प्रकट होती हैं दो चबूतरे है। दोनों तरफ दो सुन्दर कठेड़े हैं। इन चबूतरों से लगते हुए दो थंभों की हार दो तरफ चलती हैं। उसकी शोभा बेशुमार है।

ऊपर द्योहरियां झलकत, जवेर अति सुन्दर।
ए खूबी कही न जावहीं, जल खलकत चल्या अन्दर।। १२ ।।

पुल के ऊपर द्योहरियां जवाहरातों के समान सुन्दर झलकती हैं। नीचे से जल बहता है। यह खूबी कहने में नहीं आती।

कई विध विध के कलस कई, कई किनारे कई जिनस।
झलकार न माए आकास, कई कटाव कई नकस।। १३ ।।

यहां कई तरह के कलश तथा किनारे के कटाव तथा नक्शकारी की शोभा की झलकार आकाश में नहीं समाती है।

बड़ी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर।
ए खूबी कहूं मैं किन जुबां, इतथें जिनस चली और।। १४ ।।

श्री श्यामाजी और सखियां श्री राजजी के साथ यहां आकर बैठती हैं। यहां की शोभा अधिक बढ़ जाती है जिसकी खूबी यहां की जबान से कैसे कहें। यहां से जमुनाजी अब खुली (एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस) पूरब को चलती है।

चार थंभ हारे चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए।
यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए।। १५ ।।

जहां से जमुनाजी खुली चली हैं वहां पर जमुनाजी के दोनों तरफ पाल पर दो-दो थंभों की हारें आई हैं जिससे पाल ढक गई है और इसी तरह से एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस तक जमुनाजी पूरब की ओर चली जाती हैं।

दोऊ किनारों बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए।
अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए।। १६ ।।

दोनों किनारों पर नीचे बैठकें बनी हैं। ऊपर से पुखराजी रोंस के पेड़ों की छाया है। इस तरह से जमुनाजी की शोभा है जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

Nijanand App

दोऊ तरफों जो द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर।। १७ ।।

पाल के ऊपर दोनों तरफ किनारे पर द्योहरियां बनी है। उसमें कंगूरे और कलश आए हैं। यह बड़ी बैठक मूल कुण्ड से दोनों पालों की कही गई है (इन पालों को ही चबूतरा कहा गया है)।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर।
एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर।। १८ ।।

जमुनाजी का जल पूरब की तरफ चलकर दक्षिण की तरफ मुड़ जाता है और हौज कौसर तालाब की तरफ जाता है जहां से जमुनाजी मुड़ती हैं, वहां से दोनों किनारों पर एक मोहोल, एक चबूतरा, फिर मोहोल फिर चबूतरा शोभा देते हैं।

इन बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर।
दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर।। १९ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ों की शोभा क्या कहूं जो बराबर चल रहे हैं और दोनों तरफ किनारों के महलों पर छाया करते हैं।

ए लंबे बन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार।
इतथें छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार।। २० ।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ जो जमुनाजी के किनारे पर चल रहे हैं आगे महावन से मिल जाते हैं। यहां महावन की छतरियां पुखराज पहाड़ को घेरती हुई अक्षर धाम तक जाती हैं।

दोऊ किनारे सीधी चली, पोहोंची पुल केल घाट।
ए मोहोल चौक इतलों, आगूं चल्या ओर ठाट।। २१ ।।

जमुनाजी दोनों किनारों की शोभा के साथ सीधी चलती हैं और केल के घाट के पास बने पुल तक जाती हैं। अब महल और चबूतरों की शोभा जो दोनों पर थी यहां तक आई है। इसके बाद किनारों की शोभा बदल जाती है।

पेहेले बेवरा सातों घाट का, और जोए हौज मिलाए।
पीछे पुल मोहोल हकके, सो फेर नीके देऊं बताए।। २२ ।।

पहले सातों घाटों का, जमुनाजी का, हौज कौसर ताल का वर्णन हो चुका है। अब श्री राजजी महाराज के इन दोनों पुलों (केल का पुल, बट का पुल) के महलों की शोभा भलीभांति बता देती हूं।

दोऊ पुल के बीच में, सातों घाट सोभित।
पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोलों की न होए सिफत।। २३ ।।

दो पुलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। इन पुलों के महलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कहने में नहीं आती है।

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें।
दोऊ किनार जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए।। २४ ।।

सातों घाटों में जहां पर दो घाट मिलते हैं वहां द्योहरियां आई हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव जैसे चमकते हैं। इसकी शोभा जबान से कैसे कहें?

Nijanand App

इतथें चली ताललों, एक मोहोल एक चबूतर।
दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए हौज मिली यों कर।। २५ ।।

बट के पुल से आगे ताल की तरफ वही पहले वाली शोभा एक महल फिर एक चबूतरा की शोभा आई है। जमुनाजी के दोनों किनारे ढंके हैं और आगे जाकर हौज कौसर में मिलती हैं।

बन दोऊ किनारे ले चल्या, ऊपर बराबर जल।
कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल।। २६ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ जमुनाजी की रोंस पर बराबर चलते हैं। कोई आगे पीछे नहीं हैं। इनके पत्ते फल, फूल सब एक सीध में हैं।

या विध कुण्ड से ले चली, अति खूबी दोऊ किनार।
जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार।। २७ ।।

मूल कुण्ड से जमुनाजी की दोनों किनारों की शोभा इस तरह से आई है। जल के ऊपर पुखराजी रोंस के पेड़ों की डालियां लटकती हैं।

जो रंग जित सोभा लेवहीं, जित चाहिए फल फूल।
डार पात सब जुगते, कहा कहे जुबां ए सूल।। २८ ।।

पेड़ों की डालियां, पत्ते, फल, फूल के अनुसार जैसे रंग जहां चाहिए वैसी शोभा देते हैं। उनकी शोभा का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल।
वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूं पात फूल फल।। २९ ।।

वृक्ष सब खुशबू देते हैं इसी तरह से जमीन, जल, हवा, पत्ते, फूल, फल, आदि सभी खुशबू देते हैं।

जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल बन।
नूर द्योहरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन।। ३० ।।

जमीन का तेज आकाश तक जाता है। इसी तरह जल और वन की तथा दोनों किनारों पर बनी द्योहरियों की शोभा आकाश में नहीं समाती।

दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साथ।
चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आथ।। ३१ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारों की शोभा एक सीध में है। वह मूल कुण्ड से चलकर दक्षिण को मरोड़ खाती हैं और फिर दक्षिण की तरफ नौ लाख कोस चलकर पच्छिम को मुड़कर हौज कौसर ताल में मिलती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक।
ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करूं बरनन हक।। ३२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन कर रही हूं। मेरा मन और जबान स्वप्न का है। इससे अखण्ड शोभा का वर्णन कैसे करूं?

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ९६० ॥

Nijanand App

पुल मोहोल दोऊ जवेर के

तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अर्स।
हक देखावत नजरों, घड़नाले नेहेरें दस।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम दिल में विचार करके देखो। श्री राजजी महाराज तुमको जमुनाजी के दस घड़नालों की शोभा बतलाते हैं।

मेहेर करी मेहेबूब ने, मोहोल देखे ऊपर जोए।
ए सुख कहूं मैं किनको, मोमिन बिना न कोए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने बड़ी मेहर की है जिससे जमुनाजी के ऊपर पुलों के महलों को देखा। यह सुख मैं किसको बताऊं? मोमिनों के अतिरिक्त इसे कोई देख ही नहीं सकता।

तले ताक अति सोभित, साम सामी बार।
जल छोड़े ना हद अपनी, निकसत सामी द्वार।। ३ ।।

दोनों पुलों के नीचे आमने-सामने दस दरवाजे (मेहराब) हैं जिनमें से जल अपनी सीमा के अन्दर लगातार बहता है।

नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामी द्वार।
तले मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार।। ४ ।।

जिस दरवाजे से पानी आता है ठीक उसके सामने वाले पुल के दरवाजे से पानी बाहर निकलता है।

मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर।
दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर।। ५ ।।

दोनों महल पांच भोम के हैं जो पानी के ऊपर एक जैसी शोभा देते हैं।

दोऊ मोहोलों बीच में, पानी तले आए निकसत।
ए मोहोल नूरजमाल के, जुबां कहा करे सिफत।। ६ ।।

दोनों पुलों के बीच में से पानी आकर निकलता है। यह दोनों पुल महल श्री राजजी महाराज के हैं। इनकी सिफत यहां बैठकर कैसे करें?

सामी अर्स द्वार के, बीच अमृत बन पाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, ए बेवरा सातों घाट।। ७ ।।

रंग महल के दरवाजे के सामने अमृत वन के बीच में पाट घाट आता है। इस अमृत वन के तीन बाएं तथा तीन दाहिने, ऐसे सात घाट आए हैं।

लगता बट घाट के, चारों खूंटों चार हार।
सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दोए किनार।। ८ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ (अक्षरधाम और परमधाम) दो बट के घाट आए हैं जिनके चारों कोने बट के पुल के साथ लगते हैं। चार हारें पुखराजी रोंस के दो पेड़ों वाली आई हैं (दो परमधाम की तरफ दो अक्षरधाम की तरफ) उन चारों में दो जल पर और किनारे पर आए हैं।

Nijanand App

और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन।
ए दोऊ मोहोल अति सुन्दर, करत साम सामी रोसन।। ९ ।।

केल के घाट की सीध में भी इसी तरह की महलों की शोभा बनी है। यह दोनों आमने-सामने झलकती हैं।

साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बड़े देहेलान।
क्यों कहूं सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान।। १० ।।

जमुनाजी के ऊपर दो पुल बने हैं जिनके आमने-सामने थंभ, झरोखा और दहलानें दिखाई देती हैं। जमुनाजी के ऊपर जो महल बने हैं उनकी सिफत इस जबान से कैसे कहूं?

चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर।
तरफ दूजी अर्स अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर।। ११ ।।

पुल के महल के ऊपर चारों तरफ छज्जे निकले हैं उनमें एक तरफ अक्षरधाम, दूसरी तरफ परमधाम और बाकी दोनों तरफ (उत्तर-दक्षिण) जमुनाजी का जल शोभा देता है।

पांच भोम छठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित।
ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत।। १२ ।।

इस पुल महल की पांच भोम तथा छठी चांदनी है। इसकी शोभा बेशुमार है। यह सारी सीमा शोभा इन दोनों पुलों के महलों की है जो यहां की जबान कैसे सिफत करें?

सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार।
पुल पूरे जल ऊपर, ले वार से लग पार।। १३ ।।

दोनों पुलों के महलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। पूरे पुल में से आर-पार जल बहता है।

दोऊ तरफों बिरिख अति सुन्दर, दोऊ तरफों मोहोल सुन्दर।
बीच जोए सातों घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर।। १४ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ पूरब व पच्छिम दिशा में वृक्षों की शोभा है और उत्तर व दक्षिण में पुलों की शोभा है। दोनों पुलों के बीच सातों घाटों के सामने जमुनाजी दस घड़नालों में बहती है।

ए अर्स जिमी के जवेर, ए जवेर मोहोल नूर तिन।
जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन।। १५ ।।

यह परमधाम के जमीन के जवाहरात हैं, जिनसे पुल मोहोल बने हैं और इन महलों का तेज आसमान में नहीं समाता।

नूरतजल्ला नूर के, बीच में ए मोहोलात।
ए सुख बका के क्यों कहूं, इन मोहोलों खेलें हक जात।। १६ ।।

अक्षर ब्रह्म और परमधाम के बीच पुलों की मोहोलातें शोभा देती हैं। परमधाम के यह अखण्ड सुख हैं इन महलों में सखियां खेलती हैं।

हक ए सुख देवें हादी को, और देवें रूहन।
ए सुख अर्स अजीम के, क्यों कहूं जुबां इन।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सखियों को, यह अखण्ड सुख देते हैं। परमधाम के इन सुखों का वर्णन यहां की जबान कैसे करें?

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह सुख अपने परमधाम के हैं। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो इन सुखों को एक पल के लिए मत छोड़ो।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९७८ ।।

पार जोए के बन खूबी
(जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा)

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान।। १ ।।

जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा भी इसी तरह है। सभी पेड़ एक सीध में तथा सबकी डालियां एक समान शोभा देती हैं।

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन।। २ ।।

जहां तक नजर से देखें इन वृक्षों की शोभा दिखाई देती है। यह पुल महल के किनारे तक शोभा देते हैं।

दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए।। ३ ।।

दोनों किनारों पर वन की शोभा है जिनका तेज आकाश में नहीं समाता। यहां की जबान उसका कैसे वर्णन करे?

चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर।
जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसाही जहूर।। ४ ।।

इस पुखराजी रोंस के वनों की छतरी की शोभा अक्षरधाम तक जाती है। जैसी शोभा इस तरफ है वैसी ही उस तरफ है।

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर।। ५ ।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ अक्षरधाम के चारों तरफ घेरकर आए हैं और सब जगह इनकी ऐसी ही शोभा है।

सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए।
नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए।। ६ ।।

अक्षरधाम का नूरी दरवाजा, परिकरमा के झरोखे तथा नवों भोम की शोभा भी अति सुन्दर है।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह सुख अपने परमधाम के हैं। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो इन सुखों को एक पल के लिए मत छोड़ो।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९७८ ।।

पार जोए के बन खूबी
(जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा)

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान।। १ ।।

जमुनाजी के किनारे पर वनों की शोभा भी इसी तरह है। सभी पेड़ एक सीध में तथा सबकी डालियां एक समान शोभा देती हैं।

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन।। २ ।।

जहां तक नजर से देखें इन वृक्षों की शोभा दिखाई देती है। यह पुल महल के किनारे तक शोभा देते हैं।

दोऊ किनारे बन सोभित, चल्या जल जमुना ले।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए।। ३ ।।

दोनों किनारों पर वन की शोभा है जिनका तेज आकाश में नहीं समाता। यहां की जबान उसका कैसे वर्णन करे?

चल्या अछर के मोहोल लों, एकल छत्री नूर।
जैसा बन इत धाम का, ए भी तैसाही जहूर।। ४ ।।

इस पुखराजी रोंस के वनों की छतरी की शोभा अक्षरधाम तक जाती है। जैसी शोभा इस तरफ है वैसी ही उस तरफ है।

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर।। ५ ।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ अक्षरधाम के चारों तरफ घेरकर आए हैं और सब जगह इनकी ऐसी ही शोभा है।

सुन्दर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गिरदवाए।
नव भोम बिराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए।। ६ ।।

अक्षरधाम का नूरी दरवाजा, परिकरमा के झरोखे तथा नवों भोम की शोभा भी अति सुन्दर है।

Nijanand App

इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर।
इतथें जब देखिए, तब आवत धाम नजर।। ७ ।।

अक्षरधाम की चांदनी और कंगूरे भी बड़े सुन्दर हैं। इससे जब सामने देखें तो रंग महल नजर आता है।

दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध।
नूर नूरबिलंद की, जुबां कहा कहे ए सनंध।। ८ ।।

अक्षरधाम के तथा रंग महल के दरवाजे एक सीध में हैं। अब अक्षर और अक्षरातीत धाम की हकीकत का वर्णन यहां की जबान कैसे करें?

एकल छाया बन की, जहां लों नजर देखत।
तोलों फेर सब देखिया, सोभा सब में अतंत।। ९ ।।

वृक्षों की छतरी की शोभा एक समान है। जहां तक नजर जाती है यह शोभा सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

खूबी इन भोम बन की, जानों फेर फेर देखूं धाए।
देख देख के देखिए, तो नजर न काढ़ी जाए।। १० ।।

इस भूमि के वनों की शोभा देखने के लिए लगता है दौड़-दौड़कर जाऊं और देखती ही रहूं। वहां से नजर हटाने की इच्छा नहीं होती।

सब एक बन छांहेड़ी, श्री धाम के गिरदवाए।
गिरदवाए जमुना तलाव के, नूर अछर पोहोंचे आए।। ११ ।।

सब जगह वन के पेड़ों की छाया है। रंग महल के चारों तरफ, जमुनाजी के चारों तरफ व हौज कौसर ताल के चारों तरफ यह पेड़ घेरकर अक्षरधाम तक जाते हैं।

बन नूर के फिरवल्या, एही छाया है तित।
इन जुबां ए बरनन, क्यों कर करूं सिफत।। १२ ।।

यह वृक्ष अक्षरधाम के चारों तरफ भी इसी तरह की छाया करते हैं। इस जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

अनेक पसु इन बन में, अनेक हैं जानवर।
खेलत बोलत गून्जत, करत चकोसर।। १३ ।।

इन वनों में अनेक तरह के पशु, जानवर खेलते, बोलते, गूंज करते हैं और शोरगुल करते हैं।

कई खूबी पसु केसन की, कई खूबी जानवर पर।
कई सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर।। १४ ।।

यहां के पशुओं के बालों की शोभा निराली है और कई तरह की खूबी, जानवरों के परों की है। कई तरह की सुन्दरता उनकी नक्शकारी की है। इनका यहां की जबान से वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान।
अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान।। १५ ।।

यहां के जानवर मीठी जबान से मधुर वाणी बोलते हैं। देखने में अति सुन्दर सुहावने हैं। इसकी हकीकत का बयान कैसे करें?

कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत।
उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत।। १६ ।।

कई जानवर लड़कर खेलते हैं, कई कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई उड़कर दिखाते हैं और कई वाणी बोलकर रिझाते हैं।

पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत।। १७ ।।

इन वनों में पशु-पक्षी चारों ओर घूमते हैं। कई वनों के नीचे, कई वनों के ऊपर तरह-तरह के खेल करते हैं।

राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन।। १८ ।।

श्री राजश्यामाजी और सखियां इन वनों में खेलती हैं। यह खेलने के ठिकाने सब तुमको बताए हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलना।

धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल।। १९ ।।

यह धनी को देखकर कभी दौड़ते हैं, कभी धनी के सुखपालों को देखकर नीचे चलते हैं। ऐसे यह सुन्दर वृक्ष जमुनाजी को तथा हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं।

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का ए।। २० ।।

कभी श्री राजजी श्री श्यामाजी को ताली देकर दौड़ते हैं। फिर पीछे सखियां दौड़कर हंसती हैं।

महामत कहे सुनो साथजी, खिन बन छोड़ो जिन।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इन वनों को एक पल के लिए मत छोड़ो। श्री राजजी महाराज के साथ वन में या मन्दिरों में सदा रात-दिन आनन्द करो।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ९९९ ।।

परिकरमा बड़ी फिराक की

क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे श्री राजजी महाराज! आपने हमें परमधाम से क्यों अलग कर दिया? हम परमधाम की रूहें हैं। हमें फिर कब आपके दर्शन होंगे?

Nijanand App

कई मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान।
अति सुन्दर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान।। १५ ।।

यहां के जानवर मीठी जबान से मधुर वाणी बोलते हैं। देखने में अति सुन्दर सुहावने हैं। इसकी हकीकत का बयान कैसे करें?

कई खेलत करत लड़ाइया, कई कूदत कई फांदत।
उड़के कई देखावहीं, कई बानी बोल रिझावत।। १६ ।।

कई जानवर लड़कर खेलते हैं, कई कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई उड़कर दिखाते हैं और कई वाणी बोलकर रिझाते हैं।

पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत।। १७ ।।

इन वनों में पशु-पक्षी चारों ओर घूमते हैं। कई वनों के नीचे, कई वनों के ऊपर तरह-तरह के खेल करते हैं।

राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन।। १८ ।।

श्री राजश्यामाजी और सखियां इन वनों में खेलती हैं। यह खेलने के ठिकाने सब तुमको बताए हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनको एक क्षण के लिए भी मत भूलना।

धनी कबूं देखें फेर दौड़ते, कबूं बैठ चले सुखपाल।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल।। १९ ।।

यह धनी को देखकर कभी दौड़ते हैं, कभी धनी के सुखपालों को देखकर नीचे चलते हैं। ऐसे यह सुन्दर वृक्ष जमुनाजी को तथा हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं।

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का ए।। २० ।।

कभी श्री राजजी श्री श्यामाजी को ताली देकर दौड़ते हैं। फिर पीछे सखियां दौड़कर हंसती हैं।

महामत कहे सुनो साथजी, खिन बन छोड़ो जिन।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो रात और दिन।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इन वनों को एक पल के लिए मत छोड़ो। श्री राजजी महाराज के साथ वन में या मन्दिरों में सदा रात-दिन आनन्द करो।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ९९९ ।।

परिकरमा बड़ी फिराक की

क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अर्स की, फेर कब देखें हक सूरत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे श्री राजजी महाराज! आपने हमें परमधाम से क्यों अलग कर दिया? हम परमधाम की रूहें हैं। हमें फिर कब आपके दर्शन होंगे?

Nijanand App

बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत।
ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत।। २ ।।

आपने यहां आकर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और अपने सम्बन्ध की पहचान करा दी। जिससे अब हमको कोई संशय नहीं रह गया।

खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए।
ना तो ऐसा फरेब, कबूं किन छोड्या न जाए।। ३ ।।

खेल दिखाकर आपने हमको उलझा दिया और फिर जागृत बुद्धि देकर माया का खेल हमसे छुड़ा दिया। नहीं तो यह झूठ का खेल किसी से कभी छोड़ा नहीं गया।

हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान।
सो इत काहूं न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान।। ४ ।।

हमारे वास्ते आपने रसूल को कुरान देकर भेजा। उसके छिपे रहस्य यहां के चौदह लोक भी नहीं खोल सकते।

सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत।
कह्या आखिर आवसी अर्स रूहें, खोलो तिन बीच मारफत।। ५ ।।

उन कुरान के रहस्यों को खोलने के लिए आपने श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी भेजी जो उन्होंने हकी सूरत श्री प्राणनाथजी को दी। कुरान में लिखा है कि आखिरत के वक्त में परमधाम से रूहें आएंगी। उनके बीच मैं कुरान के रहस्य को खोलूंगा।

खिलवत संदेसे दिए रूहअल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए।
किन खोले न द्वार अर्स के, मोको सब विध दई समझाए।। ६ ।।

परमधाम का सारा ज्ञान श्री श्यामा महारानी लाए और मेहर करके सब मुझे समझाया। आज दिन तक किसी ने परमधाम के दरवाजे नहीं खोले थे, इसलिए वह सब हकीकत मुझे बताई।

मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए।
बेसक इलम अर्स का, मोहे सब विध दई बताए।। ७ ।।

श्री श्यामा महारानी ने परमधाम का सब ज्ञान मुझे सिखा दिया और तारतम ज्ञान से सब हकीकत बता दी।

छूटी रूहों को अर्स की, मूल मेले की लज्जत।
इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत।। ८ ।।

परमधाम से खेल में आकर रूहें मूल घर की सारी लज्जत भूल गई। हम रूहें श्री राजजी महाराज के अंग हैं। तो फिर हमको श्री राजजी महाराज का इश्क क्यों नहीं आता?

फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेलेकी लज्जत।
क्यों न जागें रूहें ए सुनके, जाकी इन हकसों निसबत।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज ने दुबारा मेहर करके मूल-मिलावा की पहचान कराई। वह रूहें जो श्री राजजी के अंग हैं, यह सुनकर क्यों नहीं जागतीं?

Nijanand App

बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत।
क्यों न आवे हमको इस्क, जाकी अर्स अजीम निसबत।। १० ।।

रूहों को तारतम ज्ञान मिल गया है फिर उनकी नजर क्यों नहीं खुलती? जो परमधाम के रहने वाले हैं उनको धनी का इश्क क्यों नहीं आ रहा है?

पेहेचान हुई सब बिध की, पाई हक मारफत।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत।। ११ ।।

जब सब तरह की पहचान हो गई और श्री राजजी का मारफत का ज्ञान मिल गया, तो श्री राजजी की अंगना होने पर भी हमें इश्क क्यों नहीं आता?

हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत।
ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत।। १२ ।।

धनी! आपके सामने (परमधाम में) एक क्षण नहीं हुआ और यहां मुद्दतें बीत गईं हैं। क्या इसकी आपको खबर नहीं है? आपका धनीवट (पतिपन) कहां गया?

जो सुख अर्स अजीम के, सो देखाए दुनीमें इत।
भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत।। १३ ।।

परमधाम के सुखों को आपने दुनियां में दिखा दिया। आपने अखण्ड तारतम वाणी भेजी तो फिर हमारा अंगनापना कहां गया?

बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत।
सुख असों के सब दिए, कर ऐसी हक निसबत।। १४ ।।

यहां गफलत में बेसुध हुए। चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में केवल हमारे संशय तारतम ज्ञान से मिटाए और क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के सब सुख हमें अपनी अंगना जानकर दिए।

हम पर अर्स में हंसने, माया देखाई तीन बखत।
इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत।। १५ ।।

हमारा इश्क देखने के वास्ते और हम पर हंसी करने के वास्ते तीन बार माया दिखाई तो हमें फिर भी इश्क क्यों नहीं आता?

चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित।
निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत।। १६ ।।

आप सेहेरग से भी नजदीक हमारे पास चौदह लोकों का परदा लगाकर छिपे बैठे हैं तो फिर हमें इश्क क्यों नहीं आता?

किन तरफ हमारे तुमहो, किन तरफ तुमारे हम।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम।। १७ ।।

आप हमारे किस तरफ हैं और हम आपके किस तरफ हैं? यह बीच में चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड कैसे आ गया, जबकि हम आपके चरण पकड़कर बैठे हैं?

Nijanand App

पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल।
पीछे ताला कुंजी दोऊ दिए, दई खोलने की कल।। १८ ।।

रूहों को पहले फरामोशी देकर माया में क्यों भेज दिया? और पीछे कुरान और तारतम ज्ञान तथा खोलने की युक्ति सभी दे दी।

किन विध दई तुम बेसकी, सक रही न किन सब्द।
दुनियां चौदे तबक में, सुध परी न बांधी हद।। १९ ।।

आपने किस तरह से हमको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से संशय रहित किया। इस दुनियां को तो इस बात का ज्ञान भी नहीं है कि यह ब्रह्माण्ड बनाया किसने है?

हमको सक ना हदमें, ना कछू बेहद सक।
सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक।। २० ।।

आपने हमको अपनी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया, जिससे हमारे क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के सभी संशय मिट गए।

ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनीमें आवत नाहें।
कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए।। २१ ।।

जिन रूहों ने इस हकीकत को देखा है उस हकीकत का बयान करना सम्भव नहीं है। यह तो हम रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है।

ए हक की मैं हुकम ले, कई विध बका द्वार खोलत।
याद देने अर्स अजीममें, होत सब वास्ते उमत।। २२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज स्वयं मेरे अन्दर बैठकर हुकम से अखण्ड परमधाम की छिपी हकीकत का ज्ञान करवा रहे हैं, ताकि परमधाम की रूहों को घर की याद आ जाए।

हगतो इत आए नहीं, अर्स एक दम छोड़या न जाए।
जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए।। २३ ।।

हम संसार में नहीं आए हैं और न ही एक पल के लिए परमधाम में श्री राजजी के चरण छोड़े हैं। जागने के बाद ही हमने समझा कि यह खेल हमारे वास्ते ही बनाकर दिखाया है।

अर्स निसबत हककी, खेल में आए बिना लेत सुख।
हिकमत देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख।। २४ ।।

खेल में आए बिना ही श्री राजजी महाराज की अंगना होने के सुख खेल में ले रहे हैं। यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम की कारीगरी है जो मुख से कही नहीं जाती।

हुकमें मांग्या हुकम पे, सो हुकमैं देवनहार।
सो हुकम फैल्या सबमें हकका, सो हकै खबरदार।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने स्वयं हमारे अन्दर बैठकर खुद स्वयं से खेल मंगवाया। स्वयं ही देने वाले हैं। अब श्री राजजी महाराज ने स्वयं हुकम का स्वरूप बनकर संसार को बनाया। अब स्वयं ही हमारे रक्षा करने वाले बने हैं।

Nijanand App

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम।
किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम।। २६ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के हुकम के सिवाय और कुछ भी नहीं है। कहने, सुनने और देखने वाला सब हुकम ही है। हुकम ने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी दी और स्वयं ही यह निश्चय कराया कि श्री राजजी महाराज हमारे धनी हैं।

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कह्या न जाए जुबांए।
ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अर्स दिल माहें।। २७ ।।

यहां संसार के मुख और जबान से परमधाम के अखण्ड सुख कहे नहीं जाते। यह बातें आशिक-माशूक अर्थात् हमारी और तुम्हारी हैं।

जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिनकी सिफत।। २८ ।।

अगर मूल-मिलावे के सुखों को खेल में बयान करने लगूं तो मेरी सारी उम्र ही निकल जाएगी और मैं एक पल की सिफत का भी बयान नहीं कर सकूंगी।

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत।। २९ ।।

श्री श्यामा महारानी ने अपने तारतम ज्ञान से हकीकत को बताकर हम रूहों को सावचेत (सतर्क) किया है। तो अब याद आता है कि हमारे परमधाम के सुख कहां गए और कब मिलेंगे?

हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत।। ३० ।।

हे सुन्दरसाथजी! कुरान के अन्दर हमारे परमधाम के सुखों की हकीकत लिखी है। हमारे वह सुख कहां गए और फिर से कब वह सुख पा सकेंगे?

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को स्वयं अपनी पहचान कराई है और अपने इश्क की साहेबी बताई है। हे सुन्दर साथजी तुम इसकी अपने दिल में चाहना करना।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। १०३० ।।

खिलवत से चांदनी तांई

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने प्रथम भोम मूल-मिलावा में बैठाकर खेल दिखाया है। हम इस उमेद से बैठे कि खेल परमधाम जैसा होगा और हम भूलेंगे नहीं। श्री राजजी महाराज के बिना खेल की हकीकत कौन बता सकता है? इस सब हकीकत के भेदों को तारतम वाणी से समझाया।

Nijanand App

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम।
किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम।। २६ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के हुकम के सिवाय और कुछ भी नहीं है। कहने, सुनने और देखने वाला सब हुकम ही है। हुकम ने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी दी और स्वयं ही यह निश्चय कराया कि श्री राजजी महाराज हमारे धनी हैं।

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कह्या न जाए जुबांए।
ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अर्स दिल माहें।। २७ ।।

यहां संसार के मुख और जबान से परमधाम के अखण्ड सुख कहे नहीं जाते। यह बातें आशिक-माशूक अर्थात् हमारी और तुम्हारी हैं।

जो सुख खोलूं अर्स के, माहें मिलावे इत।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों खिनकी सिफत।। २८ ।।

अगर मूल-मिलावे के सुखों को खेल में बयान करने लगूं तो मेरी सारी उम्र ही निकल जाएगी और मैं एक पल की सिफत का भी बयान नहीं कर सकूंगी।

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह-अल्ला हकीकत।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत।। २९ ।।

श्री श्यामा महारानी ने अपने तारतम ज्ञान से हकीकत को बताकर हम रूहों को सावचेत (सतर्क) किया है। तो अब याद आता है कि हमारे परमधाम के सुख कहां गए और कब मिलेंगे?

हक खिलवत सुख मोमिनों, लिखी फुरमान में मारफत।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत।। ३० ।।

हे सुन्दरसाथजी! कुरान के अन्दर हमारे परमधाम के सुखों की हकीकत लिखी है। हमारे वह सुख कहां गए और फिर से कब वह सुख पा सकेंगे?

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अर्स मोमिन लीजियो, कहे रूह मता हुकमें महामत।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को स्वयं अपनी पहचान कराई है और अपने इश्क की साहेबी बताई है। हे सुन्दर साथजी तुम इसकी अपने दिल में चाहना करना।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। १०३० ।।

खिलवत से चांदनी तांई

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने प्रथम भोम मूल-मिलावा में बैठाकर खेल दिखाया है। हम इस उमेद से बैठे कि खेल परमधाम जैसा होगा और हम भूलेंगे नहीं। श्री राजजी महाराज के बिना खेल की हकीकत कौन बता सकता है? इस सब हकीकत के भेदों को तारतम वाणी से समझाया।

Nijanand App

कहां सुख झरोखे अर्स के, कहां सुख सीतल बयार।
कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार।। २ ।।

परमधाम के झरोखों के सुख जहां से सुन्दर शीतल हवा आती है, वनों में खेलने के सुख जो वर्षा ऋतु में मिलते थे, वह अब कहां हैं?

कहां सुख कोकिला मोर के, बन में करें टहूंकार।
बादल अंबर छाइया, सुख बीजलियां चमकार।। ३ ।।

वर्षा ऋतु में वन में जब कोयल और मोर आवाज करते हों, आकाश में बादल छाए हों, बिजली चमकती हो वह हमारे सुख कहां हैं?

दो दो रूहें मिल बैठती, सुख लेती सुखपाल।
कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल।। ४ ।।

सुखपालों में हम दो-दो रूहें बैठती थीं और श्री राजजी महाराज के साथ जमुनाजी, हौज कौसर तालाब सैर करने जाते थे। वह हमारे सुख अब कहां हैं?

ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार।
तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजूं क्यों न करो विचार।। ५ ।।

हे श्री राजजी महाराज! अब मैं आपके बिना किसको जाकर कहूं? आपने अपने बिना किसी और को दिखाया ही नहीं। आप इस बात का विचार क्यों नहीं करते?

क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावे रात।
किन विध बसो तुम अर्स में, वह कहां गई मूल बात।। ६ ।।

हमारे बिना परमधाम में आपके दिन व रातें अकेले कैसे बीत रही हैं? अब आप अर्स में अकेले कैसे रह रहे हैं और आपकी वह मूल की बातें कि आप रूहों के बिना रह नहीं सकते और उनको अपने से अलग नहीं कर सकते, कहां गईं?

सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मन्दिर बारे हजार।
कौन देवे मासूक बिना, सुख भुलवनी अपार।। ७ ।।

दूसरी भोम के भुलवनी के बारह हजार मन्दिरों की हवेली तथा खड़ोकली के सुख आपके बिना और दूसरा कौन देगा?

हम अर्स भोम तीसरी, चढ़ देखें नूर मकान।
दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान।। ८ ।।

हम परमधाम की तीसरी भोम में चढ़कर अक्षरधाम देखते थे। दोनों धामों के दरवाजों के तेज झलकते हैं। उन सुखों को, हे धनी! कब दोगे?

इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के।
ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे।। ९ ।।

हमारे महबूब (धनी) के दर्शन करने के वास्ते अक्षर भगवान नित्य आते हैं। हे धनी! इस सुख को हमें कब दिखाओगे?

Nijanand App

बड़ी बैठक जित होत है, इन बड़े देहेलान।
ए कब देखाओ मेला बड़ा, मेरे वाहेदत बड़े सुभान।। १० ।।

तीसरी भोम की पड़साल में बहुत समय तक बैठक होती है। रूहों के इस मेले को, हे धनी कब दिखाओगे?

चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत।
ए सुख अर्स के इन जिमी, हक हमको विध विध देत।। ११ ।।

चौथी भोम की नृत्य की हवेली की हकीकत प्यार करके कौन बताएगा? परमधाम के अखण्ड सुखों को इस जमीन पर आप हमें तरह-तरह से देते हैं।

भोम पांचमी सुख पौढ़न के, ए हक की बातें नेक।
कौन केहेवे मासूक बिना, आसिक गुझ विवेक।। १२ ।।

पांचवीं भोम में शयन की तथा श्री राजजी महाराज की मीठी मीठी छिपी बातों को आपके बिना कौन देगा?

सुख छठी भोम मोहोलन के, ए कौन देवे कर विचार।
इन जुबां सुख क्यों कहूं, इन हक के बेसुमार।। १३ ।।

रंग महल की छठी भोम में सुखपालों का ठिकाना है। इसका विचार करके कौन बताएगा? धनी के बेशुमार सुख हैं जो इस जबान में वर्णन नहीं हो सकते।

सुख कहा कहूं भोम सातमी, जो लेते खटों छपर।
हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर।। १४ ।।

सातवीं भोम में खट छप्पर के हिंडोलों तथा श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियां के आपस में नजर से नजर मिलाकर झूलने के हमारे सुख कहां हैं?

सुख हिंडोले भोम आठमी, हक हादी रूहें हींचत।
ए चारों तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत।। १५ ।।

आठवीं भोम हिंडोले के सुख जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें झूलती हैं और चार तरफ से हिंडोलों की ताली पड़ती है, वह कहां गए?

नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर।
ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर।। १६ ।।

नवीं भोम में छज्जों पर बिठाकर दूर-दूर के नजारे देखने के सुख, हे धनी! आपके बिना कौन पास बिठाकर देगा?

सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात।
ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात।। १७ ।।

पूनम (पूर्णिमा) की चांदनी की मध्य रात्रि में दसवीं आकाशी में बिठाकर, हे धनी! आपके बिना, इश्क में भीगी रूहों को, वह सुख कौन देगा?

Nijanand App

आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान।
कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान।। १८ ।।

आपके बिना रंग महल की चांदनी पर बनी गुमटियों में बिठाकर सामने अक्षरधाम को अपनी अंगुली के इशारे से आपके बिना, हे लाड़ले धनी! कौन बताएगा?

दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन।। १९ ।।

दसों भोम के महलों के सुख आपके बिना, हे श्री राजजी महाराज! हमको कौन देगा? आपने ही परमधाम के सुख तारतम वाणी लाकर, हमें इस संसार में दिए।

|| प्रकरण || १९ || चौपाई || १०४९ ||

अर्स आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन।
ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर धरन।। १ ।।

रंग महल के मुख्य द्वार में दर्पण रंग के नूरी किवाड़ हैं। उसकी रोशनी जमीन पर तथा आसमान पर झलकती है। यहां की जबान से वहां की सिफत कैसे कहें?

दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूहअल्ला कह्या रंग लाल।
बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल।। २ ।।

बड़े दरवाजे के दोनों तरफ जो दीवारें हैं उनका श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रंग लाल बताया है। मिटने वाले तन और जबान से अखण्ड दीवार का वर्णन कैसे करूं?

चबूतरे दीवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब।
जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब।। ३ ।।

दोनों चबूतरों पर दीवार में आठ अक्सी मेहराबें हैं। अगर अच्छी तरह से देखें तो इस संसार के स्वप्न का तन तुरन्त छूट जाए।

ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर।
ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर।। ४ ।।

यह जो आठ मेहराबें दोनों चबूतरों पर बताई हैं, इन चबूतरों पर श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठती हैं और उनका तेज जमीन से आसमान तक फैलता है।

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अर्स द्वार।
दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार।। ५ ।।

रंग महल के दरवाजे के दोनों चबूतरों पर पांच नगों के (हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी) बीस थंभे दस बाएं तथा दस दाएं झलकते हैं।

हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे।
नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के।। ६ ।।

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी (नीलम) के दस थंभ दाहिनी तरफ तथा इसी तरह के दस थंभ बाईं तरफ हैं।

Nijanand App

आगे गुमटियों चढ़ाय के, नजरों नूर मकान।
कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान।। १८ ।।

आपके बिना रंग महल की चांदनी पर बनी गुमटियों में बिठाकर सामने अक्षरधाम को अपनी अंगुली के इशारे से आपके बिना, हे लाड़ले धनी! कौन बताएगा?

दसों भोम के मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन।। १९ ।।

दसों भोम के महलों के सुख आपके बिना, हे श्री राजजी महाराज! हमको कौन देगा? आपने ही परमधाम के सुख तारतम वाणी लाकर, हमें इस संसार में दिए।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। १०४९ ।।

अर्स आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन।
ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरया नूर अंबर धरन।। १ ।।

रंग महल के मुख्य द्वार में दर्पण रंग के नूरी किवाड़ हैं। उसकी रोशनी जमीन पर तथा आसमान पर झलकती है। यहां की जबान से वहां की सिफत कैसे कहें?

दोऊ बाजू बड़े दरवाजे, रूहअल्ला कह्या रंग लाल।
बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूं अर्स दिवाल।। २ ।।

बड़े दरवाजे के दोनों तरफ जो दीवारें हैं उनका श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रंग लाल बताया है। मिटने वाले तन और जबान से अखण्ड दीवार का वर्णन कैसे करूं?

चबूतरे दीवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब।
जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब।। ३ ।।

दोनों चबूतरों पर दीवार में आठ अक्सी मेहराबें हैं। अगर अच्छी तरह से देखें तो इस संसार के स्वप्न का तन तुरन्त छूट जाए।

ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर।
ए बैठक हक हादी रूहें, भरया नूर जिमी अंबर।। ४ ।।

यह जो आठ मेहराबें दोनों चबूतरों पर बताई हैं, इन चबूतरों पर श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठती हैं और उनका तेज जमीन से आसमान तक फैलता है।

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अर्स द्वार।
दस बाएं दस दाहिने, करें रोसन नूर झलकार।। ५ ।।

रंग महल के दरवाजे के दोनों चबूतरों पर पांच नगों के (हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी) बीस थंभे दस बाएं तथा दस दाएं झलकते हैं।

हीरा मानिक पोखरे, पाच नीलवी जे।
नूर थंभ तरफ दाहिनी, तरफ बाईं यही नूर के।। ६ ।।

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी (नीलम) के दस थंभ दाहिनी तरफ तथा इसी तरह के दस थंभ बाईं तरफ हैं।

Nijanand App

ज्यों आगूं त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल।
बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल।। ७ ।।

जैसे आगे वैसे पीछे दीवार में अक्सी थंभ दोनों चबूतरों पर बीस थम्भ शोभा देते हैं और दीवार का रंग लाल है।

अर्स आगूं खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार।
दोए तले बीच बन के, दो ऊपर लगते द्वार।। ८ ।।

रंग महल के सामने खुला चांदनी चौक है। इसमें चार चबूतरे दिखाई देते हैं। दो चबूतरे नीचे अमृत वन में हैं जिन पर दो पेड़ लाल और हरा लगे हैं और दो चबूतरे बड़े दरवाजे के दाएं व बाएं हैं।

इन मोहोलों सुख क्यों कहूं, आगूं बड़े दरबार।
हक हादी सुख इन कठेड़े, देत बैठाए बारे हजार।। ९ ।।

रंग महल के बड़े दरबार के सुख कैसे कहूं? यहां श्री राजजी महाराज कठेड़े लगे चबूतरों पर बैठकर बारह हजार रूहों को सुख देते हैं।

आगूं इन मोहोलों खेलौने, खेल करत कला अपार।
नाम जुदे जुदे तो कहूं, जो कहूं आवे माहें सुमार।। १० ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में पशु-पक्षी तरह-तरह की कलाएं दिखाकर खेल करते हैं। इनकी अलग-अलग हकीकत तब कहें जब वह सीमा में हो।

ए सुख लें अरवा अर्स की, हक हादी संग निस दिन।
ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमिन।। ११ ।।

श्री राजश्यामाजी के साथ रूहें प्रतिदिन सुख लेती हैं। श्री राजजी महाराज ने हम मोमिनों के वास्ते ही हुकम से यहां पहचान कराई है।

चारों हांसों खुली चांदनी, तीन तरफों बन बराबर।
तरफ चौथी झरोखे अर्सके, सोभे आगूं चबूतर।। १२ ।।

ऊपर वाले दो चबूतरों की चारों दिशाओं में तीन तरफ बन और चौथी तरफ धाम के झरोखे दिखाई देते हैं और चारों हांसों के सामने खुली चांदनी आई है।

तले जो दोऊ चबूतरे, बिरिख लाल हरा तिन पर।
ए बिरिख द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर।। १३ ।।

चांदनी चौक के दोनों चबूतरों पर लाल और हरा वृक्ष आसमान तक शोभा करते हैं।

इत जोत जिमी की क्यों कहूं, हुओ आकास जिमी एक।
सोभा क्यों कहूं आगूं अर्सके, जानों सबसे एह विसेक।। १४ ।।

यहां चांदनी चौक की जमीन का तेज आसमान तक एकाकार हो गया है। रंग महल के सामने की यह शोभा विशेष रूप की है। इसका वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

आगूं अर्स चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर।
ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर।। १५ ।।

रंग महल के सामने के चबूतरे पर हम सखियां मिलकर बैठती हैं। हमारे सामने बन्दर नाचते हैं। यह सुख हमारे कहां गए?

इत तखत कदेले कुरसियां, बैठें रूहें बारे हजार।
सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार।। १६ ।।

यहां चबूतरे के ऊपर तख्त हैं। इनके ऊपर दुलीचे बिछे हैं। यहां हम बारह हजार रूहें कुर्सियों पर बैठकर मोरों का नाच देखती हैं। यह सुख हमारे कहां गए?

हक हमारे इत बैठके, कई विध करें मनुहार।
कई पसु पंखी अर्सके, इत सुख देते अपार।। १७ ।।

यहां श्री राजजी महाराज हमारे साथ बैठकर कई प्रकार के मनोरंजन करते हैं। परमधाम के कई पशु पक्षी अपनी कलाओं से सुख देते हैं।

सुख सब पसु पंखियन के, कई खेल बोल दें सुख।
ए आगूं अर्स आराम के, क्यों कर कहूं इन मुख।। १८ ।।

पशु-पक्षी अपनी कलाओं से खेलकर तथा मीठी बोलियां बोलकर रंग महल के सामने तरह-तरह के सुख देते हैं। संसार के मुख से अखण्ड की शोभा कैसे बताएं?

कबूं एक एक पसु खेलत, कबूं एक एक जानवर।
ए सुख अर्स अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर।। १९ ।।

कभी एक-एक पशु कभी एक-एक जानवर खेलते हैं। परमधाम के इस अखण्ड सुख का यहां की जबान से कैसे बयान करूं?

कई बांदर बाजे बजावहीं, आगूं अर्स के नाचत।
ए सुख हमारे कहां गए, हम देख देख राचत।। २० ।।

कई बन्दर बाजे बजाकर रंग महल के आगे नाचते हैं। इन्हें देख-देखकर हम बहुत खुश होते हैं। वह सुख हमारे कहां गए?

इत कई विध पसु खेलत, कई खेलत हैं जानवर।
खेल बोल नाच देखावहीं, कई हंसावत लड़कर।। २१ ।।

यहां कई तरह के पशु खेलते हैं तथा कई खेलकर, बोलकर, कई नाचकर तथा कई लड़कर हमको हंसाते हैं।

हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत बखत मलार।
मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें मलार (वर्षा) ऋतु में चांदनी चौक में बैठते हैं। जहां पर मोर, बन्दर, मेंढ़क (दादुर), कोयल अपनी सुन्दर आवाज सुनाते हैं।

Nijanand App

सुख कहां गए इन समें के, कई विध बन करें गुंजार।
सेहेरां गाजत छाया बादली, होत बीजलियां चमकार।। २३ ।।

गहरे बादल आकाश में गरजते हैं। बिजलियां चमकती हैं। कई तरह की वन में आवाज गूंजती है। यह सुख हमारे कहां गए?

बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले।
ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले।। २४ ।।

रंग महल की दक्षिण दिशा में बट-पीपल की चौकी है। जिसकी चारों भोमों में हिंडोले लगे हैं। जहां श्री राजश्यामाजी के साथ हम रूहें इकट्ठी झूलती हैं। वह सुख अब हम कब लेंगे?

चारों भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत।
हम सुख लेती सब मिल के, सो कहां गई निसबत।। २५ ।।

बट-पीपल की चौकी में हिंडोले चारों भोम में हैं। जहां पर हम सब रूहें मिलकर हिंडोलों का श्री राजजी से आनन्द लेती थीं। अब हमारा वह अंगना भाव कहां चला गया?

एक अलंग सारी हिंडोले, सो सिफत न कही जाए।
अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह बिलखाए।। २६ ।।

इस चौकी में हिंडोले एक सीध में लगे हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती। जो इस सुख के अधिकारी हैं वही जानते हैं। इसलिए, हे श्री राजजी महाराज! रूहों को क्यों रुलाते हो?

पसु पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे।
सो सुख कब लेसी मोमिन, क्यों इन बिन रह्यो जाए।। २७ ।।

बट-पीपल की चारों भोमों में पशु-पक्षी तरह-तरह के सुख देते हैं। हम मोमिनों को यह सुख फिर कब मिलेंगे? अब हमसे इनके बिना नहीं रहा जाता।

कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे।
कहां जाऊं किन सों कहूं, कब हम सुख लेवें ए।। २८ ।।

रंग महल की पच्छिम दिशा में फूलबाग के सुख हैं जिनकी शोभा रंग महल के झरोखे से देखी जाती है। अब कहां जाऊं? किससे कहूं? यह सुख हमें कब मिलेंगे?

ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजे उछलत।
ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित।। २९ ।।

फूलबाग के चहबच्चों में फुहारे उछलते हैं। इन्हें हम कब पाएंगे? यह पुकार किसके सामने करें?

जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला बड़े पसुअन।
ए बैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जानें अर्स के तन।। ३० ।।

रंग महल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरे पर बैठकर बड़े पशु-पक्षियों का मुजरा (दर्शन, अभिवादन) लेते थे। जिस सुख को हमारी परआतम ही जानती है। इस बैठक के सुख का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

हांस चालीस चबूतरा, धरत कठेड़ा जोत।
केहे केहे मुख केता कहे, आसमान भरयो उद्दोत।। ३१ ।।

चालीस हांस में लाल चबूतरा है, जिसके किनारे पर कठेड़ा लगा है। उसकी नूरी किरणें आसमान तक उठती हैं। यहां के मुख से वहां का कहां तक बयान करूं?

बाघ चीते गज केसरी, हंस गरुड़ मुरग मोर।
पसु पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर।। ३२ ।।

बाघ, चीता, हाथी, बब्बर शेर, हंस, गरुड़, मुर्गा, मोर सभी पशु-पक्षियों के सुख यहां की जबान से कैसे बयान करूं?

इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन।
सोभे कई भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन।। ३३ ।।

यहां सिंहासन के ऊपर बिछौना और दुलीचा बिछा है तथा उनके ऊपर कई तरह की छतरियां शोभा देती हैं। श्री राजजी महाराज श्यामा महारानी और हम रूहों को यह सुख कब देंगे?

कई रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर।
ए खूबी आगूं अर्सके, इन जुबां कहूं क्यों कर।। ३४ ।।

चांदनी चौक में वनों में कई रंगों की शोभा दिखाई देती है। रंग महल के सामने के चबूतरे और भी अधिक शोभा देते हैं। यहां की जबान से वहां की हकीकत कैसे बताएं?

कहां बन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन।
कहां नाचें मोर बांदर, कहां सुख पसु पंखियन।। ३५ ।।

अब उन वनों के खेलने, सखियों के साथ मिलकर बैठने, मोर और बंदरों के नाचने तथा पशु-पक्षियों के सुख का कैसे बयान करूं?

अर्स जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास।
कब देखें सुख इन जिमी, जित बरसत नूर प्रकास।। ३६ ।।

परमधाम के एक कण की भी रोशनी आकाश में नहीं समाती। उस परमधाम की इस जमीन में बैठकर नूर की वर्षा के सुन्दर सुख हमें कब देखने को मिलेंगे?

जोत एक दरखत पात की, हुओ अंबर जिमी रोसन।
धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन।। ३७ ।।

वृक्ष के एक पत्ते के तेज की रोशनी जमीन और आसमान में छाई रहती है। हे श्री राजजी महाराज! अपने इन बगीचों के सुख अब हमें कब दोगे?

इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन।
अर्स में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहे महामत मोमिन।। ३८ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं कि श्री राजजी महाराज रूहों के वास्ते मेरे तन में बैठकर हुकम से कहलवा रहे हैं इसलिए मैं कहती हूं कि परमधाम में जागने के बाद खेल के सुखों को याद करेंगे।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। १०८७ ।।

Nijanand App

सात घाट पुल हौज

और सुख सातों घाट के, और सुख दोऊ पुल।
ए सुख सब अर्स के, कब लेसी हम मिल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जमुनाजी के किनारे सातों घाटों के तथा जमुनाजी पर बने दोनों पुलों के तथा परमधाम के अन्य अखण्ड सुख हम सभी मोमिन मिलकर कब लेंगे?

घाट जांबू अति सोभित, जिमी जड़ाव किनारें जोए।
कई मोहोल किनारे जवेरों, बन सोभित किनारे सोए।। २ ।।

रंग महल के सामने जामुन का घाट बहुत सुन्दर शोभा देता है। जमुनाजी के किनारे की जमीन सुन्दर जड़ाव से जड़ी है और कई महल किनारे पर जवाहरात से बने हैं। ऐसा सुन्दर किनारा वनों से शोभा दे रहा है।

ए बन जड़ाव जानों चंद्रवा, कई रंग बने इन हाल।
जाए पोहोंच्या लग झरोखों, अर्स की हद दिवाल।। ३ ।।

यह वन चन्द्रवा के समान शोभा देता है। जिसके नीचे कई तरह के रंग झलकते हैं। इसकी डालियां रंग महल के झरोखों से लगती हैं।

देखो बन ए नारंगी, जानो उनथें एह अधिक।
सुख लेती रूहें इन घाट के, कब देसी हमें हक।। ४ ।।

अब इसके साथ लगता नारंगी का वन देखो जो उससे भी अधिक अच्छा लगता है। इस घाट के अन्दर हम सब रूहें मिलकर सुख लेती थीं। श्री राजजी महाराज वह सुख हमें कब देंगे?

घाट नारंगी अति भला, जानों कोई न इन समान।
सो कब पावें सुख झीलना, जो हम लेतीं संग सुभान।। ५ ।।

नारंगी का घाट बहुत अच्छा लगता है मानो इससे अच्छा कोई और वन नहीं है। इस घाट में रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ झीलने का सुख लेती थीं। वह सुख अब कब मिलेंगे?

कई रंग बन छत्रियां, सुन्दर अति सोभाए।
करत अंबर में रोसनी, पोहोची अर्स हिंडोलों जाए।। ६ ।।

इस घाट के ऊपर की छतरियां बड़ी सुन्दर शोभा देती हैं जो आकाश तक रोशनी करती हैं। यह घाट बट-पीपल की चौकी के हिंडोले के पास लगता है।

सोभा बट घाट क्यों कहूं, तरफ चारों चार दिवाल।
जरी किनारे दोऊ सोभित, क्यों देऊं इन मिसाल।। ७ ।।

अब नारंगी के आगे बट के घाट की शोभा का वर्णन कैसे करें? इसके चारों तरफ बड़वाईयों (बट की सोर) की शोभा दीवार जैसी लगती है। जमुनाजी के किनारे के दोनों तरफ यह घाट शोभा देते हैं। इसकी उपमा कैसे बताऊं?

Nijanand App

ऊपर बिराजत हिंडोले, तरफ चारों सोभित।
ऊपर जल पुल लगते, ए सुख कहां गए अतंत।। ८ ।।

इस बट घाट में चारों तरफ हिंडोले आए हैं और ऊपर से पुल की छत मिलती है। ऐसे हमारे अखण्ड सुख कहां गए?

क्यों कहूं रेती इन भोम की, जानो उज्जल मोती सेत।
ए सुख हमारे कहां गए, जो इन भोम में लेत।। ९ ।।

इस भूमि की रेती बड़ी उज्ज्वल और मोतियों के समान सफेद है। इस भूमि के हमारे सुख कहां गए?

अचरज बन इन घाट का, सोभित ज्यों मंदिर।
बेल पात फूल फल छांहें, ए सोभित अति सुन्दर।। १० ।।

इस घाट की बड़ी शोभा है जो मन्दिर जैसा लगता है। इसमें बेल, फल, फूल पत्तों से अधिक छाया है जो अत्यन्त सुन्दर है।

कहां सुख सातों घाट के, कहां सुख पुल मोहोलात।
कहां सुख झरोखे जल पर, जो तले नेहेरें चली जात।। ११ ।।

सातों घाट के, दोनों पुलों के महलों तथा झरोखों से जमुनाजी के जल की नहरों को देखने के हमारे सुख कहां चले गए?

जोए बट थें कुंज बन चल्या, बोहोत रेती बीच ताए।
ताल हिंडोलों बीच होए, आगूं निकस्या जाए।। १२ ।।

जमुनाजी तथा बट घाट के साथ कुंजवन लगता है। यहां सुन्दर रेती है। इसके एक तरफ हौज कौसर ताल है और दूसरी तरफ बड़े वन के पांच पेड़ों के हिंडोले हैं। इनसे आगे तक कुंजवन जाता है।

किन विध लेवें सुख बन के, क्यों हिंडोलों हींचत।
किन विध रूहें अर्स में, माहों-माहें खेल करत।। १३ ।।

कुंजवन के अन्दर हम रूहें किस तरह आपस में खेल करती थीं? किस तरह से हिंडोलों में झूलकर तरह-तरह के आनन्द लेती थीं।

मोहोल बने बेलियन के, सेज हिंडोले सिंघासन।
चेहेबच्चे फुहारे कई सुख, कब होसी रूहन।। १४ ।।

कुंजवन में सभी बेलों (लताओं) के बने महल हैं। यहां सेज्या, हिंडोले, सिंहासन, चहबच्चे तथा फव्वारों के अनेक सुख हैं। यह हम रूहों को कब मिलेंगे?

इन मंदिरों सेज्या सिंघासन, छोटे चेहेबच्चे हिंडोले।
कई फुहारे नेहेरें चलें, धनी हमें कब सुख देओगे ए।। १५ ।।

इन कुंजवन के मन्दिरों में सेज्या, सिंहासन, छोटे-छोटे चहबच्चे और हिंडोले तथा फव्वारे और आठ दिशाओं में चलने वाली नहरों के सुख हमें धनी कब दोगे?

Nijanand App

कहां सुख गलियां अर्स की, माहों-माहें बांध के होड़।
रूहें रेती में ठेकतियां, दौड़तियां कर जोड़।। १६ ।।

यहां की गलियों में हम सखियां आपस में होड़ बांधकर रेती में दौड़ती और कूदती थीं। वह हमारे सुख कहां गए?

इन घाट आगूं पुल जोए पर, जाए पार पोहोंच्या पुल।
ए भी तिन बराबर, जो पेहेले कह्या अव्वल।। १७ ।।

बट घाट के आगे जमुनाजी पर पुल बना है। यह पुल भी वैसा ही है जैसा पहले केल का पुल बताया है।

बन जो दोऊ किनारों, साम सामी सोभात।
हारें चौकी पांच हार की, पोहोंची पुल पर छात।। १८ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारों के वन, साम-सामी (आमने-सामने) शोभा देते हैं। पाल के ऊपर दोनों किनारों पर पांच पेड़ों की हारें आई हैं जिनकी पांच भोम छठी चांदनी है। इनकी छत भी पुल की छत से मिलती है।

पुल तले नेहेरें चलें, दोऊ पुल मुकाबिल।
दोऊ बीच सोभा देय के, जाए ताल पोहोंच्या जल।। १९ ।।

पुल के नीचे दस घड़नाले चलते हैं तथा दोनों पुल आमने-सामने हैं। दोनों पुलों के बीच जमुनाजी का जल शोभा देता हुआ हौज कौसर ताल में मिल जाता है।

कहां गए सुख जोए के, जमुना जरी किनार।
कहां सुख जल कहां झीलना, कहां नित नए सिनगार।। २० ।।

जमुनाजी का किनारा जड़ाव से जड़ा हुआ है। वहां पर नित्य ही झीलना करके सिनगार करते थे। वह हमारे सुख कहां गए?

दोऊ किनारे जोए के, एक मोहोल एक चबूतर।
कहूं हेम रंग कहूं जवेर, अति सोभित बन ऊपर।। २१ ।।

जमुनाजी के दोनों तरफ एक महल, एक चबूतरा की बराबर शोभा आई है जिनके ऊपर कहीं-कहीं सोने जैसे, कहीं-कहीं जवेरों जैसे वनों के रंग दिखाई देते हैं।

जमुना दोऊ किनार के, मोहोल ढांपिल दोऊ ओर।
तलाव तरफ जोए आए के, जाए माहें मिली मरोर।। २२ ।।

जहां से जमुनाजी का जल हौज कौसर ताल में मुड़कर जाता है, वहां से जमुनाजी के दोनों किनारों की पाल मोहोलों ने ढांप रखी है।

|| प्रकरण || २१ || चौपाई || ११०९ ||

Nijanand App

हौज कौसर

अब ताल पाल की क्यों कहूं, बन पांच हार गिरदवाए।
फिरती द्योहरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए।। १ ।।

हौज कौसर ताल की पाल को घेर कर बड़े वन के वृक्षों की पांच हारें (कतारें) आई हैं और १२८ द्योहरियां और चबूतरे आए हैं। इस शोभा का वर्णन कैसे करूं?

बड़े घाट ताल के चार हैं, चारों सनमुख बराबर।
दोऊ तरफ उतरती द्योहरी, तले आगूं चबूतर।। २ ।।

तालाब के चार बड़े घाट आमने-सामने हैं। ऊपर द्योहरियों के सामने वाले चबूतरों से सीढ़ियां नीचे चबूतरों पर उतरती हैं।

पाल ऊपर जो द्योहरियां, आगूं हर द्योहरी चबूतर।
तिन दोऊ तरफों सीढ़ियां, जित होत चढ़ उतर।। ३ ।।

पाल के ऊपर जो द्योहरियां हैं उनके आगे (१२८) चबूतरे हैं जिनकी दोनों तरफ चढ़ने-उतरने की सीढ़ियां आई हैं।

सीढ़ी मुकाबिल सीढ़ियां, आए मिलत हैं जित।
दो दो बीच द्वार नें, सबों सोभित परकोटे इत।। ४ ।।

आमने-सामने की सीढ़ियां जहां आकर नीचे चबूतरे पर मिलती है वहां आमने-सामने दो दरवाजे हैं (छोटी १२४ द्योहरी के) और सीढ़ियों पर कठेड़ा (परकोटा) बना है।

खिड़की मुकाबिल खिड़कियां, अन्दर बाहेर जे।
जो सुख हैं मोहोलन के, कब लेसीं हम ए।। ५ ।।

पाल के नीचे भी (२५६) महलों की दो हारें आई हैं जिनकी खिड़कियां आमने-सामने हैं। यहां के सुख हमें कब मिलेंगे?

ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वार नों।
कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों।। ६ ।।

ऊपर कठेड़ा के कांगरी आई है और हर दरवाजे के ऊपर भी कांगरी पाल के किनारे पर आई है। इसकी शोभा जबान से कहने में नहीं आती।

दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूं क्यों कर।
पड़साल आगूं सबन के, गिरदवाए सोभा जल पर।। ७ ।।

बड़े घाट के दरवाजे के बीच की जो मेहराब आई है उसकी शोभा कैसे कहूं? इनके आगे पड़साल है और जल की शोभा है।

अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करती इत झीलन।
चित्त चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसीं मोमिन।। ८ ।।

उस जल की शोभा कैसे कहें? हम जहां नहाया करती थीं और मन चाहे सिनगार करती थीं। यह सुख हम मोमिनों को कब मिलेंगे?

Nijanand App

मासूक संग सुख मिल के, इत हिंडोले पाल पर।
सो सुख याद क्यों न आवहीं, जो हम लेती मिलकर।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ मिलकर हम पाल के अन्दर (१२४) हिंडोलों की दो हारों में झूलते थे। वह सुख हमें याद क्यों नहीं आते जो हम मिलकर लेते थे।

सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के।
अनेक रंगों कई जुगते, किन विध कहूं मुख ए।। १० ।।

तालाब के चारों तरफ एक हीरे की पाल है और बीच में एक ही हीरे का टापू महल है। यहां कई रंगों की कई तरह की शोभा दिखाई देती है। उसका बयान यहां की जबान से कैसे करूं?

चांदनी झरोखे बैठ के, किन विध लेती सुख।
सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख।। ११ ।।

टापू महल के चांदनी से झरोखों में बैठकर हम अपार सुख लेते थे। जिनकी याद श्री राजजी महाराज इस जमीन में करा रहे हैं। अब मैं दुःख के संसार में बैठकर उस सुख के बिना समय कैसे काटूं?

हकें सुख अर्स देखाइया, इलम दे करी बेसक।
हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इस्क।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान देकर परमधाम के सुख दिखाए। यदि हमारे अन्दर कुछ भी इश्क हो तो ऐसे श्री राजजी महाराज के बिना हम कैसे रहें?

इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार।
हाए हाए क्यों जाए हमें रात दिन, ए सुख बैठी रूहें हार।। १३ ।।

टापू महल के सुख, चारों घाटों के सुख, हाय! हाय!, हम रूहें क्यों हारकर बैठ गई, यह सुख हमें रात-दिन तड़पाते हैं।

याद देत हक ए सुख, हाए हाए तो भी न लगे घाए।
ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होए अर्स अरवाए।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज हमें परमधाम के सुख को याद करा रहे हैं। यदि हम अर्श की आत्माएं हैं तो ऐसी बेशक वाणी लेकर हाय! हाय! हमारे कलेजे में घाव क्यों नहीं लगते?

हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन।
अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हांसी कारन।। १५ ।।

यह सब श्री राजजी के हुकम से ऐसा हो रहा है। नहीं तो यह तन यहां रह ही नहीं सकता। श्री राजजी महाराज रूहों के ऊपर अजीब हंसी करने के वास्ते ही उन्हें यहां रखे हुए हैं।

याद करों सुख हांसीय के, के याद करों सुखपाल।
के याद करों तले मोहोल के, हाए हाए अजूं ना बदलत हाल।। १६ ।।

हे मोमिनो! इस हंसी के सुख को याद करो। सुखपालों को याद करो। तालाब के नीचे बने महलों को याद करो। हाय! हाय! इतने पर भी तुम्हारी रहनी नहीं बदलती?

|| प्रकरण || २२ || चौपाई || ११२५ ||

Nijanand App

नेहेरें मोहोलों में

सुख नेहेरों का अलेखे, सबों ऊपर मोहोलात।
कई मिली कई जुदियां, तरफ चारों चली जात।। १ ।।

परमधाम में नहरों के सुख बेशुमार हैं। सभी के ऊपर महल बने हैं। कई अलग-अलग बहती हैं, कई मिलकर चारों तरफ घूमती हैं।

चार तरफ चार नेहेरें, ऊपर सब ढांपेल।
कहूं चार आठ सोले मिली, कई विध मोहोलों खेल।। २ ।।

चार तरफ चार नहरें चलती हैं जो ऊपर से ढकी हैं। कहीं चार, कहीं आठ, कहीं सोलह नहरें महलों के बीच घूमती हैं।

चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानूं के रचिया सेहेर।
इन विध बराबर गलियां, आड़ी ऊंची गली बीच नेहेर।। ३ ।।

महल के चारों किनारे ढंके हैं लगता है जैसे शहर बसा हो। इस तरह से गलियां घूमती हैं और इन्हीं गलियों के बीच आड़ी-टेढ़ी नहरें चलती हैं।

कई कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसे पसुअन।
कई सेहेर हैं जानवर, सबों इस्क अकल चेतन।। ४ ।।

कई करोड़ों, पदमों, बेशुमार पशुओं के शहर बसे हैं और इसी तरह से कई शहर जानवरों के हैं, परन्तु सभी के अन्दर धनी का इश्क है, चेतनता है और बुद्धि है।

यों कई नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कई मोहोलात।
हर मोहोलों कई बैठकें, ए सोभा कही न जात।। ५ ।।

शहरों के बीच कई नहरें और कई महल बने हैं। हर महल में कई सुन्दर बैठने के स्थान बने हैं। जिसकी शोभा कही नहीं जा सकती।

अब नेहेरें बरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब।
मोहोल मोहोल बीच कई कुंड बने, कई कारंजे छूटें ऊंचे आब।। ६ ।।

नहरों का वर्णन करना तो तभी सम्भव है जब यह सीमित संख्या में हों। महल और महल के बीच कई कुण्ड बने हैं जहां फव्वारे चलते हैं।

कई जल मोहोलों चढ़े, कई मोहोलों से उपरा ऊपर।
कई लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर।। ७ ।।

कई जगह पानी महलों से ऊपर चढ़ता है और कई जगह उससे भी ऊपर जाता है। यहां हजारों, लाखों बैठने के स्थान हैं। यहां के सुख का वर्णन कैसे करूं?

कई मोहोल ऊंचे अति बड़े, जैसे हक दिल चाहे।
हर मोहोलों बीच नेहेरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की इच्छा के अनुसार कई महल ऊंचे और बड़े हैं। उन महलों के बीच में सुन्दर नहरें चलती हैं तथा बैठकें बनी हैं, जिसका सुख वर्णन करने में नहीं आता।

Nijanand App

हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत।
जुदी जुदी जुगतें कारंजे, क्यों कर कहूं एह सिफत।। ९ ।।

हर एक ठिकाने पर अलग-अलग ढंग के महल बने हैं जिनमें अलग-अलग तरीके से पानी चलता है और अलग-अलग तरीके से फव्वारे चलते हैं। इनकी सिफत का वर्णन कैसे करूं?

इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम।
मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम।। १० ।।

इन बड़े महलों के बेशुमार सुख हैं। श्री राजजी महाराज वह सुख हमें कब दोगे? आपके हुकम के हाथ सब कुछ है। मांगे या बिन मांगे, जैसे चाहें आप दे सकते हो?

सागर से नेहेरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात।
कई विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात।। ११ ।।

नीर सागर से पानी की नहरें आती हैं और अलग-अलग फैल जाती हैं। कई तरह से महलों में घूम फिरकर जल वापस सागरों में चला जाता है।

कई चलत चक्राव ज्यों, कई आड़ी ऊंची चलत।
कई चलत मोहोलों पर, कई मोहोलों से उतरत।। १२ ।।

कई नहरें चक्राव (भंवर) में (घूमकर) चलती हैं, कई आड़ी चलती हैं, कई ऊंची चलती हैं, कई महलों के ऊपर चलती हैं, कई महलों से नीचे उतरती हैं।

एक नेहेर से कई नेहेरें, जुदी जुदी फिरत।
कई जुदी जुदी नेहेरें होए के, कई एक में अनेक मिलत।। १३ ।।

एक नहर से कई नहरें बन जाती हैं और अलग-अलग घूमती हैं। फिर कई अलग-अलग नहरें घूम फिरकर एक नहर में मिल जाती हैं।

कई नेहेरें मोहोलों मिने, चारों तरफों फिरत।
कई मोहोल नेहेरें कई, कई विध विध सों विचरत।। १४ ।।

कई नहरें महलों के चारों तरफ घूमती हैं। इस तरह से महलों में नहरें कई तरह से फैल जाती हैं।

कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चारसे सोले निकसत।
कई नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्राप्त।। १५ ।।

कहीं चार नहरें मिलकर चलती हैं, कहीं चार से सोलह बन जाती हैं। हे श्री राजजी महाराज! इन नहरों और महलों के सुख हमें कब मिलेंगे?

कहूं नेहेरें जाहेर चली, कई पहाड़ों के माहें।
नेहेरें पहाड़ों या सागरों, सोभा क्यों कहूं इन जुबांए।। १६ ।।

कई नहरें जाहिर चलती हैं, कई पहाड़ों के अन्दर चलती हैं। नहरों, पहाड़ों या सागर की शोभा कैसे कहें? जबान हमारी दुनियां की है।

|| प्रकरण || २३ || चौपाई || ११४१ ||

Nijanand App

मानिक पहाड़ के हिंडोले

पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक।। १ ।।

मानिक पहाड़ में पहाड़ों जैसे बड़े ऊंचे महल हैं जो बेशुमार हैं। इन सबका वर्णन कहां तक कैसे करूं?

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत।। २ ।।

इस बड़े पहाड़ में बड़े हिंडोले लगे हैं जिसमें एक हिंडोले में बारह हजार सखियां बैठती हैं। साथ में श्री राजश्यामाजी खट छप्पर के हिंडोले में झूलते हैं।

अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत।। ३ ।।

इस मानिक पहाड़ के अन्दर बड़ी-बड़ी हवेलियां पहाड़ों जैसी हैं और कई तरह की बनी हैं। इस पहाड़ के हिंडोलों के सुख जबान से वर्णन नहीं किए.जाते।

कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल।। ४ ।।

पहाड़ के कई हिंडोले ऊपर से ढके हैं। जहां पर रूहें कई तरह के खेल करके कई तरह के सुख लेती हैं।

कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचें हिंडोले।
कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले।। ५ ।।

इस मानिक पहाड़ के हिंडोलों को चलाने के भी कई सुख हैं। कई हिंडोले बाहर हैं, कई अन्दर हैं, कई पहाड़ के बीच खुले हैं।

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान।
जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान।।। ६ ।।

यहां की जमीन के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता, तो फिर यहां के जवाहरात के पहाड़ों की शोभा किस जबान से वर्णन करूं?

कोई पहाड़ गिरदवाए का, कोई बराबर खूंटों चार।
जो सोभा पहाड़न की, सो न आवे माहें सुमार।। ७ ।।

कोई पहाड़ गोल है और कोई चौरस है। इन पहाड़ों की शोभा शुमार में नहीं है।

जिमी गिरदवाए पहाड़ों की, सब देखत बराबर।
पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किए दिल धर।। ८ ।।

चारों तरफ देखने से जमीन पहाड़ों की ही दिखाई देती है जो सभी बराबर है। पहाड़ भी सब तरफ से सीधे हैं। लगता है श्री राजश्यामाजी ने स्वयं इनको अपनी चाहना से बनाया हो।

Nijanand App

कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर।। ९ ।।

कई महल पहाड़ों के अन्दर बने हैं। कई महल पहाड़ों के ऊपर बने हैं। यहां के वन, पहाड़ या जमीन की सिफत झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं?

ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न।। १० ।।

जमीन के, वन के, महलों के तथा पहाड़ों के सुख कहने में नहीं आते।

कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए।। ११ ।।

कई पहाड़ों से झरने झरते हैं। कई नहरें ऊपर जाती हैं। कई जगह से पानी पहाड़ से चादरों के रूप में तालों में आकर समा जाता है।

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत।। १२ ।।

कई नहरें वन से होकर एक-दूसरे से मिलती हुई चलती हैं। इसके आगे वन की मोहोलातें आती हैं जिनकी सिफत कई तरह की है।

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात।
हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ हम सब रूहें रात-दिन यहां हंसती-खेलती, बातें करती थीं। यह हमारे सुख कहां चले गए?

|| प्रकरण || २४ || चौपाई || ११५४ ||

बन के मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के।
जानो सोभा सबसे अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए।। १ ।।

मानिक पहाड़ से आगे वन की नहरें हैं जिनमें सुन्दर महल बने हैं और उन महलों पर वन की छाया है। लगता है यह शोभा सबसे अच्छी है जहां रूहें सब तरह का सुख लेती हैं।

नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएं।। २ ।।

सागर से नहरें खुली चलती हैं और वन के बीच में आती हैं। यहां पर इनकी शोभा अधिक बढ़ जाती है। इस खूबी का बयान यहां की जबान कैसे करे?

सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक।। ३ ।।

सागरों के किनारे के वन तथा उनके अन्दर की नहरें तथा महल जो वनों के ही हैं, देखने से एक से एक अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर।। ९ ।।

कई महल पहाड़ों के अन्दर बने हैं। कई महल पहाड़ों के ऊपर बने हैं। यहां के वन, पहाड़ या जमीन की सिफत झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं?

ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न।। १० ।।

जमीन के, वन के, महलों के तथा पहाड़ों के सुख कहने में नहीं आते।

कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए।। ११ ।।

कई पहाड़ों से झरने झरते हैं। कई नहरें ऊपर जाती हैं। कई जगह से पानी पहाड़ से चादरों के रूप में तालों में आकर समा जाता है।

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत।। १२ ।।

कई नहरें वन से होकर एक-दूसरे से मिलती हुई चलती हैं। इसके आगे वन की मोहोलातें आती हैं जिनकी सिफत कई तरह की है।

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात।
हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ हम सब रूहें रात-दिन यहां हंसती-खेलती, बातें करती थीं। यह हमारे सुख कहां चले गए?

|| प्रकरण || २४ || चौपाई || ११५४ ||

बन के मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के।
जानो सोभा सबसे अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए।। १ ।।

मानिक पहाड़ से आगे वन की नहरें हैं जिनमें सुन्दर महल बने हैं और उन महलों पर वन की छाया है। लगता है यह शोभा सबसे अच्छी है जहां रूहें सब तरह का सुख लेती हैं।

नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएं।। २ ।।

सागर से नहरें खुली चलती हैं और वन के बीच में आती हैं। यहां पर इनकी शोभा अधिक बढ़ जाती है। इस खूबी का बयान यहां की जबान कैसे करे?

सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक।। ३ ।।

सागरों के किनारे के वन तथा उनके अन्दर की नहरें तथा महल जो वनों के ही हैं, देखने से एक से एक अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

कई मोहोल ढिग सागरों, और कई मोहोल बनराए।
तिनों में नेहेरें चलें, हम सुख लेतीं इत आए।। ४ ।।

कई महल सागरों के पास हैं जिनको बड़ी रांग की हवेलियां कहते हैं। जमीन के ऊपर बनों में कई महलों की शोभा है। इन सबमें सुन्दर नहरें चलती हैं और हम सब रूहें यहां आकर सुख लेती हैं।

ए बन नेहेरें दूर लों, जहां लों नजर फिरत।
ए सुख संग सुभान के, हम कई विध लेतीं इत।। ५ ।।

यह वन तथा नहरें जहां तक नजर जाती है उससे भी अधिक दूर तक फैली हैं। श्री राजजी महाराज के साथ में हम रूहें यहां आकर कई तरह के सुख लेती हैं।

इन बन की और मोहोल की, और पहाड़ हिंडोले जे।
जिमी सब बराबर, अर्स लग देखिए ए।। ६ ।।

इस वन, महलों और पहाड़ की तथा हिंडोलों की जमीन रंग महल तक समतल है।

बन बिगर की जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए।
ए दूब जोत आसमान लों, रह्या नूरै नूर भराए।। ७ ।।

रंग महल के पच्छिम में दूब दुलीचा है। यहां पेड़ नहीं हैं। घास का मैदान है। जिसमें घास गलीचे के समान ही शोभा देती है और जिसका तेज आसमान तक जाता है।

ए नेहेरें अति दूर लग, अति दूर देखे सागर।
सागर नेहेरें मोहोल जो, अति बड़े देखे सुन्दर।। ८ ।।

इन नहरों की बहुत दूर तक सुन्दरता है। दूर से देखने पर यह सागर के समान प्रतीत होती हैं। सागर को, नहरों को और महलों का देखने का एक अजब नजारा है।

सागर किनारे मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान।
ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, इत सुख चाहिए सागर समान।। ९ ।।

सागरों के किनारे पर जो बड़ी राग के महल हैं, वह मानिक पहाड़ जैसे बारह हजार भोम ऊंचे हैं और आसमान को छूते हैं। यह बड़ी रांग की मोहोलातें अलग-अलग साजो सामान से बनी हैं जहां सागरों के समान बेशुमार सुख हैं।

कई मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊंचे चढ़े अनेक।
कई जुगतें सोभा सुन्दर, ए क्यों कहे जुबां विवेक।। १० ।।

सागरों के बराबर के महल बहुत ऊंचे हैं और कई तरह की शोभा से सुन्दर हैं। यहां की जबान से कैसे उनका वर्णन करें?

कई मोहोल सुख सागरों, कई सुख टापू मोहोल।
ए सुख अपार अलेखे, सो क्यों कहूं इनकी तौल।। ११ ।।

सागरों के अन्दर सुन्दर टापू महल बने हैं जो बड़ी रांग की मोहोलातों के समान ही ऊंचे सुख साधनों से भरे हैं। इनकी उपमा कैसे समझाऊं?

Nijanand App

महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए।
ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, सागरों के अन्दर बारह हजार की बारह हजार हारें टापुओं की हैं जिनके चारों तरफ जल है। यह टापू महल बहुत ऊंचे और बहुत सुन्दर हैं। अपनी रूह को जगाकर देखो।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ११६६ ।।

पुखराज से पाट घाट तांई
(पुखराज पहाड़ से पाट घाट तक)

सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले।। १ ।।

पुखराज पहाड़ के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसके नीचे कैसे सुन्दर महल बने हैं जो नीचे से संकरे और ऊपर चढ़ते-चढ़ते (दो सौ पचास) भोम तक चौड़े हो गए हैं। उसी के ऊपर इसके तीन गुनी (७५०) भोम आती है।

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज।
कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज।। २ ।।

पुखराज पहाड़ के नीचे तलहटी में आठ पहाड़ों की शोभा दिखाई देती है। पांच तलहटी के पेड़, दो घाटी के और एक बंगलों का, बंगलों के ऊपर पुखराज ताल की शोभा है। इन पहाड़ों पर बड़ी ऊंची-ऊंची मोहोलातें शोभा देती हैं।

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन।। ३ ।।

पुखराज ताल के ऊपर की मोहोलातें तथा उसके नीचे के आठ पहाड़ और ऊपर आकाशी महल के नूर की बेशुमार शोभा है।

निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार।। ४ ।।

पुखराज पहाड़ में बड़े-बड़े महल बने हैं तथा बड़ी-बड़ी पड़सालें (देहलान) बनी हैं। धनी इनके सुख आप ही देने वाले हैं यह हमें कब मिलेंगे?

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार।। ५ ।।

इन बड़ी-बड़ी देहलानों के आगे जानवर कई तरह के खेल करते हैं। हम मोमिन यहां इन्तजार कर रहे हैं कि वह सुख हमें फिर कब मिलेंगे?

कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत फील।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील।। ६ ।।

पहाड़ से सफेद हाथी कई कलाओं से कई तरह के खेल करते हैं। हे श्री राजजी महाराज! अब देरी क्यों कर रहे हो? हम आपके बिना एक पल नहीं रह सकते।

Nijanand App

महामत कहे सुनो मोमिनों, बीच टापू जल गिरदवाए।
ए अति ऊंचे मोहोल सुन्दर, देखो अपनी रूह जगाए।। १२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, सागरों के अन्दर बारह हजार की बारह हजार हारें टापुओं की हैं जिनके चारों तरफ जल है। यह टापू महल बहुत ऊंचे और बहुत सुन्दर हैं। अपनी रूह को जगाकर देखो।

|| प्रकरण || २५ || चौपाई || ११६६ ||

पुखराज से पाट घाट तांई
(पुखराज पहाड़ से पाट घाट तक)

सुख क्यों कहूं पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले।। १ ।।

पुखराज पहाड़ के सुखों का कैसे वर्णन करूं? इसके नीचे कैसे सुन्दर महल बने हैं जो नीचे से संकरे और ऊपर चढ़ते-चढ़ते (दो सौ पचास) भोम तक चौड़े हो गए हैं। उसी के ऊपर इसके तीन गुनी (७५०) भोम आती है।

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज।
कई मोहोलातें आठों पर, ऊंचे रहे मोहोल बिराज।। २ ।।

पुखराज पहाड़ के नीचे तलहटी में आठ पहाड़ों की शोभा दिखाई देती है। पांच तलहटी के पेड़, दो घाटी के और एक बंगलों का, बंगलों के ऊपर पुखराज ताल की शोभा है। इन पहाड़ों पर बड़ी ऊंची-ऊंची मोहोलातें शोभा देती हैं।

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन।। ३ ।।

पुखराज ताल के ऊपर की मोहोलातें तथा उसके नीचे के आठ पहाड़ और ऊपर आकाशी महल के नूर की बेशुमार शोभा है।

निपट बड़े मोहोल पहाड़ के, निपट बड़े दरबार।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार।। ४ ।।

पुखराज पहाड़ में बड़े-बड़े महल बने हैं तथा बड़ी-बड़ी पड़सालें (देहलान) बनी हैं। धनी इनके सुख आप ही देने वाले हैं यह हमें कब मिलेंगे?

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमिन इत इंतजार।। ५ ।।

इन बड़ी-बड़ी देहलानों के आगे जानवर कई तरह के खेल करते हैं। हम मोमिन यहां इन्तजार कर रहे हैं कि वह सुख हमें फिर कब मिलेंगे?

कई रंगों कई विध खेलत, पहाड़ से सेत फील।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील।। ६ ।।

पहाड़ से सफेद हाथी कई कलाओं से कई तरह के खेल करते हैं। हे श्री राजजी महाराज! अब देरी क्यों कर रहे हो? हम आपके बिना एक पल नहीं रह सकते।

Nijanand App

कहां गए सुख आपके, हम कहां पुकारें जाए।
तुम बिना नहीं कोई कितहूं, मोमिन बेसक किए बनाए।। ७ ।।

आपके सुख कहां चले गए? हम कहां जाकर पुकारें? आपने अपने अतिरिक्त मोमिनों को कोई और ठिकाना बताया ही नहीं।

और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात।
पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कई नेहेरें चली जात।। ८ ।।

पुखराज ताल के तीन तरफ जवेरों की मोहोलातें हैं। पहाड़ के अन्दर भी बहुत महल हैं जहां कई तरह की नहरें चलती हैं।

गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें चार।
चार चार हर एक में, उतरत सोले धार।। ९ ।।

दोनों गुर्जों के बीच में होकर पुखराजी पहाड़ से जमुनाजी चार धाराओं में पुखराज ताल में गिरती हैं। इसी तरह से पुखराजी ताल से यह बीच के कुण्ड में चार धाराएं सोलह धाराओं में गिरती हैं।

सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान।
ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान।। १० ।।

यह सोलह धाराएं अधबीच के कुण्ड में गिरती हैं। यहां चारों तरफ से देहलानें और खास महल आए हैं। हे मेहरबान श्री राजजी महाराज! हम आपके साथ मिलकर यह सुख कब लेंगी?

कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कई जल उतरे तले तलाव।। ११ ।।

पुखराजी ताल के नीचे (अड़तालीस बंगलों के अड़तालीस हारों की) बंगलों की बेशुमार शोभा है। यहां नहरें भंवर के साथ चलती हैं जो बगीचों के चहबच्चों से उतरती हुई नीचे तलहटी के ताल में जाती हैं।

इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चों बगीचों।
ए सुख छाया बन की, कब देओगे हमकों। १२ ।।

इन महलों में, बंगलों में, चहबच्चों और बगीचों में तथा वन की छाया में भी बेशुमार सुख हैं। यह सुख धनी हमें कब दोगे?

कई सुख बीच बंगलों, कई सुख खूब खुसाली खास।
सो दिल कब हम देखसी, हकसों विविध विलास।। १३ ।।

बंगलों के बीच में खूब खुशालियों की सेवा के सुख तथा श्री राजजी महाराज आपके साथ आनन्द करने के सुख अब हम कब देख पाएंगे?

एक सब्द सखी बोलते, कई ठौरों उठें जी जी कार।
मन सरूप कई सोहागनी, कई एक पांउं खड़ियां हजार।। १४ ।।

एक सखी कुछ कहती थी तो हजारों खूब खुशालियां 'जी-जी' कहकर सेवा के लिए दौड़ती थीं। यह रूहों को प्रसन्न करने के लिए भी रूहों के मन के स्वरूप खूब खुशालियां एक पैर पर खड़ी रहती थीं।

Nijanand App

सखी कछुक मन में चाहत, सो आगूं खड़ी ले आए।
यों चित चाहे सुख धाम के, कब लेसी हम जाए।। १५ ।।

सखी मन में कुछ इच्छा करती है तो उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती। खूब खुशाली पहले ही लेकर आ जाती है। इस तरह से मन चाहे परमधाम के सुख हमें कब मिलेंगे?

जोए जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर।
आगूं कुंड जल चलकत, बड़ा बन सोभा ऊपर।। १६ ।।

जमुनाजी पुखराज पहाड़ से खुली चलीं उस चबूतरे की शोभा का वर्णन कैसे करूं और फिर आगे अधबीच के कुण्ड में धाराएं गिरीं इसके ऊपर बड़े वन की शोभा है।

ए बन गिरद पुखराज के, बड़ा बन खूबी लेत।
ए फेर मिल्या बन जोए के, नूर आकास भस्यो जिमी सेत।। १७ ।।

यह बड़ा वन पुखराज को घेरकर जमुनाजी की पूरी परिकरमा करता है और बड़ा सुन्दर है। इसका तेज आकाश तक फैलता है।

इत अनेक वनस्पति, कई पसु पंखी करें जिकर।
हम इत सुख लेती हक सों, जानों बैठक एही खूबतर।। १८ ।।

यहां अनेक तरह के वृक्ष हैं। जहां कई प्रकार के पशु-पक्षी पिऊ-पिऊ की आवाज करते हैं। हम रूहें श्री राजजी महाराज के साथ सुख लेती हैं और इसी बैठक को ही अच्छा समझती हैं।

ए बन मोहोल कई विध के, बड़े बड़े कई बड़े रे।
मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कई चौड़े रे।। १९ ।।

वन तथा महल कई तरह के हैं जो एक-दूसरे से बड़े होते जाते हैं और चौड़े होते जाते हैं। इन महलों और मन्दिरों का कोई हिसाब नहीं है। यह बेशुमार हैं।

जब पीछल चले पुखराज के, अति चौड़ो बड़ो विस्तार।
ए बन खूबी क्यों कहूं, आवत नहीं सुमार।। २० ।।

जब पीछे पुखराज की तरफ चलते हैं तो इसकी चौड़ाई बढ़ जाती है। इस वन की खूबी कैसे कहूं? यह बेशुमार है।

एक एक पेड़ पर कई भोमें, भोम भोम कई जुगत।
पसु पंखी एक बिरिख पर, कई जुगतें बास बसत।। २१ ।।

एक-एक पेड़ में कई भोमे बनी हैं और एक-एक भोम में कई तरह के बाग बगीचे बने हैं। पशु-पक्षी इन वृक्षों में कई तरह से रहते हैं।

कई तेज जोत प्रकास में, अवकास भस्यो ताके नूर।
जिमी मोहोल बन पसु पंखी, ए कब देखें अर्स जहूर।। २२ ।।

इन पशु-पक्षियों के तेज की रोशनी आकाश में जगमगाती है। यहां के जमीन, महल, वन और पशु-पक्षी हम कब देखेंगे?

Nijanand App

ए बन जाए बड़े बन मिल्या, चल गया पुखराज पार।
अर्स बन सोभा क्यों कहूं, और बन दोऊ किनार।। २३ ।।

यह महा-वन पुखराज के आगे बड़े-वन में मिल जाता है। परमधाम के इन वनों की शोभा कैसे कहूं? यह जमुनाजी के दोनों किनारों पर आए हैं।

कुंड आगे ढांपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात।
अंदर बैठकें क्यों कहूं, दोऊ किनार लिए चली जात।। २४ ।।

मूल कुण्ड के आगे आधी दूर तक जमुनाजी ढकी चल रही हैं जिसके ऊपर महल बने हैं। पुल, महल के नीचे जमुनाजी के दोनों किनारे पर सुन्दर बैठकें बनी हैं।

किनारे कठेड़ा बैठक, अति सुंदर थंभ सोभात।
दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात।। २५ ।।

बैठक के किनारे कठेड़ा लगा है और दो-दो थंभों की दोनों तरफ हारें शोभा देती हैं। इस तरह से जमुनाजी के दोनों तरफ के चबूतरे बड़े सुन्दर हैं। जिनकी खूबी यहां के मुख से वर्णन नहीं होती।

जाए आगूं भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार।
ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभे हार चार।। २६ ।।

आगे चलकर जमुनाजी खुली चलती हैं तथा दोनों किनारे महलों से ढके हैं। उन महलों के ऊपर कलश और कांगरी शोभा देती है और पाल के ऊपर दोनों तरफ चार थंभ एक सीध में शोभा देते हैं।

जड़ित किनारें दोऊ जल पर, दोऊ कठेड़े गिरदवाए।
ए सुख लेती मासूक संग, इत अचरज बनराए।। २७ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव से जड़े हैं और दोनों तरफ कठेड़े लगे हैं। रूहें श्री राजजी महाराज के साथ यहां सुख लेती हैं। यहां के वनों की शोभा गजब की है।

इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर।
दोऊ किनारे कुसादी होए चली, इत सोभा लेत यों कर।। २८ ।।

जमुनाजी उत्तर से दक्षिण की ओर हौज कौसर ताल की तरफ चलती हैं। यहां मोड़ के किनारे से एक महल, एक चबूतरे के क्रम में शोभा बनती जाती है और जमुनाजी दोनों किनारे फैलकर चलती हैं।

आगूं पुल इत आइया, ऊपर बड़ी मोहोलात।
कई देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घड़नाले जात।। २९ ।।

आगे केल के घाट के पास केल-पुल आ जाता है। जिसके ऊपर पांच भोम छठी चांदनी है। जल के ऊपर सुन्दर झरोखे और देहलान दिखाई देती है। नीचे से जमुनाजी का जल दस घड़नालों से आगे जाता है।

पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारों तरफों बराबर।
ए कहां गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गए ठौर बिसर।। ३० ।।

पुल की पांच भोम छठी चांदनी चारों तरफ से बराबर है। इस ठिकाने को हम रूहें क्यों भूल गईं? हमारे यह सुख कहां चले गए?

Nijanand App

सात घाट बने बीच में, पुल दूजा तिनके पार।
दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इत हिंडोले ठंढ़ी बयार।। ३१ ।।

केल के पुल के आगे सात घाट आए हैं। उसके बाद दूसरा पुल (बट का पुल) आया है। दोनों पुलों के महलों के झरोखे बराबर आमने-सामने हैं। इनमें झूले चलते हैं और ठंडी हवा आती है।

पुल से आगे घाट केलका, ले चल्या जमुना जोए।
केल किनारे मिल्या मधुबन, पुखराज अर्स बीच दोए।। ३२ ।।

केल के पुल के आगे केल घाट जो जमुनाजी के किनारे पर है, के किनारे से मधुवन लगा है जो पुखराज पहाड़ और रंग महल दोनों के बीच आता है।

लटक रही केलां जोए पर, अति खूबी खूबतर।
ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर।। ३३ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर केले के गुच्छे लटकते हैं जो बहुत ही सुन्दर हैं। यहां तरह-तरह के जानवर खेल करते हैं। इस घाट के सुख हम रूहें कब लेंगी?

इन आगूं घाट लिबोई का, लग्या हिंडोलों जाए।
क्यों कहूं छब छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए।। ३४ ।।

इसके आगे नीबू का घाट है जो ताड़वन के हिंडोलों से लगता है। इसकी छत्रियों की शोभा बेशुमार है। कैसे कहूं?

इत सुख लेवें सब मिलके, रूहें बड़ीरूह हकसों।
सो फेर सुख कब हम देखसी, लेसी बैठके हिंडोलों।। ३५ ।।

यहां पर श्री राजश्यामाजी और रूहें हिंडोलों में बैठकर सुख लेती हैं। यह सुख हम फिर कब लेंगे?

इन आगूं घाट सोभित, अति बिराजे जोए किनार।
काहूं काहूं बीच मोहोल है, बन सोभे हार अनार।। ३६ ।।

नीबू के घाट के आगे अनार का घाट जमुनाजी के किनारे पर है। जिसके बीच-बीच में कहीं-कहीं महल बने हैं। अनार के हारों की बड़ी सुन्दर शोभा है।

जाए मिल्या अर्स दिवालों, सोले गुरज झरोखे बीस।
हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभे झरोखे तीस।। ३७ ।।

यह रंग महल की दीवार को जाकर लगता है जिसके पूरब की तरफ सोलह गुर्जों के चार सौ अस्सी और बीस (पांच सौ) झरोखे आए हैं। हर गुर्ज के बीच-बीच में तीस-तीस झरोखे और मन्दिरों की शोभा है।

इन घाटके ऊपर, रोसन पांच सै झरोखे।
इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए।। ३८ ।।

इस घाट के ऊपर इस तरह से रंग महल के ५०० झरोखे आए हैं। इस अनार के वन के महलों में श्री राजजी महाराज के साथ यह सुख कब मिलेंगे?

Nijanand App

ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर।
तिन ऊपर चांदनी कांगरी, तापर बैठक विध और।। ३९ ।।

रंग महल की एक भोम के झरोखे की तरह नौ भोमों के झरोखों की शोभा है। जिसके ऊपर चांदनी की कांगरी शोभा देती है। चांदनी के ऊपर की बैठक की और ही शोभा है।

आगूं पाट घाट मोहोल सुन्दर, जल पर अति सोभाए।
तले घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहेरें चली जाए।। ४० ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी के जल पर सुन्दर पाट घाट शोभा देता है जिसके नीचे से जमुनाजी के तीन घड़नाले निकलते हैं।

थंभ बारे पाट चांदनी, जल हिस्से तीसरे जोए।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, थंभ आठ चार रंग सोए।। ४१ ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर थंभों पर जो पाट (तख्त) आया है उसके नीचे जमुनाजी का तीसरा हिस्सा निकलता है। इस पटाव के ऊपर चारों खूंटों पर चार थंभ नीलवी के हैं। चारों दिशाओं में चार रंग (हीरा, मानिक, पाच, पुखराज) के दो-दो थंभ पूरब, दक्षिण, पच्छिम, उत्तर में आए हैं।

लग कठेड़े रूहें बैठत, कई रंग जवेरों जोत।
बीच बैठे मासूक आसिक, जल बन आकास उद्दोत।। ४२ ।।

किनारे पर कठेड़ा है जहां रूहें बैठती हैं। जवेरों के रंगों की ज्योति आपस में टकराती है। बीच में श्री राजश्यामाजी बैठे हैं जहां जल की और वन की तरंगें आकाश में जगमगाती हैं।

इत सोभित बन अमृत, और कई विध बन अनेक।
ए जाए मिल्या लग चांदनी, अर्स आगूं बन विवेक।। ४३ ।।

यहां पर अमृत वन की शोभा है और कई तरह के मेवे के वन हैं जो आगे जाकर चांदनी चौक तक जाता है।

द्वार अर्स अजीम का, और नूर द्वार जोए पार।
ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार।। ४४ ।।

रंग महल का दरवाजा तथा जमुनाजी के पार अक्षरधाम का दरवाजा आमने-सामने हैं। इन दोनों दरवाजों की इस शोभा को हम कब देखेंगे?

नूर पार भी एह बन, और पहाड़ पुखराज।
इन आगूं बड़ा बन चल्या, रह्या सागरों लग बिराज।। ४५ ।।

अक्षरधाम तक यह महावन गया है। पुखराज पहाड़ को भी घेरकर बड़े-वन के साथ मिलकर सागरों तक यह वन जाते हैं।

नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या बन विस्तार।
नीला पीला स्याम सेत कई, कहों कहां लग कहूं न सुमार।। ४६ ।।

मेरी नजर जहां तक जाती है वन ही वन दिखाई देता है। कहीं नीली, कहीं पीली, कहीं श्याम, कहीं सफेद रंगों की बेशुमार शोभा है। कहां तक कहूं?

Nijanand App

जिमी सब बराबर, बन पोहोंच्या सागर जित।
या बन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत।। ४७ ।।

सागरों तक सम्पूर्ण जमीन समतल है। वन या महलों के बीच में बेशुमार नहरें चलती हैं।

पार ना पहाड़ों हिंडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार।
पार ना बन नेहेरें जिमी का, क्यों पसु पंखी होए निरवार।। ४८ ।।

पहाड़ों का, हिंडोलों का, महलों का, जवेरों की नहरों का, वन की नहरों का, जमीन का हिसाब नहीं है, तो पशु पक्षियों का कैसे विवरण बताया जाए?

पार न आवे सागरों, और पार किनारों नाहें।
पार ना मोहोलों किनारों, कई नेहेरें आवें जाएं।। ४९ ।।

सागरों का पार नहीं है और उनके किनारे बड़ी रांग की हवेली तथा अन्दर टापू महलों में कई तरह से नहरें आती-जाती हैं यह बेशुमार हैं।

मोहोल जिमी बन कहत हों, और पहाड़ नेहेरें बनराए।
ए कैसे होसी अर्स के, ए देखो रूह जगाए।। ५० ।।

मैं संसार में बैठकर परमधाम के महल, जमीन, वन, पहाड़, नहरें और वृक्षादि के बारे में कहती हूं। यह अखण्ड परमधाम के कैसे होंगे? उन्हें अपनी आत्मा को जगाकर देखो।

कई फौजें पसुअन की, कई फौजें जानवर।
जिमी खाली कहूं न पाइए, बसत अर्स लसकर।। ५१ ।।

परमधाम में पशुओं और जानवरों के लश्कर के लश्कर (समूह) बसते हैं। कहीं भी जमीन खाली नहीं है।

जिमी बन ए लसकर, जिमी बस्ती न कहूं वीरान।
सब आए मुजरा करत हैं, आगूं अर्स सुभान।। ५२ ।।

जमीन और वन की बस्तियां जानवरों की फौजों से भरी पड़ी हैं। कहीं वीरान नहीं है। यह सब जानवर श्री राजजी को मुजरा करने रंग महल के सामने आते हैं।

ए पातसाही अर्स की, केहेनी में आवत नाहें।
ए कह्या वास्ते मोमिन के, जानों दिल दौड़ावें तांहें।। ५३ ।।

यह परमधाम की बादशाही है जो कहने में नहीं आती। यह मोमिनों के वास्ते कहा है जिससे वह अपना मन वहां लगा सकें।

एक पात न गिरे बन का, ना खिरे पंखी का पर।
एक जरा जाया न होवहीं, ए अर्स जिमी यों कर।। ५४ ।।

यहां वन का एक भी पत्ता नहीं गिरता और न पक्षी का पर (पंख) ही गिरता है। परमधाम की जमीन इस तरह की है कि यहां कुछ भी नष्ट नहीं होता।

Nijanand App

सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।।५५।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की शोभा बेशुमार है। यहां की सब जमीन और महल बेशुमार हैं तथा अखण्ड हैं सब जगह से श्री राजजी महाराज का दर्शन होता है।

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १२२१ ॥

पसु पंखियों की पातसाही

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत।
कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत।।१।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते यह नमूना स्वप्न का बनाया जिससे वह स्वप्न में बैठकर अखण्ड परमधाम की लज्जत ले सकें।

ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फुरमान।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान।।२।।

वेद में जिन्हें ब्रह्मसृष्टि कहा है, कुरान में उन्हें अल्लाह का वारिस कहा है। संसार के अन्दर श्री राजजी महाराज ने अपनी निसबत की पहचान करा दी है।

एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें।।३।।

परमधाम की साहेबी के समान और कहीं कुछ है ही नहीं, इसलिए ब्रह्मसृष्टि को आराम देने के लिए स्वप्न में साहेबी दिखाई।

ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात।
ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात।।४।।

स्वप्न में एक तो परमधाम की साहेबी दिखाई और दूसरी अखण्डता दिखलाई। इन दोनों में (सत और झूठ में) फर्क देखकर अंगों में सुख नहीं समाता है।

अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार।
नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार।।५।।

अब परमधाम के वनों का विस्तार बताती हूं। यहां जंगल जमीन बेशुमार हैं और पशु पक्षियों की भी कोई गिनती नहीं है।

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर।।६।।

यहां की रेत के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता तो पूरे वन की रोशनी का कैसे बयान करूं?

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास।।७।।

वनों की डाल और पत्ते का ऐसा प्रकाश है कि इनकी रोशनी आकाश में नहीं समाती।

Nijanand App

सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।। ५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की शोभा बेशुमार है। यहां की सब जमीन और महल बेशुमार हैं तथा अखण्ड हैं सब जगह से श्री राजजी महाराज का दर्शन होता है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। १२२१ ।।

पसु पंखियों की पातसाही

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत।
कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत।। १ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते यह नमूना स्वप्न का बनाया जिससे वह स्वप्न में बैठकर अखण्ड परमधाम की लज्जत ले सकें।

ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फुरमान।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान।। २ ।।

वेद में जिन्हें ब्रह्मसृष्टि कहा है, कुरान में उन्हें अल्लाह का वारिस कहा है। संसार के अन्दर श्री राजजी महाराज ने अपनी निसबत की पहचान करा दी है।

एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें।। ३ ।।

परमधाम की साहेबी के समान और कहीं कुछ है ही नहीं, इसलिए ब्रह्मसृष्टि को आराम देने के लिए स्वप्न में साहेबी दिखाई।

ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात।
ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात।। ४ ।।

स्वप्न में एक तो परमधाम की साहेबी दिखाई और दूसरी अखण्डता दिखलाई। इन दोनों में (सत और झूठ में) फर्क देखकर अंगों में सुख नहीं समाता है।

अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार।
नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार।। ५ ।।

अब परमधाम के वनों का विस्तार बताती हूं। यहां जंगल जमीन बेशुमार हैं और पशु पक्षियों की भी कोई गिनती नहीं है।

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर।। ६ ।।

यहां की रेत के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता तो पूरे वन की रोशनी का कैसे बयान करूं?

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास।। ७ ।।

वनों की डाल और पत्ते का ऐसा प्रकाश है कि इनकी रोशनी आकाश में नहीं समाती।

Nijanand App

ए जुबां ना केहे सकत है, एक पात की रोसन।
तो इन डारकी क्यों कहूं, जो प्रफुलित सब बन।। ८ ।।

यह जबान एक पत्ते की रोशनी का बयान नहीं कर सकती, तो खिले हुए वनों की डाल की शोभा कैसे कहूं?

डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत।
केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उद्दोत।। ९ ।।

यहां की डालियां, पत्ते, फल, फूल, बेलें सब नूरमयी हैं। सुन्दर तेज चमकता है। इनके उस तेज का इस मुख से कैसे बयान करूं? यह आकाश में जगमगा रहा है।

बन गिरदवाए अर्स के, और एही गिरदवाए ताल।
एही गिरदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल।। १० ।।

रंग महल के तथा हौज कौसर तालाब के और जमुनाजी के चारों तरफ वन आया है। जिसकी सुन्दरता यहां की जबान से कैसे कहूं?

कह्या ऐसा ही बन नूरका, रेत ऐसे ही रोसन।
तो नूर मोहोल की क्यों कहूं, जाको नामै नूर वतन।। ११ ।।

इसी तरह का ही वन, रेत व रोशनी अक्षरधाम की है तो फिर अक्षरधाम जिसका नाम ही नूर का धाम है, की शोभा कैसे कहूं?

तो अर्स मोहोल की रोसनी, और अर्स मोहोल हौज जोए जे।
नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्या कहे जुबां नूर ए।। १२ ।।

परमधाम के महलों की, हौज कौसर तालाब की, जमुनाजी के महलों की रोशनी की शोभा कैसे बताएं जबकि अक्षरधाम के नूर का वर्णन नहीं कर सकते।

सिरदार सब बन में, पसु पंखी जात जेती।
खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती।। १३ ।।

सब वनों में पशु-पक्षियों की जितनी जातियां रहती हैं, उनकी सुन्दरता, ताकत तथा कला और सिरदारी की शोभा का वर्णन यहां की जबान कितना और क्या करेगी?

जिमी अर्स की देखियो, हिसाब न काहूं सुमार।
देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार।। १४ ।।

परमधाम की जमीन को देखो। यह बेशुमार है और देखने योग्य है। इसकी खूबी अपार है।

तिन सब जिमी में बस्ती, कहूं पाइए नहीं वीरान।
पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान।। १५ ।।

परमधाम की सब जमीन पर बस्ती है कहीं जगह खाली (वीरान) नहीं है। यहां पर पशु और पक्षियों की बादशाही है।

Nijanand App

ए जो जिमी अर्स हक की, सो वीरान क्यों कर होए।
अबादान हमेसगी, आराम बिना नहीं कोए।। १६ ।।

यह परमधाम की जो जमीन और महल है, सब श्री राजजी महाराज के हैं। यह वीरान कैसे हो सकते हैं? यह हमेशा ही बड़े आराम में आबाद रहते हैं।

अखंड आराम सब में, चल विचल इत नाहें।
सब सुख हैं अर्स में, रहें याद हक के माहें।। १७ ।।

यहां सबको अखण्ड आराम है। घट-बढ़ (कमी-बेशी) कुछ नहीं है। परमधाम में सब सुख हैं। यहां सब केवल श्री राजजी की ही याद में रहते हैं।

अरस-परस हैं हक सों, आसिक हक के जोर।
आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों,कई पदमों लाख करोर।। १८ ।।

यह पशु-पक्षी श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और उनके ही अंग हैं। यह लाखों, करोड़ों, पद्मों की संख्या में समुद्र की लहर के समान झुण्ड के झुण्ड दर्शन करने आते हैं।

कई लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी को पार।
पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरियाव नहीं सुमार।। १९ ।।

पशु और पक्षियों की कई टोलियां आती हैं। यहां की जमीन बेशुमार है। उनमें रहते हुए पशु भी सागर के समान बेशुमार हैं और दरिया में पूर (प्रवाह) की तरह आते हैं।

दौड़ इनों के मन की, क्यों कर कहूं छंछेक।
पोहोंचें सब कदमों तले, जित खावंद सबों का एक।। २० ।।

इनकी गति मन से भी तेज है इनकी फुर्ती तो कही नहीं जा सकती जहां सबके एक खावंद श्री राजजी महाराज बैठे होते हैं, सब उनके चरणों में पहुंच जाते हैं।

जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचें इत।
खिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खड़े हैं तित।। २१ ।।

जिस ठिकाने पर हमारे मन में जाने की इच्छा होती है, हम उसी ठिकाने पहुंच जाते हैं। चितवन में पहुंचने में एक क्षण की भी देरी नहीं होती, लगता है कि वहीं पहुंच गए।

एक हक अर्स के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर।
आवत सब दीदार को, जानों आगे खड़े हजूर।। २२ ।।

कोई रंग महल के पास में और कोई दूर-दूर बसते हैं वह सभी दर्शन करने आते हैं, लगता है सबसे आगे यही खड़े हैं।

हिकमत बल इनों के, क्यों कर कहे जुबान।
दीदार पावें अर्स हक का, सो देखो दिल आन।। २३ ।।

इनकी कला और ताकत यहां की जबान से कैसे बताऊं? श्री राजजी महाराज का जब यह दर्शन करते हैं तो उस समय की खूबी दिल में विचार करके देखो।

Nijanand App

क्यों न होए बल इनको, जाको अमृत हक सींचत।
ए पाले-पोसे खावंद के, अर्स तले आवत।। २४ ।।

इनको हक अपनी अमृत भरी नजर से सींचते हैं तो ताकत होनी ही चाहिए। यह श्री राजजी महाराज के पाले-पोसे हैं, इसलिए चांदनी चौक में आते हैं।

विचार किए पाइयत हैं, इनों बल हिकमत।
ए किया निमूना पावने, इन कादर की कुदरत।। २५ ।।

विचार करने से ही इनकी कला और शक्ति का पता चलता है। इसे जानने के वास्ते ही अक्षर की कुदरत (योगमाया) ने संसार में दूसरे नमूने बनाए हैं।

हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत।
अर्स बड़ाई पाइए, ए देखें तफावत।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन्हीं के वास्ते ही अपनी माया दिखलाई। जिसे देखकर अखण्ड परमधाम की महिमा का फर्क जाना जाता है।

करत सबे साहेबियां, जिमी जुगत भरपूर।
दोऊ बखत आवत हैं, देखन हक का नूर।। २७ ।।

यह सब पशु-पक्षी परमधाम की जमीन पर राज्य करते हैं और दोनों समय प्रातः छः बजे एवं सायं तीन बजे चांदनी चौक में सवारी के समय आते हैं।

पातसाही पसु पंखियन की, करत बिना हिसाब।
अखंड अलेखे अति बड़े, पिएं नूर हैयाती आब।। २८ ।।

पशु-पक्षियों की बेहिसाब बादशाही है। वह अखण्ड है और बेशुमार है और अखण्ड परमधाम का नूरी जल नजरे करम पीकर तृप्त होते हैं।

हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन।
नाहीं हिसाब बन जिमी को, जो बीच कायम वतन।। २९ ।।

पशु-पक्षी, वन और जमीन का अखण्ड परमधाम में कोई हिसाब नहीं है।

बसत सबे अर्स तले, कई पदमों लाख करोर।
करत पूरी पातसाहियां, पसु पंखी दोऊ जोर।। ३० ।।

पद्मों, करोड़ों की संख्या में यह पशु और पक्षी परमधाम में अपनी बादशाही में रहते हैं।

जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर।
बोहोत बल हिकमत, सब अंगों निज नूर।। ३१ ।।

जो दूर रहते हैं वह सबसे पहले हाजिर हैं। उनके सभी अंगों में श्री राजजी महाराज का नूर होने से बड़ी शक्ति और कला है।

जित मन में चितवें, तित पोहोंचें तिन बखत।
ऐसा बल रखें हक का, कायम जिमी में बसत।। ३२ ।।

यह जहां जाने का विचार मन में करते हैं, उसी समय वहां पहुंच जाते हैं। ऐसी शक्ति श्री राजजी महाराज की इनको प्राप्त है जो अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं।

Nijanand App

पसु पंखी इन बन में, जो जिमी बन सोभित।
और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूं सिफत।। ३३ ।।

इन वन के पशु-पक्षियों की, जमीन की, वन की शोभा तथा इनके परों की नक्शकारी की सिफत कैसे करूं?

पसु सुन्दर अति सोहनें, मीठी बान बोलत।
इनों सिफत जुबां क्यों कहे, जो खावंद को रिझावत।। ३४ ।।

यहां के पशु सुन्दर हैं और मनमोहक हैं सुन्दर मीठी वाणी बोलकर श्री राजजी महाराज को रिझाते हैं। इनकी सिफत को कैसे बयान करूं?

कई भांतें कई खेलौने, कई खेल खुसाली करत।
कई विधों निरत नाच के, मासूक को हंसावत।। ३५ ।।

यहां कई तरीके के खिलौने हैं जो कई तरह के खेल करके खुश करते हैं तथा कई तरह के नाच करके अपने धनी को रिझाते हैं।

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए।
ऐसे बचन कई बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबाएं।। ३६ ।।

बहुत से अपने मुख से सुन्दर राग अलापते हैं। इस प्रकार के राग अलापते हैं कि और कोई बोल ही नहीं सकता।

छोटे बड़े पसु पंखी, सब रिझावें साहेब।
लड़ें खेलें बोलें बानी, विद्या कई विध साधें सब।। ३७ ।।

छोटे-बड़े सभी पशु-पक्षी लड़कर, खेलकर, बोलकर, गाकर कई तरह की कलाओं से श्री राजजी को रिझाते हैं।

कई जुदी जुदी विद्या जानवर, कई चढ़ें ऊंचे कूदें फांदें।
टेढ़े आड़े सीधे उलटे, कई विध गत साधें।। ३८ ।।

जानवरों में अलग-अलग कलाएं हैं। कई नीचे से ऊपर चढ़ते हैं। कई कूदते हैं। कई छलांग लगाते हैं। कई आड़े-टेढ़े, सीधे-उलटे कई तरह की कला दिखाते हैं।

कई विध करें लड़ाइयां, कई विध नाचें मोर।
कई विध हंसावें धनी को, खेल करें अति जोर।। ३९ ।।

यह कई तरह से लड़ाई लड़ते हैं। मोर कई तरह से नाचकर अपने साहेब को हंसाते हैं और खेल का आनन्द लेते हैं।

निरमल नेत्र अति सुन्दर, परों पर चित्रामन।
मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लो कहूं रोसन।। ४० ।।

इन पशु-पक्षियों के नेत्र अति निर्मल और सुन्दर हैं। उनके परों पर चित्रकारी है। मीठे स्वरों की वाणी बोलते हैं और बड़े सुखों के साथ खेलते हैं। उनका कहां तक बयान करूं?

Nijanand App

और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और।
क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर।। ४१ ।।

पशुओं की चाल, खेल और बोली जो परमधाम के हैं अलग ही ढंग की है। जिसकी सिफत कैसे वर्णन हो?

कई लड़ के देखावहीं, कई उड़ देखावें कूद।
क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूद।। ४२ ।।

कई लड़कर, कई उड़कर, कई कूदकर अपनी कला दिखाते हैं। इस नाचीज जबान से कैसे उनकी शोभा बताऊं?

कई देत गुलाटियां, कई अनेक करें फैल हाल।
सौ सौ गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल।। ४३ ।।

कई गुलाटियां खाते हैं। कई अलग सौ-सौ तरह की अपनी कला दिखाकर श्री राजश्यामाजी और रूहों को प्रसन्न करते हैं।

कई हंस गरुड़ केसरी, कई बाघ चीते घोड़े।
ए ऐसे कहे जानवर, उड़ आकास में दौड़ें।। ४४ ।।

हंस, गरुड़, केसरी (सिंह), बाघ, चीते और घोड़े ऐसी शक्ति रखते हैं कि आकाश में उड़ते हुए दिखाई देते हैं।

हाथी इत कई रंग के, अस्वारी के सिरदार।
कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बड़े बन करत विहार।। ४५ ।।

यहां कई रंगों के हाथी हैं जो सवारी के लिए सदा तैयार रहते हैं। कभी श्री राजश्यामाजी व रूहें इन पर भी सवारी कर बड़े वन में घूमते हैं।

कबूं कबूं राज रूहन सों, मनवेगी सुखपाल।
बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल।। ४६ ।।

कभी-कभी श्री राजजी महाराज रूहों के साथ मनवेगी चाल से चलने वाले सुखपाल में चढ़कर बड़े वन के महलों में तरह-तरह के खेल की कलाओं का आनन्द लेते हैं।

इत और बिरिख कई बड़े, निपट बड़े हैं बन।
बन पर बन अति विस्तरे, कहां लग करूं रोसन।। ४७ ।।

यहां और भी कई तरह के बहुत बड़े वृक्ष हैं जिनसे वनों का विस्तार बढ़ता ही गया है। कहां तक उनका बयान करूं?

एक पेड़ लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड़ अपार।
पेड़ डारों कई भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार।। ४८ ।।

एक पेड़ की लम्बी डाली होती है और उस डाली की बेशुमार पेड़ और डालियां हो जाती हैं। फिर उन डालों पर कई भोम (मंजिलें) बन जाती हैं। जिसका विस्तार कहने से बाहर है?

Nijanand App

इन भोम भोम कई मंदिर, पेड़ डारी कई दिवाल।
छाया बनी पात फूल की, कई बन मंदिर इन हाल।।४९।।

इन पेड़ों की भोमों में कई मन्दिर बन जाते हैं। कई डालियां दीवार का रूप धारण करती हैं। इनके पत्ते, फूलों की छाया बड़ी सुन्दर है। ऐसे वन और मन्दिर बेमिसाल हैं।

विस्तार बड़ा एक पेड़ पर, कहां लग कहूं जुबान।
देखो विध एक बिरिख की, ए मंदिर न होए बयान।।५०।।

एक पेड़ का जब इतना विस्तार है तो मन्दिर का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

एक बिरिख को बरनन, ऐसे कई बिरिख तिन बन माहें।
तिन पर विस्तार अति बड़ो, सेहेर बसत जानों ताहें।।५१।।

एक वृक्ष का जो वर्णन किया है ऐसे कई वृक्ष वनों में हैं जिनका बहुत बड़ा विस्तार है और ऐसे दिखाई देता है जैसे कोई शहर बसा हो।

एक पेड़ दरखत का, कई दरखत तिन पर।
तिन पर कई मंदिर रचे, कई रेहेत अंदर जानवर।।५२।।

एक वृक्ष पर कई वृक्ष बन जाते हैं और उनके अन्दर कई मन्दिर बन जाते हैं। जिनके अन्दर कई जानवर रहते हैं।

किनके पेड़ जिमी पर, कई पेड़ पेड़ ऊपर।
यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों, कई सोभा देत सुन्दर।।५३।।

कुछ पेड़ जमीन पर होते हैं और कई पेड़ों के ऊपर पेड़ आसमान तक बनते जाते हैं, उनकी शोभा सुन्दर होती है।

इन विध बन विस्तार है, उपरा ऊपर अतंत।
सोभा अमान पसु पंखी, इन मंदिरों में बसत।।५४।।

इस तरह से वन का ऊपरा ऊपर बहुत बड़ा विस्तार है और उनके मन्दिरों में बेशुमार पशु-पक्षी रहते हैं।

बोहोत दूर लों ए बन, आगूं आगूं बड़े देखाए।
चढ़ते चढ़ते चढ़ते, लग्या आसमानों जाए।।५५।।

बहुत दूर तक यह वन आगे चला गया है और चढ़ते-चढ़ते आसमान तक लगा दिखाई देता है।

एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन।
एक बसत बल परन के, आकास में आसन।।५६।।

एक पक्षी जमीन पर रहता है, कुछ एक इन महलों में रहते हैं। कुछ एक ऐसे हैं जो अपने परों के बल पर ही सदा आकाश में ही उड़ते रहते हैं।

ए बड़े खेल की खुसाली, बड़े बन कबूं करत।
अस्वारी पसु पंखियन पर, कई कूदत उड़ावत।।५७।।

यह खेल खुशी के हैं। बड़े-वन के बीच कभी-कभी श्री राजजी महाराज पधारते हैं और पशु-पक्षियों की सवारी कर उन्हें छलांग लगवाते हैं और उड़वाते हैं।

Nijanand App

हाथी ऊंचे पहाड़ से, मुख सुन्दर दंत सुढाल।
मन वेगी कबूं न काहिली, तेज तीखी चलें चाल।।५८ ।।

यहां के हाथी बड़े ऊंचे पहाड़ के समान हैं तथा उनके मुख, दांत अति सुन्दर हैं, शोभनीय हैं। इनके अन्दर कभी सुस्ती नहीं है। यह मन के समान तेज चाल चलते हैं।

बाघ गूंजें अति बली, कूवत ले कूदत।
देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत।।५९ ।।

यहां के बाघ अति बलवान हैं और जंगल में दहाड़ते हैं। अपनी ताकत से छलांग लगाते हैं। इनको दूर से छलांग लगाकर आते हुए देखकर ऐसा लगता है कि जैसे आसमान से उतर रहे हों।

चीते अतंत सुन्दर, ऐसे ही बलवान।
कमी काहू में नहीं, सोभित जोड़ समान।।६० ।।

यहां के चीते भी ऐसे ही सुन्दर और बलवान हैं। सब एक समान दिखाई देते हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

जरे जानवर के वाओ सों, ब्रह्मांड उड़ावे कोट।
तो अर्स जिमी के फील की, कहूं सो किन पर चोट।।६१ ।।

अर्श के छोटे से जानवर की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं तो फिर परमधाम के हाथियों की किससे उपमा दें?

ब्रह्मांड बड़ा इन दुनी में, कोई नाहीं दूसरा ठौर।
तो अर्स बाघ के बल को, कहूं न निमूना और।।६२ ।।

यह दुनियां में सबसे बड़ा ब्रह्माण्ड है और कोई दूसरी वस्तु नहीं है तो परमधाम के बाघ की ताकत का कहां से नमूना दें?

बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूं जुबान।
ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान।।६३ ।।

यहां की बड़ी-बड़ी बातें हैं। यहां की जबान से कहां तक कहूं? यह थोड़ी सी इशारतों में कही है, शोभा बेशुमार है।

अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत।
अलेखे पेहेचान है, इस्क अलेखे इत।।६४ ।।

इनकी ताकत, बुद्धि, कला, पहचान और इश्क बेशुमार है।

ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम को।
कैसा बल अर्स पसुअन का, विचार देखो दिल मों।।६५ ।।

सपने के पशुओं की ताकत तुमको दिखाई है। अब अपने दिल से विचार कर देखो कि परमधाम के पशुओं की ताकत कैसी होगी?

Nijanand App

झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अन्दर अपने चित्त।। ६६ ।।

इश्क, ताकत और कला झूठ में देखकर सच्चे का अनुमान लगाओ। अपने चित्त में इन तीनों को (झूठे संसार के और परमधाम के) इश्क, कला और ताकत को तौलकर देखो।

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल।। ६७ ।।

यह हमारा यहां का तन और अक्ल सब झूठे हैं। इन सबको देखकर विचार करो कि यहां कोई अखण्ड परमधाम की तुलना योग्य है?

अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत।
ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत।। ६८ ।।

अखण्ड परमधाम का नमूना कोई है ही नहीं। यह तुम दिल में विचारकर देख लो। झूठे संसार के पशु की ताकत देखकर अखण्ड परमधाम के पशु की ताकत को विचार लो।

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं नाहीं कित।
तो धनिएं देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत।। ६९ ।।

सच और झूठ में यही फर्क है जिसे कभी किसी ने नहीं जाना, इसलिए हम अर्श की रूहों को लज्जत देने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ही माया दिखलाई है।

विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत।
धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत।। ७० ।।

यहां खेल में बैठकर विचार करने से ही अखण्ड परमधाम की महिमा मालूम होती है तथा श्री राजजी महाराज और सखियों की महिमा जानी जाती है।

महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान।
बिध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान।। ७१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सखियों की यह पहचान है कि इनको परमधाम की वाणी तीर के समान लगती है।

|| प्रकरण || २७ || चौपाई || १२९२ ||

पसु पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों का, कायम है सोहाग।। १ ।।

श्री राजजी महाराज इन पशु-पक्षियों के बीच खेलते हैं। यह बहुत भाग्यशाली हैं। परमधाम के जानवरों का अखण्ड सोहाग है।

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।। २ ।।

यह पशु-पक्षी परमधाम में सब जगह बसते हैं और रात-दिन श्री राजजी महाराज में ही इनका चित्त रहता है। यह अपने मुख से मीठी बोली में पीऊ-पीऊ और तूही-तूही बोलते हैं।

Nijanand App

झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अन्दर अपने चित्त।। ६६ ।।

इश्क, ताकत और कला झूठ में देखकर सच्चे का अनुमान लगाओ। अपने चित्त में इन तीनों को (झूठे संसार के और परमधाम के) इश्क, कला और ताकत को तौलकर देखो।

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल।। ६७ ।।

यह हमारा यहां का तन और अक्ल सब झूठे हैं। इन सबको देखकर विचार करो कि यहां कोई अखण्ड परमधाम की तुलना योग्य है?

अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत।
ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत।। ६८ ।।

अखण्ड परमधाम का नमूना कोई है ही नहीं। यह तुम दिल में विचारकर देख लो। झूठे संसार के पशु की ताकत देखकर अखण्ड परमधाम के पशु की ताकत को विचार लो।

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं नाहीं कित।
तो धनिएं देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत।। ६९ ।।

सच और झूठ में यही फर्क है जिसे कभी किसी ने नहीं जाना, इसलिए हम अर्श की रूहों को लज्जत देने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ही माया दिखलाई है।

विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत।
धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत।। ७० ।।

यहां खेल में बैठकर विचार करने से ही अखण्ड परमधाम की महिमा मालूम होती है तथा श्री राजजी महाराज और सखियों की महिमा जानी जाती है।

महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान।
बिध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान।। ७१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सखियों की यह पहचान है कि इनको परमधाम की वाणी तीर के समान लगती है।

|| प्रकरण || २७ || चौपाई || १२९२ ||

पसु पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों का, कायम है सोहाग।। १ ।।

श्री राजजी महाराज इन पशु-पक्षियों के बीच खेलते हैं। यह बहुत भाग्यशाली हैं। परमधाम के जानवरों का अखण्ड सोहाग है।

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।। २ ।।

यह पशु-पक्षी परमधाम में सब जगह बसते हैं और रात-दिन श्री राजजी महाराज में ही इनका चित्त रहता है। यह अपने मुख से मीठी बोली में पीऊ-पीऊ और तूही-तूही बोलते हैं।

Nijanand App

जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन।
याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं खिन।। ३ ।।

रात-दिन श्री राजजी महाराज के नए-नए गुणों का गान करते हैं। इनके अंग इश्क के हैं जिसके कारण से यह एक पल भी धनी से जुदा नहीं होते।

खावंद के दीदार को, पसु और जानवर।
आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर।। ४ ।।

अपने साहिब के दर्शन के लिए उनके गुण गाते हुए सभी पशु-पक्षी अपने समय पर आ जाते हैं।

किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए।। ५ ।।

इनका इश्क इतना बड़ा है जिसका बयान इस मुख से कहा नहीं जाता। यदि इनको समय पर दर्शन न हो तो लगता है कि यह मर जाएंगे।

अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होए बेहोस।
अंग अरवा क्यों छूटहीं, अन्दर धनी को जोस।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम में यह मर तो सकते नहीं, क्योंकि इनके अन्दर धनी का जोश है, परन्तु ऊपर से बेहोश जैसे हो जाते हैं।

एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल।
आठों पोहोर अंग में, करत धनी सो केलि।। ७ ।।

यह श्री राजजी महाराज की नजरे-करम से पले हुए हैं और आठों पहर धनी का आनन्द लेते हैं, इसलिए इनका एक रोम भी नहीं गिरता।

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर।। ८ ।।

इनके वास्ते श्री राजजी महाराज करोड़ों रूप धारण करते हैं। यह पशु-पक्षी मन चाहे रूप में श्री राजजी का दर्शन करते हैं। श्री राजजी महाराज के यह ऐसे जबरदस्त आशिक हैं।

सो मैं कह्यो न जावहीं, जो इस्क इनों के अंग।
रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूं इस्क तरंग।। ९ ।।

इनके अंग ही इश्क के हैं। जिसको मैं कैसे बताऊं? इनके रोम-रोम अखण्ड हैं। उनमें इश्क की लहरें आती हैं।

एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें।
खेलें बोलें गाएं लरें, सो सब इस्क माहें।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के अतिरिक्त और यह कुछ नहीं जानते। इनका खेलना, बोलना, गाना, लड़ना सब इश्कमयी होता है।

Nijanand App

क्यों कहूं पसु पंखियन की, इनके इस्क को बल।
एक जरे को न पोहोंचहीं, इन अंग की अकल।। ११ ।।

पशु-पक्षियों के इश्क की ताकत को कैसे बताऊं? संसार के तन और बुद्धि परमधाम के एक कण मात्र का भी बखान नहीं कर सकती।

मैं देख्या अर्स के लोकों को, कोई अंग न बिना इस्क।
क्यों न होए गंज इस्क के, जित जरा नाहीं सक।। १२ ।।

मैंने परमधाम के सभी पशु-पक्षियों को देखा। इनमें कोई भी अंग बिना इश्क के नहीं है। इनके अन्दर गंजान गंज (ढेर का ढेर इश्क) होना ही चाहिए इसमें कोई भी संशय की बात नहीं हैं।

कह्यो क्यों ए न जावहीं, इन अंगों के इस्क।
कई कोट जुबां ले कहूं, तो कह्यो न जाए रंचक।। १३ ।।

इनके अंगों के इश्क की हकीकत लेखनी में नहीं आती। संसार की करोड़ जबान भी ले लें तो भी इनके इश्क का जरा भी बयान नहीं हो सकता।

जेता बल जिन अंग में, तेता इस्क हक का जान।
सक जरा ना मिले, पिउ सों पूरी पेहेचान।। १४ ।।

इन पशु-पक्षियों के अंग में जितनी ताकत है, वह सब श्री राजजी महाराज के इश्क की है। इन्हें अपने धनी की पूरी पहचान है। इनमें जरा भी संशय नहीं है।

पिउ की पेहेचान बिना, कछुए न जाने कोए।
जरा सक तो उपजे, जो कोई दूसरा होए।। १५ ।।

यह पशु-पक्षी धनी के अतिरिक्त किसी को नहीं जानते इनके मन में संशय तब हो जब किसी और को देखा हो।

इस्क पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन।
सब वजूदों एही रोसनी, कछू जानें ना हक बिन।। १६ ।।

इनके अंगों में पूरा इश्क भरा है और पहचान भी पूरी है। सबके तनों में ऐसा ही ज्ञान है। वह सब श्री राजजी महाराज के बिना किसी को नहीं जानते।

कछू कह्यो तो जावहीं, जो कछू जरा कहावे कित।
ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत।। १७ ।।

वहां कुछ तो तब कहा जाए जो जरा-मात्र भी कुछ हो। यह सारा ब्रह्माण्ड तो खेल के कबूतर के समान है वहां की जरा सी चीज की उपमा के लिए यहां कुछ नहीं है।

ताथें अंबार इस्क के, इन जिमी सब जान।
हक का कायम वतन, सब अंग इस्क पेहेचान।। १८ ।।

इसलिए परमधाम की जमीन में इश्क के गंजान गंज (ढेर) हैं (भण्डार हैं)। यह श्री राजजी महाराज का अखण्ड प्यार है, इसलिए वहां सबके अंग-अंग में इश्क भरा है।

Nijanand App

एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इस्क की सूरत।
आसमान जिमी जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत।। १९ ।।

परमधाम की जमीन का एक-एक कण इश्क का है। आसमान, जमीन, जड़, चेतन सब इश्क के हैं और इनको धनी की पहचान है।

पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान।
पार नहीं जड़ चेतन, पार ना इस्क रेहेमान।। २० ।।

यहां की जमीन, आसमान, जड़ चेतन में श्री राजजी महाराज का बेशुमार इश्क है।

छोटा बड़ा अर्स का, सो सब हैं चेतन।
पेहेचान इस्क अंग में, इन विध बका वतन।। २१ ।।

परमधाम में छोटा-बड़ा जो कुछ है, वह चेतन है और सब इश्क में ही चेतन हैं। ऐसा अखण्ड घर है।

जल में जीव बसत हैं, सो सुन्दर सोभा अमान।
फौज बांध आगूं धनी, खेल करें कई तान।। २२ ।।

जल के अन्दर जो प्राणी रहते हैं उनकी भी बेमिसाल सुन्दरता और शोभा है। वह भी अपनी टोली में (झुण्ड के झुण्ड) श्री राजजी महाराज के आगे आकर खेल करते हैं और बोलते हैं।

मच्छ कच्छ मुरग मेंडक, कई रंग करें अपार।
जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार।। २३ ।।

मछली, कछुआ, मुर्गा, मेढ़क कई-कई रंग के बेशुमार हैं और अलग-अलग स्वरों में बोलियां बोलते हैं।

कई रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल।
जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल।। २४ ।।

यह कई रंग के पशु-पक्षी मीठे स्वरों में श्री राजजी महाराज का यश (गुणगान) गाते हैं और सदैव आपस में श्री राजजी महाराज की चर्चा करते हैं।

जीव छोटे बड़े कई जल के, अपने अपने ख्याल।
खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल।। २५ ।।

जल के छोटे-बड़े कई जीव अपने-अपने खेल में खेलकर, बोलकर, दौड़कर छलांग लगाकर श्री राजजी को रिझाते हैं।

अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम।
जल किनारे रटत हैं, पिउ जस आठों जाम।। २६ ।।

यहां जल के जानवर अनेक तरह के हैं कहां तक उनका नाम लेवें? यह रात-दिन श्री राजजी महाराज की मेहर (गुणों) को जल के किनारे बैठकर गाते है।

ए देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नाहें।
क्यों न होए इस्क के अंबार, तुम विचार देखो दिल माहें।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम विचार कर देखो। इसमें जरा भी संशय नहीं है, इसलिए इनके अन्दर इश्क के भण्डार क्यों न हों?

Nijanand App

जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इस्क।
ए चेतन इन भांत के, कछू जानें न बिना हक।। २८ ।।

इस जमीन की एक कण में भी पूरा इश्क भरा है। यह ऐसे चेतन कहलाते हैं कि श्री राजजी महाराज के बिना किसी को नहीं जानते।

पसु पंखी बन जिमिएं, तले ऊपर हैं जित।
क्या जाने मूढ़ मुसाफ की, रमूजें इसारत।। २९ ।।

पशु-पक्षी वन में, जमीन में, जल में, ऊपर, नीचे जहां भी हैं, इन कुरान की इशारतों, रमूजों को अज्ञानी क्या जानें? अर्थात् वह बेसुध होते हैं, वह ज्ञान को क्या समझें?

देखो अंबार इस्क के, या जड़ या चेतन।
जो कछू नजरों श्रवनों, सो इस्कै को वतन।। ३० ।।

जड़ में या चेतन में सब जगह इश्क का ही भण्डार है। यहां, जहां तक नजर जाती है या सुनाई पड़ता है, सब इश्क ही इश्क है।

दरखत करत हैं सिजदा, छोटा बड़ा घास पात।
पहाड़ जिमी जल सिजदे, इस्क न इनों समात।। ३१ ।।

यहां के वृक्ष, छोटी-बड़ी घास, पत्ते, पहाड़ जमीन, जल सब श्री राजजी महाराज को सिजदा करते हैं इनके अन्दर इश्क के ही भण्डार भरे पड़े हैं।

यों अर्स सारा इस्क में, एक जरा न जुदा होए।
खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इस्क बिना कोए।। ३२ ।।

इस तरह से सारा परमधाम ही इश्कमयी है। इश्क के बिना कुछ और नहीं है। जिनको श्री राजजी महाराज इश्क की शराब पिलाते हैं, उन्हें इश्क बिना कैसे कहा जाए?

आसिक सबे इस्क में, या चांद या सूर।
या तारा या आकास, सब इस्कै का जहूर।। ३३ ।।

परमधाम में चन्द्रमा, सूर्य, तारागण एवं आकाश सभी श्री राजजी महाराज के इश्क के ही रूप हैं।

जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस।
मन अस्वारी सबन को, आए पिएं प्रेम रस।। ३४ ।।

परमधाम में जितने भी रूप दिखाई पड़ते हैं वह सब परमधाम की रूहों की तरह चेतन हैं। यह मन के अनुसार तेज चलने वाली सवारी पर आकर श्री राजजी महाराज से इश्क का रसपान करते हैं।

सो भी रूह मन अर्स के, ए तूं नीके जान।
बल देख झूठे मन को, अर्स मन बल पेहेचान।। ३५ ।।

यह रूह और मन भी परमधाम के समझना। संसार के झूठे मन की शक्ति को देखकर अखण्ड परमधाम के मन की शक्ति को पहचानो।

Nijanand App

ए झूठ हक को न पोहोंचहीं, तो क्यों देऊं निमूना ए।
कछुक तो कह्या चाहिए, गिरो समझावने के।। ३६ ।।

संसार की किसी भी चीज की उपमा अखण्ड परमधाम को नहीं लगती, तो अखण्ड परमधाम की चीजों का बयान संसार में बिना नमूने के कैसे करूं? परन्तु रूहों को समझाने के वास्ते कुछ तो कहना ही है।

चारों तरफों अर्स जिमिएं, जो कोई हैं सूरत।
बखत पर दीदार को, मन वेगी पोहोंचत।। ३७ ।।

रंग महल के चारों तरफ जो कुछ भी दिखाई देता है वह मन की चाल की तरह श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए समय पर आ जाते हैं।

कोई दूर बसत हैं, सो दूर दूर से दूर।
सो भी जान कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर।। ३८ ।।

कई दूर रहते हैं और कई उनसे भी दूर रहते हैं। परमधाम के मन की शक्ति ऐसी है कि वह एक क्षण में श्री राजजी महाराज के चरणों तले पहुंच जाते हैं।

इन जिमी की क्यों कहूं, जिनको नाहीं पार।
उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार।। ३९ ।।

यहां की जमीन बेशुमार है। उसका वर्णन कैसे करूं? जो जमुनाजी के पार अक्षरधाम की तरफ बसते हैं, उनके मन की शक्ति भी उतनी ही बलशाली है।

जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत।
समें—सिर दीदार को, कोई नाहीं चूकत।। ४० ।।

जो जहां भी रहते हैं, वह वहां से श्री राजजी महाराज के दर्शनों के वास्ते समय पर पहुंच जाते हैं। किसी से कभी भी भूल नहीं होती।

ज्यों मन एक निमख में, पोहोंचत पार के पार।
तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार।। ४१ ।।

जब यहां का मन एक क्षण में बहुत दूर पार के पार पहुंच जाता है, तो फिर परमधाम की अखण्ड जमीन के मन के बल की सीमा बेशुमार क्यों न हो?

दसों दिस बसत हैं, सब में खावंद बल।
रोम रोम अंग इस्क के, इन हक इस्कै के सींचल।। ४२ ।।

दसों दिशाओं में श्री राजजी महाराज के इश्क का ही बल फैला हुआ है। पशु-पक्षियों के अंग के रोम-रोम श्री राजजी महाराज के इश्क के सींचे हुए हैं।

कोई न निमूना पाइए, या इस्क या बल।
एह खिलौने तिनके, जो खावंद अर्स असल।। ४३ ।।

बिना इश्क की ताकत के यहां कोई भी नहीं पाया जाता। यह परमधाम के श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं।

Nijanand App

एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखे विवेक।
रूहें अर्स का बल अर्स के, जो हक जात हैं एक।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने अपने संसार की जबान से थोड़ा सा बताया है, पर परमधाम में इश्क की महिमा बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के अंग की जो सखियां हैं, उनकी शक्ति परमधाम में इश्क ही है।

ख्वाब बैठ इन अर्स में, हकें देखाया तुमको।
महामत कहे ए मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! संसार में बैठकर अखण्ड परमधाम के सुख श्री राजजी महाराज ने तुमको दिखाए हैं। इन्हें पहचान कर अपने दिल में धारण करना।

|| प्रकरण || २८ || चौपाई || १३३७ ||

पसु पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब।। १ ।।

श्री राजजी महाराज जब पशु-पक्षियों पर सवारी करने की इच्छा ही करते हैं तो सभी पशु-पक्षी जहां रहते हैं, वहां से आकर पहुंच जाते हैं।

अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल।
तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल।। २ ।।

रूहें जिन पशु-पक्षियों के ऊपर सवारी करना चाहती हैं, वह पहले ही जान जाते हैं और सेवा में आकर हाजिर हो जाते हैं।

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कई अनेक।
कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक।। ३ ।।

केशरी (सिंह), बब्बर शेर, चीते, हाथी और कई किस्म के जानवर अपनी पीठ पर बैठने की जीन (काठी) कसे हुए सेवा में हाजिर हो जाते हैं। इनकी हकीकत कहां तक बताएं?

कई बिध अस्वारी होत है, बुजरक जो जानवर।
जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर।। ४ ।।

ऐसे बड़े सुन्दर जानवरों की सवारी की लीला होती है। उनके ऊपर सुन्दर काठियों की शोभा कैसे कहें? यह इनके अंग की ही शोभा है।

घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत।। ५ ।।

घोड़ों के भी पंख होते हैं यह आकाश में उड़ते हैं। कूदने में किसी तरह की कमी नहीं करते। इस तरह से सवारी के सुख बेशुमार हैं।

Nijanand App

सांची साहेबी खसम की, जो कायम सुख कामिल।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल।।९८।।

हमारे धनी की साहेबी अखण्ड है। अपने श्री राजजी महाराज के सुख अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज से इतना सुख जो अपने को मिलता है वह अनादि और अखण्ड है।

बड़ी बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरक सदा बेसक।
और सब याके खेलौने, सब पर एकै हक।।९९।।

अपने श्री राजजी महाराज की साहेबी की महिमा अति भारी है और सब इनके खिलौने हैं। सबके मालिक एक श्री राजजी महाराज ही हैं।

महामत साहेबी हककी, मैं खसम अंगका नूर।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर।।१००।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसे श्री राजजी महाराज के अंग श्यामा महारानी हैं और श्यामा महारानी के अंग हम सब रूहें हैं। इस तरह सब परमधाम में एक वाहेदत है।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १४३७ ।।

तीनों सरूपों की पेहेचान बल अर्स की तरफ का

पेहेले किया बरनन अर्स का, रूह अल्ला का केहेल।
अब चितवन सें केहेत हों, जो देत साहेदी अकल।।१।।

अब तक परमधाम का जो वर्णन किया है वह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के कहे के अनुसार किया है। अब अपनी जागृत बुद्धि की अक्ल से चितवन करके बयान करती हूं।

जब जानों करूं बरनन, तब ऐसा आवत दिल।
जब रूह साहेदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल।।२।।

जब मैं वर्णन करने लगती हूं तो दिल में ऐसा आता है जैसी मेरी आत्मा गवाही देती है कि वैसा वहां परमधाम में होना चाहिए।

इन विध हुआ है अव्वल, दई रूह साहेदी तेहेकीक।
जो कही बानी जोस में, सो साहेब दई तौफीक।।३।।

अब तक जो मैंने कहा है, उसकी मेरी आत्मा ने भी गवाही दी है। जो वाणी मैं अब कहती हूं, वह सब श्री राजजी महाराज के जोश से कहती हूं।

हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे।
सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए।।४।।

जिस वाणी की मुझे जिस समय आवश्यकता होती थी श्री राजजी महाराज मेहर कर वही वाणी जोश से मुझे देते थे और जो मेरी आत्मा गवाही देती थी वही चौपाइयां उतरती गईं।

Nijanand App

सब्द जो सारे इन विध, कही आगे से आखिरत।
बिना फुरमान देखें कहे, ना हादिएं कही हकीकत।।५ ।।

श्री राजजी महाराज की वाणी जो इस तरह से प्राप्त हुई, उसमें आदि से अन्त तक की, अर्थात् परमधाम से आकर वापस जाने तक की हकीकत है। इस बात को श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने नहीं कहा। कुरान को बिना पढ़े ही सारी हकीकत मैंने कही है।

कहें सब्द रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक।
मुसाफ देखे भागी सक, सब आयतें इसी माफक।।६ ।।

श्री देवचन्द्रजी महाराज की कही हुई वाणी पर मेरे दिल में कुछ संशय था, वह संशय कुरान को देखकर दूर हो गया। अब यह सब चौपाइयां उसी के अनुसार हैं।

और फुरमान में ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक।
आवसी मेरी उमत में, करने कायम दीन हक।।७ ।।

कुरान में रसूल साहब ने लिखा है कि आखिरत में इमाम मेंहदी आकर मेरे अनुसार ही वाणी बोलेंगे। वह इमाम मेंहदी साहब मेरे नाजी फिरके में आएंगे और एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) कायम करेंगे।

सोई सुध दई फुरमानें, सोई ईसे दई खबर।
मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर।।८ ।।

इसी बात की गवाही कुरान से मिली और यही बात ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने बताई। वही बातें मेरी जबान से जाहिर करवाई, इसलिए बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतें एक हो गईं।

रूहअल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम।
सब सुध भई अर्स की, रूहें बड़ी रूह खसम।।९ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कृपा करके तारतम ज्ञान दिया। जिससे परमधाम, श्री राजजी, श्यामा महारानी और रूहों की सब खबर मिली।

सब काम भए उमत के, देखें हक फुरमान।
सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत तीनों पेहेचान।। १० ।।

अब ब्रह्मसृष्टि की सब चाहनाएं पूरी होंगी, ऐसा मैंने कुरान से पाया। ऐसा ही श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के तारतम ज्ञान ने बताया। अब इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने भी इन तीनों (वसरी, मलकी और हकी इमाम मेंहदी) की सूरत को पहचान कर उनकी नसीहत को ग्रहण किया।

अब जो केहेती हों अर्स की, सो दिल में यों आवत।
बिना देखे केहेत हों, जित रूह जो चाहत।।११ ।।

अब जो मैं परमधाम की हकीकत का बयान करती हूं। वह जो मेरी आत्मा को अनुभव होता है, बिना देखे ही कहती हूं कि यह वस्तु यहां होनी चाहिए, क्योंकि श्री राजजी महाराज अन्दर विराजमान हैं।

अर्स के बरनन की, कही हादियों इसारत।
सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूं सिफत।।१२ ।।

परमधाम की हकीकत की रसूल साहब और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने जो बातें इशारतों में कही हैं, उन दोनों की गवाही लेकर परमधाम की सिफत का वर्णन करती हूं।

Nijanand App

मेरी बानी जुदी तो पड़े, जो वतन दूसरा होए।
कहे हादी बल माफक, उरे सिफत सब कोए।। १३ ।।

मेरी वाणी इन दोनों से अलग तब होती जब परमधाम दूसरा होता। रसूल साहब और श्री देवचन्द्रजी ने अपनी शक्ति के अनुसार परमधाम का वर्णन तो किया और उन दोनों ने जाहिरी ज्ञान तो दिया, पर हकीकत और मारफत नहीं खोल सके।

बेसुमार बुजरकी अर्स की, नेक कहूं अकल माफक।
ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अर्स है हक।। १४ ।।

परमधाम की महिमा बेशुमार है। मैं अपनी अक्ल के अनुसार थोड़ा सा वर्णन करती हूं। श्री राजजी महाराज के परमधाम की बेशुमार शोभा रूहें अच्छी प्रकार जानती हैं।

ए सुख न आवे जुबां मिने, तो भी केहेना अर्स बन सुख।
रूहें बैठत उठत सुख सनेह सो, कई गिरो को देत श्रीमुख।। १५ ।।

इन सुखों का वर्णन संसार की जवान से सम्भव नहीं है। फिर भी परमधाम के वनों के सुख रूहों के उठने-बैठने और प्यार करने के सुख जो श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) अपने मुख से कहते थे, वह मैं कहती हूं।

धनिएं आगूं अर्स के, कहे तीन चबूतर।
दाहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर।। १६ ।।

मुझे धनी श्री देवचन्द्रजी ने रंग महल के सामने तीन चबूतरे बतलाए। नीचे चांदनी चौक में एक हरे वृक्ष वाला चबूतरा और मुख्य द्वार के दाएं व बाएं यह तीन चबूतरे बताए थे।

चौथी तरफ नाहीं कह्या, सो मेरी परीछा लेन।
जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन।। १७ ।।

चौथी तरफ के चबूतरे का जिस पर लाल वृक्ष है उसको मेरी परीक्षा लेने के लिए नहीं बताया था। यह समझकर कि मेरे तारतम ज्ञान से रूहें अपने आप ही हकीकत का बयान करेंगी।

ना तो ए लड़का सो भी जानहीं, जो कछू कर देखे सहूर।
एक तरफ क्यों होवहीं, आगूं अर्स तजल्ला नूर।। १८ ।।

नहीं तो एक नासमझ बालक भी जिसने तारतम ज्ञान ले लिया हो, वह भी विचार करके देखे तो कह देगा कि परमधाम के आगे चांदनी चौक में एक तरफ की शोभा अधूरी है। दोनों तरफ होना चाहिए।

खूब देखाई क्यों देवहीं, चबूतरा एक तरफ।
जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ।। १९ ।।

चांदनी चौक में एक तरफ के चबूतरे की शोभा कैसे अच्छी लगेगी? उन्होंने समझा था कि अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान की ताकत से मैं दूसरी तरफ के चबूतरे का बयान कर दूंगी।

तले चौथा चाहिए, आगूं अर्स द्वार।
दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार।। २० ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में दूसरा चबूतरा अवश्य होना चाहिए। दोनों चबूतरों के ऊपर दो वृक्षों की शोभा ही सुन्दर लगेगी।

Nijanand App

आगूं इन चबूतरों, खेलावत जानवर।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर।। २१ ।।

इन चबूतरों के आगे पशु-पक्षी और जानवर आपस में एक-दूसरे से खेल खिलाते हैं तथा अनेक तरह की कलाएं दिखाकर नए-नए तरीके से सुख देते हैं।

आगूं इन दरबार के, दायम विलास है बन।
कई विध खेल करें जानवर, हक हंसावें रूहन।। २२ ।।

रंग महल के सामने वृक्षों के अखण्ड आनन्द हैं। यहां पर जानवर कई तरह के खेल करके श्री राजजी श्यामाजी और रूहों को हंसाते हैं।

इन चौक खुली जो चांदनी, आगूं बड़े दरबार।
उज्जल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार।। २३ ।।

चांदनी चौक के आगे बड़े दरबार (रंग महल) के सामने की रेती की झलकार आसमान तक होती है। इसकी ज्योति बेशुमार है।

जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखून।
आकास जिमी बीच जोत को, इनको नहीं निमून।। २४ ।।

चांदनी चौक के इन दोनों चौरस चबूतरों पर वृक्ष थंभ के समान चौरस छाया करते हैं। जिनकी शोभा की तरंगें आसमान तक जाती हैं। आकाश और जमीन के बीच में इनके जैसा दूसरा कोई नमूना नहीं है।

और जोत जो बिरिख की, सो भी बीच आकास और बन।
पार नहीं इन जोत की, पर एह रंग और रोसन।। २५ ।।

चांदनी चौक के सामने जो और वृक्ष आए हैं उनकी ज्योति आकाश और वनों में बेशुमार है, परन्तु इन लाल और हरे रंग के वृक्षों की ज्योति कुछ अलग ही तरह की है।

जेता कोई रंग बन में, तिन रंग रंग हर हार।
इन विध आगूं अर्स के, बन पोहोंच्या जोए किनार।। २६ ।।

वन में जितने भी रंग हैं उनकी अलग-अलग हारें (कतारें) दिखाई देती हैं। इस तरह से रंग महल के आगे के वृक्ष जमुनाजी के किनारे तक जाते हैं।

कहूं हारें कहूं चौक गुल, कहूं नकस कटाव।
जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जड़ाव।। २७ ।।

कहीं-कहीं वृक्षों की हारें हैं, कहीं चौक हैं, कई फूलों के गुलदस्ते हैं, कहीं-कहीं नक्शकारी है। जैसे चन्द्रमा में जड़ाव जड़ा हो ऐसी शोभा देती हैं। जिसका वर्णन यहां की जबान से करना सम्भव नहीं है।

ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें।
अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहें।। २८ ।।

यह शोभा देखने योग्य है। कहनी में नहीं आती न अक्ल में ही आती है, तो इसका शब्दों में कैसे बयान करूं?

Nijanand App

चारों तरफों बन में, कई जिनसें कई जुगत।
नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, बन में केती कहूं विगत।। २९ ।।

वन में चारों तरफ कई तरह के वृक्षों से अलग-अलग युक्ति बनी है और नई-नई भांति के चन्द्रवा दिखाई देते हैं। ऐसे वन में कई तरह की शोभा है।

चारों तरफों अर्स के, कई बैठक चौक चबूतर।
जुदे जुदे कई विध के, ए नेक कहूं दिल धर।। ३० ।।

रंग महल के चारों तरफ कई प्रकार की बैठकें, चौक और चबूतरे हैं। यह कई तरह के बने हैं। इनका थोड़ा-सा बयान अपनी आत्मा से करती हूं।

सात घाट आगूं अर्स के, ए है बड़ो विस्तार।
नेक कहूं हिंडोले चौकियां, फेर कहूं आगूं अर्स द्वार।। ३१ ।।

रंग महल के सामने सात घाटों का बड़ा विस्तार है। थोड़ा सा हिंडोलों और चौकियों का बयान करती हूं। इसके बाद रंग महल के दरवाजे के आगे का बयान करूंगी।

बट पीपल चारों चौकियां, ऊपर छातें भी चार।
अंबराए बिरिख अनेक बन, निहायत रोसन झलकार।। ३२ ।।

बट-पीपल की चौकी के ऊपर चार छतें है। आकाश में बड़े वन के वृक्षों की अत्यन्त रोशनी झलक रही है।

चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार।
तले चेहेबच्चे नेहेरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार।। ३३ ।।

बड़े वन के वृक्ष चारों तरफ घेरकर आए हैं जिनकी अत्यन्त शोभा है। रंग महल के नीचे पश्चिम दिशा में नूरबाग में चहबच्चे में नहरें चलती हैं। जबान से इनकी महिमा कही नहीं जाती।

याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात।
ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात।। ३४ ।।

बड़े वन के वृक्ष लाल चबूतरे को लगे हुए हैं और इस वन की मोहोलात की बड़ी खूबी है। यह यहां की जबान से कही नहीं जाती।

एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार।
बीच बीच सिंघासन हक का, ए सोभा अति अपार।। ३५ ।।

लाल चबूतरे के प्रत्येक हांस में बारह हजार रूहें बैठती हैं और उनके बीच श्री राजश्यामाजी का सिंहासन अत्यन्त शोभा देता है।

ए बन हांस पचास लो, सेत हरे पीले लाल।
ए बन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल।। ३६ ।।

रंग महल की पच्छिम दिशा में पचास हांस तक सफेद, हरे, पीले, लाल वृक्षों की खूबी देखकर मेरी रूह अति प्रसन्न होती है।

Nijanand App

जित बन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर।
नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ़ और।। ३७ ।।

जिस जगह पर वन की जैसी शोभा चाहिए वहां वैसी ही बनी है। इन वनों में बेल और फूलों की नक्शकारी है और जरा भी घट या बढ़ शोभा नहीं है।

एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत।
ए ठौर रूह से न छूटहीं, जानों कहां देखूं मैं अंत।। ३८ ।।

ऐसे फूलबाग के वृक्षों को देखकर महान सुख मिलता है। रूह के चित्त से यह ठिकाना नहीं छूटता। लगता है कि ऐसी सुन्दर शोभा और कहां देखने को मिलेगी?

तले जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छात।
चारों चौक देखे आगूं चल के, ए सुख रूहें जाने बात।। ३९ ।।

बट-पीपल की चौकी के नीचे की शोभा, चार-चार चौक की चौदह हारें देखकर तथा चारों छतों के सुख को रूहें ही जानती हैं।

तले बन निकुन्ज जो, तिन पर ए मोहोलात।
मिल गए मोहोल अर्स के, रूहें दौड़त आवत जात।। ४० ।।

बट-पीपल की चौकी की प्रथम भोम (मंजिल) में जो मोहोलात बने हैं उन पेड़ों की डालियां रंग महल के दक्षिण वाले झरोखों से आकर लगती हैं। जहां से रूहें रंग महल से दौड़कर आती-जाती हैं।

ज्यों ऊपर हिंडोले अर्स के, भोम सातमी आठमी जे।
जब इन बन हिंडोलों बैठिए, देखिए बड़ी खुसाली ए।। ४१ ।।

रंग महल के ऊपर जैसे सातवीं और आठवीं भोम में हिंडोले हैं वैसे ही हिंडोले बट-पीपल की चौकी में हैं, जिनमें बैठकर बड़ा आनन्द आता है।

जैसे हिंडोले अर्स के, ऐसे ही हिंडोले बन।
रूहें बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन।। ४२ ।।

रंग महल के जैसे हिंडोले हैं वैसे ही चौकी के हिंडोले हैं। यहां बारह हजार रूहें बैठकर झूलती हैं। उस समय की शोभा बहुत अच्छी है।

इन बन में जो हिंडोले, छप्पर—खटों की जिनस।
सांकरें जंजीरां झनझनें, जानों सबथें एह सरस।। ४३ ।।

इस चौकी के हिंडोले खट छप्पर की तरह है जिनमें एक से एक अच्छी सांकलें, जंजीरें और घुंघरू लगे हैं।

इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तरफों इत।
बट घाट निकुन्ज ले, इन हद से आगूं चलत।। ४४ ।।

इस चौकी के आगे नारंगी का घाट है जो बट-पीपल की चौकी की दूसरी तरफ से आकर लगा है। आगे बट का घाट है और उसके आगे कुंज-निकुंज के बगीचे चलते हैं।

Nijanand App

तरफ बांईं सोभा ताल की, बीच चांदनी चारों घाट।
जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट।।४५ ।।

बट-पीपल की चौकी के बाईं तरफ देखने से हौज कौसर के तालाब की शोभा है। जहां पर ताल के ऊपर चार घाट और बीच में टापू महल की चांदनी सुन्दर शोभा देती है। हौज कौसर तालाब का जल, पाल के वृक्ष, पाल की मोहोलात की शोभा बड़ी सुन्दर है।

कई मोहोल मानिक बन पहाड़ के, कई नेहेरें मोहोल बन।
मोहोल पहाड़ कई सागरों, फेर आए दूब बन अंन।।४६ ।।

यहां से आगे चलकर मानिक पहाड़ के महल, वन की नहरें और नहरों के अन्दर बन महल और पहाड़ के समान बड़ी रांग की हवेलियां और सागरों को देखकर रंग महल के पीछे दूब दुलीचा और अन्न वन में आए।

अतंत सोभा इन बन की, ए जो आए मिल्या फूलबाग।
फूलबाग हिंडोले ए बन, तूं देख खूबी कछू जाग।।४७ ।।

इस अन्न वन की शोभा अधिक है और यह फूलबाग से आकर मिलता है। अन्न वन के अन्दर पांच बड़े वन के वृक्ष आए हैं। जिनके सुन्दर हिंडोलों की खूबी देखने योग्य है। हे मेरी आत्मा! तू जागकर शोभा देख।

चौकी हांस पचास लो, फूलबाग हद जित।
और पचास हांस फूलबाग, बड़े चेहेबच्चे पोहोंचत।।४८ ।।

बट-पीपल की चौकी पचास हांस लम्बी है और फूलबाग की सीमा से लगी है। फूलबाग भी पचास हांस में रंग महल के पीछे फैला है। इन दोनों के बीच में सोलह हांस का चहबच्चा है।

ए बड़ा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत।
बड़ी कारंज पानी पूरन, कई नेहेरें चलत।।४९ ।।

बड़ा चहबच्चा बाहर की तरफ एक हांस की चौड़ाई में चौकी को तथा एक हांस फूलबाग को लगता है। इस चहबच्चे से बड़ी धारा में पानी कई नहरों में चला जाता है।

ए फूलबाग चौड़ा चबूतरा, निपट बड़ा निहायत।
फूलबाग बगीचे चेहेबच्चे, बिस्तार बड़ो है इत।।५० ।।

फूलबाग का चबूतरा चौरस है और बड़ा है। फूलबाग के चहबच्चों का विस्तार भारी है (जो चार हजार बारह हैं)।

मोहोल झरोखे अर्स के, फूलबाग के ऊपर।
जोत झरोखे अर्स के, ए नूर कहूं क्यों कर।।५१ ।।

रंग महल के (१५००) झरोखे फूलबाग के ऊपर आते हैं। उनकी ज्योति की शोभा कैसे बताऊं?

जहां लग हद फूलबाग की, ए जिमी जोत अपार।
ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहें सुमार।।५२ ।।

जहां तक फूलबाग की सीमा है वहां की जमीन की बहुत सुन्दर ज्योति है। जिसकी सुन्दरता इस जबान के वर्णन से बाहर है, क्योंकि यह वेशुमार है।

Nijanand App

इत दिवाल तले दस खिड़कियां, जित रूहें आवें जांए।
ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें।।५३ ।।

रंग महल के मन्दिर की पहली हार में से नूरबाग में नीचे उतरने के लिए दस खिड़कियां हैं। यहां से रूहें आती जाती हैं। इस खूबी को रूह से विचार कर देखो, तब नजर में आती है।

इन आगूं लाल चबूतरा, ले चल्या अर्स दिवाल।
खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल।।५४ ।।

इससे आगे उत्तर की दिशा में रंग महल से लगता हुआ लाल चबूतरा है जो बारह सौ मन्दिर लम्बा तीस मन्दिर चौड़ा है। इसमें चालीस हांस में चालीस बैठकें बनी हैं और सामने बड़े वन की छाया है।

ए जो भोम चबूतरा, बन आगूं विराजत।
इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत।।५५ ।।

इस चबूतरे के आगे जो बड़ा वन है। उसमें कई तरह के जानवर श्री राजश्यामाजी तथा रूहों को प्रसन्न करने के लिए तरह-तरह के खेल करते हैं।

ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब।
एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब।।५६ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर बारह सौ मन्दिर में झरोखों की जगह पर मेहराब हैं। जिनकी सुन्दरता बेशुमार है।

बड़ी बैठक इन चबूतरे, अति खूबी तिन पर।
इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर।।५७ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर श्री राजश्यामाजी तथा रूहों की बैठकों की बड़ी शोभा है। यहां सामने जब बड़े-बड़े जानवर खेल करते हैं तो बहुत खुशहाली का अनुभव होता है।

एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए।
एक पीछल जो छोड़िया, आगूं दूजी भोम का सोए।।५८ ।।

लाल चबूतरे के पच्छिम दिशा में चहबच्चा है और पूरब दिशा में दूसरी भोम पर खुलने वाला खड़ोकली का चहबच्चा है। चबूतरे के किनारे पर कठेड़ा है, जहां से झांक कर देखते हैं।

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन।।५९ ।।

पूरब की दिशा में खड़ोकली के चहबच्चे की तीन तरफ ताड़वन के वृक्षों ने छाया की है।

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए।
इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए।।६० ।।

खड़ोकली के सामने रंग महल के मन्दिरों में जो जल के सामने आते हैं, उनमें झरोखे बने हैं, इसलिए इस खड़ोकली के चहबच्चे की सिफत कहने में नहीं आती।

कई बन हैं इत ताड़ के, कई खजूरी नारियल।
और नाम केते लेऊं, बट पीपल सर ऊमर।।६१ ।।

यहां कई वृक्ष ताड़ के, कई खजूर के, कई नारियल के, कई बट, कई पीपल के और कई ऊमर (गूलर) के हैं। और कहां तक वृक्षों के नाम गिनाऊं?

Nijanand App

इत केतेक बन में हिंडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख।
लिबोई घाट इत आए मिल्या, सो सोभा क्यों कहूं या मुख।। ६२ ।।

इस ताड़वन के बीच में बड़े हिंडोले दस भोम तथा प्रत्येक भोम के प्रत्येक बगीचे में (१८००) हिंडोले हैं। यहां पर रूहें झूलने का सुख लेती हैं। इस ताड़वन से लगकर पूरब की दिशा में नीबू का घाट आया है। उसकी शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

हिंडोले इन बन के, ए बन बड़ा विस्तार।
इन आगूं घाट केल का, और बड़ा बन तिन पार।। ६३ ।।

ताड़वन के हिंडोले और वन का बड़ा विस्तार है। इसके आगे केल का घाट है और उसके आगे बड़े वन की शोभा है।

अब जो बन है केल का, सो आगूं पोहोंच्या जाए।
तिन परे बन पहाड़ का, सब दोरी बंध सोभाए।। ६४ ।।

केले का जो वन है, वह सबसे आगे पुल तक शोभा देता है। उसके आगे मधुवन और महावन के वृक्ष एक सीध में शोभा देते हैं जो पुखराज पहाड़ को घेरकर आए हैं।

बन बड़ा पुखराज का, कई मोहोल बड़े अतंत।
तिन परे बड़े बन की, जुबां कहा करसी सिफत।। ६५ ।।

पुखराज पहाड़ में कई महल हैं जिनके ऊपर बड़े वन की छाया है। इसकी शोभा का यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

जाए मिल्या बन नूर के, नूर परे कहूं क्यों कर।
जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर।। ६६ ।।

यह महावन अक्षरधाम तक जाता है। अक्षर के आगे की शोभा कैसे बताएं? जहां भी नजर दौड़ाएं, सब जगह बेशुमार शोभा है।

अब कहूं आगूं अर्स के, और जोए किनार।
बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार।। ६७ ।।

अब रंग महल के आगे तथा जमुनाजी के किनारे की शोभा का वर्णन करती हूं। जहां पर अक्षरधाम की तरफ भी वन, महल और घाटों के किनारे की शोभा आई है।

दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात।
पांच पांच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चांदनी छात।। ६८ ।।

जमुनाजी के ऊपर दो पुलों की सुन्दर शोभा है। जिनकी पांच-पांच भोमें और छठी चांदनी है।

ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग।
जोत कही न जाए एक तिनका, ए तो मोहोल अर्स के नंग।। ६९ ।।

इन पुलों के झरोखे आमने-सामने शोभा देते हैं। इनके नगों की ज्योति कैसे कहें जबकि परमधाम के एक तिनके की भी शोभा नहीं कही जा सकती।

Nijanand App

तले चलता पानी जोए का, दस घड़नाले जल।
नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल।।७०।।

पुलों के नीचे जमुनाजी का जल दस घड़नालों में निकलता है। दसों नहरें जल में एक सीध में चली जाती हैं।

चार चौकी बन माफक, छात पांचमी ऊपर किनार।
ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार।।७१।।

जमुनाजी की पाल पर बड़े वन के जो पांच पेड़ हैं उनकी चार चौकियां बनती हैं। इनकी पांचवीं भोम के ऊपर के किनारे दोनों पुलों की छत से लगते हैं जिनकी शोभा बेशुमार है।

जोए ऊपर बन झरोखे, सो निपट सोभा है ए।
फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन नंग जे।।७२।।

जमुनाजी की पाल के ऊपर बड़े वन के पेड़ों की डालियों से बने झरोखों की शोभा बेशुमार है। इन वनों के फल-फूल और पत्ते जल के ऊपर तोरण (बन्दनवार) जैसी शोभा देते हैं।

साम सामी दोऊ किनारे, तरफ दोऊ बराबर।
दो बन की दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुन्दर।।७३।।

जमुनाजी के दोनों किनारों पर इस तरह दो वन की तथा दो जवेरों की, पुल महलों की चारों की अत्यन्त शोभा है।

इन पुल दोऊ के बीच में, बीच बने सातों घाट।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच बनी चांदनी पाट।।७४।।

इन दोनों पुलों के बीच सात घाट अति सुन्दर शोभा देते हैं। तीन दाईं तरफ, तीन बाईं तरफ और बीच में अमृत वन में पाट घाट चांदनी के समान शोभायमान है।

ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत।
ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अर्स सिफत।।७५।।

हे मोमिनो! अब तुम सात घाटों का विवरण सुनना इसकी शोभा बेशुमार है। मैं थोड़ा सा ही बयान करती हूं।

बनके मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छात।
छात दूजी घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात।।७६।।

पाल के ऊपर पुल महलों से चलकर देखो तो ऊपर सब पर एक छत शोभा देती है। वन की दूसरी भोम के ऊपर पशु-पक्षी वन के महलों में रहते हैं।

ए जो पसु पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत।
बोल खेल सोभा सुन्दर, सो इन मोहोलों बसत।।७७।।

जो पशु-पक्षी पास रहते हैं वह श्री राजश्यामाजी के खिलौनों के समान हैं। उनकी बोली तथा खेल सब सुन्दर लगते हैं। ऐसे पशु-पक्षी इन वन के महलों में रहते हैं।

Nijanand App

रात दिन गूंजे अर्स में, हक की करें जिकर।
क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुन्दर।। ७८ ।।

रात-दिन इन पशु-पक्षियों की आवाज धनी के गुणगान में ही गूंजती रहती है। इनके तनों के ऊपर बने चित्रों की शोभा बहुत सुन्दर है।

बानी सुनें तें सुख उपजे, और देखें सुख अपार।
या पसु या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार।। ७९ ।।

उनकी बोली सुनकर तथा तन की शोभा देखकर बहुत सुख मिलता है, पशु हो या जानवर, सबकी शोभा बेशुमार है।

तीन घाट आगूं अर्स के, जांबू अमृत अनार।
सो अनार पोहोंच्या अर्स को, दो दोऊ भर किनार।। ८० ।।

रंग महल के सामने जांबू (जामुन) अमृत (आम) और अनार के तीन घाट हैं। इनमें अनार और जांबू दोनों के पच्छिमी किनारे रंग महल की दीवार के साथ लगते हैं।

घाट तीन हांस पचास लों, बीच बड़े दरबार।
दो घाट लगे दोऊ हिंडोलों, दो घाट हिंडोलों पार।। ८१ ।।

यह तीन घाट रंग महल के सामने पचास हांस में आए हैं। नारंगी और नीबू के घाट बट-पीपल की चौकी तथा ताड़वन के हिंडोलों से लगते हैं। बाकी के दो घाट (बट और केल के) इन दोनों के आगे हैं।

ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगूं चबूतर।
चौक चौड़ा हिस्से तीसरे, इत दीदार होत जानवर।। ८२ ।।

बीच में अमृत वन में पाट घाट है जिसका चबूतरा रंग महल के ठीक सामने आया है। चांदनी चौक अमृत वन के तीसरे भाग में (१६६ मन्दिर लम्बा-चौड़ा) आया है। यहां पशु-पक्षियों का मुजरा होता है।

ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत।
छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत।। ८३ ।।

इस चांदनी चौक के बीच दो सुन्दर चबूतरे हैं, जिन पर हरा व लाल वृक्ष हैं। वृक्षों की छाया चबूतरों की लम्बाई-चौड़ाई के अनुसार फैली है, जिसकी बेशुमार शोभा है।

लंबा चौड़ा चारों हांसों, बराबर दोरी बंध।
अनेक रंग बन इतका, सोभित अनेक सनंध।। ८४ ।।

रंग महल के सामने चांदनी चौक में यह दोनों चबूतरे चारों तरफ लम्बे-चौड़े एक समान हैं और एक सीध में है। अमृत वन में अनेक रंग शोभा देते हैं।

बन गिरदवाए अर्स के, देख आए आगूं द्वार।
केहे ना सकों हिस्सा कोटमा, अर्स बन कह्या अपार।। ८५ ।।

रंग महल के चारों तरफ के वनों की शोभा देखकर धाम दरवाजे में आए। उसकी शोभा के करोड़वें हिस्से का भी बयान नहीं हो सकता। रंग महल के सामने इन वनों की शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

बन में फिर के देखिया, अर्स अजीम के गिरदवाए।
एकल छाया बन की, तले जिमी जोत कही न जाए।।८६ ।।

रंग महल के चारों तरफ वनों में घूमकर देखा सबकी एक समान छाया है और उनके नीचे की जमीन की ज्योति कहने में नहीं आती।

बन छाया दीवाल लग, झूमत झरोखों पर।
ठाढ़े होए के देखिए, आवत चांदनी लो नजर।।८७ ।।

वनों की छाया और डालें रंग महल के झरोखों पर आकर लगती हैं और खड़े होकर देखें तो ऊपर चांदनी तक दिखाई देती हैं।

फिरती गिरदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे।
गिरदवाए विचारी गिनती, छे हजार हर हार के।।८८ ।।

चांदनी के चारों तरफ घूमकर देखें तो नौ भोम के सुन्दर झरोखे दिखाई देते हैं। गिनकर देखें तो प्रत्येक भोम में ६००० (छः हजार) की हार है।

एही आतम को पूछ के, नवों भोम करो विचार।
ले भोम से लग चांदनी, ए भी हारें छे हजार।।८९ ।।

अपनी आत्मा से पूछकर देखो। हे सुन्दरसाथजी! नौ भोम की शोभा को विचारो। यह पहली भोम से चांदनी तक छः-छः हजार मन्दिर की दो हारें आई हैं।

हर हार चढ़ती नव नव, छे हजार फिरती हर हार।
जमा भए नव भोम के, अर्ध लाख चार हजार।।९० ।।

हर एक हार में छः हजार मन्दिर आते हैं और एक मन्दिर के ऊपर नौ भोमों के चौवन हजार मन्दिर आए हैं।

झरोखे कई विध के, गिनती होए क्यों कर।
कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर।।९१ ।।

झरोखे कई तरह के हैं। इनकी गिनती कैसे करें? कहीं अलग-अलग हैं, कहीं इकट्ठे हैं, इनका दिल में विचार करो।

ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसें तीस तीस।
कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस।।९२ ।।

दिल में सीधा विचार करें तो एक हांस में तीस झरोखे आते हैं। ऊपर नौवीं भोम है। एक-एक झरोंखा तीस-तीस मन्दिर का है। सामने के हांस में दस मन्दिरों का एक झरोखा आया है और खड़ोकली में पूरब की हांस में बीस झरोखे दिखाई देते हैं।

गिरदवाए कठेड़ा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबांन।
अर्स एकै जवेर का, एकै बिध रंग रस जान।।९३ ।।

चांदनी पर घेरकर कठेड़ा आया है। पूरा रंग महल एक लाल जवेर का बना दिखाई देता है जिसकी शोभा यहां की जबान से कैसे बताएं?

Nijanand App

कई विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कई ठौर।
चारों तरफों अर्स के, देखी एक पे एक और।। ९४ ।।

यहां कई तरह की बैठक बनी हैं। कई तरह के ठिकाने हैं। रंग महल के चारों तरफ एक से एक अच्छी शोभा है।

हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार।
ए झरोखे कंगूरे, बैठक बारे हजार।। ९५ ।।

चांदनी पर साठ गुमटियों की घेरकर एक हार आई है जिसमें झरोखे, कंगूरे तथा बारह हजार बैठने की जगह बनी हैं।

दो सौ खांचों ऊपर, सोभें नगीने सौ दोए।
बुजरक बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए।। ९६ ।।

दो सौ हांसों पर दो सौ बड़े गुर्ज आए हैं। उनके बीच में ही यह बारह हजार गुमटियां आई हैं जिनकी खूबी कहने में नहीं आती।

ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर।
इन विध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर।। ९७ ।।

यह जो दो सौ एक बड़े गुम्मट आए हैं, इनके ऊपर कलश लगे हैं। इनकी इतनी सुन्दर झलझलाहट है जो जबान से कही नहीं जाती।

और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगूरे बारे हजार।
ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार।। ९८ ।।

बारह हजार गुमटियों के ऊपर बारह हजार कलश कंगूरे के समान शोभा देते हैं। इनका तेज झलक रहा है जिसकी शोभा कहने से बाहर है।

कलसों पर जो बेरखे, सो क्यों कहूं रोसन नूर।
ए जो बनी बराबर गिरदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर।। ९९ ।।

कलशों पर पताका (झंडे) लगे हैं। उनकी शोभा बेशुमार है। यह चारों तरफ की बनी शोभा आसमान में जगमग कर रही है।

केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के माहें।
और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोंचत नाहें।। १०० ।।

इस मुख से जितना भी कहा जाए वह सब माया के शब्दों में है। श्री राजजी महाराज का हुकम इस तरह से कहता है कि परमधाम की महिमा का वर्णन यहां से नहीं हो सकता। यह बेशुमार है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए छोड़िए नहीं एक दम।
अब कहूं अंदर अर्स की, जो दिए निसान खसम।। १०१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! एक क्षण के लिए भी इस सुख को मत छोड़ो। अब धाम धनी ने जो पहचान रंग महल के अन्दर की बताई है, उसका मैं वर्णन करती हूं।

|| प्रकरण || ३० || चौपाई || १५३८ ||

Nijanand App

दसों भोम बरनन भोम पेहेली

बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अंदर।
बड़ी बैठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मन्दिर।। १ ।।

रंग महल के बड़े दरवाजे के अन्दर अट्ठाईस थंभ का चौक है। जहां आते-जाते सखियां बैठती हैं। इसके आगे रसोई की हवेली है।

दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार।
इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार।। २ ।।

इस रसोई की हवेली की पूरब दिशा में देहलान (दालान) के दाएं-बाएं पांच-पांच मंदिर हैं। इससे लगते उत्तर की दिशा में श्याम रंग के मन्दिर के साथ सीढ़ियों का मन्दिर है और साथ लगता सफेद मन्दिर आया है। कोने का मन्दिर छोड़कर उत्तर दिशा में इस प्रकार दस मन्दिर आए हैं।

कई नकस कई कटाव, इन भोम में देखत।
दिन पंद्रा खेलें बन में, पंद्रा आरोगें इत।। ३ ।।

इस भोम में कई किस्म की नक्शकारियां और कटाव हैं। श्री राजश्यामाजी और सखियां सायं पन्द्रह दिन वन में आरोगते हैं और पन्द्रह दिन इस रसोई की हवेली में आरोगते हैं।

इन चौक में साथजी, बोहोत बेर बैठत।
आवत जात बनथें, बैठत इत अलबत।। ४ ।।

इस रसोई की हवेली में सखियां निस्सन्देह कई बार आते-जाते बैठती हैं। सायंकाल जब वन से लौटती हैं तो अवश्य ही यहां बैठती हैं।

लाड़बाई के जुत्थ की, इत बोहोत खेल करत।
बाहेर अंदर चौक में, बन मोहोलों सुख लेवत।। ५ ।।

लाड़बाई के जुत्थ की सखियां यहां रसोई खिलाने की सेवा में भाग-दौड़ करती हैं। बाहर, अन्दर, चौक में, कभी वन में, कभी महलों में भोजन होता है।

बन मोहोल विलास को, सुख गिनती में आवत नाहें।
ए न कछू जुबां केहे सके, चुभ रहत चित माहें।। ६ ।।

पन्द्रह दिन वन के, पन्द्रह दिन रसोई की हवेली के आनन्द के अपार सुख हैं जिनको गिना नहीं जा सकता। जबान से कुछ बयान नहीं किया जा सकता। यह सुख हृदय में ही जाने जाते हैं।

राज स्यामाजी बैठत, बनथें फिरती बखत।
इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत।। ७ ।।

श्री राजश्यामाजी वन से लौटते समय यहां बैठकर आरोगते हैं। फिर चौथी भोम में नृत्य देखते हैं।

जैसा चौक तले का, तैसा ही ऊपर।
आगूं झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदिर।। ८ ।।

जैसा रसोई की हवेली का चौक नीचे है वैसा ही ऊपर है। दूसरी भोम में चारों तरफ बीस-बीस मंदिर, चार दरवाजे और चार कोने छोड़कर आए हैं।

Nijanand App

इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढ़ती चढ़ती जे।
खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए।। ९ ।।

इस तरह से तीसरी भोम और ऊपर की भोम में चौक के ऊपर चौक की अधिक शोभा है।

नवों भोम इन विध की, आगूं उपरा ऊपर बड़े द्वार।
आगे चौक सबन के, सबों फिरते थंभ हार।। १० ।।

नौ भोमों में बड़े दरवाजे के उपरा ऊपर बीस थंभ आए हैं और सबके आगे देहलान हैं।

और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक।
ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक।। ११ ।।

इन हवेलियों की हकीकत कहां तक कहूं? हर भोम में हवेली बहुत हैं जिनका वर्णन करोड़ों जबान से नहीं हो सकता तो एक जबान से कैसे हो?

भोम दूसरी

स्याम सेत के बीच में, सीढ़ियां सुन्दर सोभित।
बोहोत साथ इत आए के, चढ़ उतर करत।। १२ ।।

रसोई की पहली हवेली के उत्तर में श्याम मन्दिर और सफेद मन्दिर के बीच वाले मन्दिर में सीढ़ियां हैं। जहां से सखियां उतरती-चढ़ती हैं।

इतथें चले खेलन को, आगूं मंदिर जहां भुलवन।
जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन।। १३ ।।

यहां से जहां भुलवनी के मन्दिर है, वहां खेलने जाते हैं। यहीं पर खड़ोकली का चहबच्चा है जब उसमें झीलना (स्नान) करने जाते हैं, तो यहां खेल करते हैं।

खेल करें इत भुलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार।
सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार।। १४ ।।

भुलवनी में एक सौ दस मन्दिर की एक सौ दस हारें हैं। चारों तरफ से गिनो, तो यह शोभा है।

ए भुलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार।
द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार।। १५ ।।

यह भुलवनी इस तरह की बनी है जिसे चारों तरफ से एक सौ दस की एक सौ दस हारें गिनने से बारह हजार एक सौ मन्दिर आते हैं सौ मन्दिर का मध्य में चौक आया है जिसे छोड़कर मन्दिर बारह हजार आए हैं और हर मन्दिर में दरवाजे बराबर आए हैं।

मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार।
यों गिनती बारे हजार की, भए अड़तालीस सहस्त्र द्वार।। १६ ।।

अलग-अलग मन्दिरों में गिनें, तो हर मन्दिर में चार दरवाजे हैं। इस तरह से बारह हजार मन्दिर के अड़तालीस हजार दरवाजे होते हैं।

Nijanand App

सो ए भई इत भुलवनी, भए द्वार चौबीस हजार।
एक दूजे में गिनात है, खेलें हंसें रूहें अपार।। १७ ।।

यही भूल हो गई। वास्तव में दरवाजे चौबीस हजार हैं जब एक-दूसरे को मिलाकर गिनते हैं, क्योंकि प्रत्येक दरवाजा दो मन्दिर में बोलता गिना जाता है। यहां श्री राजश्यामाजी व रूहें खेलती हैं।

रूहें द्वार एक दौड़के, चौथे जाए निकसत।
प्रतिबिंब उठें कई तरफों, कोई काहूं ना पकरत।। १८ ।।

रूहें एक दरवाजे से दौड़कर चौथे दरवाजे से निकल जाती हैं। यह मन्दिर शीशे के बने हैं। जिनके कई प्रतिबिम्ब कई तरफ उठते हैं और कोई किसी को पकड़ नहीं पाता।

भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठें अपार।
पकड़न कोई न पावहीं, निकस जाएं कई द्वार।। १९ ।।

एक मन्दिर से जब भागते हैं तो बेशुमार प्रतिबिम्ब उठते हैं कई दरवाजों से पार करके निकल जाते हैं। कोई पकड़ नहीं सकता।

इन ठौर खेल रूहन के, बोहोत भई भुलवन।
होत हांसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन।। २० ।।

रूहों को इस ठिकाने पर बहुत बार भूलना पड़ता है। इस खेल में इस तरह की हंसी होती है और आनन्द बढ़ता है।

इनहूं बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए।
ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए।। २१ ।।

इस हवेली के बीच में दस मन्दिर का लम्बा-चौड़ा चबूतरा है, जहां श्री राजश्यामाजी बीच में बैठते हैं। इस समय की शोभा इस मुख से कही नहीं जाती।

दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए।
सिनगार समें रूहन के, इन जुबां कह्यो न जाए।। २२ ।।

दूसरी भोम के चहबच्चे खड़ोकली में श्री राजजी महाराज स्नान करके चबूतरे पर बैठते हैं और सिनगार के समय रूहें जो सेवा करती हैं, वह इस जबान से कही नहीं जाती?

इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार।
पीछे चरनों लागें जुगल के, माहें माए ना मन्दिरों झलकार।। २३ ।।

श्री राजजी, श्यामाजी और सब सखियां भुलवनी में खेल करने के बाद खड़ोकली में नहाते हैं और सिनगार करते हैं। इसके बाद श्री राजश्यामाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं, इस लीला की झलकार मन्दिरों में समाती नहीं है।

ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक।
सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक।। २४ ।।

यह थोड़ी सी हकीकत इस ठिकाने की बताई है। यहां बैठने के कई ठिकाने हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को अखण्ड सुख देते हैं।

Nijanand App

ए दूजी भोम जो अर्स की, इत बोहोत बड़ो विस्तार।
ए नेक नेक केहेत हों, जुबां कहा कहे सिफत सुमार।। २५ ।।

दूसरी भोम की शोभा का बहुत भारी विस्तार है। मैंने थोड़ा-थोड़ा कहा है। इस जबान से बेशुमार शोभा की सिफत कैसे कहें?

भोम तीसरी

बैठ हक हादी भोम तीसरी, जित आवत नूरजलाल।
इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल।। २६ ।।

श्री राजश्यामा जी तीसरी भोम में विराजते हैं जहां अक्षर ब्रह्म दर्शन करने आते हैं। यहां श्री राजजी महाराज की बैठक दोपहर तक होती है और एक पहर सुख सेज्या पर आराम होता है।

बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे।
पांच बने बांईं हांस के, पांच दाहिनी से।। २७ ।।

धाम-दरवाजे का हांस, दाएं-बाएं वाले हांसों से पांच-पांच मन्दिर लेकर बनाया जिसमें दस झरोखे सुन्दर शोभा देते हैं।

बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान।
इत आए फजर पसु पंखियों, दीदार देत सुभान।। २८ ।।

धाम-दरवाजे के ऊपर तीसरी भोम में एक बड़ा झरोखा देहलान के रूप में आया है। यहां पशु-पक्षियों को प्रातः श्री राजजी महाराज दर्शन देते हैं।

देहेलान दस मन्दिर का, झरोखे दस सामिल।
माहें चौक दस मन्दिर का, हुए तीनों मिल कामिल।। २९ ।।

यह देहलान दस मन्दिर की लम्बी एक मन्दिर की चौड़ी आई है जो मध्य के दस मन्दिरों की जगह पर आई है यहां मन्दिर नहीं आए हैं मात्र थंभें और मेहराबें आई हैं। आवश्यकता पड़ने पर जालीदार दीवार आ जाती है। तब यह सेज्या का मन्दिर बनता है। इस देहलान के पूरब की तरफ किनारे पर पांच रंग के जो दस थंभ आए हैं, कठेड़ा आने से एक दस मन्दिर का लम्बा झरोखा हुआ। अब देहलान और झरोखे के बीच की जगह दस मन्दिर की लम्बी, दो मन्दिर की चौड़ी पड़साल की जगह तथा अट्ठाईस थंभ के चौक चार मन्दिर की लम्बाई, एक मन्दिर की चौड़ाई में रौंस कमर भर ऊंची होने से पूरा चबूतरा कहलाती है। इन तीनों का एक रूप है।

तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे।
द्वार थंभ आगूं इन, ना दिवाल बीच इनके।। ३० ।।

एक हांस के तीसरे हिस्से में दस मन्दिर के स्थान पर दस झरोखे आए हैं। इसके आगे पहली हार मन्दिर की जगह दस मन्दिर नहीं हैं थंभ हैं जो देहलान कहलाती है।

और सुख इन भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार।
सो मुख बानी क्यों कहूं, जिनको नहीं सुमार।। ३१ ।।

तीसरी भोम के इन सुखों का बहुत बड़ा विस्तार है। इस मुख से बेशुमार सुखों का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान।
माहें बाहेर बराबर, जानें मोमिन अर्स बयान।। ३२ ।।

दस मन्दिर की लम्बी और चार मन्दिर की चौड़ी देहलान अन्दर-बाहर चारों तरफ से बराबर है। मोमिन इस चीज को समझ लेंगे।

और जो झरोखे गिरदवाए के, तिनही के सरभर।
एता ऊंचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर।। ३३ ।।

और जो घेरकर झरोखे आए हैं वह सब एक समान ऊंचे हैं। जितना पहली भोम जमीन से ऊंची है (२२ हाथ है) उतने ही ऊंचे बाकी दिखाई देते हैं।

छे मन्दिर आगूं सीढ़ियां, दोऊ तरफ चढ़ाए।
चौक छोटे आगूं देहरी, सोभा इन मुख कही न जाए।। ३४ ।।

नीले, पीले, हरे दोनों तरफ के छः मन्दिर की देहरी के आगे दोनों तरफ तीन-तीन सीढ़ियां हैं और सामने रौंस के चौक हैं। जिसकी शोभा वर्णन करने में नहीं आती।

और चौक बड़ा जो बीच का, सीढ़ी सनमुख आगूं द्वार।
सोए बराबर द्वार के, सोभा कहूं जो होए सुमार।। ३५ ।।

अट्ठाईस थंभ के पूर्व की ओर अधबीच के बड़ी मेहराब के नीचे तीन सीढ़ियां चढ़कर द्वार से चौक पर आइए। जिसकी शोभा बेशुमार है।

दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगूं बढ़ती पड़साल।
ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक बदले हाल।। ३६ ।।

इसके दोनों तरफ तीन-तीन मन्दिर, जिनमें दीवारें नहीं हैं, देहलान हैं उनके पूरब-पच्छिम दोनों तरफ मेहराब में खिड़कियां हैं और उसके आगे पूरब दिशा में पड़साल है। हे परमधाम के मोमिनो! अच्छी तरह से देखेंगे तो निश्चय ही परमधाम की याद आएगी।

और आरोगें भी इतहीं, इत बैठें नूरजमाल।
दौड़त रूहें निहायत, ए क्यों कहूं खुसाली ख्याल।। ३७ ।।

और इसी पड़साल में श्री राजजी और श्री श्यामाजी बैठकर दोपहर को आरोगते हैं। रूहें दौड़-दौड़कर सेवा करती हैं। इस खुशी का वर्णन कैसे करूं?

बड़ी बैठक पड़साल की, इत मेवा मिठाई आरोगत।
कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत।। ३८ ।।

यहां पड़साल में श्री राजश्यामाजी बहुत देर तक बैठते हैं और मेवा मिठाइयां आरोगते हैं। रूहें भी सिनगार करने के बाद यहीं चरणों में प्रणाम करके बैठती हैं।

सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदिर।
इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढ़ें पलंग अंदर।। ३९ ।।

इस देहलान में श्री राजजी महाराज को सखियां सिनगार कराती हैं। सखियां रसोई की हवेली में आरोगती हैं और इसी पड़साल के बड़े झरोखे से श्री राजजी महाराज अक्षर ब्रह्म को दर्शन देते हैं। दोपहर तीसरे पहर में यहीं नीले-पीले मन्दिर में विश्राम करते हैं।

Nijanand App

दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस।
एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस।। ४० ।।

बीच के दो हांसों में से पांच-पांच मन्दिर लेकर यह मुख्य द्वार का हांस बनाया गया है। जिन दस मन्दिरों के दस झरोखे और संख्या में एक हांस के बढ़ने से रंग महल के २०१ हांस हो गए। इसकी शोभा बड़ी बेशुमार है।

बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन।
भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन।। ४१ ।।

इन दो हांसों के बीच में रंग महल का बड़ा दरवाजा है। नीचे की भोम से चांदनी तक इस दरवाजे की शोभा अपार है।

अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कई ठौर।
जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस कई और और।। ४२ ।।

रंग महल के अन्दर कई चौरस हवेलियां हैं और क़ई ठिकाने (चौक) हैं। जहां पर तरह-तरह के आनन्द के सुख लेते हैं।

भोम चौथी

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार।। ४३ ।।

चौथी भोम में अट्ठाईस थंभ के चौक के आगे चौरस हवेलियों की चौथी हवेली नृत्य की हवेली है। इसके बीच सुन्दर चबूतरा बना है। मन्दिर और दरवाजों की शोभा कैसे बताऊं?

तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार।। ४४ ।।

इस हवेली के उत्तर, पच्छिम, दक्षिण तीन दिशाओं में मन्दिर हैं और आगे पूरब की दिशा में बीस मन्दिरों की जगह पर दो थंभों की हार आई हैं। यह एक बड़ा महल अति सुन्दर और सुखदायी है।

थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर।। ४५ ।।

इसके थंभ, दरवाजे तथा तीन तरफ के साठ मन्दिर जो बीस-बीस हर दिशा में हैं तथा अन्दर के चौक में बैठक अत्यन्त सुन्दर है।

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार।। ४६ ।।

तीनों तरफ के साठ मन्दिरों के किवाड़ झलकार करते हैं और थंभ भी बहुत तेजमयी हैं जिनके सुख बेशुमार हैं। कैसे कहे जाएं?

पीठ पीछे जो मन्दिर, कई रंग सेत दिवाल।
दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल।। ४७ ।।

पच्छिम की तरफ मन्दिर की दीवार सफेद रंग की है। दाहिनी तरफ की दीवार और मन्दिर लाखी रंग का है। इनकी चित्रकारी बेमिसाल है।

Nijanand App

बांईं तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग।। ४८ ।।

बाई तरफ की दीवार और मन्दिर पीले नीबू जैसे रंग के हैं। जिनमें कई रंग की बेलें और चित्रकारी हैं। जिनकी बेशुमार तरंगें उठती हैं।

हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर।
चारों तरफों अर्स जवेर, करें जंग नूर सों नूर।। ४९ ।।

तीसरी हवेली की पच्छिम की दीवार तथा बीच के चार थंभों की हारें हरे रंग की हैं। यह दीवार दूसरी दीवारों से कुछ दूर हैं। इस तरह से चारों तरफ के जवेरों के नगों की किनारें आपस में टकराती हैं।

एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर।। ५० ।।

इस ठिकाने पर नृत्य होता है। उसकी शोभा कैसे बताऊं? हवेली में चारों तरफ ऊपर-नीचे सुन्दर नृत्य होता दिखाई देता है।

राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन।। ५१ ।।

श्री राजश्यामाजी चौक के बीच सुन्दर सिंहासन पर विराजते हैं और बारह हजार रूहों को अपार सुख देते हैं।

कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत।
हाथ पांउं अंग बालत, कही न जाए सिफत।। ५२ ।।

यहां कई तरह के बाजे बजते हैं और नवरंगबाई नृत्य करती हैं। वह हाथ-पांव, अंग इस तरह से मोड़ती हैं कि उसकी सिफत नहीं कही जाती।

ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल।। ५३ ।।

उनके जुत्थ की रूहें बाजे लेकर खड़ी होती हैं जिनमें मृदंग, खड़ताल, जंत्र, चंग, तंबूरा बड़े स्वर से मीठी आवाज निकालते हैं।

पांउं झांझर घूंघर बोलहीं, कांबी कड़लो बाजत।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत।। ५४ ।।

नवरंगबाई के पैर में झांझरी, घूंघरी, कांबी और कड़ला की आवाज होती है। इसी तरह से अनवट और बिछुआ की आवाज होती है।

हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत।
और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत।। ५५ ।।

हाथ में कंगन और नवघरी की आवाज के स्वर निकलते हैं और भी सब अंगों के आभूषण बजते हैं।

Nijanand App

जिन विध पाउं चलावहीं, सोई भूखन बोलत।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई ना चलत।।५६।।

नवरंगबाई जिस तरह से पैर चलाती हैं वही आभूषण बोलते हैं। जब वह झांझरी की आवाज निकालना चाहती हैं तो घूंघरी, आदि की आवाज नहीं निकलती।

जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान।।५७।।

जब वह घूंघरी की आवाज चाहती हैं तो झांझरी की आवाज नहीं निकलती है। जब वह सबकी आवाज चाहती हैं तो सभी आभूषण एक साथ बोलते हैं।

प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान।।५८।।

वह प्रेम के रस भरी वाणी अपनी मधुर रसभरी आवाज से बोलती हैं। अपने हाथों की कला दिखाती हैं। फिर सुन्दर तान लगाती हैं।

कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग।
एक रस सब गावत, नवरंग—बाई के रंग।।५९।।

भूषनों के जुदा-जुदा स्वरों में सब बाजों की ध्वनि मिलती है। सभी बाजे और आभूषण नवरंगबाई के नृत्य के साथ में एक रस बजते हैं और गाते हैं।

हाथ धरत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत।
निरत करें कई विधसों, कई गुन कला ठेकत।।६०।।

जब मृदंग पर हाथ रखते हैं तो सुन्दर स्वर निकलते हैं। उनके साथ कई गुण, कला, दिखाती हुई कई तरह से नवरंगबाई नाचती हैं।

कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल।
इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल।।६१।।

नवरंगबाई की चाल आनन्द में बदल जाती है और वह बहुत कमाल का नृत्य करती हैं। इनके ठेक देने की कला बड़ी विचित्र है जिसे श्री राजजी महाराज देखते हैं।

कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत।
कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत।।६२।।

नृत्य में कई तरह के बाजे बजते हैं और कई तरह नवरंगबाई नट की तरह नाचती हैं। कई तरह से घूमकर आनन्द में मग्न होकर गाती हैं।

नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर।।६३।।

जिनका नाम ही नवरंगबाई है उनकी नृत्य का क्या कहना? वह नए-नए विचार दिल में लेकर नई-नई कलाओं से आनन्द बढ़ाती हैं।

Nijanand App

मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र।
तानबाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर।।६४।।

मोरबाई मुरली बजाती हैं। बेनबाई बाजे बजाती हैं। तानबाई तान मिलाती हैं। इस तरह से नृत्य की शोभा बढ़ जाती है।

कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाईसेंन।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन।।६५।।

केलबाई अपने कंठ से राग अलापती हैं। सैनबाई स्वर पूरती हैं। तब सब एक साथ मिलकर एक स्वर और एक ताल में मीठी वाणी बोलकर आनन्द बढ़ाती हैं।

झरमरबाई बजावत, माहें झरमरी अमृती।
कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती।।६६।।

झरमरबाई मधुर स्वर में झरमरियां बजाती हैं। कई तरह के बाजे एक रस और एक राग में बजते हैं। जिनके आनन्द की शोभा बेशुमार है।

खड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत।
तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत।।६७।।

रूहें नृत्य की हवेली में जब खड़ी होती हैं तो मन बड़ा आनन्दित होता है। हवेली में चारों तरफ सुन्दर नृत्य होता है।

निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल।।६८।।

नृत्य की कला दिखाकर फिर पांव की पड़ताल देती हैं। जिसके स्वर पूरी हवेली में गूंज जाते हैं।

ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और।
बानी बाजे निरत अवाजे, होत निरत कई ठौर।।६९।।

इनके प्रतिबिम्ब भी इसी तरह से हवेली के बीच बोलते और नाचते हैं। इनकी बोली तथा नृत्य की आवाज कई ठिकाने पर सुनाई तथा दिखाई देती है।

साम सामी पसु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए।।७०।।

हवेली की दीवार पर नगों के बने पशु-पक्षियों की तरंगें आपस में टकराती हैं। नृत्य एक ठिकाने होता है और दिखाई दूर-दूर देता है।

यों सब ठौर जंग अर्स में, कहूं केती विध किन।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन।।७१।।

इस तरह सब ठिकानों पर परमधाम में आवाज टकराती है। इसकी हकीकत कहने में आती नहीं है। वहां सब बैठने के ठिकानों में दसों दिशाओं में नृत्य होता दिखाई देता है।

Nijanand App

ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन।
तो देखो चित्रामन धामकी, करत निरत सबन।।७२ ।।

यदि आप अपनी परआतम की नजर से देखो, तो जितने भी चित्र परमधाम में हैं सबमें नृत्य होता दिखाई देता है।

एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसां इत।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत।।७३ ।।

यह खेल तीन घण्टे एक पहर रात्रि तक होता है। पन्द्रह दिन जब घर रहते हैं, तो इस हवेली में नृत्य होती है।

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत।।७४ ।।

श्री राजजी महाराज को रिझाने के लिए नवरंगबाई अनेक तरह की कला दिखलाती हैं और एक ऐसा नृत्य का बंध बांध देती हैं कि सबकी नजर वहीं टिक जाती है।

थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत।
इन समें पसु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केलि करत।।७५ ।।

यहां के थंभों में, दीवारों में, सिंहासन में सब ठिकानों में नृत्य होता दिखाई देता है। इस समय पशु-पक्षियों के चित्र भी सब स्थानों पर नाचते दिखाई देते हैं।

बोहोत बातें बीच अर्स के, किन विध कहूं इन मुख।
जो बैठीं इन मेले मिने, सोई जानें ए सुख।।७६ ।।

परमधाम के बीच की ऐसी बहुत सी बातें हैं। इस मुख से कैसे कहूं? जो सखियां इस हवेली में बैठती हैं इसको वही जानती हैं।

ऐसी चारों तरफों कई बैठकें, अंदर या गिरदवाए।
ए सुख अखंड अर्स के, क्यों कर कहे जांए।।७७ ।।

इसी तरह से अन्दर चारों तरफ कई तरह की बैठकें बनी हैं। यह परमधाम के अखण्ड सुख हैं जो कहे नहीं जाते।

भोम पांचमी पौढ़न की

सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार।
बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार।।७८ ।।

रंग महल के ठीक मध्य में बारह हजार मन्दिर बने हैं जिनके अपार सुख हैं। मध्य में श्यामाजी का मन्दिर है। जिसके चारों तरफ चार दरवाजे हैं।

चौखूंनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक।
चारों तरफों बराबर, कहूं बेवरा बुध माफक।।७९ ।।

यह हवेली चौरस है जिसका बड़ा विस्तार है चारों तरफ से यह एक समान है। उसका विवरण अपनी बुद्धि के माफिक बताती हूं।

Nijanand App

बराबर मोहोल के गिरद, बीच बीच पौरी द्वार।
पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार।। ८० ।।

रंग परवाली के चारों तरफ सीढ़ियां और दरवाजे है। इन सीढ़ियों के सामने रंग परवाली मन्दिर के चारों दरवाजे आते हैं।

मोहोल के चारों खूंने, सोले सोले हवेली।
जमे जो चौसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली।। ८१ ।।

रंग परवाली मन्दिर के चारों कोनों पर सोलह-सोलह हवेलियां आई हैं, अर्थात् चौसठ हवेलियां हैं। इनमें एक एक दरवाजा और एक-एक गली हैं।

ओगन—पचास चौपुड़े, ताके कहूं मंदिर।
हर एक के एक सौ चौबीस, जमे छे हजार छेहत्तर।। ८२ ।।

सात की सात हारें उनचास चौपुड़े (चौराहे) हैं। उनके मन्दिर बताती हूं एक चौपुड़े के एक सौ चौबीस मन्दिर और यह उनचास के छः हजार छेहत्तर हैं।

चौक अठाईस त्रिपुड़े, हर एक के एक सौ दोए।
अठाईस सै छप्पन, जमें मंदिरन को सोए।। ८३ ।।

चौक में चारों दीवारों को लगे हुए अट्ठाईस त्रिपुड़े (तिराहे) हैं। हर एक के एक सौ दो मन्दिर हैं। कुल मिलाकर दो हजार आठ सौ छप्पन मन्दिर हुए।

चौक चार खूंने के दोपुड़े, हर एक के ओनासी मंदर।
तीन सै सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर।। ८४ ।।

चार कोनों पर चार दोपुड़े हैं। हर एक में उन्यासी मन्दिर हैं तीन सौ सोलह मन्दिर यह दोपुड़े के हुए।

चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन।
हर एक के तैंतालीस, जमे सताईस सै बावन।। ८५ ।।

चौसठ हवेलिंयां हैं। उनके मन्दिर के हिसाब बताती हूं। हर एक में तैंतालीस मन्दिर हैं। सभी हवेलियों के दो हजार सात सौ बावन हुए।

जमे कियो मंदिरन को, सब बारे हजार भए।
दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे।। ८६ ।।

अब सब मन्दिरों को जोड़ो। बारह हजार हो गए। अब आगे दरवाजे, थंभ और गलियां जो बाकी रह गए हैं, उनको सुनो।

ओगन पचास चौपुड़े, ताके जमे कियो थंभन।
एक सौ चवालीस हर एकों, जमे सात हजार छप्पन।। ८७ ।।

उनचास चौपुड़े हर एक में एक सौ चवालीस थंभ हैं। कुल थंभ सात हजार छप्पन हैं।

हर एक के एक सौ पंद्रा, ए जो त्रिपुड़े अठाईस।
थंभ जमे बत्तीस सै, और ऊपर भए जो बीस।। ८८ ।।

अट्ठाईस त्रिपुड़ा हैं। एक में एक सौ पन्द्रह थंभ हैं। सब थंभों का योग तीन हजार दो सौ बीस हुआ।

Nijanand App

चार खूंने चार दोपुड़े, पचासी हर एक के।
जमे तीन सै चालीस, एते थंभ भए।। ८९ ।।

चार कोने पर चार दोपुड़े हैं। हर एक के पचासी थंभ हैं। कुल तीन सौ चालीस थंभ हुए।

ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस।
तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस।। ९० ।।

चौसठ हवेलियां हैं। हर एक में चालीस थंभ हैं। इनके कुल थंभ दो हजार पांच सौ साठ हुए।

जमे सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार।
छेहत्तर तिनके ऊपर, एते भए सुमार।। ९१ ।।

सब थंभों को जोड़ें तो तेरह हजार एक सौ छेहत्तर हुए।

ओगन—पचास चौपुड़े, तिन गली गिनों यों कर।
हर एक की चौबीस कही, जमे अग्यारे सै छेहत्तर।। ९२ ।।

उनचास चौपुड़े हैं। एक में चौबीस गलियां हैं। कुल एक हजार एक सौ छेहत्तर गलियां हुईं।

चौक त्रिपुड़े अठाईस, गली हर एक की अठार।
तिनकी ए जमे भई, पांच सै ऊपर चार।। ९३ ।।

त्रिपुड़ा अट्ठाईस हैं। हर एक में अठारह गलियां हैं। सब गलियां पांच सौ चार हुईं।

चौक चार खूंने के दोपुड़े, गली बारे हर एक।
अड़तालीस ए जमे, ए जो गली दिवालों देख।। ९४ ।।

चार कोने के दोपुड़े आए हैं एक में बारह गलियां है तो कुल अड़तालीस गलियां हुईं। यह दीवारों से लगी हैं।

और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गिरदवाए।
एक एक द्वार दो दो पौरी, इन बिध ए सोभाए।। ९५ ।।

चौसठ हवेलियां हैं। हर एक में एक-एक गली है और एक-एक द्वार है और दरवाजे में दो-दो मेहराबों की शोभा है।

जमे सब गलियन को, सत्रह सै बानबे।
आठों जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे।। ९६ ।।

सब गलियों का योग एक हजार सात सौ बानवे हुआ। हे रूहो! इनको आठों पहर चित्त में लेकर आनन्द करो।

बड़े दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस।
तैंतीस सै बारे जमे, हर द्वार पौरी तेईस।। ९७ ।।

चौक के बड़े दरवाजे एक सौ चौवालीस हैं। हर दरवाजे में तेईस मेहराबें आई हैं। कुल मेहराबें तीन हजार तीन सौ बारह हुईं।

Nijanand App

यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर।
तैंतीस सै बारे जमे, यामें आओ साथ सुन्दर।। ९८ ।।

इसमें बत्तीस दरवाजे बाहर दीवारों के लगते हैं और एक सौ बारह अन्दर की तरफ हैं। इन सबकी कमान तीन हजार तीन सौ बारह बतलाई हैं। सुन्दरसाथजी! इन्हें ध्यान से देखो।

चौखूंनी चौसठ बाखरे, इनों बीच बीच दरम्यान।
दो दो पौरी तिनकी, याको रूहें जानें बयान।। ९९ ।।

यह चौसठ हवेलियां हैं। इनके बीच-बीच में दरवाजे आए हैं और दो-दो मेहराबें आई हैं। इस हकीकत के रूहें जानती हैं।

मन्दिरों माहें खिड़कियां, बाहेर दिवालों के।
चारों खूंने गुरज से, तित दो दो झरोखे।। १०० ।।

बाहर की दीवारों में मन्दिरों के अन्दर खिड़कियां हैं। चारों कोनों पर चारों गुर्ज आए हैं। हर एक के अन्दर दो-दो झरोखे हैं।

भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात।
स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात।। १०१ ।।

पांचवीं भोम के मध्य में श्री राजजी महाराज, श्यामाजी, सखियां तब तक शयन करते हैं, जब तक सवेरा नहीं होता।

ए तो मन्दिर कहे मध के, गिरद मन्दिरों हार।
नेक नेक कही अंदर की, और कई विध मोहोल किनार।। १०२ ।।

यह तो मध्य के (बीच के) मन्दिर बताए हैं। इसको घेरकर भी ऐसी और भी आठ हवेलियां चारों तरफ आई हैं। मैंने थोड़ी सी हकीकत अन्दर की कही है। और कई तरह के महल किनारे पर हैं।

भोम छठी सुखपाल

घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल।
बने बिराजे मोहोल में, अति बड़ी पड़साल।। १०३ ।।

वन से लौटने पर छः हजार सुखपाल छठी भोम में छः हजार मन्दिर के आगे की देहलान में रहते हैं।

भोम छठी बड़ी जाएगा, है बैठक इत विस्तार।
बीच सिंघासन कई विध के, और झरोखे किनार।। १०४ ।।

छठी भोम की शोभा बहुत भारी है। बीच-बीच में कई तरह के सिंहासन और किनारे पर झरोखे हैं।

जुदी जुदी जुगतों जाएगा, बहु विध सिंघासन।
छोटे बड़े कई माफक, कई छत्र मनी रतन।। १०५ ।।

अलग-अलग जगह में अलग-अलग तरह के सिंहासन हैं। छोटे-बड़े कई तरह के जिनके ऊपर छत्र हैं और मणियां तथा रत्न जड़े हैं।

सुख अलेखे देत हैं, चारों तरफों झरोखे।
ए कायम सुख कैसे कहूं, देत दायम हक जे।। १०६ ।।

चारों तरफ के झरोखे बेशुमार सुखदायी हैं जिनका अखण्ड सुख श्री राजजी हमेशा देते हैं।

Nijanand App

सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान।
रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान।। १०७ ।।

इसके अन्दर बैठकर जब सुन्दर मीठी बोली से श्री राजजी महाराज रूहों से बात करते हैं तो इसके समान दूसरा कोई सुख नहीं होता।

कई चौक कई गलियां, कई हवेलियां अनेक।
देख देख के देखिए, जानों एही विध विसेक।। १०८ ।।

यहां कई चौक, कई हवेलियां तथा कई गलियां दिखाई देती हैं। लगता है यही सबसे अच्छी हैं।

बीच तरफ या गिरदवाए, किन विध कहूं मोहोलन।
एह अर्स की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन।। १०९ ।।

अन्दर की तरफ या चारों ओर बाहर की तरफ महलों की शोभा बेशुमार है। इस जबान से कैसे कहें?

अनेक विध हैं अर्स में, केती विध कहूं जुबान।
कह्या न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान।। ११० ।।

यहां परमधाम में अनेक तरह की सुन्दरता और चित्रकारी है जिनमें से एक का भी इस मुख से वर्णन नहीं होता।

झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार।
खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूं सोभा अपार।। १११ ।।

इस भोम के झरोखे हर जगह एक जैसे बने हैं, जिनके तेज का वर्णन कैसे करूं? बेशुमार शोभा है।

तेज तेज सों लरत हैं, जहूर जहूर सों जंग।
केते कहूं रंग रंग सों, तरंग संग तरंग।। ११२ ।।

इन झरोखों के तेज तथा सुन्दरता आपस में टकराती हैं। इनके रंगो-तरंगों की शोभा कैसे बताऊं?

भोम सातमी हिंडोले

कहा कहूं भोम सातमी, मध्य मोहोल अनेक।
कई विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पे नेक।। ११३ ।।

सातवीं भोम के अन्दर कई महल हैं। कई गलियां तथा हवेलियां हैं जो एक-दूसरे से अच्छी हैं।

कई मोहोल कई मालिए, सोई झरोखे सुन्दर।
द्वार बार सीढ़ी खिड़कियां, अति सोभा लेत मन्दिर।। ११४ ।।

बाहर के महलों में कई तरह के सुन्दर झरोखे हैं जो छज्जों पर बने हैं। दरवाजे, सीढ़ियां, खिड़कियां, मन्दिर सभी की शोभा अच्छी है।

कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार।
रूहें आप मन चाहते, अर्स आराम नहीं पार।। ११५ ।।

सातवीं भोम में बारह हजार हिंडोले हैं जहां रूहें व श्री राजश्यामाजी मनचाहे तरीके से झूलकर आराम लेते हैं।

Nijanand App

भोम सातमी किनार में, मन्दिर झरोखे जित।
दोनों हारों हिंडोले, छप्पर–खटों के इत।। ११६ ।।

सातवीं भोम में किनारे के मन्दिरों में झरोखे बने हैं। उनके आगे दो थंभों की हार में खट-छप्पर के हिंडोले लगे हैं।

साम सामी बैठी रूहें, हेत में सब हींचत।
कड़े हिंडोले कई स्वर, बहु विध बोलत।। ११७ ।।

यहां रूहें आमने-सामने बैठकर बड़े प्यार से हिंडोले झूलते हैं। हिंडोले कई-कई तरह की आवाज करते हैं।

गिरदवाए सब हिंडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक।
बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पे विसेक।। ११८ ।।

चारों तरफ के हिंडोले अलग-अलग ढंग के हैं। सब बारह हजार हिंडोले एक-दूसरे से अधिक रसीली आवाज करते हैं।

हांसी होत हैं इन समें, सुन सुन स्वर खुसाल।
हंस हंस के हंसत, सब संग हींचें नूरजमाल।। ११९ ।।

इस तरह के रसीले स्वरों को सुनकर रूहें हंसती और खुश होती हैं। वह हंस-हंसकर श्री राजजी महाराज के साथ झूलती हैं।

ए सुख आनन्द अति बड़ो, रंग रस बढ़त अति जोर।
भूखन हांसी कड़े हिंडोले, ए क्यों कहूं अर्स सुख सोर।। १२० ।।

यहां का सुख और आनन्द बेशुमार है। आभूषण, कड़े, हिंडोले और रूहों की हंसी के सुख बेशुमार हैं।

अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माहें।
तो नींद निज अंग असल की, उड़ जावे कहूं काहें।। १२१ ।।

जब कभी रूहें यहां आती हैं तो उस समय बेशुमार सुख होते हैं। उन्हें यादकर अपनी परआतम की नींद उड़ जाती है।

भोम आठमी हिंडोले

इसी भांत भोम आठमी, चार चार खटछप्पर।
चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर।। १२२ ।।

इसी तरह से आठवीं भोम में चार-चार खट छप्पर के हिंडोले चारों तरफ से झूलते हैं। जिसकी शोभा कैसे कहूं?

चारों तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान।
रंग रस हांस विनोद की, पिउ सों प्रेम रसान।। १२३ ।।

चारों तरफ से बातें करते हुए तथा अलग-अलग बोली बोलते हुए धनी के साथ रूहें हंसी और विनोद के साथ झूलकर आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

चार हिंडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक।
एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत विसेक।। १२४ ।।

चार हिंडोले अलग-अलग झूलते समय एक साथ चारों तरफ से आते हैं और एक ही साथ दूसरी तरफ घूम जाते हैं। इस तरह से विशेष तरीके का यह खेल होता है।

और विध बीच हवेलियों, जुदी जुदी कई जिनस।
देख देख के देखिए, एक पे और सरस।। १२५ ।।

हवेलियों के अन्दर की अलग-अलग शोभा है। यह एक से एक सुन्दर दिखाई देती हैं।

मंदिर जुदे द्वार जुदे, कई चौक चबूतर।
ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न बरनन कर।। १२६ ।।

सबके मन्दिर, दरवाजे, चौक, चबूतरे अलग-अलग रूप के दिखाई देते हैं। इन मन्दिरों की ऐसी शोभा है कि इसका वर्णन यहां की जबान नहीं कर सकती।

कोटान कोट ले जुबां, जानों बरनन करूं एक द्वार।
ए बरनन तो होवहीं, जो आवे माहें सुमार।। १२७ ।।

यहां करोड़ों जबान से एक दरवाजे की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है, क्योंकि शोभा बेशुमार है। वर्णन उसका होता है जो शुमार में आ जाए।

इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कह्यो न जाए।
ए लीला अर्स खावंद की, केहे केहे रूह पछताए।। १२८ ।।

यहां पर बड़े आनन्द होते हैं। वह इस जबान से नहीं कहे जा सकते। यह लीला श्री राजजी महाराज की है जिसका वर्णन करने से रूह पछताती है।

बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल।
ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल।। १२९ ।।

यहां की जबान और बुद्धि तथा इस झूठे अंग की जोगवाई में अखण्ड सुख को वर्णन करने की शक्ति नहीं है।

जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान।
चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान।। १३० ।।

जो शोभा हृदय में है वह जबान पर नहीं आती, परन्तु चुप होने से भी नहीं रहा जाता, क्योंकि हमारे सुन्दरसाथ वर्णन सुनना चाहते हैं।

कहे रूह सुख पावत, और सुख विचारे अतंत।
पर दुख पाऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत।। १३१ ।।

इनका वर्णन करने से और विचार करने से रूह को सुख होता है, परन्तु दुःख इस बात का है कि यहां के शब्द वहां की सिफत नहीं कर सकते।

Nijanand App

चारों तरफों हिंडोले, अर्स के गिरदवाए।
सब हिंडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए।। १३२ ।।

रंग महल के अन्दर चारों तरफ घेरकर हिंडोले आए हैं। इन्हीं हिंडोलों में श्री राजजी महाराज के साथ ऐसा सुख मिलता है, जो अंग में नहीं समाता।

भोम नौमी गोख (छज्जे) की बैठक

छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार।
बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार।। १३३ ।।

नवीं भोम के बड़े छज्जों की शोभा का विस्तार बहुत है। यहां श्री राजजी महाराज सखियों के साथ बाहर के किनारे पर बैठते हैं।

नजरों सब आवत है, इन ऊपर की बैठक।
देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक।। १३४ ।।

छज्जे की बैठक के सामने दूर तक दिखाई देता है और श्री राजजी महाराज दूर-दूर की शोभा बता बताकर आनन्दित करते हैं।

जब बैठें जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत।
बातें करें बनाए के, नूर अपने अपनायत।। १३५ ।।

जब जिस तरह बैठते हैं, तब उसी तरह की शोभा का बयान होता है। श्री राजजी महाराज अपनी रूहों से बातें बना-बनाकर करते हैं।

जब बैठें तरफ नूर की, तब तितहीं का विस्तार।
जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नहीं सुमार।। १३६ ।।

जब अक्षरधाम की तरफ बैठते हैं तब वहां की बातें बताते हैं। जहां जिस चीज की शोभा चाहिए, वहां के सुख बेशुमार हैं।

जब बैठें तरफ पहाड़ की, तब बरनन करें अति दूर।
तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर।। १३७ ।।

जब पुखराज पहाड़ की तरफ बैठते हैं, तब दूर-दूर का वर्णन करते हैं और उनकी भोमों के सुख बेशुमार बतलाते हैं।

जब बैठें तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल।
कायम सुख कायम भोम के, आवें न माहें अकल।। १३८ ।।

जब सागरों की तरफ बैठते हैं तो घृत, दूध, दही के असल कायम सुखों का तथा हवेलियों की भोमों का वर्णन करके बतलाते हैं। यह बेशुमार शोभा यहां की अक्ल में नहीं आती।

जब बैठें तरफ बड़े बन की, तब सोई सुख बरनन।
पसु पंखियों के इस्क की, कई विध करें रोसन।। १३९ ।।

जब बड़े वन की तरफ बैठते हैं तो वहां के सुखों का वर्णन करते हैं तथा वहां के पशु-पक्षियों के इश्क की कई तरह की बातें बताते हैं।

Nijanand App

और पहाड़ जोए जित के, कई विध की मोहोलात।
ताल कुण्ड कई चादरें, इन जुबां कही न जात।। १४० ।।

पुखराज पहाड़, जमुनाजी, पहाड़ की मोहोलातें, अधबीच के कुण्ड की चादरें, पुखराजी ताल, आदि की शोभा इस जबान से वर्णन नहीं होती।

या हौज या जोए के, कई विध देवें सुख।
जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रुख।। १४१ ।।

हौज कौसर तालाब या जमुनाजी की कई तरफ की शोभा बताकर श्री राजजी सुख देते हैं। जब जिस तरफ की शोभा बताते हैं तब उसी तरफ रूह की जाने की इच्छा होती है।

मोहोल मन्दिर जो मध्य के, सो हैं अति रोसन।
थंभों बेल फूल पांखड़ी, एक पात ना होए बरनन।। १४२ ।।

मध्य में जो महल और मन्दिर आए हैं, वह भी बड़े सुन्दर हैं। वहां के थंभ, बेल, फूल, पांखुड़ी के पत्ते का वर्णन नहीं हो सकता। ऐसी बेशुमार शोभा है।

तो मोहोल मन्दिर की क्यों कहूं, और क्यों कर कहूं दिवाल।
कई लाख खिड़की हवेलियां, कई लाखों पौरी पड़साल।। १४३ ।।

तो फिर महल, मन्दिर और दीवारों की शोभा कैसे बताएं? यहां पर कई लाख खिड़कियां हैं, हवेलियां हैं, रास्ते हैं और देहलाने हैं।

बैठ बीच नासूत के, अंग नासूती जुबान।
अर्स का बरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान।। १४४ ।।

मृत्युलोक में बैठकर मृत्युलोक की जबान से अखण्ड परमधाम का वर्णन किस तरह से करें?

दसमी भोम चांदनी

दसमी भोमें चांदनी, ए सोभा है अतंत।
कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत।। १४५ ।।

दसवीं भोम चांदनी की बेशुमार शोभा है। यहां पर बीच चौक में गद्दे, कुर्सियां और तख्त शोभा देते हैं।

कई बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत।
साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत।। १४६ ।।

इस चांदनी के चारों तरफ घेरकर महल आए हैं। श्री राजश्यामाजी और रूहें यहां जब आती हैं तो धनी उन्हें तरह-तरह के सुख देते हैं।

क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार।
दो सै हांसों चांदनी, नाहीं रोसन नूर सुमार।। १४७ ।।

यहां के आसमान में चांदनी की जोत सफेद है। दो सौ एक हांस की चांदनी का नूर आसमान में समाता नहीं है। यह बेशुमार है।

Nijanand App

ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए।
बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए।। १४८ ।।

आगे किनारे पर घेरकर दो सौ एक गुम्मट आए हैं और उनके अन्दर एक पंक्ति में बारह हजार गुमटियां शोभा देती हैं।

चारों तरफों चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर।
जल गिरत फुहारे मोतियों, चारों चांदनी अंदर।। १४९ ।।

बीच के चबूतरे के चारों तरफ चहबच्चे आए हैं जिनकी शोभा बेशुमार है। यहां चांदनी पर चारों तरफ से मोतियों की तरह फव्वारों से जल गिरता है।

गिरदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत।
अन्तर आंखें खोल के, ए सुख देखो अतंत।। १५० ।।

चहबच्चों के चारों तरफ फूल शोभा देते हैं। आत्मा के द्वार खोलकर देखो। यहां की शोभा बेशुमार है।

सोभा जल फूलन की, गिरद चारों किनार।
ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे विचार।। १५१ ।।

चांदनी पर चारों तरफ किनारे तक जल की और फूलों की शोभा है। रूहो! विचारकर शोभा को देखो।

बोहोत बड़ी इत बैठक, विध विध बेसुमार।
रात उज्जल अर्स चांदनी, ए सोभा अर्स अपार।। १५२ ।।

यहां चबूतरे पर बड़ी सुन्दर बैठक बनी है जिसकी शोभा बेशुमार है। पूर्णिमा के चांद की चांदनी में परमधाम की शोभा बेशुमार बढ़ जाती है।

जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार।
नंग जवेर इन जिमी के, गिरद बैठत साज सिनगार।। १५३ ।।

जब श्री राजश्यामाजी और बारह हजार रूहें बीच में सिनगार करके (सजकर) चारों तरफ बैठते हैं तब जमीन के जवाहरातों के नगों की शोभा बढ़ जाती है।

राज स्यामाजी बीच में, बैठें सिंघासन ऊपर।
ए तखत हक अर्स का, ए सिफत करूं क्यों कर।। १५४ ।।

श्री राजश्यामाजी बीच में सिंहासन पर बैठते हैं। श्री राजजी महाराज के परमधाम में इस सिंहासन की शोभा कैसे बयान करूं?

कबूं रूहें निकट, बैठें मिलावा कर।
हांसी रमूज सनमुख, पिएं प्याले भर भर।। १५५ ।।

कभी रूहें पास में, कभी मिलकर बैठती हैं और श्री राजजी महाराज के सामने हंसती हुई नजर से इश्क के प्याले पीती हैं।

कई विध की इत बैठक, जुदी जुदी जिनस।
चारों तरफों अर्स के, देखी और पे और सरस।। १५६ ।।

यहां कई तरह की बैठक हैं और कई तरह की शोभा है। रंग महल के चारों तरफ एक से एक अच्छी शोभा है।

Nijanand App

बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चांद पूरन रह्या छिटक।
रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठे इत हक।। १५७ ।।

रंग महल की चांदनी के ऊपर चन्द्रमा पूर्ण रूप से चमकता है और रात्रि में सिर के ऊपर आ जाता है। जब श्री राजश्यामाजी यहां आकर बैठते हैं।

अर्स आए लग्या आकासें, उठ्या जोत अपनी ले।
चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अर्स के।। १५८ ।।

रंग महल का तेज आकाश तक फैलता है। ऊपर से आकाश में चन्द्रमा और सितारे आमने-सामने शोभा देते हैं।

चारों तरफों देखिए, रूहें बारे हजार।
जिमीं अंबर में रोसनी, उठें किरनें नूर अंबार।। १५९ ।।

जहां बारह हजार रूहें बैठी हैं उसके चारों तरफ देखें तो जमीन से आसमान तक बेशुमार किरणें उठती हैं।

ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार।
जोत नूर दोऊ सनमुख, अम्बर न माए झलकार।। १६० ।।

चांदनी के ऊपर बैठकर अक्षरधाम के दरवाजे की तरफ देखें तो दोनों दरवाजों की आमने-सामने की शोभा आसमान तक झलकती है।

देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल।
या जोत मानिक देखिए, होए रही अम्बर जिमी सब लाल।। १६१ ।।

पुखराज की तरफ या हौज कौसर ताल की तरफ या माणिक पहाड़ की जोत देखो। जहां की जमीन से आसमान तक लाल ही लाल रंग दिखाई देता है।

क्यों कहूं रोसनी चांद की, क्यों कहूं रोसनी हक।
क्यों कहूं रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक।। १६२ ।।

चन्द्रमा की रोशनी, श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द का तेज तथा बारह हजार रूहों के समूह का तेज वर्णन करने में जबान थक जाती है।

केहे केहे जुबां इत क्या कहे, तेज जोत रोसन नूर।
सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर।। १६३ ।।

कहां तक यहां की जबान बयान करे? यहां के तेज की किरणें आकाश में नहीं समातीं। ऐसी इस परमधाम की जमीन के एक कण की हालत है।

ताथें महामत कहे ए मोमिनों, क्यों कहे जुबां इन देह।
रूहअल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह।। १६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्यामा महारानी ने सब तरह का ज्ञान दे दिया है। मैं इस झूठे संसार के तन और जबान से कैसे वर्णन करूं? तुम स्वयं इन सुखों की लज्जत लेना।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। १७०२ ।।

Nijanand App

बाब अर्स अजीम का मता जाहेर किया याने एक जवेर का अर्स

गैब बातें बका अर्स की, कहूं सुनी न एते दिन।
हम आए अर्स अजीम से, करें जाहेर हक वतन।।१।।

अखण्ड परमधाम का छिपा गूढ़ रहस्य आज दिन तक किसी ने नहीं सुना था। हम रूहें अब परमधाम से आई हैं, इसलिए उस अखण्ड परमधाम की हकीकत जाहिर करते हैं।

दुनियां चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक।
सुरिया को उलंघ के, किन पाया न बका हक।।२।।

चौदह तबकों की दुनियां ने उस अखण्ड परमधाम की अपनी बुद्धि से खूब खोज की, परन्तु ज्योति स्वरूप (आदि नारायण) को उलंघकर (पार करके) कोई अखण्ड में जा नहीं सका।

पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरे आलम।
एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम।।३।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर दुनियां के लोगों ने अपने आपको ज्ञानी, मौलवी, आलम फाजल घोषित किया, परन्तु उनको इतनी भी सुध नहीं आई कि पारब्रह्म कहां है और वह स्वयं कौन है?

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत।
सो कादर काहू न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत।।४।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर यह सब अक्षर ब्रह्म की योगमाया का बनाया संसार है। जिनके हुकम से यह संसार बनता और मिटता है, उस अक्षर ब्रह्म को भी आज दिन तक कोई पा नहीं सका।

ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक।
कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहू सक।।५।।

अखण्ड के पीछे छिपे भेदों का रहस्य इन चौदह लोकों में कोई नहीं पा सका। सब वर्णन करते रहे पर संशय किसी के नहीं मिटे।

ए तले ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान।
ज्यों कबूतर खेल के, आखिर फना निदान।।६।।

निराकार के नीचे यह संसार है। जमीन और आसमान के बीच पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु का ही बना संसार है और जैसे खेल के कबूतर मिट जाते हैं उसी तरह यह संसार भी मिट जाने वाला है।

मोहे मेहेर करी रूहअल्ला ने, कुन्जी अर्स की ल्याए।
अर्स बका पट खोल के, इलम दिया समझाए।।७।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) की कृपा हुई जो उन्होंने तारतम ज्ञान की कुन्जी लाकर दी और जागृत बुद्धि के ज्ञान से अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी।

Nijanand App

गिरो उतरी लैलत कदर में, कह्या तिनमें का है तूं।
खोल दे पट अर्स का, ज्यों आए मिले तुझको।। ८ ।।

श्री राजजी ने मुझे कहा कि इस मोहतत्व के संसार में परमधाम की आत्माएं खेल देखने उतरी हैं। तुम भी उनमें से एक हो। तुम उन सब रूहों को परमधाम की पहचान जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से करा दो, ताकि वह सब तुम्हें आकर मिलें।

जो अरवाहें अर्स की, सो आए मिलेंगी तुझ।
तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ।। ९ ।।

परमधाम की सब आत्माएं आकर तुम्हें मिलेंगी। तुम्हारे अन्दर मैं बैठूंगा। ऐसा उन्होंने मुझसे कहा।

किन कायम अर्स न पाइया, ए गुझ रही थी बात।
अब तू उमत जगाए अर्स की, बीच बका हक जात।। १० ।।

आज दिन तक किसी को अखण्ड परमधाम का पता नहीं था। इसमें गुझ भेद (रहस्य) छिपे थे। अब तुम परमधाम की रूहों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से जगाकर ले आओ।

और करी मेहेर महंमदें, अंदर बैठे आए।
कई विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए।। ११ ।।

और श्री श्यामा महारानी ने भी कृपा की और मेरे अन्दर आकर बैठ गए। कई तरह से अखण्ड परमधाम के छिपे भेदों को जाहिर किया जो इस जबान से कहे नहीं जा सकते।

चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजो खोल।
मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल।। १२ ।।

श्री महामति कहते हैं कि अब मैं धनी के हुकम से, जो उन्होंने पहले से कुरान में कौल (वादा) किया था कि मैं रूहों के वास्ते आऊंगा और अपनी रूहों से चौदह तबकों को अखण्ड कराऊंगा, सब जाहिर कर रही हूं।

सो ढूंढ़ों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत।
जो रूहें भूली वतन, ताए देऊं हक बका न्यामत।। १३ ।।

उनके हुकम के अनुसार मैं अपनी प्यारी आत्माओं को खोज रही हूं। यह मेरे श्री राजजी महाराज की अंगनाए हैं जो खेल में आकर अखण्ड घर को भूल गई हैं। उनको अखण्ड परमधाम की न्यामत देती हूं।

निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए।
पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए।। १४ ।।

इस झूठी जमीन की किसी वस्तु का नमूना सत को नहीं दिया जा सकता, परन्तु जब तक कुछ कहा न जाए तब तक अखण्ड की छिपी बातें कैसे समझ में आएंगी?

ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कई संग।
कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग।। १५ ।।

जैसे एक जड़ाव का महल है और उसमें कुन्दन के साथ कई जड़ाव जड़े हैं। उसमें नए-नए रंगों की तरंगें निकलती हैं।

Nijanand App

ए सब एक जवेर का अर्स है, तामें कई तरंग उठत।
जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत।। १६ ।।

उसी तरह पूरा परमधाम एक जवाहरात का है और उसमें कई तरह के रंगों की तरंगें उठती हैं। अलग-अलग रंगों के झरोखे झलकार करते हैं।

अनेक रंग थंभन में, अनेक सीढ़ियां पड़साल।
कई रंग भोम चबूतरे, कई रंग द्वार दिवाल।। १७ ।।

अनेक रंग की सीढ़ियां, थंभ और पड़सालें हैं। धाम के चबूतरों की दीवार और दरवाजों में कई तरह के रंग शोभा देते हैं।

इन विध समझो अर्स को, एक जवेर कई रंग।
द्वार दिवालें पड़सालें, और थंभों उठत तरंग।। १८ ।।

इस तरह से सारे परमधाम को एक जवेर के कई रंगों का महल समझो। यहां के दरवाजे, दीवारें, पड़सालें और थंभों में कई तरह की तरंगें उठती हैं।

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत।
ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत।। १९ ।।

जहां जैसा रंग चाहिए, वहां उसी तरह की शोभा है। किसी ने वहां नया बनाया नहीं और पुराना देखा नहीं।

जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार।
एक जवेर को अर्स है, ज्यों रंग रस बन विचार।। २० ।।

अनेक रंगों के अलग-अलग जवेरों की बेशुमार शोभा है। इस तरह से परमधाम एक जवेर का है। जैसे एक वन में अनेक रंगों का रस होता है ऐसे ही परमधाम को विचारना।

बन सबे एक रस हैं, कई रंग बिरिख अनेक।
रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लो कहूं विवेक।। २१ ।।

वन सब एक रस हैं पर वृक्ष अनेक रंगों के होते हैं। वृक्षों के रंग, रस, स्वाद अलग-अलग होते हैं। ऐसा ही परमधाम है।

हर जातें कई बिरिख हैं, रंग रस निरमल नेक।
स्वाद अलेखे अपार हैं, पर असल बन रस एक।। २२ ।।

यहां परमधाम में हर जाति के कई वृक्ष हैं जिनके रंग, रस और स्वाद बेशुमार हैं, परन्तु वन सब एक सा ही है।

गिरद अर्स के देखिया, जहां लो नजर पोहोंचत।
एकल छत्री बन की, छेदर ना गेहेरा कित।। २३ ।।

रंग महल के चारों तरफ देखा तो जहां तक नजर जाती है वनों की छाया एक जैसी दिखाई देती है न कहीं छेद है और न ही कहीं घनी है।

Nijanand App

ज्यों जड़ाव एक चंद्रवा, जवेर जड़े कई विध।
बन बेली कटाव कई, सोभित सोने की सनंध।। २४ ।।

जैसे एक चन्द्रवा में अनेक जवेर जड़े हों, उसी तरह वन की बेलों के कटाव सोने की तरह से वृक्षों की छतरी में शोभा देते हैं।

अनेक रंगों के जवेर, जो जिन संग सोभित।
तिन ठौर बने तिन मिसलें, कई हुए कटाव जुगत।। २५ ।।

परमधाम में अलग-अलग रंगों के जवेर जहां अच्छे लगते हों उस ठिकाने पर उसी ढंग से वनों में पेड़ों की छत्री शोभा देती है।

एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं अकास।
तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूं प्रकास।। २६ ।।

परमधाम की जमीन के एक कण की रोशनी आसमान में नहीं समाती, तो जमीन के जवेर के तेज का कैसे वर्णन करूं?

एह चंद्रवा बन का, नूर रोसन गिरदवाए।
तले जिमी अति रोसनी, ऊपर बन सोभाए।। २७ ।।

इस वन के चन्द्रवे का नूर चारों तरफ परमधाम में फैला है। नीचे जमीन की रोशनी और ऊपर वन की शोभा है।

जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर।
जिमी बन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर।। २८ ।।

परमधाम का कण-कण सब नूरी है। छज्जे और दीवार भी सब नूर के हैं, जिनका तेज जमीन पर, वन में और आकाश में नहीं समाता।

सोभा जानवर अर्स के, ताके एक बाल की रोसन।
मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत इन।। २९ ।।

परमधाम के जानवर के एक बाल की रोशनी आकाश में नहीं समाती तो फिर वहां के जानवर की सिफत कैसे बयान करूं?

सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद।
ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद।। ३० ।।

जब जानवर के एक बाल की सिफत नहीं होती तो उसके तन की सिफत कैसे होगी? संसार की झूठी जबान से यह कहना सम्भव नहीं है।

एक बाल न गिरे पसुअन का, न खिरे पंखी का पर।
पात पुराना ना होवहीं, अर्स जंगल या जानवर।। ३१ ।।

परमधाम में पशु का एक बाल नहीं गिरता और न पक्षी का पर गिरता है। यहां का पत्ता पुराना नहीं होता। इसी तरह जंगल और जानवर भी नए-पुराने नहीं होते।

Nijanand App

इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर।
ए दिल में तो आवहीं, जो रूह देखे विचार कर।। ३२ ।।

इस जमीन के जानवरों को पारब्रह्म श्री राजजी महाराज अपनी नजर से देखते हैं। अगर यहां रूहें विचार करके देखें तो यह बात समझ में आए।

पार न खूबी खुसबोए को, पार ना पसु पंखियन।
मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन।। ३३ ।।

यहां के पशु-पक्षियों की खूबी और सुगन्धि का बयान नहीं हो सकता। यह पशु-पक्षी सुन्दर मीठी बोली बोलते हैं और इनके अंगों पर सुन्दर चित्र बने हैं।

सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान।
सुख देवें कई भांत सों, कई बोलें मीठी जुबान।। ३४ ।।

इन पशु-पक्षियों के नेत्र, कान, चोंच, बोली अच्छे लगते हैं। इनके गहरे रंगों की शोभा कैसे कही जाए? यह अपनी मीठी जबान से कई सुख देते हैं।

एक हक को हंसावें खेल के, कई हंसावें मुख बोल।
कोई नाहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल।। ३५ ।।

यह श्री राजजी महाराज को खेलकर हंसाते हैं। कई अपनी बोली बोलकर हंसाते हैं। इनकी कोई तुलना नहीं है जो उपमा दी जाए।

सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोले कई खेलत।
ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत।। ३६ ।।

यहां के जमीन और जंगल में पशु-पक्षी टोले-टोले खेलकर शोभा बढ़ाते हैं। यह श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। ऐसी बड़ी महिमा इनकी है।

कई पिउ पिउ कर पुकारहीं, कई करें खसम खसम।
कई धनी धनी मुख बोलहीं, कई कहें भी तुम भी तुम।। ३७ ।।

कई पशु-पक्षी 'पिया-पिया', 'खसम-खसम', 'धनी-धनी' 'तुम ही तुम' कहकर बोलते हैं।

इन विध मैं केते कहूं, बोलें जुबां अनेक।
पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक।। ३८ ।।

यह पशु-पक्षी अनेक तरह की बोलियां बोलते हैं जिसका बयान मैं कैसे करूं? सबकी जबान पर एक ही श्री राजजी महाराज का जिक्र रहता है, क्योंकि सब उन्हीं के अंग हैं।

घास करत है सिजदा, करें सिजदा दरखत।
तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत।। ३९ ।।

परमधाम में घास, पेड़ सभी सिजदा करते हैं तो फिर चेतन पशु-पक्षी क्यों न करें? ऐसा कुरान में लिखा है।

घास पसु सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर।
आसमान सितारे नूर के, क्यों कहूं नूर चांद सूर।। ४० ।।

घास, पशु, जंगल, जमीन, आसमान, सितारे, चन्द्रमा, सूर्य सब एक ही नूर के हैं।

Nijanand App

आगूं जरे घास अर्स के, ख्वाब हैवान इन्सान।
क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान।। ४१ ।।

परमधाम की जरा सी घास के आगे झूठी दुनियां के इन्सान या जानवरों की तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि यहां के इन्सान और जानवर मिट जाने वाले हैं और परमधाम का जर्रा-जर्रा अखण्ड है और श्री राजजी का ही अंग है।

इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या हौज जोए मोहोलात।
अर्स जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात।। ४२ ।।

यहां छोटा-बड़ा, कण, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और मोहोलातें सभी नूर की हैं। यहां के कण की सिफत इस जबान से कहने में नहीं आती।

आगूं द्वार अर्स के, चौक बन्या चबूतर।
कबूं हक तखत बैठहीं, आगे खेलें जानवर।। ४३ ।।

रंग महल के दरवाजे के आगे चांदनी चौक में दो चबूतरे बने हैं। श्री राजजी कभी-कभी आकर यहां तख्त पर बैठते हैं और आगे जानवर मुजरा दिखाते हैं।

कई कदेलें कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत।
सुमार नहीं पसु पंखियों, कई विध खेल करत।। ४४ ।।

चबूतरों पर गद्दे और कुर्सियां रखी हैं जिन पर रूहें बैठती हैं। पशु-पक्षी यहां पर बेशुमार खेल खेलते हैं।

इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी।
इन जुबां सों सिफत, क्यों होवे इनकी।। ४५ ।।

परमधाम की रूहों से श्री राजजी महाराज की अखण्ड दोस्ती है। जिसकी सिफत यहां की जबान से कैसे करूं?

जो नजीकी निस दिन, हक हादी हमेस।
क्यों कहूं अर्स अरवाहों को, ए जो कायम खुदाई खेस।। ४६ ।।

यह सदा ही रात-दिन श्री राजजी महाराज के चरणों में रहने वाले हैं। ऐसी परमधाम की रूहों का जो सदा के सम्बन्धी हैं, कैसे बयान करूं?

सोभा जाए न कही रूहन की, जो बड़ी रूह के अंग नूर।
कहा कहे खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर।। ४७ ।।

रूहों की शोभा नहीं कही जाती। यह श्यामा महारानी के अंग का नूर है। असल जात श्री श्यामा महारानीजी श्री राजजी के अंग हैं। उनकी खूबी का कैसे बयान करें?

अब देखो अंतर विचार के, कैसा सुन्दर सरूप रूहन।
किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूखन।। ४८ ।।

अब आत्मा से विचारकर देखो कि रूहों का कैसा सुन्दर स्वरूप है और उनके वस्त्र और आभूषणों की कैसी सुन्दर शोभा है।

Nijanand App

देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग।
हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग।।४९ ।।

श्री श्यामा महारानी जिनकी हम रूहें अंग हैं, उनके स्वरूप को देखो। उनको श्री राजजी महाराज अपने साथ बिठाकर इश्क के प्याले पिलाते हैं।

कायम हमेसा बुजरकी, सिरदार इन रूहन।
ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन।।५० ।।

इन रूहों की तथा इनके सिरदार (प्रधान) श्यामा महारानी की साहिबी हमेशा अखण्ड है। संसार की यह झूठी जबान इस महिमा का बयान कैसे करे?

ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर।
तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर।।५१ ।।

श्यामा महारानी श्री राजजी के ही नूर के अंग हैं जो सदा से रूहों की सिरदार हैं। उन श्यामा महारानी के नूर से ही सभी रूहें हैं और इस तरह से यह परमधाम की वाहेदत है, एकदिली है।

अर्स जरे की सिफत को, पोहोंचत नहीं जुबान।
तो अर्स रूहें सिरदार की, क्यों होवे सिफत बयान।।५२ ।।

परमधाम के एक कण की सिफत को यहां की जबान बयान नहीं कर पाती, तो फिर परमधाम की रूहों या श्यामा महारानीजी की सिफत कैसे कही जाए?

इन अर्स का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर।
एह जुबां क्यों केहेवहीं, इन अकल की फिकर।।५३ ।।

तो फिर परमधाम के धनी श्री राजजी महाराज की सिफत कैसे कही जाए? यह जबान, अक्ल तथा सोच तो झूठे संसार की है। यह कैसे बयान करे?

सूरत हक के जात की, सिफत करूं मुख किन।
जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सब्द कहूं इन।।५४ ।।

हक जात मोमिनों की शोभा (सिफत) किस मुंह से कहूं? यहां की जबान एक कण की शोभा का वर्णन करने में असमर्थ है, तो फिर मोमिनों की शोभा का बयान कैसे करूं?

सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांए।
कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल माहें।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार की शोभा का तो वर्णन हो ही नहीं सकता। यदि हम रहनी में आ जाएं तो कुछ लज्जत मिल सकती है।

कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद।
क्यों देऊं निमूना इनका, इन जुबां मत मंद।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप कैसा है? यह सारे परमधाम के धनी हैं। उनका नमूना यहां की मन्द बुद्धि और जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

सोभा सुन्दरता जात की, एक हक जात सूरत।
अंतर आंखें खोल तूं, अपनी रूह की इत।।५७।।

हक जात जो ब्रह्मसृष्टियां है उनके स्वरूप और शोभा सुन्दर हैं। मेरी आत्मा! अपने अन्दर की आंखें खोलकर यहां देख।

रहे ठाढ़ी इन जिमी पर, देख अपना खसम।
देख मिलावा अर्स का, और देख अपनी रसम।।५८।।

इस जमीन पर खड़े होकर अपने खसम को देखो और अपने साथी रूहों को और लीला को देखो।

देख तले तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार।
बन रोसन भरया आसमान लों, किरना नहीं सुमार।।५९।।

परमधाम की जमीन को देखो। यह उज्ज्वल है। इसका तेज अपार है। यहां के वन की रोशनी की किरणें बेशुमार हैं जिनकी रोशनी आकाश तक फैली है।

ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस।
कहूं जड़ाव ज्यों चंद्रवा, कई कटाव कई नकस।।६०।।

वन के ऊपर फल, फूल, बेलों के रंग, रस देखिए। यह ऐसे लगते हैं जैसे एक चन्द्रवा में बेशुमार कटाव और नक्शकारी जड़ी हो।

चारों तरफों चंद्रवा, अर्स के यों कर।
दौड़ दौड़ के देखिए, आवत यों ही नजर।।६१।।

रंग महल के चारों तरफ वृक्षों की डालें और पत्तों का ऐसा चन्द्रवा है कि दौड़-दौड़कर देखें तो सब जगह दूर-दूर तक ऐसा ही दिखाई देता है।

फेर फेर बन को देखिए, भांत चन्द्रवा जे।
केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे।।६२।।

बार-बार वन की तरफ जब देखते हैं जो चन्द्रवा की तरह है, तो उसे कोई झूठा नमूना देने से पछताना पड़ता है।

एक जरा कायम देखिए, उड़े चौदे तबक वजूद।
सिफत अर्स की क्यों करे, ए जुबां जो नाबूद।।६३।।

अखण्ड परमधाम का एक कण भी चौदह लोकों के संसार को उड़ा देता है, तो यहां की मिटने वाली जबान अखण्ड परमधाम की महिमा का कैसे बयान करे?

कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरक ए।
क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अर्स कायम हक के।।६४।।

स्वप्न के संसार के सूर्य, सोना और जवेर झूठे हैं। इनका नमूना अखण्ड परमधाम के सत्य को कैसे दिया जाए?

Nijanand App

ए मैं देख दुख पावत, दिल में विचारत यों।
जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे बिना बने क्यों।।६५।।

मैं ऐसा देख-देखकर चित्त में विचारती हूं और सोचती हूं कि यदि बयान नहीं करूं तो कहे बिना रूहें जागृत कैसे होंगी?

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख।
और इस्क अंग उपजे, हक सों होत सनमुख।।६६।।

परमधाम का बयान करने से रूहों को सुख मिलता है और उनके अंग में इश्क पैदा होता है। अपने अनुभव से सब श्री राजजी महाराज के सम्मुख जाती हैं।

उमंग अंग में रोसनी, अलेखे उपजत।
इन कहे अरवाहें अर्स की, अनेक सुख पावत।।६७।।

रूहों के अंग में यह चर्चा सुनकर बेशुमार उमंग पैदा होती है। इसका वर्णन करने से उन्हें अपार सुख होता है।

जित जित देखों नजरों, हक जिमी अर्स वतन।
कहे सेती कई कोट गुना, आवत अन्दर रोसन।।६८।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज को, जमीन को और घर को नजर फिराकर जैसे-जैसे देखें, तो कहने से करोड़ गुना आनन्द अनुभव में आता है।

कई कोट गुना बढ़त है, बड़ा नफा रूह जान।
बढ़त बढ़त हक अर्स की, आवत इस्क पेहेचान।।६९।।

ऐसा आनन्द लगातार रूहों के अन्दर करोड़ों गुना बढ़ता रहता है। श्री राजजी महाराज, परमधाम और इश्क की पहचान होती है।

इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल।
तो ख्वाब में कायम अर्स का, सुख लीजे नूरजमाल।।७०।।

वर्णन करने से कहनी और रहनी आती है और फिर झूठे संसार में श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम के सुख अनुभव में आते हैं।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बड़ी रूह भेजी इत।
इन जिमी रूहें जगाए के, कर दई ए निसबत।।७१।।

श्री राजजी महाराज की इस कृपा को देखो कि उन्होंने श्यामा महारानी को यहां भेज दिया, जिन्होंने रूहों को जागृत करके परमधाम की हकीकत की पहचान कराई।

ए हक का दिया पाइए, कौल फैल या हाल।
ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अर्स कमाल।।७२।।

श्री राजजी महाराज के देने से ही यहां कहनी और रहनी बनती है। यह श्री राजजी महाराज ही अखण्ड सुख देने वाले हैं। यह महान बात कहने से ही समझ में आती है।

Nijanand App

जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर।
फैल आए हाल आइया, लेत कायम रोसनी घेर।।७३।।

जब अंग में कहनी आ जाती है, तो करनी आने में देर नहीं लगती। करनी जब आ गई तो रहनी आ जाती है और रूहें परमधाम के सुखों का अनुभव करती हैं।

तले से ऊपर चढ़त है, जिमी की रोसन।
और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर बन।।७४।।

परमधाम की जमीन की ज्योति नीचे से ऊपर आसमान तक जाती है। ऊपर से वनों के नूर की रोशनी नीचे जमीन पर उतरती है।

देखों जहां जहां दौड़ के, इसी भांत बन छांहें।
जिमी बन नूर देख कें, सुख उपजत रूह माहें।।७५।।

जहां-जहां भी दौड़कर देखो वन की इसी तरह छाया है। जमीन और वन दोनों के तेज को देखें तो आत्मा को बहुत आनन्द मिलता है।

ए बाग गिरद अर्स के, और एही गिरदवाए जोए।
एही बाग गिरद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए।।७६।।

रंग महल के चारों तरफ बड़े वन के बगीचे आए हैं और यही बगीचे जमुनाजी को और हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं। सबके सब तेज और खुशबू से भरपूर हैं।

जिमी भी सब एक रस, तिनमें कई जुगत।
जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत।।७७।।

जमीन सब जगह एक सी है। उसमें भी कई तरह की शोभा बनी है। जहां जैसा रंग चाहिए वहां वैसा ही दिखाई देता है।

रेत किनारे जोए पर, और रेत जिमी पर जेती।
ताल पाल कई मोहोलों पर, कहूं जल खूबी केती।।७८।।

जमुनाजी के किनारे की रेत जमीन की रेत, हौज कौसर तालाब, ताल की पाल के महलों की तथा जल की खूबी कैसे और कहां तक कहूं?

पहाड़ जवेर केते कहूं, तले बीच ऊपर।
कई जवेर कई रंग के, क्यों कहूं सोभा सुन्दर।।७९।।

पहाड़ों में जवेर नीचे, बीच और ऊपर शोभा देते हैं और कई-कई रंग के हैं। उनकी शोभा और सुन्दरता कैसे कहूं?

एही जिमी नूरजलाल की, जिन जानो बाग और।
याही जवेर को मन्दिर, ताथें एक रस सब ठौर।।८०।।

ऐसे ही जमीन, बाग, बगीचे, जवेर, मन्दिर सब एक समान अक्षर ब्रह्म के भी हैं। इनको अलग मत समझो।

Nijanand App

न समारचा अर्स को, न किए नूर मन्दिर।
न किए हौज जोए को, न पर्वत बन जानवर।। ८१ ।।

परमधाम और अक्षरधाम को किसी ने बनाया या संवारा नहीं है। इसी तरह से हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, पहाड़, वन और जानवरों को भी किसी ने बनाया या संवारा नहीं है।

न समारी जिमी जल को, न आकास चांद सूर।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर।। ८२ ।।

जमीन, जल, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, हवा, अग्नि सभी श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूर हैं। उन्हें किसी ने बनाया नहीं है।

है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात।। ८३ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से ही अक्षर ब्रह्म तथा सभी फरिश्ते, रूहें, बड़ी रूह श्यामाजी हैं और यह सब मिलकर हक जात (श्री राजजी महाराज के अंग) कहलाते हैं।

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल।। ८४ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कोई नहीं है। सबके अन्दर श्री राजजी महाराज की ही कहनी, करनी और रहनी का नूर है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो अरवा अर्स अजीम।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम।। ८५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की रूहें हो। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को लेकर भर-भर कर पिओ।

|| प्रकरण || ३२ || चौपाई || १७८७ ||

खिलवत में हांसी फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार।
उतरी लैलत-कदर में, खेल देखन तीन तकरार।। १ ।।

परमधाम के अन्दर देखो। मूल-मिलावे में बारह हजार रूहें बैठी हैं। यह रूहें माया के भवसागर को देखने के वास्ते तीन बार माया में उतरी हैं।

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम।
तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही मना किया और हंसी के वास्ते ही हुकम के द्वारा रूहों के दिल में खेल की चाह पैदा की। रूहों के दिल में खेल देखने की चाह उपजाई तो रूहों ने यह खेल मांगा।

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित।
आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत।। ३ ।।

अब प्रथम भोम में देखो जहां श्री राजजी महाराज के चरणों में सखियां मिलकर बैठी हैं और आप श्री राजजी महाराज रूहों को परमधाम में कृपा करके खेल दिखला रहे हैं।

Nijanand App

न समारया अर्स को, न किए नूर मन्दिर।
न किए हौज जोए को, न पर्वत बन जानवर॥ ८१ ॥

परमधाम और अक्षरधाम को किसी ने बनाया या संवारा नहीं है। इसी तरह से हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, पहाड़, वन और जानवरों को भी किसी ने बनाया या संवारा नहीं है।

न समारी जिमी जल को, न आकास चांद सूर।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर॥ ८२ ॥

जमीन, जल, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, हवा, अग्नि सभी श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूर हैं। उन्हें किसी ने बनाया नहीं है।

है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात॥ ८३ ॥

श्री राजजी महाराज के नूर से ही अक्षर ब्रह्म तथा सभी फरिश्ते, रूहें, बड़ी रूह श्यामाजी हैं और यह सब मिलकर हक जात (श्री राजजी महाराज के अंग) कहलाते हैं।

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल॥ ८४ ॥

यहां श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कोई नहीं है। सबके अन्दर श्री राजजी महाराज की ही कहनी, करनी और रहनी का नूर है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो अरवा अर्स अजीम।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम॥ ८५ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की रूहें हो। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को लेकर भर-भर कर पिओ।

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ १७८७ ॥

खिलवत में हांसी फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार।
उतरी लैलत-कदर में, खेल देखन तीन तकरार॥ १ ॥

परमधाम के अन्दर देखो। मूल-मिलावे में बारह हजार रूहें बैठी हैं। यह रूहें माया के भवसागर को देखने के वास्ते तीन बार माया में उतरी हैं।

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम।
तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम॥ २ ॥

श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही मना किया और हंसी के वास्ते ही हुकम के द्वारा रूहों के दिल में खेल की चाह पैदा की। रूहों के दिल में खेल देखने की चाह उपजाई तो रूहों ने यह खेल मांगा।

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित।
आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत॥ ३ ॥

अब प्रथम भोम में देखो जहां श्री राजजी महाराज के चरणों में सखियां मिलकर बैठी हैं और आप श्री राजजी महाराज रूहों को परमधाम में कृपा करके खेल दिखला रहे हैं।

Nijanand App

साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार।
ऐसी हांसी फरामोसीय की, कबूं देखी ना बेसुमार।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज सिंहासन पर बैठे हैं और प्यार से फरामोशी और हंसी का खेल जिसे कभी नहीं देखा था, दिखा रहे हैं।

उठ के गिर गिर पड़सी, फरामोसी हांसी के खेल।
ए जो तीनों तकरार, हकें देखाए माहें लैल।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस लैल तुल कदर की रात्रि के तीनों भागों में ऐसा बेसुधी का खेल दिखाया कि जागने पर बेहद की खुशी में एक दूसरे पर गिरेंगे।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें यों कह्या उतरते।
जो केहेता हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए।। ६ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा कि जो मैं तुम से कहता हूं खेल में जाकर मत भूलना, ऐसी रूहों के सुख का कैसे बयान करूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत।
आप देत भुलाएके, आपै जगावत।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज स्वयं भुलाते हैं और स्वयं ही जगाते हैं। ऐसे इन रूहों के सुख हैं जिनका वर्णन कैसे करूं, इनके साथ श्री राजजी महाराज इस तरह की हंसी करते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार।
दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हांसी अपार।। ८ ।।

इन रूहों के सुख का कैसे बयान करूं जिनको श्री राजजी महाराज ने अपने वचनों से पहले ही होशियार कर दिया था। रूहों के दिलों में फरामोशी की नींद देकर ऊपर से हंसी करने के वास्ते जगा रहे हैं।

खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हांसी किए फरामोस।
वास्ते हांसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हांसी न आवत होस।। ९ ।।

हंसी करने के वास्ते ही खेल बनाया और हंसी के वास्ते ही फरामोशी दी। हंसी के वास्ते ही ऊपर से पुकार रहे हैं और हंसी के वास्ते ही रूहों को होश नहीं आने देते।

आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियां आप हक घर।
ऊपर कई विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसी फरामोशी दी कि रूहें अपने आपको, अपने घर को तथा श्री राजजी महाराज को भूल गईं। ऊपर से कई तरह से जगाने के प्रयत्न करते हैं, पर इस तरह से कभी भी रूहें जाग नहीं सकतीं।

ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए।
पर फरामोसी इन हांसी की, उठ न सके कोए।। ११ ।।

श्यामा महारानी जागृत बुद्धि के ज्ञान की ऐसी दवा लेकर आई हैं जिससे मुरदा जीवित हो सकता है। पर रूहों के ऊपर हंसी के वास्ते ऐसी फरामोशी का परदा कर रखा है कि किसी की आत्मा जागृत नहीं हो सकती।

Nijanand App

इन विध हांसी न जाए कही, कई कोट विधों जगावत।
कई दारू उपाय कर कर थके, दिल ठौर क्योंए न आवत।। १२ ।।

इस तरह की फरामोशी की हंसी का क्या कहूं? ऊपर से धनी कई करोड़ों तरीकों से जगा भी रहे हैं। जागृत बुद्धि का ज्ञान भी देकर जगाया, परन्तु रूहों के दिलों से फरामोशी जाती नहीं है।

हांसी होसी अति बड़ी, ए खेल किया वास्ते इन।
औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन।। १३ ।।

यह हंसी के वास्ते ही खेल बनाया है और बहुत बड़ी हांसी (हंसी) होगी। यह श्री राजजी महाराज के प्यारे दोस्त मोमिन कहलाते हैं, पर इस फरामोशी के आगे यहां किसी की ताकत नहीं चलती।

हांसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए।
उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के।। १४ ।।

जागने के समय में इसी बात की हंसी होनी है और रूहें उठ-उठकर हंसी के मारे गिरेंगी। लोट-पोट हो जाएंगी।

आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत।
अर्स अजीम में कूदते, कछू चल्या न हक सों इत।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे रूहो! हमें निश्चित ही फरामोशी ज्यादा ही आ गई है। हम तो परमधाम में खूब उछलते-कूदते थे, पर यहां इस संसार में श्री राजजी महाराज के आगे हमारा कुछ वश चलता नहीं है।

अरवाहें हमेसा अर्स की, कहावें खास उमत।
पर कछू बल चल्या नहीं, ना तो रखते हक निसबत।। १६ ।।

परमधाम की हम रूहें श्री राजजी महाराज की खास उम्मत (अंग) कहलाती हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाकर भी अपनी कुछ ताकत नहीं चलती।

हंसते हंसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब।
हक हंससी आपन पर, ऐसी हुई जो हांसी अब।। १७ ।।

खेल के बाद हम हंसते-हंसते उठेंगे और श्री राजजी महाराज ऐसी हंसी हंसेंगे ऐसी हंसी न कभी हुई थी ना कभी होगी जैसी इस बार होगी।

कई हांसी खुसाली अर्स में, करी मिनो मिने रूहन।
पर ए हांसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन।। १८ ।।

परमधाम में रूहें आपस में कई तरह से हंसी का खेल करती थीं, पर यह हंसी ऐसी होगी जो कभी नहीं हुई।

ऐते दिन हांसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे।
पर ए हांसी हक दिल चाही, ताथे बड़ी हांसी हुई ए।। १९ ।।

इतने दिन तक रूहों ने अपनी दिल चाही हंसी का आनन्द लिया है पर अबकी बार यह हंसी श्री राजजी महाराज ने अपने दिल की चाहना से की है, इसलिए सबसे बड़ी हंसी है।

Nijanand App

रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन।
न्यारी निमख न होए सके, जो होए अरवा मोमिन।। २० ।।

इसलिए, हे रूहो! अपने मूल-मिलावा से अपने चित्त को एक क्षण के लिए भी अलग मत करो। मोमिनों की सुरता एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकती।

इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदी जाने आप।
इतहीं तेरी कयामत, याही ठौर मिलाप।। २१ ।।

इस मूल-मिलावा में ही हम बैठे हैं। अपने आपको अलग मत समझो। इसी मूल-मिलावा में श्री राजजी के चरणों तले ही तेरा जीवन, कयामत और मिलन है।

हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन।
खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन।। २२ ।।

यहीं पर श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और तुम्हारे मूल तन हैं। तुम रूह की आंखें खोलकर देखो तो मूल-मिलावा ही तुम्हारा अखण्ड घर है।

ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल।
कौल फैल या हाल सों, देख हक हांसी असल।। २३ ।।

इस मूल-मिलावा को अपनी नजरों में ले लो और एक पल के लिए भी अपनी आंखों से अलग मत करो। अपनी कहनी, करनी और रहनी से श्री राजजी महाराज की हांसी (हंसी) को देखो।

इत देख फेर फेर तूं, अपनी रूह की आंखां खोल।
कर कुरबानी आपको, आए पोहोंच्या कयामत कौल।। २४ ।।

अपनी रूह की आंखें खोलकर बार-बार तुम इस मूल-मिलावे को देखो। ब्रह्माण्ड के अखण्ड होने का समय आ गया है, इसलिए अपने आपको कुर्बान कर दो।

ए हांसी करी हक ने, फरामोसी की दे।
क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इस्क के।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम पर हंसने के वास्ते ही फरामोशी दी है। तो फिर अपने इश्क की लहर पर हम विचार क्यों न करें?

याथें देखो हक इस्क, हेत प्रीत मेहेरबान।
ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क देखो जो इतने हेत, प्रीति और मेहर से भरा है। श्री राजजी महाराज ने ऐसी हंसी की है। तुम अपनी रूह की आंखें खोलकर देखो।

ऐसा हेत देख्या हक का, तो भी लगे न कलेजे घाए।
ऐसी रब रमूजें सुन के, हाए हाए उड़त नहीं अरवाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज का ऐसा प्यार देखकर भी हाय! हाय! अभी भी कलेजे में घाव नहीं लगे। श्री राजजी महाराज की इशारतें सुनकर भी हाय! हाय! यह अरवाहें (रूहें) निकलती क्यों नहीं?

Nijanand App

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान।
हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान।।२८।।

धनी के इन सुखों की और इन एहसानों की जरा भी चाह नहीं आती है। श्री राजजी महाराज तुम्हें कई तरह से याद दिलाते हैं। हाय! हाय! तुम्हें फिर भी ऐसी फरामोशी की नींद कैसे लगी है?

ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों।
जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों।। २९ ।।

नहीं तो श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर इतनी कृपा अपने प्यार से करते? जगाकर घर की सब पहचान देते हैं। हाय! हाय! हम फिर भी होश में नहीं आते।

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। यदि उनकी एक मेहर को भी समझ लें तो चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जहर के समान लगेगा।

|| प्रकरण || ३३ || चौपाई || १८१७ ||

परिकरमा नजीक अर्स के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए।। १ ।।

पहली भोम के मेहराब और झरोखे जो दीवार में शोभा देते हैं, उनकी शोभा कैसे कहूं?

गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार।। २ ।।

रंग महल के चारों तरफ मेहराब और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा बेशुमार है, इसलिए इस मुख से कैसे वर्णन करूं?

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के।। ३ ।।

बार-बार बेशुमार कहूं, यह बात समझ में आती नहीं, इसलिए इसको सीमा में लाकर कह रही हूं ताकि मोमिनों की समझ में आ जाए।

पार न कहूं अर्स का, सो कह्या बीच दिल मोमिन।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन।। ४ ।।

परमधाम का पारावार नहीं है। उसकी शोभा मोमिनों के दिल में बताई है। यह विचार करके अखण्ड परमधाम देखो जो मोमिनों के दिलों में है।

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें।
हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए।। ५ ।।

परमधाम के ठाट-बाट का वर्णन किए बिना श्री राजजी महाराज की याद दिल में नहीं आती। श्री राजजी महाराज जब कृपा करके जागृत बुद्धि का ज्ञान देते हैं तभी यहां की जबान परमधाम और श्री राजजी महाराज की साहिबी का वर्णन कर पाती है।

Nijanand App

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान।
हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान।।२८।।

धनी के इन सुखों की और इन एहसानों की जरा भी चाह नहीं आती है। श्री राजजी महाराज तुम्हें कई तरह से याद दिलाते हैं। हाय! हाय! तुम्हें फिर भी ऐसी फरामोशी की नींद कैसे लगी है?

ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों।
जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों।।२९।।

नहीं तो श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर इतनी कृपा अपने प्यार से करते? जगाकर घर की सब पहचान देते हैं। हाय! हाय! हम फिर भी होश में नहीं आते।

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर।।३०।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। यदि उनकी एक मेहर को भी समझ लें तो चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जहर के समान लगेगा।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १८१७ ।।

परिकरमा नजीक अर्स के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए।।१।।

पहली भोम के मेहराब और झरोखे जो दीवार में शोभा देते हैं, उनकी शोभा कैसे कहूं?

गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार।।२।।

रंग महल के चारों तरफ मेहराब और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा बेशुमार है, इसलिए इस मुख से कैसे वर्णन करूं?

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के।।३।।

बार-बार बेशुमार कहूं, यह बात समझ में आती नहीं, इसलिए इसको सीमा में लाकर कह रही हूं ताकि मोमिनों की समझ में आ जाए।

पार न कहूं अर्स का, सो कह्या बीच दिल मोमिन।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन।।४।।

परमधाम का पारावार नहीं है। उसकी शोभा मोमिनों के दिल में बताई है। यह विचार करके अखण्ड परमधाम देखो जो मोमिनों के दिलों में है।

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें।
हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए।।५।।

परमधाम के ठाट-बाट का वर्णन किए बिना श्री राजजी महाराज की याद दिल में नहीं आती। श्री राजजी महाराज जब कृपा करके जागृत बुद्धि का ज्ञान देते हैं तभी यहां की जबान परमधाम और श्री राजजी महाराज की साहिबी का वर्णन कर पाती है।

Nijanand App

दोऊ तरफ बड़े द्वार के, ए जो हांसें कहीं पचास।
सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास।। ६ ।।

रंग महल के दरवाजे के दोनों तरफ के पचास हांसों की और चांदनी चौक की खूबी का कैसे वर्णन करूं?

देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरे दोए।
चार चार मन्दिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए।। ७ ।।

रंग महल के ठोस चबूतरे के ऊपर दरवाजे के दोनों तरफ दो चबूतरे आए हैं जो चार-चार मन्दिर के लम्बे दो मन्दिर के चौड़े हैं। यह ऊपर चांदनी तक गए हैं।

हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफों पचीस पचीस।
दो मेहराव बीच झरोखे, हर हांसें मंदिर तीस।। ८ ।।

रंग महल के पूरब की दीवार पचास हांस की है। मध्य के दरवाजे के दोनों तरफ पच्चीस-पच्चीस मन्दिर के हांस हैं और बाकी हांसों में तीस-तीस मन्दिर हैं। हर मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा बीच में है।

हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए।
आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए।। ९ ।।

हर मन्दिर का झरोखा बेशुमार शोभा वाला है। इसका बयान कैसे करें? इस झरोखे से वनों की डालियां आकर लगी हैं। सुन्दर मीठी खुशबू होती है।

दोए भोम कही जो बन की, खिड़की मोहोल तिन बन।
भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसु पंखियन।। १० ।।

वनों की दूसरी भोम रंग महल की पहली भोम के झरोखों से लगती है। वन की दूसरी भोम की डालियां जो झरोखे से लगती हैं, उनमें पशु-पक्षियों का वास है।

उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहें।
बन सोभे पसु पंखियों, कई हक जस गावें जुबांए।। ११ ।।

पहली भोम के झरोखे से ही वन की दूसरी भोम में जाते हैं। पशु पक्षी श्री राजजी महाराज का गुणगान करते दिखाई देते हैं। जिससे वन शोभायमान है।

चल जाइए सातों घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल।
कई विध हक जिकर करें, पसु पंखी अपने हाल।। १२ ।।

सातों घाट तक चलकर गए तो यह सुन्दरता बहुत प्रसन्न करने वाली है। यहां पशु-पक्षी कई तरह से ही श्री राजजी महाराज का गुणगान करते हैं।

इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन।
मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन।। १३ ।।

वह अपनी जबान से इश्क भरी रसीली वाणी गाते हैं। उनके नेत्र बड़े सुन्दर लगते हैं। उनकी मीठी वाणी श्री राजजी महाराज की महिमा गाने में सदा लगी रहती है।

Nijanand App

किन बिध कहूं पसु पंखियों, परों पर चित्रामन।
मुख बोलें हक के हाल में, तिन अंबर भरे रोसन।। १४ ।।

पशु-पक्षियों के परों के चित्रों की शोभा कैसे कहूं? वह अपनी जबान से श्री राजजी महाराज की वाणी ही बोलते हैं। इनके परों की शोभा आसमान तक झलकती है।

जैसी सोभा पसु पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन।
सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन।। १५ ।।

जैसी शोभा पशु-पक्षियों की है, वैसी ही शोभा वनों की है। जहां वह रात-दिन खुश रहकर सुन्दर मीठी बोली से जिक्र-ए-सुभान करते हैं।

सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे।
तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए।। १६ ।।

वन के पक्षियों की शोभा जो जिक्र-ए-सुभान करते हैं, कही नहीं जा सकती। तो जहां श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें मिलकर बैठे हैं, उसका बयान कैसे करूं?

इतथें चल के जाइए, ऊपर दोऊ पुलन।
ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूरजमाल मोहोलन।। १७ ।।

यहां से चलकर जमुनाजी के दोनों पुलों पर चले। यह दोनों पुल श्री राजजी महाराज के नूर से ही हैं। इनकी खूबी मैं कैसे कहूं?

सात घाट कहे बीच में, माहें पसु पंखी खेलत।
तले भोम या ऊपर, बन में केलि करत।। १८ ।।

इन दोनों पुलों के बीच सात घाट आए हैं जहां पशु-पक्षी आपस में क्रीड़ा करते हैं। नीचे की भोम हो या ऊपर वन में हो, सभी जगह वन में पशु-पक्षी आनन्द करते हैं।

केल लिबोई अनार, बांईं तरफ खूबी देत।
जांबू नारंगी बट दाहिने, नूर सनमुख सोभा लेत।। १९ ।।

रंग महल के दरवाजे की बाईं तरफ केल, लिबोई और अनार के घाट आए हैं तथा दाईं तरफ जाम्बू, नारंगी और बट के घाट की शोभा है। ऐसे घाट सामने अक्षर की तरफ भी शोभा देते हैं।

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत।। २० ।।

दोनों पुलों के बीच में सात घाट और उनके बीच जमुनाजी के ऊपर पाट घाट आया है। यह रंग महल और अक्षरधाम के बीच आमने-सामने आए हैं। इनका तेज आकाश तक जाता है।

जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के।
दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए।। २१ ।।

पुल के नीचे जमुनाजी का जल दस घड़नालों से निकलता है और यह दस घड़नाले दूसरे पुल में भी हैं। पानी सीधा जाता है। यह बड़ी अजब शोभा है।

Nijanand App

दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर।
इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर।। २२ ।।

दोनों पुलों को देखने के बाद कुंज-निकुंज के मन्दिरों में आइए। यहां की खूबी बेमिसाल है। जिसका जबान से वर्णन नहीं हो सकता।

आगूं इतथें हिंडोले, जित चौकी बट पीपल।
चार चौकी बट हिंडोले, इतथें ना सकिए निकल।। २३ ।।

अब यहां से आगे चलकर बट-पीपल की चौकी के हिंडोले देखिए। इनकी ऊपरा ऊपर चार छतें हैं। इसे छोड़कर जाने की इच्छा ही नहीं होती।

दूजी भोम जो चौकियों, दौड़ जाइए तितथें।
बीच मेहेरावों कूद के, उतर आइए अर्स में।। २४ ।।

बट-पीपल की चौकी की दूसरी भोम से दौड़कर जाएं और सामने दरवाजों से रंग महल में चले जाएं।

पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन।
ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिंडोलन।। २५ ।।

पहली भोम के झरोखे से वन की दूसरी भोम में जाया जाता है। झरोखों की ऊंचाई के बराबर दूसरी भोम के हिंडोले आए हैं।

पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर।
फिरते मेहेराव झरोखे, बन आवे अंदर थे नजर।। २६ ।।

पच्छिम दिशा में यहां रंग महल की पहली भोम की दीवार से लगते फूलबाग को देखो। रंग महल की पिछली तरफ मेहराब और झरोखों से फूलबाग दिखाई देता है।

फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराव दोए।
बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूं किन मुख सोभा सोए।। २७ ।।

फूलबाग को फिर से देखें तो रंग महल के मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा है। इसकी खूबी कैसे कहूं?

भोम तले बन हिंडोले, अति सोभित इतथें।
मेहेराव झरोखे सुन्दर, जब बैठ देखिए बन में।। २८ ।।

फूलबाग के एक भोम नीचे नूरबाग के सामने अन्न वन में पांच बड़े पेड़ों में सुन्दर हिंडोले शोभा देते हैं। जब वन में बैठकर देखें तो रंग महल के सुन्दर मेहराब और झरोखे दिखाई देते हैं।

कई जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान।
इस्क खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान।। २९ ।।

यहां पर जानवर सुन्दर मीठे स्वर में श्री राजजी का जिक्र करते हैं। इनके इश्क की खूबी बेशुमार है, क्योंकि यह सदा श्री राजजी महाराज के जिक्र में लगे रहते हैं।

Nijanand App

इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचें रूहें हादी हक।
बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक।। ३० ।।

यहां के हिंडोलों की महिमा कैसे बताएं जहां श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें झूलती हैं। यहां की एक जंजीर का वर्णन कई उम्र बीत जाने पर भी नहीं हो सकता।

ए भोम तले की दिवाल में, मेहेराव आवे न सिफत मों।
देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बाग लों।। ३१ ।।

रंग महल की पहली भोम की दीवार में जो दस मेहराबें बनी हैं उनकी शोभा नहीं कही जा सकती। इनको देखकर नीचे नूरबाग की शोभा देखकर फिर ऊपर फूलबाग में आ जाएं।

दूसरी भोम जो अर्स की, सो तीसरी भोम लग बन।
जाइए झरोखे से हिंडोले, ए सोभा कहूं मुख किन।। ३२ ।।

रंग महल की दूसरी भोम बट-पीपल की चौकी की तीसरी भोम से लगती है। रंग महल के झरोखे से चौकी के हिंडोलों तक जाएं। यहां की शोभा कैसे कहूं?

चौथी भोम के बन से, जाइए तीसरी भोम अर्स।
ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस-परस।। ३३ ।।

चौकी की चौथी भोम से रंग महल की तीसरी भोम में जाएं। इस भोम के झरोखे चौकी की चौथी भोम के हिंडोलों के सामने हैं।

पांचमी भोम बन चांदनी, अति खूबी लेत इत ए।
चल जाइए चौथी भोम अर्स, मोहोल देखो बैठ झरोखे।। ३४ ।।

वन की पांचवीं भोम जो बट-पीपल की चांदनी है, को रंग महल की चौथी भोम के झरोखों में बैठकर देखो।

बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद।
लंबी चांदनी फूल बाग लों, ए सोभा न आवे माहें सब्द।। ३५ ।।

बट-पीपल की चौकी की पूर्व की हद नारंगी घाट की पच्छिम को लगती है। चौकी की लम्बी चांदनी पीछे फूलबाग तक आई है। जिसकी शोभा शब्दों से नहीं कही जा सकती।

हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक।
दोऊ तरफ दो मेहेराव, मन्दिरों खूबी विसेक।। ३६ ।।

रंग महल के हर हांस में तीस मन्दिर हैं और हर मन्दिर में एक झरोखा है। झरोखे के दोनों तरफ दो मेहराबें हैं। जिनकी खूबी बेशुमार है।

हर हांस साठ मेहेराव, इनों बीच बीच झरोखा।
भोम तले अति रोसनी, खूबी क्यों कहूं सोभा बका।। ३७ ।।

एक हांस में इस तरह से साठ मेहराब आते हैं और बीच में तीस झरोखे आए हैं। रंग महल की पहली भोम की शोभा बेशुमार है। इस अखण्ड परमधाम का वर्णन मैं कैसे करूं?

Nijanand App

इन विध हांसें फिरतियां, चारों तरफों सौ दोए।
चारों तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए।। ३८ ।।

इस तरह से चारों तरफ घूमकर दो सौ हांस आए हैं। अब श्री राजजी के हुकम से उन चारों तरफ का विवरण बताती हूं।

एक तरफ आगूं द्वार ने, तरफ दूजी चौकी हिंडोले।
फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे।। ३९ ।।

रंग महल के पूरब की तरफ बड़ा द्वार है। दूसरी तरफ दक्षिण में बट-पीपल की चौकी के हिंडोले हैं। तीसरी तरफ पच्छिम में फूलबाग है। चौथी तरफ उत्तर में लाल चबूतरा तथा ताड़वन में खड़ोकली का चहबच्चा है।

चार चार नेहेरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गिरदवाए।
बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए।। ४० ।।

चार नहरें जंजीर की तरह आपस में मिलकर चलती हैं और उनके बीच सुन्दर बगीचों की शोभा है। यह बड़ी ही लाजवाब शोभा है।

बीच झरोखे कारंजे, चारों तरफों चार चलत।
ए चारों बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पड़त।। ४१ ।।

झरोखों के बीच बैठकर चारों तरफ से फव्वारे दिखाई देते हैं जो सभी बीच के चहबच्चे में गिरते हैं।

कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत।
सो चारों फुहारे होए के, चारों खूटों गिरत।। ४२ ।।

बीच वाले चहबच्चों के फव्वारे का जल चारों कोने वाले चहबच्चों में गिरता है।

सो ए फूलबाग की, सोभा इन मुख कही न जाए।
नूर जोत फूल पातन की, जानो अंबर में न समाए।। ४३ ।।

इस फूलबाग की शोभा इस मुख से वर्णन नहीं की जा सकती। इनके फूल और पत्तों का तेज आसमान में नहीं समाता।

चार खूंट चारों हांसों, कई जिनसों फूल देखाए।
कई जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए।। ४४ ।।

फूलबाग का प्रत्येक बगीचा चौरस है और इनमें कई रंगों के फूल दिखाई देते हैं। कई तरह के पत्ते शोभा देते हैं जिनकी सुगन्धि फैल रही है।

फूल कहूं कई रंग के, गिनती न आवे सुमार।
ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूं इनो किनार।। ४५ ।।

कई रंग के फूल हैं जिनकी गिनती नहीं है। यहां पत्तों के रंगों की गिनती नहीं है तो किनारे की शोभा कैसे बताऊं?

Nijanand App

जानो के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास।
जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास।। ४६ ।।

लगता है कि यहां का तेज ही आकाश में भरा है। अच्छी तरह से जब नजर से देखें तो एक अजब ढंग की खूबी दिखाई देती है।

विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखड़ी पात।
कई जिनसें जुगतें कांगरी, नूर आगे देखी न जात।। ४७ ।।

जब विचार कर देखो तो फूल, पंखड़ी और पत्ते और पत्तों की कांगरी कई तरह से शोभा देती है। जिनके तेज के आगे देखा नहीं जाता।

कई जिनस जुगत रंग फूल में, कई जिनस जुगत पात रंग।
नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूं जुबां इन अंग।। ४८ ।।

नूरबाग में कई तरह के रंग एक फूल में दिखाई देते हैं और कई तरह के रंग एक पत्ते में दिखाई देते हैं। जब यहां हक, हादी, रूहें आती हैं, तो उस समय की खूबी का बयान यहां के अंग से कैसे करूं?

ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें जुदी जुदी कई जिनस।
कई एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस।। ४९ ।।

यह नूरबाग का बगीचा लम्बा-चौड़ा बराबर शोभा देता है। जिसके अन्दर तरह-तरह की शोभा है। कई रंग के बगीचे हैं और एक से दूसरा अच्छा लगता है।

एक एक दरखत में कई रंग, यों कई बगीचे विवेक।
कई बगीचे चेहेबच्चे, जानों जो देखों सोई विसेक।। ५० ।।

एक-एक पेड़ में कई रंग हैं। ऐसे कई बगीचे हैं। हर बगीचे में कई चहबच्चे हैं। जो देखें तो वही अच्छा लगता है। एक से दूसरे की शोभा विशेष है।

नेहेरें चलत कई बीच में, चेहेबच्चे बगीचों।
कई बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों।। ५१ ।।

चहबच्चों और बगीचों में नहरें चलती हैं। कई तरह के फव्वारे चलते हैं। कई तरह की बैठकें बनी हैं।

कई मोहोल मन्दिरों चबूतरे, इत बने हैं बनके।
इत हक हादी रूहें बैठक, अति ठौर खुसाली ए।। ५२ ।।

यहां कई महल, मन्दिर और चबूतरे पेड़ों के ही बने हैं। जहां श्री राजश्यामाजी और रूहों की बैठक होती है और बड़ा आनन्द आता है।

चारों खूंटों बड़े चार चेहेबच्चे, तिन हर एक में कई कारंज।
सब नेहेरें तहां से चलें, वह चेहेबच्चों भरया जल गंज।। ५३ ।।

फूलबाग के चारों कोनों पर चार बड़े चहबच्चे हैं। प्रत्येक में फव्वारे छूटते हैं। सभी नहरें वहां से चलती हैं। चहबच्चों में बेशुमार जल भरा है।

Nijanand App

पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस।
ए सोभा इन जुगतें, याको क्यों कहूं रूप रंग रस।।५४ ।।

एक-एक बगीचा पांच-पांच हांस (१५० मन्दिर) का लम्बा-चौड़ा है। पचास हांस में इस तरह से दस बगीचे आए हैं। यहां की शोभा का रूप और रंग कैसे बयान करूं?

ए बड़ा बाग ऊपर चबूतरे, तापर बन की दिवाल।
ए नूर फूलन का क्यों कहूं, सेत स्याम नीले पीले लाल।।५५ ।।

फूलबाग रंग महल के पच्छिम में नूरबाग की छत पर है। इसके तीनों तरफ (उत्तर, पच्छिम और दक्षिण) बड़े वन के पांच वृक्ष घूमते हैं। यहां के फूल सफेद, नीले, पीले, लाल शोभा देते हैं। इनका बयान कैसे करूं?

तले तीन तरफ मेहेराव, ए जो कही दिवाल गिरदवाए।
ऊपर दिवालें बनकी, ए सिफत कही न जाए।।५६ ।।

फूलबाग के नीचे, उत्तर, पच्छिम, दक्षिण में बड़े वन की पांच पेड़ों की मेहराबें आई हैं। ऊपरा ऊपर भी पांच भोम तक वन की दीवारें हैं। इनकी शोभा कहने में नहीं आती।

इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत।
ए बाग नेहेरें देखते, नैना क्योंए ना होंए तृपित।।५७ ।।

इन सौ बगीचों के चहबच्चों की अलग-अलग हकीकत है। इस बाग की नहरों को देखकर नेत्र तृप्त नहीं होते।

जो बाग तले चबूतरा, सो छाया बीच दरखत।
बीच अर्स के उसी जुबां, हक आगूं होए सिफत।।५८ ।।

इस फूलबाग के चबूतरे के नीचे नूरबाग आया है। इस पर भी बड़े वन के पांच वृक्षों की छाया आई है। परमधाम के बीच में श्री राजजी के सामने ही इसकी सिफत का बयान हो सकेगा।

ए बिरिख जो अर्स भोम के, सो अर्से के हैं नंग।
ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूं तरंग।।५९ ।।

यह परमधाम के वृक्ष परमधाम के ही नगों के अनुसार हैं। इनके तेज की तरंगों का वर्णन यहां की जबान से सम्भव नहीं है।

जिमी तले जो दरखत, एह जिनस कछू और।
खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूं ए ठौर।।६० ।।

इस फूलबाग के नीचे नूरबाग के पेड़ों की कुछ अलग ही हकीकत है। यहां के फल, फूल, पत्तों की शोभा कैसे कहूं?

रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूं ए बन।
फल फूल पात तले जिमी, जानों सूर हुए रोसन।।६१ ।।

नूरबाग के रंग, खुशबू, फल, फूल और पत्ते तथा जमीन ऐसी तेजमयी है, लगता है कई सूर्य चमक रहे हैं। इसकी शोभा कैसे कहूं?

Nijanand App

कई नेहेरें कई चेहेबच्चे, कई कारंजें जल उछलत।
कई मोहोल माहें बैठकें, हक हादी रूहें खेलत।।६२ ।।

नूरबाग में कई तरह की नहरें चलती हैं। फव्वारे चलते हैं। कई महल हैं। कई बैठकें हैं। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों के खेलने की जगह हैं।

तले बाग जो दरखत, बड़ा बन गिरदवाए।
चारों खूंटों बराबर, खूबी जरे की कही न जाए।।६३ ।।

इस बाग को घेरकर तीनों तरफ बड़े वन के पांच वृक्ष आए हैं। बगीचा लम्बा-चौड़ा बराबर है। यहां के एक कण की शोभा वर्णन करने में नहीं आती।

तो क्यों कहूं सारे बाग की, जिन की खूबी कही ए।
ऐसा जरा कह्या जिनका, तो क्यों कहूं ठौर हक के।।६४ ।।

तो फिर बगीचे की शोभा कैसे वर्णन करूं जिसकी इतनी बड़ी सिफत है। बगीचे के एक जर्रे की इतनी खूबी है तो फिर श्री राजजी महाराज की बैठकों की खूबी कैसे बताई जाए?

जेता बाग ऊपर, तेता तले विस्तार।
चारों खूटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार।।६५ ।।

जैसा बाग ऊपर फूलबाग है वैसा ही बाग नूरबाग है। नीचे का लम्बा-चौड़ा बराबर है। इसकी सिफत बेशुमार है।

अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए।
वह खूबी इन मुख से, मोपे कही न जाए।।६६ ।।

ऊपर वाले बाग की खूबी अधिक है और नीचे वाले बाग की उससे भी अधिक है। यहां मेरे मुख से उसका वर्णन नहीं होता।

बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास।
यों मोहोलातें सौ बाग की, कहूं किन विध खूबी खास।।६७ ।।

पांच-पांच हांस (१५० मन्दिर) के दस बगीचे हैं। इस तरह से पचास हांस की लम्बी-चौड़ी शोभा बनती है जिसके सौ बगीचे हुए। इन सौ बागों की खूबी कैसे कहूं?

चारों तरफों चलती, नेहेरें बीच बाग के।
बीच मेहेरावों से देखिए, सोभित बिरिखों तले।।६८ ।।

बगीचों के बीच चारों तरफ नहरें चलती हैं और बड़े वन के वृक्षों की मेहराब से देखें तो शोभा बेशुमार है।

पचास हांस तरफ बाग के, हर हांसें तीस मन्दिर।
मेहेराव बीच झरोखा, तीन तीन सबों अन्दर।।६९ ।।

रंग महल के पच्छिम दिशा के पचास हांस में तीस-तीस मन्दिर आए हैं। एक मन्दिर में दो-दो मेहराब और एक-एक झरोखा शोभा देता है।

Nijanand App

इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोंचिए जाए।
मोहोल मेहेरावों देखिए, बाग इतथें और सोभाए।।७०।।

रंग महल के नैरित कोने के चहबच्चे से चलकर वायब कोने के चहबच्चे के कोने तक पहुंचें। बीच में रंग महल की मेहराबों को देखिए तो इन मेहराबों से बाग की शोभा अधिक दिखाई देती है।

एक एक मन्दिर में आए के, फेर देखिए गिरदवाए।
इन विध रूहें देखिए, उलट अंग न समाए।।७१।।

रंग महल एक-एक मन्दिर से घूमकर देखें तो अंग में खुशी समाती नहीं है, ऐसी शोभा है।

ए बाग मेहेराव देख के, आए बड़े चेहेबच्चे।
आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं मैं ए।।७२।।

यहां के बाग और मेहराब देखकर वायब कोने के बड़े चहबच्चे के पास आए और आगे उत्तर दिशा में लाल चबतूरे की शोभा की हकीकत कैसे कहूं?

चालीस हांसों चबूतरा, बड़े मेहेराव इन पर।
देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर।।७३।।

लाल चबूतरा चालीस हांस में है और इसके ऊपर बहुत मेहराब आए हैं। चबूतरे की खूबी अद्‌भुत है।

तीन हजार छे सै बने, मेहेराव बराबर।
सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर।।७४।।

रंग महल के एक-एक मन्दिर में तीन-तीन मेहराब होने से तीन हजार छः सौ मेहराब इन चालीस हांसों में आए हैं। इनकी शोभा कैसे बयान करें?

ए ठौर सोभा अति बड़ी, और बन विस्तार।
ए ठौर बैठक बड़ी, पसु पंखी खेलें अपार।।७५।।

इस लाल चबूतरे के ऊपर चालीस सुन्दर बैठकें बनी हैं। आगे बड़े वन का विस्तार है। यहां पर पशु-पक्षी बेशुमार खेल खेलते हैं।

अति खूबी आगूं कठेड़े, हांसों चालीसों सोभित।
देखत अर्स आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत।।७६।।

चालीस हांसों के आगे लाल चबूतरे पर सुन्दर कठेड़ा शोभा देता है। परमधाम की आंखों से देखकर वहीं की जबान से इस शोभा का बयान हो सकता है।

जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल।
पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल।।७७।।

यहां की शोभा अलग-अलग तरीके की है। फल, फूल, पत्ते, रंग सब देखकर मन बहुत प्रसन्न होता है।

हर मन्दिर माहें आए के, चढ़िए हर झरोखे।
जब आइए हर झरोखे, तब खूबी देखो बाग ए।।७८।।

लाल चबूतरे की ऊपर की भोमों में आकर झरोखे में चढ़कर देखें तो सामने बड़े वन के सुन्दर ग्यारह भोम ऊंचे पेड़ दिखाई देते हैं।

Nijanand App

बड़े मेहेराव बराबर, एक दूजे को लगता।
हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सब्द में बका।।७९ ।।

लाल चबूतरे के ऊपर के एक-एक मन्दिर की तीन-तीन बड़ी मेहराबें आई हैं, जिनकी शोभा शब्दों में नहीं कही जाती।

एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड़ दरखत।
ए ठौर बरनन करते, हाए हाए छाती नाहीं फटत।।८० ।।

इस भोम की तथा इस चबूतरे की और साथ में लगते पेड़ों की शोभा वर्णन करने में हाय! हाय! छाती फट क्यों नहीं जाती?

आगूं भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान।
गिरदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान।।८१ ।।

चबूतरे के आगे वनों की शोभा पुखराज पहाड़ तक घेरकर आई है। जहां की जमीन पर श्री राजजी महाराज खेलते हैं।

जिमी ऊंची नीची कहूं नहीं, बराबर एक थाल।
पसु पंखी सब में खेल हीं, ए खेलौने नूर जमाल।।८२ ।।

जमीन ऊंची-नीची कहीं नहीं है। सब एक समान समतल है। इन सबमें पशु-पक्षी खेल करते हैं जो श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं।

बड़ा बन ऊंचे हिंडोले, तले हाथी जात आवत।
कहूं केते बड़े जानवर, इन चौगान खेल करत।।८३ ।।

बड़े वनों में ऊंचे-ऊंचे हिंडोले हैं जिनके नीचे हाथी आते-जाते हैं और कितनी ही बड़े जानवर इन अखाड़ों में खेल करते हैं।

बाघ केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर।
हर जातें जातें कई जिनसें, कहूं कहां लग खेल जानवर।।८४ ।।

बाघ, केसरी (सिंह), चीता, मोर, मुर्गा, बन्दर हैं और कहां तक कहूं? कई जातियों के जानवर खेलते हैं।

हर जिनसें कई खेलत, एक एक में खेल अपार।
खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें कई विध जुबां न सुमार।।८५ ।।

हर जाति के जानवर कई प्रकार के खेल खेलते हैं। जहां कई कूदकर, कई नाचकर, कई उड़कर, कई गाकर, खेल खेलते हैं जो जबान से कहा नहीं जा सकता।

इन मुख सोभा क्यों कहूं, और क्यों कहूं सोभा जिकर।
सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर।।८६ ।।

इस मुख से इस हकीकत की शोभा का वर्णन कैसे कहूं? इन पशु-पक्षियों के चित्रों की शोभा का वर्णन मिटने वाली जबान से कैसे हो?

Nijanand App

सोभा कही न जाए दरखतों, और कही ना जाए इन भोम।
जो देखो सोभा पसुअन की, करे रोसन अति एक रोम।।८७।।

वृक्षों की, इस भोम की, पशु-पक्षियों की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता। इनका एक-एक रोम तेज मयी है।

कई नाचत नट बांदर, कई बाजे बजावत।
ए खेलौने हक हादीय के, केहेनी जुबां क्यों पोहोंचत।।८८।।

कई बन्दर नट का खेल करते हैं, कई बन्दर बाजे बजाते हैं। यह श्री राज श्यामाजी के खिलौने हैं, इनकी शोभा कहनी में नहीं आती।

चढ़ ऊंचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत।
ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूं सिफत।।८९।।

यह बन्दर गुलाटियां लेते हुए ऊपर चढ़ते हैं तथा गुलाटियां लेते हुए नीचे उतरते हैं। यह तरह-तरह की नट विद्या का खेल करते हैं तो इनकी सिफत का बयान कैसे करें?

कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पड़ताल।
नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल।।९०।।

कई बन्दर कूदते हैं, कई नाचते हैं, कई छलांगें लगाते हैं, कई भमरी खाकर पैरों की पड़ताल देते हैं, ऐसी नई-नई कलाएं देखकर श्री राजश्यामाजी और रूहें खुश होती हैं।

चढ़ कूदें कई दरखतों, पेड़ पेड़ से पेड़ ऊपर।
तले जो अंत्रीख आए के, फिरत चढ़त ऊंचे उतर।।९१।।

कई बन्दर कूदकर वृक्षों पर चढ़ते हैं, कई एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाते हैं, कई ऊपर से नीचे आकर फिर ऊपर चढ़ते हैं।

जंत्र बेन बजावहीं, रबाब ताल मृदंग।
अमृत सारंगी झरमरी, झांझ तंबूरा चंग।।९२।।

कई बन्दर यन्त्र, बांसुरी, रबाब, करताल, मृदंग, झरमरी (करताल की झाल) झांझ, तंबूरा, चंग (खंजड़ी) तथा मीठे स्वर में बोलने वाली सारंगी बजाते हैं।

सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कई बजाए।
तुरही रनसिंघा महुअर, और नगारे करनाए।।९३।।

कई शहनाइयां, भेरी, नफेरी, तुरही, रणसिंघा, महुवर, नगाड़े, और लम्बे बिगुल, आदि कई तरह के बाजे बजाते हैं।

लेत तले से गुलाटियां, चढ़त जात आसमान।
उतरें भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटों दे तान।।९४।।

बन्दर नीचे से गुलाटियां खाते हुए आसमान तक चढ़ते हैं और फिर गुलाटियां खाते हुए बाजों की तान के साथ नीचे उतरते हैं।

Nijanand App

अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत।
इन विध लेत भमरियां, यों कई विध केलि करत।। ९५ ।।

कई अधबीच से गुलाटियां खाते हुए घूम जाते हैं और कई भंवरी फिरकर तरह-तरह के खेल करते हैं।

देखो बन्दर खेल अर्स में, बड़ा देख्या अचरज ए।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगूं होत है जे।। ९६ ।।

परमधाम के इन बन्दरों का खेल बड़ा अदभुत होता है जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के आगे उनको प्रसन्न करने के लिए करते हैं। उसकी खूबी कैसे कहूं?

ए नट विद्या कई नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत।
ए खेल अचम्भा देख के, हक हादी रूहें राचत।। ९७ ।।

कई बन्दर नट विद्या से, कई नाचकर, कई दिल चाहे बाजे बजाते हैं। इनके इस चकित करने वाले खेल को देखकर श्री राजश्यामाजी और रूहें बड़े खुश होते हैं।

इत आगूं लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं बन विस्तार।
खेल पसु पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार।। ९८ ।।

इस लाल चबूतरे के आगे वन की भोम का विस्तार कैसे बताऊं? पशु-पक्षियों के खेल का जबान तब वर्णन करे जब इनकी कोई सीमा हो।

बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें सियाहगोस।
सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस।। ९९ ।।

बाघ, केसरी, सिंह चीता, सियार (गीदड़) सब अपनी-अपनी कलाओं से इश्क के जोश में खेलते हैं।

हर खांचें जातें जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत।
गाए नाचें जिकर करें, हर भांतें रूहों रिझावत।। १०० ।।

हर अखाड़े में अपनी अलग-अलग जातियों के अपनी-अपनी कलाओं से गाकर, नाचकर और जिक्र कर रूहों को रिझाते हैं।

हाथी घोड़े बैल बकर, साम्हर चीतल हरन।
मेढ़े पाड़े पस्वड़े, कई खेलें ऊंट अरन।। १०१ ।।

हाथी, घोड़े, बैल, गाय, साम्हर, चीता, हिरन, भेड़, पाड़ा (भैंसा) ऊंट, और जंगल के कई जानवर खेलते हैं।

चालीस हांसों की ए कही, करें आप अपना खेल।
छोड़ें न हांस मरजादा, हक आगे करें सब केलि।। १०२ ।।

यह सब इन चालीस हांसों के अखाड़ों में अपना-अपना खेल दिखाते हैं और अपने-अपने अखाड़े से बाहर नहीं जाते। सब श्री राजजी महाराज के आगे खेलते हैं।

दस हांसें बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे।
तित ढिग दो दो मेहेराव, खूबी लेत बन पर ए।। १०३ ।।

उत्तर की दिशा में बाकी दस हांसों के मन्दिर में झरोखे हैं। इनके पास दो-दो मेहराबें हैं। जिनकी खूबी ताड़वन में शोभा देती है।

Nijanand App

एक सौ दस छेल्ली हार के, ए जो मोहोल भुलवनी के।
एक सौ दस चारों तरफों, ए जो बारे हजार कहे।। १०४ ।।

मन्दिर की दूसरी हार के बाद एक सौ दस मन्दिरों की एक सौ दस हारें, अर्थात् बारह हजार एक सौ मन्दिर भुलवनी के आए हैं। मध्य में सौ मन्दिर का कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है जिस पर श्री राजश्यामाजी का सिंहासन है।

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मन्दिर।
चालीस चेहेबच्चे परे, अस्सी बीच तीस अन्दर।। १०५ ।।

लाल चबूतरे से खड़ोकली तक चालीस मन्दिर आते हैं और चालीस ही मन्दिर खड़ोकली के पूरब दिशा, दूसरी तरफ आते हैं। इन अस्सी मन्दिरों के बीच में तीस मन्दिर की खड़ोकली है। इस तरह से एक सौ दस मन्दिर हुए।

तीस चेहेबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे।
चार चार द्वार हर मन्दिरों, मुख क्यों कहूं सोभा ए।। १०६ ।।

खड़ोकली के चहबच्चे के सामने तीस मन्दिरों के तीस झरोखे आए हैं और हर मन्दिर में चार-चार मेहराबें हैं। इनकी शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

इत लगते जो मन्दिर, हारें भुलवनी।
केहे केहे मुख कहा कहे, सोभा अतंत घनी।। १०७ ।।

इन मन्दिरों के सामने ही भुलवनी के मन्दिरों की हारें हैं जिनकी शोभा बहुत अधिक है। इस मुख से कहां तक कहें?

छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसें पोहोंची लग पचास।
एक झरोखा दो मेहेराव, ए जो फिरती खूबी खास।। १०८ ।।

इस भुलवनी के मन्दिर के आगे पूरब दिशा में जहां तक पचास हांस होते हैं, एक सौ नब्बे मन्दिर आए हैं। उनमें एक-एक झरोखा और दो-दो मेहराबों की खूबी आई है।

ए मोहोल फिरते बन ऊपर, ए जो सोभा लेत हैं इत।
बन झरोखे सोभा तो कहूं, जो होए निमूना कहूं कित।। १०९ ।।

इन मन्दिरों के सामने ताड़वन की शोभा है। इस वन की तथा झरोखों की शोभा का वर्णन तब हो सकता है जब कोई नमूना हो।

ए जो घाट अनार का, आए मिल्या दिवाल।
ए खूबी क्यों कहूं इन जुबां, रूह देखत बदले हाल।। ११० ।।

पूरब दिशा में अनार का घाट रंग महल की दीवार को लगता है। जिसकी खूबी देखकर रूहों की हालत बदल जाती है।

घाट लिबोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए।
खूबी ताड़ बन की, क्यों कहूं बल जुबां के।। १११ ।।

इस अनार घाट से उत्तर की तरफ लिबोई का घाट तथा पच्छिम में ताड़वन के हिंडोले आए हैं। ताड़वन की खूबी यहां की जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

केल बन आगूं चल्या, मधु बन मिल्या आए।
इत सोभा बड़े बन की, इन अंग मुख कही न जाए।। ११२ ।।

लिबोई बन के आगे केले का वन है और उसके आगे मधुवन आकर मिलता है। इस बड़े वन की शोभा यहां के मुख से कैसे हो?

और हांसें पचास जो, आगूं बड़े दरबार।
सोभित झरोखे मेहेराव, आगूं चौक सोभे बन हार।। ११३ ।।

रंग महल के आगे पचास हांस हैं जिनके अन्दर झरोखे और मेहराब की शोभा है। आगे चांदनी चौक और वनों की हारें दिखाई देती हैं।

ए जो बड़ी कही पड़साल, ऊपर बड़े द्वार।
दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार।। ११४ ।।

धाम-दरवाजे के ऊपर तीसरी भोम में छज्जे के ऊपर बड़ी पड़साल आई है। इस पड़साल के नीचे दोनों तरफ दस-दस थंभ आए हैं जिनमें एक-एक रंग के चार-चार थंभ हैं।

सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सो जंग।
बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कई तरंग।। ११५ ।।

दस थंभ दीवारों में अक्सी है, जिनकी तरंगें आमने-सामने टकराती हैं। चबूतरे के यह बीस थंभों के रंग आमने-सामने एक से हैं। उनमें कई रंगों की तरंगें उठती हैं।

जो थंभ आगूं द्वार ने, अति उज्जल हीरों के।
दोऊ तरफों जोड़े चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते।। ११६ ।।

दरवाजे के दोनों तरफ चार थंभ हीरों के हैं। उन चारों थंभों के बाद चार थंभ माणिक के आए हैं।

तिन जोड़े भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज।
तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बिराज।। ११७ ।।

माणिक से आगे चार थंभ पीले रंग पुखराज के आए हैं और उनके आगे चार थंभ पाच के (हरे रंग के) शोभा देते हैं।

चारों खूंटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए।
पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोड़े।। ११८ ।।

चारों कोने के चार थंभ नीलवी (नीलम) के शोभा लेते हैं। इस तरह से पांच रंग के थंभों के दस जोड़े, अर्थात् बीस थंभ हैं।

ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर।
कटाव किनारे कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर।। ११९ ।।

इन बीस थंभों के तेज का कैसे बयान करूं? इनके किनारे पर कांगरी और कटाव बने हैं जिसकी शोभा और बढ़ गई है।

Nijanand App

चार चार मेहेराव दाएं बाएं, आठ हुए तरफ दोए।
सोभा आगूं बड़े द्वार के, सो इन मुख खूबी क्यों होए।। १२० ।।

चार-चार मेहराब दाएं-बाएं हैं, इसलिए इसमें कुल १०८ मेहेराब हुए। इस बड़े दरवाजे के आगे की शोभा इस मुख से कैसे कहूं?

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, ए जो लगते दिवाल।
तीनों तरफों कठेड़ा, क्यों देऊं इन मिसाल।। १२१ ।।

दीवार को लगते हुए दोनों तरफ यह दो चबूतरे हैं, जिनके तीन तरफ कठेड़ा है। इनका नमूना कैसे बताऊं?

कठेड़ा रंग कंचन, जानों के मीना माहें।
सोभा लेत थंभ कठेड़े, ए केहे न सके जुबांए।। १२२ ।।

कठेड़ा कंचन रंग का है, लगता है मीनाकारी कर रखी है। यहां के कठेड़ों की सुन्दर शोभा है जो इस जबान के कहने में नहीं आती।

कई रंग जवेर चबूतरों, कई दिवालें रंग नंग।
ऊपर तले का नूर मिल, करत अंबर में जंग।। १२३ ।।

चबूतरों में कई रंग के जवेर (जवाहरात) झलक रहे हैं। इसी तरह से दीवारों में कई तरह के रंग के नग जड़े हैं। ऊपर, आगे, नीचे की दोनों की तरंगों की रोशनी आकाश में टकराती है।

ए अर्स नूरजमाल का, तिन अर्स बड़ा दरबार।
एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार।। १२४ ।।

यह श्री राजजी महाराज का बड़ा दरबार है जिसके नूर का तेज आकाश में नहीं समाता।

आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पड़साल।
जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियां लाल।। १२५ ।।

दरवाजे के ऊपर आठ भोम में आठ पड़सालें आई हैं जो ऊपर चांदनी तक हैं। उसके ऊपर लाल लाल गुमटियां हैं।

ए सोभा अचरज अदभुत, जानें अर्स अरवाए।
इन भोम रूह सो जान हीं, जिन मोमिन कलेजे घाए।। १२६ ।।

शोभा बड़ी चकित करने वाली अदभुत है। उसे अर्श की रूहें जानती हैं उन्हीं के कलेजों में इन वचनों को सुनकर घाव लगते हैं।

आगूं तले चौक चांदनी, उतर जाइए सीढ़ियन।
आगूं दोए चबूतरे चौक के, ऊपर हरा लाल दोऊ बन।। १२७ ।।

आगे नीचे चांदनी चौक है, जहां पर सीढ़ियों से उतरकर जाएं। चांदनी चौक में दो चबूतरे हैं जिनके ऊपर हरे और लाल वृक्ष आए हैं।

इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर।
इन जुबां खूबी क्यों कहूं, ए जो बन में करें जिकर।। १२८ ।।

इस चांदनी चौक में जानवर मुजरा (दर्शन, प्रणाम) करने आते हैं और वह आपस में जो जिक्रे सुभान करते हैं, उसकी महिमा कैसे बताएं?

Nijanand App

ए जो रस्ता बन का, जोए जमुना लग किनार।
सात घाट दोए पुल बीच में, कई चौक बने कई हार।। १२९ ।।

रंग महल के दरवाजे से बिल्कुल सामने से अमृत वन में होते हुए सीधा जमुनाजी तक रास्ता जाता है। सात घाट और दोनों पुलों के बीच में कई-कई चौक की हारें आई हैं।

द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर।
जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर।। १३० ।।

रंग महल के दरवाजे के सामने का रास्ता बराबर सीधा पाट घाट तक जाता है और जमुनाजी के पार सीधा अक्षरधाम तक जाता है। इस तरह परमधाम और अक्षरधाम के दरवाजे आमने-सामने हैं।

ऊपर पाट चौक चांदनी, चारों खूटों अति सोभाए।
नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गिरदवाए।। १३१ ।।

पाट घाट के ऊपर चौरस चांदनी है जिसके चारों खूंटों की अधिक शोभा है। यहां बारह थंभ पांच रंग के नगों के शोभा देते हैं जिनकी तरंगें आपस में टकराती हैं।

चारों तरफों थंभ दो दो, जानों बने चार द्वार।
मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार।। १३२ ।।

चारों तरफ दो-दो थंभों से बने माणिक, हीरा, पाच, पुखराज के नगों के चार दरवाजे शोभा देते हैं।

नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए।
दोए थंभ पाच दिस अर्स के, थंभ पोखरे केल दिस सोए।। १३३ ।।

अक्षरधाम की तरफ दो थंभ मानिक के हैं। बट घाट की तरफ दो हीरे के हैं। रंग महल की तरफ दो थंभ पाच के हैं और केल के घाट की तरफ दो थंभ पुखराज के हैं।

चार थंभ चार खूंट के, नीलवी के झलकत।
ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जल सों जंग करत।। १३४ ।।

चार कोने के चार थंभ नीलवी के झलकते हैं। इस तरह से इन बारह थंभों का प्रतिबिम्ब जल में पड़ता है।

सोभा लेत अति कठेड़ा, ऊपर ढांप चली किनार।
सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार।। १३५ ।।

किनारे पर सुन्दर कठेड़ा है और जमुनाजी के तीन घड़नाले नीचे से जाते हैं। ढके जल में प्रतिबिम्ब की तरंगें लहरों के साथ टकराती हैं।

ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर।
और उठत जोत बन की, नूर अर्स कहूं क्यों कर।। १३६ ।।

रंग महल और अक्षरधाम के बीच में दोनों तरफ के पाट घाट की जोत आकाश में टकराती है। वन की जोत उठती है। अक्षरधाम और रंग महल की तरंगों का कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर।
देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर।। १३७ ।।

अक्षरधाम और परमधाम की जमीन और आकाश सब नूर का है, इसलिए जहां तक नजर डालो दूर तक नूर ही नूर दिखाई देता है।

सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल।
इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील।। १३८ ।।

अब आगे की शोभा वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते। यहां जबराईल फरिश्ता भी कहता है कि मेरे पर जलते हैं, आगे नहीं जा सकता। यहां पर परमधाम की रहने वाली असल रूहें ही आती हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल।
एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल।। १३९ ।।

श्री महामतिजी जी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो यह अक्षरातीत नूरजमाल का घर है। इसी को अर्शे अजीम कहते हैं और इसी महल में अनोखी रूहें रहती हैं।

|| प्रकरण || ३४ || चौपाई || १९५६ ||

नूर परिकरमा अंदर दस भोम || मंगला चरन ||

बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर में आठों पहर श्री श्यामाजी महारानी और सखियां अखण्ड घर परमधाम में रात-दिन सुख में रहती हैं।

तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग।। २ ।।

परमधाम के जरा से तिनके से लेकर जमीन, वृक्ष, बाग, फल, फूल, पत्ता सब नूर का ही है। जहां सखियां नित्य आराम से रहती हैं।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग।। ३ ।।

जमुनाजी का किनारा, जल की तरंगें, जल पर बनी मोहोलातें सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं। नूर के रंगों का कैसे बयान करूं?

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल।। ४ ।।

कुंज, निकुंज, वन, जमीन, जल, हौज कौसर, तालाब, टापू महल और पाल के महल सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं।

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए।
नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए।। ५ ।।

सागर के किनारे की सीढ़ियां, चबूतरा, महल, मेहराब जो घूमकर आए तथा वनों के, जल पर पड़ने वाले प्रतिबिम्ब सभी नूर के हैं।

Nijanand App

नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर।
देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर।। १३७ ।।

अक्षरधाम और परमधाम की जमीन और आकाश सब नूर का है, इसलिए जहां तक नजर डालो दूर तक नूर ही नूर दिखाई देता है।

सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल।
इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील।। १३८ ।।

अब आगे की शोभा वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते। यहां जबराईल फरिश्ता भी कहता है कि मेरे पर जलते हैं, आगे नहीं जा सकता। यहां पर परमधाम की रहने वाली असल रूहें ही आती हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल।
एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल।। १३९ ।।

श्री महामतिजी जी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो यह अक्षरातीत नूरजमाल का घर है। इसी को अर्शे अजीम कहते हैं और इसी महल में अनोखी रूहें रहती हैं।

|| प्रकरण || ३४ || चौपाई || १९५६ ||

नूर परिकरमा अंदर दस भोम || मंगला चरन ||

बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर में आठों पहर श्री श्यामाजी महारानी और सखियां अखण्ड घर परमधाम में रात-दिन सुख में रहती हैं।

तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग।। २ ।।

परमधाम के जरा से तिनके से लेकर जमीन, वृक्ष, बाग, फल, फूल, पत्ता सब नूर का ही है। जहां सखियां नित्य आराम से रहती हैं।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग।। ३ ।।

जमुनाजी का किनारा, जल की तरंगें, जल पर बनी मोहोलातें सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं। नूर के रंगों का कैसे बयान करूं?

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल।। ४ ।।

कुंज, निकुंज, वन, जमीन, जल, हौज कौसर, तालाब, टापू महल और पाल के महल सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं।

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए।
नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए।। ५ ।।

सागर के किनारे की सीढ़ियां, चबूतरा, महल, मेहराब जो घूमकर आए तथा वनों के, जल पर पड़ने वाले प्रतिबिम्ब सभी नूर के हैं।

Nijanand App

नूर जरे तिनके का, मैं नूर कह्या दिल धर।
नूर समूह की क्यों कहूं, रूहें नूर देखें सहूर कर।। ६ ।।

एक तिनके की रोशनी का मन में विचार करके वर्णन किया था। फिर जहां चारों तरफ हर चीज नूर ही नूर की है वहां रूह चित्त में विचार करके उसका अनुभव ही कर सकती है।

सुपेत जिमी नूर झलके, नूर आकास लग भरपूर।
नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर।। ७ ।।

पाल के ऊपर की जमीन का नूर आकाश तक जगमगाता है जो सफेद रंग का है। उसकी किरणें आकाश की किरणों से टकराती हैं। जिनके नूर की शोभा कैसे कहूं?

नूर बाग हिंडोले रोसन, बिना हिसाबें नूर के।
हक हादी रूहें नूर में, नूर हींचें अर्स लगते।। ८ ।।

बगीचों के हिंडोले तथा बगीचों के नूर की शोभा बेहिसाब है। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें इन नूर के हिंडोलों में झूलती हैं जो रंग महल से लगते हैं।

हक बड़ी रूह हींचें नूर में, और रूहें नूर बारे हजार।
जोत नूर आकास में, नूर भरयो करे झलकार।। ९ ।।

श्री राजश्यामाजी तथा बारह हजार रूहें जब नूर के झूलों में झूलती हैं तो इनकी झलकार नूरमयी आकाश में नहीं समाती।

खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर।
क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर।। १० ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपनी नूरी आंखें खोलकर ऐसी नूरमयी शोभा को बार-बार देखकर नूर में गर्क क्यों नहीं हो जाती?

ए रोसन करत कौन नूर की, नूर केहेत आगे किन।
केहेत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमिन।। ११ ।।

इस नूर की रोशनी को कौन किसके आगे, किसका नूर कहता है और मोमिन किसके नूर की बातें करते हैं?

देखो मोहोलातें नूर की, अंदर सब पूर नूर।
कहां लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर।। १२ ।।

नूर की मोहोलातों को देखो जिनके अन्दर सब नूर ही नूर की शोभा है। यहां की हर चीज नूर की है जिसकी शोभा कैसे कहूं?

सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहें।
नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहें।। १३ ।।

महलों के अन्दर-बाहर सब चीजें नूर ही नूर की हैं। नूर बिना कुछ नही है।

Nijanand App

नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार।
नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार।। १४ ।।

जो कुछ दिखाई पड़ता है या विचार में आता है, सब श्री राजजी महाराज का ही नूर है। सेज्या के सुख, नूरी अंग के सिनगार सब नूर के हैं।

नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर।
इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर।। १५ ।।

खाना, पीना, बातें करना, अंग से इश्क का आनन्द लेना सब नूर के ही हैं।

गुन अंग सब नूर के, नूर इन्द्री नूर पख।
रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख।। १६ ।।

गुण, अंग, इन्द्रियां, पक्ष (अंतःकरण), रीति, रस्म, प्रेम, प्रीति सब नूर के ही दिखाई देते हैं।

आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर।
रंग रुत नूर वाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर।। १७ ।।

आसमान, जमीन, तारे, चन्द्रमा, सूर्य, रंग, ऋतु, हवा, बादलों का गर्जना, बिजली का चमकना, यह सब नूर की ही शोभा है।

मोहोल मन्दिर सब नूर में, झांखन झरोखे नूर।
द्वार दिवालें नूर सब, सब नूर हजूर या दूर।। १८ ।।

महल, मन्दिर, झांकने के झरोखे, दरवाजे, दीवारें, पास के हैं या दूर के, सब नूर के हैं।

थंभ दिवालें नूर की, नूरै के झरोखे।
नूर सरूप माहें झांकत, नूर सब नूर देखें ए।। १९ ।।

थंभे, दीवारें, झरोखे तथा उन झरोखों से देखने वाले स्वरूप सब नूर के हैं।

मोहोल मन्दिर सब नूर के, नूर मेहेराव खिड़कियां द्वार।
नूर सीढ़ियां सोभा नूर की, बीच गिरदवाए नूर झलकार।। २० ।।

महल, मन्दिर, मेहराब, खिड़कियां, दरवाजे, सीढ़ियां सब नूर ही नूर की चारों तरफ झलकार है।

कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात।
नूर वस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात।। २१ ।।

रंग महल की नौ भोम, उनके अन्दर का साज-समान, वस्त्र, आभूषण तथा मोमिन जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं, सब नूर के ही हैं।

रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन।
नूर तन रहें जो आग में, तो भी नूर न जलें अगिन।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें नूर के हैं यही स्वरूप जल में स्नान करते हैं या खेलते हैं, तो भीगते नहीं हैं। इसी तरह से नूरी तन आग में नहीं जलते।

Nijanand App

कहे हक नूर बैठ नासूत में, करें नूर लाहूत के काम।
नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का नूर मृत्युलोक में बैठकर नूरी परमधाम (लाहूत) का काम करता है। नूर की ही रूहें इस संसार में नूरी परमधाम का आनन्द लेती हैं।

दिल मोमिन अर्स नूर में, नूर इस्क आग जलाए।
एक नूर वाहेदत बिना, और नूर आग काहूं न बचाए।। २४ ।।

मोमिनों का दिल श्री राजजी महाराज का अर्श है जहां इश्क की आग जलती है। यह सब नूर का है। नूर की आग से केवल मोमिनों को छोड़कर कोई नहीं बचता।

कई गलियां नूर पौरियां, कई नूर चौक चौबट।
नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावे पट।। २५ ।।

गलियां, मेहराबें, चौक, चौराहा सब नूर के हैं। जिनके दिलों में नूर रहता है तो उनके लिए सब नूर के दरवाजे खुल जाते हैं।

नूर सीढ़ियां नूर चबूतरे, नूरै के थंभ दिवाल।
बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल।। २६ ।।

सीढ़ियां, चबूतरे, दीवारें, थंभे तथा बीच की जगह भी सब नूर की है। इस नूर का बयान कैसे करूं?

बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर।
नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर।। २७ ।।

बाजे, बर्तन (पात्र) पलंग, चौकी सब नूर के हैं। नूर के बिना और कुछ नहीं है।

दसों दिसा सब नूर की, नूरै का आकास।
इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास।। २८ ।।

दसों दिशाएं नूर की हैं। नूर का आकाश है। नूर बिलन्द (परमधाम) की शोभा यहां की जबान से कैसे कहूं?

बाग जंगल राह नूर के, पसु पंखी नूर पूर।
ख्वाब जिमी में नूर अर्स की, नूर जुबां कहा करे मजकूर।। २९ ।।

बगीचे, जंगल, रास्ते, पशु, पक्षी सब नूर के हैं। इस सपने की जमीन में बैठकर नूरमयी धामों के नूर का वर्णन जबान कैसे करे?

होत नूर थें दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहें।
एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहें।। ३० ।।

और बात जो कुछ भी करते हैं, वह सब नूर की ही होती है। नूर के बिना और कुछ नहीं है। पूरा परमधाम श्री राजजी महाराज के नूर का ही नूर है।

नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम।
वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूरजमाल कदम।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे रूहो! नूर इलम लेकर नूरी नजर से स्वयं नूरमयी होकर नूरजमाल के नूरी चरणों को पकड़ो।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १९८७ ।।

Nijanand App

नूर परिकरमा अंदर तांई

नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूर के।
ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूं किनार बन ए।। १ ।।

अक्षरधाम की तरफ पाट घाट नूर का है। पाट घाट के बारह थंभ, ऊपर की चांदनी, किनारे के कठेड़े और वन सब नूर के हैं।

नूर घाट जांबू बन का, और नूर घाट नारंग।
बट घाट छत्री बन हिंडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग।। २ ।।

जांबू वन तथा घाट, नारंगी वन तथा घाट, बट घाट की छतरी व हिंडोले तथा दोनों पुल महल नूरी रंगों के शोभा देते हैं।

नूर किनारे रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार।
ताल हिंडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार।। ३ ।।

जमुनाजी के किनारे की रेती, महल, चबूतरे, किनारे, दोनों पुलों के बीच का ताल, पुलों के हिंडोले, वन, कुंज, निकुंज की अपार शोभा सब नूर की है।

नूर नेहेरें मोहोलों तले, नूर ढांपे चले अनेक।
नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक।। ४ ।।

महलों के नीचे नहरें नूर की हैं। बहुतेरी नहरें ढंपी चलती हैं जिनमें पानी चारों तरफ चलता है। यह सभी सुख नूर के हैं।

मोहोल मानिक पहाड़ नूर के, कई नेहेरें चादरें नूर ताल।
कई मोहोल हिंडोले नूर के, ए नूर देखे बदले हाल।। ५ ।।

मानिक पहाड़, मानिक महल, नहरें, पहाड़ के ऊपर का ताल, महल के अन्दर के हिंडोले सब नूर के हैं। ऐसे नूर को देखकर हालत बदल जाती है।

कहा कहूं हिंडोले नूर के, नूर रूहें झूलें बारे हजार।
इन बिध नूर हिंडोले, नाहीं न नूर सुमार।। ६ ।।

बड़े हिंडोले नूर के हैं। जहां बारह हजार रूहें मिलकर झूलती हैं। इस तरह से नूर बेशुमार है।

बन नूर नेहेरें ढांपी चली, कई नेहेरें बन नूर विस्तार।
कई नूर नेहेरें मिली सागरों, कई नूर नेहेरें आवें वार।। ७ ।।

वन की कुछ नहरें ढपी चलती हैं। कई नहरें वन में फैल कर चलती हैं। कई नहरें एक साथ मिलकर सागरों को जाती हैं। इस तरह से इन नूरी नहरों का शुमार नहीं है।

कई मोहोलातें इत नूर की, कई टापू नूर मोहोलात।
ए निपट बड़े मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात।। ८ ।।

यहां कई मोहोलातें नूर की हैं। टापू महल नूर के हैं। बड़ी रांग के महल नूर के हैं। इन सबका नूर आकाश में नहीं समाता।

Nijanand App

नूर परिकरमा दीजिए, फिरते जाइए नूर बन में।
बाग परे नूर अंन बन, आगूं बन बिना नूर जिमी ए।। ९ ।।

इन सबकी नूरी परिकरमा देकर नूर बाग में आ जाइए। इस बाग के आगे अन्न वन और उसके आगे दूब दुलीचा तथा पच्छिम की चौगान सब नूर के हैं।

दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान।
दूर लग नूर या विध, नूर खेलें इत चौगान।। १० ।।

दूब दुलीचे का नूर आसमान तक जाता है। नूरी पच्छिम चौगान में बहुत दूर तक श्री राजश्यामाजी और सखियां खेलते हैं।

आगूं बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुबन।
कई हिंडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन।। ११ ।।

आगे बड़ा वन, मधुवन, हिंडोलों का आसमान तक नूर ही नूर है।

नूर पांच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल।
ए आठों पहाड़ तले नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल।। १२ ।।

पुखराज के पांच पेड़, उत्तर पच्छिम की सीढ़ियां तथा पुखराजी ताल यह आठों पहाड़ के नीचे-ऊपर बेमिसाल महलों में नूर ही नूर की शोभा है।

हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान।
तापर मोहोल नूर आकासी,ए नूर आकास मोहोल सुभान।। १३ ।।

पुखराज पहाड़ के हजार गुर्ज, चांदनी, आकाशी महल सब श्री राजजी महाराज के नूर से हैं।

इत बड़े जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल।
इत निपट बड़ा खेल नूर का, हंसे रूहें हादी नूरजमाल।। १४ ।।

यहां पर बड़े-बड़े जानवर तथा उनके खेल सब नूर के हैं। जिन्हें देखकर रूहें खुश होती हैं। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें ऐसे नूर के बड़े खेल को देखकर हंसते हैं।

चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत।
सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हंसत।। १५ ।।

चारों तरफ के महल, पुखराजी ताल, पुखराजी ताल से अधबीच के कुण्ड में गिरने वाली सोलह चादरें सब नूर की हैं। जिन्हें देख-देखकर नूरी रूहें हंसती हैं।

तले बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत।
चारों तरफ बड़ी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित।। १६ ।।

पुखराजी ताल के नीचे बंगलों में चारों तरफ नहरें चलती हैं तथा चारों तरफ नहरें घूमती हैं। यह सब नूर की शोभा है जो और कहीं नहीं देखी।

इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कई उछलत।
खूब खुसाली नूर भरी, नूर हंसें खेलें रमत।। १७ ।।

बंगला, बगीचा, फव्वारे जहां रूहें हंसती खेलती हैं, सब नूर ही नूर की शोभा है।

Nijanand App

नूर बाहेर नेहेर आई कुंड में, आगूं नूर चबूतरे।
जोए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारे।।१८।।

बाहर से आने वाली नहर जो नूर के ढंपे चबूतरे से नूर कुण्ड में आती है। फिर आगे जमुनाजी ढंपी चलती हैं। किनारे पर नूरी महल बने हैं और किनारे सब नूर के हैं।

दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल।
नूर एक मोहोल एक चबूतरा, ए नूर देख होइए खुसाल।।१९।।

जमुनाजी के दो ढके किनारे नूर के हैं। जमुनाजी घूमकर हौज कौसर ताल की तरफ जाती हैं। वहां एक महल, एक चबूतरा सब नूर के हैं। जिन्हें देखकर खुशी होती है।

बड़ा बन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित।
जोए नूर आई पुल तले, सो क्यों कही जाए नूर सिफत।।२०।।

बड़ा वन महल और जमुनाजी जो केल पुल तक आई हैं, सब नूर के हैं। जिनका वर्णन हो नहीं सकता।

ए मोहोल नूरजमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर।
नूर नेहेरें दस घड़नाले, ए खूबी नूर जुबां कहे क्यों कर।।२१।।

जमुनाजी के ऊपर नूरजमाल श्री राजजी महाराज के नूर के दो पुल हैं और पुल के दस दरवाजों में से नूर के ही दस घड़नाले हैं। ऐसे नूर की सुन्दर खूबी का कैसे बयान करें?

केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार।
पोहोंची नूर पुल बराबर, आगूं लिबोई नूर अनार।।२२।।

केल घाट, केलों के गुच्छे, चौक, जमुनाजी के पुल तक का किनारा और आगे लिबोई तथा अनार के घाटों की सब शोभा नूर की है।

ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट।
अति सोभा आगूं छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट।।२३।।

जमुनाजी के केल पुल से आगे पाल पर केल, लिबोई और अनार घाट आए हैं। पाल के ऊपर पांच बड़े वन के पेड़ों के मध्य चार-चार चौकियां पचास-पचास मन्दिर की लम्बी-चौड़ी आई हैं और इनकी भोमें सब नूर की हैं। इसके आगे जल पर बने पाट घाट की छत्री की शोभा नूर की है।

नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर द्वार से आए फेर द्वार।
चारों खूंटों नूर थंभ नीलवी, नूर पाच रंग बारे सुमार।।२४।।

हीरा, माणिक, पाच, पुखराज तथा चारों कोने के चार नीलवी (नीलम) के थंभे पाट घाट में पांच रंगों के बारह थंभ शोभा देते हैं। यह सब नूर के हैं।

नूर नेहेरें तीन तले चलें, नूर पाट एता जल पर।
ठौर खेलन नूर जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर।।२५।।

पाट घाट के नीचे से जमुनाजी के तीन घड़नाले चलते हैं। यह श्री राजश्यामाजी और रूहों की खेलने की जगह है जो सब नूर की है।

Nijanand App

दोऊ पुल नूर सात घाट में, रूहें देखें नूर रोसन।
हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन।। २६ ।।

दोनों पुल, सात घाट देखकर रूहें खुश होती हैं। यहां पर पशु-पक्षी रात-दिन श्री राजजी महाराज का ही जिक्र करते हैं। यह सब नूर के हैं।

नूर भोम दूजी बैठक, पसु पंखियों एह नूर ठौर।
कई जिनसें नूर जिकर, बिना हक न बोले नूर और।। २७ ।।

वनों की दूसरी भोम में पशु-पक्षी रहते हैं जो सदा श्री राजजी महाराज के ही गुण गाते हैं और कुछ नहीं बोलते। यह सब नूर के हैं।

आगूं द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान।
नूर जंग होत सबों बीचों, कोई सके न नूर काहूं भान।। २८ ।।

धाम के दरवाजे के आगे की रेती का नूर आसमान तक जाता है। आसमान की तथा रेती की किरणें टकराती हैं। यह सब नूर की हैं। कोई भी किरण किसी किरण से कम नहीं है।

आगूं दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत।
लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जानें हक सिफत।। २९ ।।

चांदनी चौक के दो सुन्दर चबूतरे, दोनों पर लाल, हरे वृक्षों की शोभा कहने में नहीं आती। यह सब शोभा नूर की है।

नूर आगूं दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार।
हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूं सुमार।। ३० ।।

रंग महल के आगे चांदनी तक पचास हांसों में बेशुमार नूर ही नूर की शोभा है।

नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग।
खड़ियां आगूं नूर चांदनी, नूर देखें अर्स नूर अंग।। ३१ ।।

रंग महल का दरवाजा तथा सामने अक्षर धाम का दरवाजा नूरी है। दोनों की नूरी किरणें आपस में टकराती हैं। सखियां चांदनी चौक में खड़ी होकर इस नूरी शोभा को देखती हैं।

नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलवी नूर थंभ।
नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ।। ३२ ।।

हीरा, माणिक, पुखराज, पाच और नीलवी (नीलम) के सब नूरी थंभे हैं। इन पांचों रंगों के दस थंभों की शोभा दीवार में दिखाई देती है जो चकित करने वाली है। यह सब शोभा नूर की ही है।

अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अर्स।
नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पे और सरस।। ३३ ।।

अब धाम के नूरी दरवाजे से अन्दर आओ। रंग महल के अन्दर के नूर को देखो। यहां के मन्दिर, चौक, चबूतरे एक से एक अच्छे सब नूर के हैं।

नूरै के मोहोल मन्दिर, नूर दिवालें द्वार।
नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार।। ३४ ।।

महल, मन्दिर, दीवारें, दरवाजे, नक्शकारियों के कटाव और सारा विस्तार सब नूर के हैं।

Nijanand App

चलो नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ गिरदवाए।
देख मेहेराव नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए।। ३५ ।।

नूर के दरवाजे से चलकर चारों तरफ नूरी परिकरमा को देखो। वहां से मेहराब और झरोखों की शोभा, बागों की शोभा, देखकर वापस धाम दरवाजे आए। यह सब नूर ही नूर की शोभा है।

नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख।
फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख।। ३६ ।।

नूर के चबूतरे पर नूर के चेहेबच्चे हैं और चौक तथा दरवाजे सभी सुन्दर नूर के दिखाई देते हैं।

दो दो मन्दिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार।
यों नवे भोम नूर मन्दिर, नूर झरोखे किनार।। ३७ ।।

दो-दो मन्दिरों की हारें और इनके बीच दो-दो थंभों की हारें सब नूर की हैं। किनारे के झरोखे, नौ भोम के मन्दिर सब नूर के हैं।

यों सब भोमें नूर गिरदवाए, थंभ गलियां नूर मन्दिर।
मेहेराव झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अन्दर।। ३८ ।।

रंग महल की सभी भोमें चारों तरफ के थंभें, गलियां, झरोखे, मेहराब सब नूर के हैं।

इन अन्दर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन।
साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगूं नूर इन।। ३९ ।।

अन्दर की हवेलियां, महलों से लगते महल तथा दो-दो चबूतरे जो दरवाजे के सामने आते हैं, सब नूर के हैं।

इन अन्दर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियों दोए हार।
नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगूं दोए द्वार।। ४० ।।

इनके अन्दर की हवेलियां तथा हवेलियों के दो हारों के बीच दरवाजे के आगे आए दो चबूतरे तथा बीच के चौक की शोभा सब नूर की है।

ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लग लग बराबर।
आगूं नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुन्दर।। ४१ ।।

यह जो घेरकर पास-पास में हवेलियां आईं और उनके दरवाजे के आगे चबूतरे अति सुन्दर हैं। यह सब नूर के हैं।

आए फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत।
नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत।। ४२ ।।

चारों तरफ के दरवाजे नूर के हैं। शोभा सब नूर की है। सामने की हवेली की और उसके द्वार की शोभा सब नूर की है।

द्वार द्वार नूर मुकाबिल, नूर चबूतरों चबूतरे।
नूर मोहोल मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए।। ४३ ।।

हवेलियों के दरवाजे के सामने दरवाजे आए। चबूतरे के सामने चबूतरे तथा महल के सामने महल की दोनों तरफ की शोभा सब नूर की है।

Nijanand App

दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार।
नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार।। ४४ ।।

दो महलों के बीच में गली आई है तथा दोनों महलों के सामने गली में चार चबूतरे आए हैं। दोनों चबूतरों के बीच गली आई है। इनके दरवाजे आमने-सामने हैं जो सब नूर के हैं।

जेते फिरते नूर द्वार ने, आगूं नूर चबूतरे दोए दोए।
नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए।। ४५ ।।

घेरकर हवेलियों के जितने द्वार आए हैं उन सब दरवाजों के आगे दो-दो चबूतरे हैं। आमने-सामने चारों चबूतरों के चौक तथा दरवाजे सब नूर की शोभा देते हैं।

नूर चौक ऐसे ही गिरदवाए, नूर फिरते आए सब में।
बीच फिरती आई नूर गली नूर गली सोभा पौरी ए।। ४६ ।।

ऐसे चौक घेरकर सब हवेलियों में आए हैं और उनके बीच एक नूर की गली आई है और मेहराब शोभा देते हैं।

एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार।
दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पौरी चार।। ४७ ।।

एक गली के चौरस्ते से दूसरे चौरस्ते के किनारे तक आएं तो दोनों चौरस्तों की गलियों में चार-चार मेहराब बनते हैं, जो सब नूर के हैं।

चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगूं नूर द्वार।
नूर पौरी चार हर चौरे, ए नूर सोभा ना किन सुमार।। ४८ ।।

चारों हवेलियों के चारों चौराहों पर चार थंभों की हारें नूर की हैं और उनकी चारों मेहराबें नूर की हैं। दरवाजे के आगे की भी चार मेहराबें व चार हारें नूर की हैं। यह नूर की शोभा बेशुमार है।

हर दोऊ द्वार आगूं नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर।
हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर।। ४९ ।।

दोनों दरवाजों के आगे नूर के चौक और चौकों पर चार चबूतरे और चार चबूतरों पर चौबीस मेहराबें सब नूर की बनी हैं।

दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गिरदवाए।
बीच नूर गली कई पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए।। ५० ।।

दो हवेलियों के बीच दो हारें थंभों की तथा गली और गली के बीच की मेहराबें सब नूर की हैं। इनकी शोभा कही नहीं जाती।

आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिन से।
नूर गली दोए दाएं बाएं, गली चली नूर हवेलियों में।। ५१ ।।

आड़ी गलियां जब आती हैं तो हवेलियों के कोनों पर चौक बन जाता है। दो गलियां दाएं-बाएं हवेलियों में जाती हैं। यह सब नूर की शोभा है।

Nijanand App

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत।
ए नूर गली दोऊ तरफों, आखिर नूर मोहोलों पोहोंचत।।५२।।

नूर की गलियां नूर की हवेलियों से निकलती हैं और हवेली में ही पहुंचती हैं। यह सब नूर की हैं।

याही विध नूर गिरदवाए, चौक हुए नूर गलियों के।
नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए।।५३।।

इसी तरह चारों तरफ हवेलियों के चौक और गलियां नूर की हैं। परिकरमा करके देखें तो इन चौकों और गलियों की शोभा बेशुमार है।

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत।
ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत।।५४।।

नूर की चार मोहोलातें घेरकर आई हैं जिनकी खूबी बेशुमार है। नूर गंजान गंज (ढेर का ढेर) भरा है। यह तो धनी के हुकम से मैं कुछ नूर का बयान कर रही हूं।

इन अंदर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस।
कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस।।५५।।

इसके अन्दर भी कई मोहोलातें अलग-अलग तरीके के बने हैं। इन महलों के अन्दर नूर की गलियां हैं और जिसे देखें वही सबसे अच्छा लगता है, क्योंकि सब नूर का है।

इन अंदर नूर कई जुगतें, नूर कई मंदिर मोहोलात।
नूर जिनसें कई जुगतें, नूर अर्स गंज कह्यो न जात।।५६।।

इन महलों के अन्दर कई मन्दिर हैं जिनके अन्दर कई तरह की शोभा है और उनके अन्दर कई सामान हैं जो नूर ही नूर के बने हैं।

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर।
महामत मोमिन नूर का, नूर देखे अर्स सहूर।।५७।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब रंग महल की दसों नूरी भोमों को देखें और देखकर हृदय में धारण करें।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। २०४४ ।।

भोम पेहेली नूर खिलवत

कहे आमर नूर अर्स का, ए जो अर्स नूरजमाल।
दिल अर्स मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल।।१।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से उनके ही परमधाम का अब वर्णन करती हूं। मोमिनों का दिल श्री राजजी महाराज का अर्श है, इसलिए इसे सुनकर मोमिनों की रहनी तुरन्त बदलेगी।

ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत।
हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत।।२।।

इसलिए रंग महल की पहली भोम में मूल-मिलावा जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठी हैं, उसके नूर का वर्णन करती हूं।

Nijanand App

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत।
ए नूर गली दोऊ तरफों, आखिर नूर मोहोलों पोहोंचत।।५२ ।।

नूर की गलियां नूर की हवेलियों से निकलती हैं और हवेली में ही पहुंचती हैं। यह सब नूर की हैं।

याही विध नूर गिरदवाए, चौक हुए नूर गलियों के।
नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए।।५३ ।।

इसी तरह चारों तरफ हवेलियों के चौक और गलियां नूर की हैं। परिकरमा करके देखें तो इन चौकों और गलियों की शोभा बेशुमार है।

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत।
ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत।।५४ ।।

नूर की चार मोहोलातें घेरकर आई हैं जिनकी खूबी बेशुमार है। नूर गंजान गंज (ढेर का ढेर) भरा है। यह तो धनी के हुकम से मैं कुछ नूर का बयान कर रही हूं।

इन अंदर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस।
कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस।।५५ ।।

इसके अन्दर भी कई मोहोलातें अलग-अलग तरीके के बने हैं। इन महलों के अन्दर नूर की गलियां हैं और जिसे देखें वही सबसे अच्छा लगता है, क्योंकि सब नूर का है।

इन अंदर नूर कई जुगतें, नूर कई मंदिर मोहोलात।
नूर जिनसें कई जुगतें, नूर अर्स गंज कह्यो न जात।।५६ ।।

इन महलों के अन्दर कई मन्दिर हैं जिनके अन्दर कई तरह की शोभा है और उनके अन्दर कई सामान हैं जो नूर ही नूर के बने हैं।

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर।
महामत मोमिन नूर का, नूर देखे अर्स सहूर।।५७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब रंग महल की दसों नूरी भोमों को देखें और देखकर हृदय में धारण करें।

|| प्रकरण || ३६ || चौपाई || २०४४ ||

भोम पेहेली नूर खिलवत

कहे आमर नूर अर्स का, ए जो अर्स नूरजमाल।
दिल अर्स मोमिन नूर का, नूर सुनके बदले हाल।।१ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से उनके ही परमधाम का अब वर्णन करती हूं। मोमिनों का दिल श्री राजजी महाराज का अर्श है, इसलिए इसे सुनकर मोमिनों की रहनी तुरन्त बदलेगी।

ताथें नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत।
हक हादी नूर मोमिन, ए नूर गंज हक वाहेदत।।२ ।।

इसलिए रंग महल की पहली भोम में मूल-मिलावा जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें बैठी हैं, उसके नूर का वर्णन करती हूं।

Nijanand App

बीच नूर चबूतरा, चौसठ थंभ नूर के।
फिरता कठेड़ा नूर का, नूर क्यों कहूं नूर बीच ए।। ३ ।।

गोल हवेली के अन्दर सुन्दर नूर का चबूतरा है। जिसको घेरकर चौसठ थंभ नूर के आए हैं। थंभों से लगता कठेड़ा नूर का है। बीच के नूर की शोभा कैसे कहें?

ऊपर चन्द्रवा नूर का, और नूरै की झालर।
ऊपर तले सब नूर में, सब नूरै रूह नजर।। ४ ।।

ऊपर का चन्द्रवा नूर का है। झालर नूर की है। ऊपर-नीचे रूहों को सब जगह नूर ही दिखाई देता है।

बिछौने सब नूर में, और तकिए नूर गिरदवाए।
रूहें बैठी नूर भर पूर, रह्या नूरै नूर समाए।। ५ ।।

बिछौना नूर का है। चारों तरफ से तकिए नूर के हैं। रूहें घेरकर बैठी हैं। यहां सब नूर ही नूर की शोभा है।

चरनी सीढ़ियां नूर की, चढ़ उतर नूर झलकार।
थंभ पड़सालें नूर की, नूरै के द्वार चार।। ६ ।।

सीढ़ियां नूर की हैं। चढ़ते उतरते नूर ही नूर की झलकार है। पड़सालें, चार दरवाजे सब नूर के हैं।

नूरै के मोहोल मन्दिर, नूर दिवालें द्वार।
नूरै नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार।। ७ ।।

महल, मन्दिर, दीवारें, दरवाजे, नक्शकारी सब नूर की है। यहां नूर का बड़ा विस्तार है। जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

मुखारविंद सब नूर के, नूर वस्तर भूखन।
सब सिनगार साजे नूर के, नूर कहां लग कहूं रोसन।। ८ ।।

सब के मुखारबिन्द नूर के हैं। वस्त्र, आभूषण, साज और सिनगार सब नूर के हैं। कहां तक कहूं?

इत बीच सिंघासन नूर का, नूरै का बिछौना।
बैठे जुगल किसोर नूर में, कछू नाहींन नूर बिना।। ९ ।।

बीच में सिंहासन नूर का है। सिंहासन पर बिछौना नूर का है। सिंहासन पर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। नूर के बिना यहां कुछ भी नहीं है।

कई बिध नूर सिंघासन, कई बिध बिछौने नूर।
कछू नजरों न आवे नूर बिना, सब दिसा नूर जहूर।। १० ।।

सिंहासन नूर का, बिछौना नूर के और जो कुछ दिखाई देता है सब दिशा में नूर ही नूर है।

वस्तर भूखन नूर के, सब नूरै का सिनगार।
नूरै सागर होए रह्या, नूर वार न पार सुमार।। ११ ।।

वस्त्र, आभूषण नूर के और सब सिनगार नूर का है। इस तरह से पूरी हवेली नूर के सागर के समान भरी है। यह बेशुमार है।

Nijanand App

नूर बोलत जुबां नूर की, नूर सुनत नूर श्रवन।
खुसबोए नूर नासिका, नूर नैन देखें ना नूर बिन।। १२ ।।

नूर की जबान से नूरी बोलते हैं और नूर के कानों से नूरी ही सुनते हैं। नूर की नासिका, नूर की सुगन्धि लेती है। नूर के नेत्र नूर को ही देखते हैं।

अंग सारे नूर के, नूरै का नूर आहार।
कौल फैल हाल नूर का, हाल-चाल नूर वेहेवार।। १३ ।।

सभी के सब अंग नूर के हैं। नूर का आहार है। कहनी, करनी, रहनी और व्यवहार सब नूर के हैं।

नूर मंदिर पेहेली भोम के, नूर रसोई चौक ठौर।
ए अंदर नूर द्वार के, कछू नूर बिना नहीं और।। १४ ।।

पहली भोम के मन्दिर, रसोई का चौक, धाम का दरवाजा सब नूर ही नूर का है और नूर के बिना और कुछ नहीं है।

भोम दूजी नूर भुलवनी

दूजी भोम जो नूर की, नूर चेहेबच्चे जल।
नूर मन्दिर भुलवन के, नूर एक सौ दस मोहोल।। १५ ।।

दूसरी भोम नूर की है जिसमें खड़ोकली का चेहेबच्चा और जल सब नूर का है। एक सौ दस मन्दिरों की एक सौ दस हारें भुलवनी के मन्दिर नूर के हैं।

एक सौ दस हारें नूर की, नूर ऐसे ही गिरदवाए।
ए बारे हजार मोहोल नूर के, बीच नूर चौक रह्या भराए।। १६ ।।

इन एक सौ दस की एक सौ दस हारों में बारह हजार महल तथा बीच में सौ मन्दिर का चौक नूर का है।

नूर भोम दूजी से तले लग, भरया चेहेबच्चा नूर जल।
लंबा चौड़ा नूर एक हांस लग, ऊपर आया नूर बन चल।। १७ ।।

दूसरी भोम से नीचे तक खड़ोकली के चेहेबच्चे में नूर का ही जल भरा है। यह चेहेबच्चा एक हांस लम्बा-चौड़ा है। ऊपर से ताड़वन के वृक्षों से ढका है। यह सब नूर का है।

नूर तीनों तरफों झलूबिया, तरफ चौथी नूर झरोखे।
नूर बन छाया जल पर, खासी बैठक नूर ठौर ए।। १८ ।।

इस चेहेबच्चे के ऊपर तीन तरफ से ताड़वन के डालें झूलती हैं। चौथी तरफ रंग महल के झरोखे हैं। ताड़वन के वृक्षों की छाया के नीचे जल के किनारे बैठने की जगह बनी है। यह सब नूर की हैं।

नूर झरोखे बैठक, नूर जल नूर ऊपर।
नूर झरोखे तीसों मिले, जितथें आवे नूर नजर।। १९ ।।

झरोखे में बैठकर जल के ऊपर की नूरी शोभा तीसों झरोखों से दिखाई देती है। वह सब नूर का है।

Nijanand App

नूर मंदिर तीस इन तले, ताके चार चार नूर द्वार।
आगूं तीन गली नूर थंभ की, ए जो मंदिर नूर किनार।। २० ।।

खड़ोकली के सामने झरोखों के नीचे तीस मन्दिर हैं। उनके सामने दो थंभों की हारों में तीन गलियां हैं। एक-एक मन्दिर में चार दरवाजे हैं। यह सब नूर की शोभा देते हैं।

नूर मंदिर एक सौ दस, एक अन्दर की नूर हार।
चारों तरफों मंदिर नूर के, ए नूर गिनती बारे हजार।। २१ ।।

नूर के एक सौ दस मन्दिर की एक हार दिखाई देती है। ऐसी चारों तरफ से देखने से मन्दिर की गिनती बारह हजार नूर की है।

नूर मंदिर भोम गिनती का, बीच नूर चबूतरा।
हक हादी रूहें नूर बैठकें, अति रंग रस नूर भरया।। २२ ।।

इन मन्दिरों के नूर के बीच में सौ मन्दिर की जगह में चबूतरा है। वह भी नूर का है। जहां श्री राज श्यामाजी और रूहें बैठती हैं और अत्यन्त आनन्दित होती हैं, वह सब नूर का है।

द्वार जो नूर मंदिर, नूरै के चार चार।
लगते द्वार जो नूर के, माहें भुलवनी नूर अपार।। २३ ।।

भुलवनी के मन्दिर में चार-चार दरवाजे हैं। यह सब नूर के हैं। आमने-सामने बेशुमार शोभा देते हैं।

हक हादी रूहें नूर भरे, खेलें नूर में कर सिनगार।
नूर बिना कछू न पाइए, नूर झलकारों झलकार।। २४ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहों के तन नूर से भरे हैं। सिनगार करके नूर की हवेली में खेलते हैं। सब जगह नूर की जगमगाहट है। नूर के बिना और कुछ दिखाई नहीं देता।

वस्तर भूखन नूर के, नूर सरूप साज समार।
नूर ले खेलें नूर में, नूर झलकारों झलकार।। २५ ।।

वस्त्र, आभूषण, स्वरूप साज सेज्या के साथ नूर में ही खेलते हैं। जहां की जगमगाहट नूर की ही है और बेशुमार है।

नूर सरूप देखत दिवालों, नूर सरूप देखत द्वार।
नूर सरूप देखत नूर बीच, नूर झलकारों झलकार।। २६ ।।

सखियों और श्री राजश्यामाजी के स्वरूप दीवारों में, दरवाजों में सब जगह दिखाई देते हैं और इनकी जगमगाहट हवेली में देखने योग्य है, क्योंकि यह सब नूर के ही हैं।

नूर सरूप पैठें एक द्वार से, जाए निकसें नूर किनार।
यों नूर सरूप दौड़ें सब में, नूर झलकारों झलकार।। २७ ।।

यह नूर के स्वरूप एक दरवाजे से घुसकर आखिर किनारे तक दौड़कर निकलते हैं। सब मन्दिरों में नूर ही नूर की झलकार दिखाई देती है।

Nijanand App

नूर सरूप सब नूर के, ले नूर दौड़ें बारे हजार।
बारे हजार नूर मन्दिरों, नूर झलकारों झलकार।। २८ ।।

यह सब नूरी स्वरूप बारह हजार मन्दिरों में दौड़ते हैं। यहां इनके सिनगारों की झलकार जगमगा रही है। यह सब नूर के हैं।

एक नूर मन्दिर से आवत, नूर निकसे परली हार।
नूर हंसें खेलें गिरें नूर में, नूर झलकारों झलकार।। २९ ।।

नूर के एक मन्दिर से आकर नूर के अन्तिम हार के मन्दिर से निकलना, हंसना, गिरना, इन सबकी झलकार नूरमयी है।

नूर सरूप पैठें एक तरफ से, नूर निकसे जाए नूर पार।
नूर फिरत बीच गिरदवाए, नूर झलकारों झलकार।। ३० ।।

यह नूर के स्वरूप एक तरफ से अन्दर जाते हैं और दूसरी तरफ से बाहर निकलते हैं। यह नूरी स्वरूप बीच में भी चारों तरफ फिरते हैं। इनकी झलकार सब नूरी है।

हार किनार पार नूर में, नूर सागर हुआ द्वार द्वार।
नूर वार पार या बीच में, नूर झलकारों झलकार।। ३१ ।।

मन्दिर के हारें, दरवाजे, किनारे और बीच में नूर जगमगा रहा है।

इन बिध नूर केता कहूं, नूर समें खेलन।
नूर बिना कछू न देखिए, नूर के नूर रोसन।। ३२ ।।

इस तरह खेलने में नूर के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता, इसलिए नूर की शोभा को कहां तक कहूं?

दूजी भोम सब नूर में, रूहें फेर देखें नूर ले।
नूर प्याले हक हादी नूर, रूहों भर भर नूर के दे।। ३३ ।।

नूर की दूसरी भोम को रूहें फिर-फिर देखती हैं और श्री राजश्यामाजी रूहों को इश्क के प्याले भर-भर देते हैं।

भोम तीसरी नूर झरोखा

तीसरी भोम का नूर जो, नूर इन मुख कह्या न जाए।
बड़ी बैठक नूर इन भोमें, इत नूर आप दीदारें आए।। ३४ ।।

तीसरी भोम के नूर का इस मुख से वर्णन नहीं होता। यहां श्री राजश्यामाजी की बड़ी बैठक है, यहां बैठ जाने पर ही नूर (अक्षर ब्रह्म) दर्शन करने आते हैं।

नूर द्वार नूर ऊपर, नूर बड़ी बैठक नूर भर।
कर दीदार नूर-जमाल का, फेर आए नूर-कादर।। ३५ ।।

दरवाजा नूर का है। जिसके ऊपर बड़ी बैठक नूर की है। वहां नूरजमाल (श्री राजजी) का दर्शन करके अक्षर ब्रह्म चांदनी चौक से वापस चले जाते हैं।

Nijanand App

ए बैठक कही जो नूर की, सो नूरै नूर गिरदवाए।
बीच चौक गली सब नूर की, रहे द्वार मन्दिर नूर भराए।।३६।।

यह बैठक नूर की है। चारों तरफ नूर ही नूर है। बीच का चौक, गली, दरवाजे, मन्दिर सब नूर से भरे हैं।

मुख नूर चौक भर पूरन, नूर दस मन्दिर पड़साल।
इन भोम नूर रूहें देखहीं, तो नूर बदले नूर हाल।।३७।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द नूर का है। सब मन्दिरों की पड़साल नूर से भरी हैं। इस भोम का नूर देखकर रूहों की हालत बदल जाती है।

अन्दर नूर पड़साल के, नूर द्वार मन्दिर दोए दोए।
नूर सीढ़ियां आगूं इन माहें, दोऊ तरफ मेहेराव नूर सोए।।३८।।

नूर की पड़साल के आगे के मन्दिर में दो-दो दरवाजे हैं। इनके आगे नूर की सीढ़ियां हैं। दोनों तरफ की मेहराबें भी नूर की हैं।

नूर मेहेराव आगूं सीढ़ी नहीं, आगूं बढ़ती नूर पड़साल।
नूर मेहेराव इन ऊपर, नूर पड़साल माहें चाल।।३९।।

दरवाजे की बड़ी मेहराब के आगे सीढ़ी नहीं है। नूर की पड़साल है। इस पड़साल में मेहराब के अन्दर होकर जाना पड़ता है।

और नूर मन्दिर छे द्वार ने, नूर दोऊ तरफों के।
ए दसे भोम नूर मन्दिर, नूर पड़साल बराबर ए।।४०।।

दोनों तरफ छः मन्दिर के द्वार नूर के हैं। दसों भोमों में मन्दिर नूर के, पड़सालें नूर की हैं।

नूर द्वार दोऊ ओर बराबर, नूर द्वार सीढ़ी दोए तरफ।
नूर छे चौक आगूं देहरी, रूहें नूर देखें तो बोलें ना हरफ।।४१।।

दोनों तरफ दरवाजे बराबर हैं। इस दरवाजे के दोनों तरफ की सीढ़ियां नूर की हैं। नूर के ही छः चौक हैं। छः देहरी हैं। रूहें इसको देखती हैं, किन्तु शोभा का वर्णन नहीं कर पाती हैं।

ए छे नूर द्वार दाएं बाएं, नूर दोऊ तरफों तीन तीन।
ए रूहें देखें नूर विवेक, जो देवे हुकम नूर आकीन।।४२।।

छः दरवाजे दाएं-बाएं हैं। दोनों तरफ तीन-तीन रूहें विवेक के साथ इनको देखती हैं। यदि हुकम से इन्हें यकीन आ जाए।

ए बड़ी बैठक नूर पड़सालें, नूर भोम आरोगें बेर दोए।
पूर नूर होए रूहें अर्स की, ए नूर बेवरा देखें सोए।।४३।।

इस नूर की पड़साल में बैठक बहुत बड़ी है। यहां दो बार श्री राजजी आरोगते हैं और यहां परमधाम की रूहें इस नूर की शोभा को देखती हैं।

Nijanand App

नूर सेज्या–पौढ़ें इतहीं, नूर मोहोल बड़ा ए।
इत नूर मेला पोहोर तीन लग, नूर हुकम कहावे जे।। ४४ ।।

यहीं पर नूर की सेज्या है। इस बड़े महल में श्री राजजी महाराज शयन करते हैं। यहां पर तीन पहर तक (नौ घंटे) सखियों का मेला रहता है। यह मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से नूर का वर्णन किया है।

भोम चौथी नूर निरत की

भोम चौथी जो नूर की, नूर में नूर विस्तार।
ए नूर कह्या तो जावहीं, जो होवे नूर सुमार।। ४५ ।।

चौथी भोम में नूर ही नूर की शोभा का विस्तार है। इसका वर्णन तब हो सकता है यदि यह सीमा में हो।

नूर गंज मध्य मन्दिर, नूर चौक ठौर निरत।
नूर रात नूर बरसत, रूहें नूर देखें नूर की सूरत।। ४६ ।।

इस हवेली के मध्य में सुन्दर निरत का चौक है। रात को एक पहर तक यहां पर नूर बरसता है और रूहें श्री राजश्यामाजी के नूरी स्वरूप को देखती हैं।

नूर तखत नूर चौक में, बैठें नूर में जुगल किसोर।
नूर सरूप निरत नवरंग, बीच नूर बैठें भर जोर।। ४७ ।।

चौक के बीच में नूरी तख्त है जहां पर श्री राजश्यामाजी विराजते हैं। नूर के स्वरूप नवरंगबाई निरत करती हैं। देखने वाली सब नूरी सखियां हैं।

नूर खेलत नूर देखत, और नूरै नूर बरसत।
रूहें आइयां जो इत नूर से, सो नूर नूरै को दरसत।। ४८ ।।

देखने वाले भी नूर के और खेलने वाले भी नूर के हैं। यहां नूर की ही बरसात होती है। इस नूर में जो सखियां आती हैं उन्हें सब नूर ही नूर दिखाई देता है।

नूर मन्दिर द्वार नूर, नूर जिमी चौक थंभ दिवाल।
नूर भरपूर नूर में, सब नूरै की हाल चाल।। ४९ ।।

नूर के मन्दिर, दरवाजे, जमीन, चौक, थंभ, दीवार सब नूर से भरपूर हैं।

नूर नूर को देखहीं, नूर की नूर सुनत।
नूर नाचत नूर बाजत, नूर कहां लों को गिनत।। ५० ।।

देखने वाले नूरी और सुनने वाले नूरी और नाचने वाले नूरी। उनको कौन कहां तक गिने?

नूर बाजे नूर बजावहीं, नूर गावें नूर सरूप।
नूर देखें फेर फेर नूर को, नूर नाचत नूर अनूप।। ५१ ।।

नूर के बाजे नूरी बजाते हैं और नूर के ही स्वरूप गाते हैं। नूरी स्वरूप देखते हैं और नूरी ही नाचते हैं।

Nijanand App

ऊपर तले बीच नूर में, जानूं भरया सागर नूर।
दसों दिसा देखों नूर नजरों, जानों तीखे आवें नूर के पूर।। ५२ ।।

ऊपर, नीचे, बीच में सब जगह नूर ही नूर का सागर भरा है। दसों दिशाओं में जहां भी देखो नूर की तरंगों के पूर (प्रवाह) आ रहे हैं।

जानों नूर देखों मासूक का, तो जुगल नूर सब पर।
सब नूर देखों जित तितहीं, भरी नूरै नूर नजर।। ५३ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी महारानी के नूर को मैं देख रही हूं। ऐसा लगता है जहां भी देखती हूं वहां नूर ही नूर नजर आता है।

हक नूर बिना जरा नहीं, नूर सब में रह्या भराए।
नूर बिना खाली कहूं नहीं, रह्या नूरै नूर जमाए।। ५४ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर के बिना और कुछ नहीं है। नूर सब जगह भरा है। कोई जगह खाली नहीं है।

फेर नूर दिवालों देखिए, नूर बन झरोखे जित।
नूर खिड़की नूर द्वारने, देख्या नूर बिना न कित।। ५५ ।।

दीवारें, झरोखे, खिड़कियां, दरवाजे, वन सब नूर के ही दिखाई देते हैं।

रूहें दौड़ें नूर हाल में, नूर देखें सब ठौर।
फेर आइए नूर द्वार ने, नाहीं नूर बिना कछू और।। ५६ ।।

रूहें नूर भरी दौड़ती हैं और सब जगह नूर ही नूर देखती हैं। नूर देखकर फिर दरवाजे पर आ जाइए। यहां नूर के बिना कुछ है ही नहीं।

भोम पांचमी नूर सेज्या

नूर देखो भोम पांचमी, जित मन्दिर नूर सेज।
बारे हजार मोहोल नूर के, सब नूरै रेजा रेज।। ५७ ।।

पांचवीं भोम के नूर को देखो जहां पर नूर के ही सुख सेज्या और मन्दिर हैं। यहां का कण-कण तथा बारह हजार शयन के सब महल नूर के हैं।

नूर पौरी नूर द्वारने, नूर गलियां थंभ अर्स।
नूर प्याले रूहें पीवहीं, ले भर भर नूर सरस।। ५८ ।।

मेहराब के दरवाजे, गलियां, थंभे सब नूर के हैं। रूहें नूर के प्याले भर-भरकर पीती हैं।

ए नूर के चौक चबूतरे, माहें नूर के मोहोल मन्दिर।
नूर सरूप लेहेरें लेवहीं, माहें नूर बाहेर अन्दर।। ५९ ।।

नूर के चौक में नूरी चबूतरे हैं। नूर के ही महल, मन्दिर हैं जिनके भीतर बाहर नूर के स्वरूप आनन्द लेते हैं।

चौकी संदूकें नूर की, सब सुन्दर नूर सामान।
नूर भरे मोहोल सोभित, ए क्यों होए नूर बयान।। ६० ।।

चौकी, सन्दूक, सामान, महल सब नूर के हैं। यहां की शोभा का कैसे बयान करूं?

Nijanand App

सब जोगवाई नूर की, नूरै का सब साज।
कहां लग कहूं मैं नूर की, सब नूरै रह्या बिराज।। ६१ ।।

यहां की साज-सज्जा तथा जोगवाई (परमधाम की हर चीज) नूर की है। मैं कहां तक कहूं?

सब मोहोल एक नंग नूर के, ज्यों नूर सागर माहें तरंग।
यों कई बिध मोहोल नूर के, माहें कई नूर रस रंग।। ६२ ।।

यहां के बारह हजार एक मन्दिर एक नग (हीरे) के हैं। नूर के सागर में जैसे लहरें आ रही हैं, वैसी शोभा देती हैं। इस तरह के कई रस रंग महल के अन्दर नूर के दिखाई देते हैं।

ए नूर भोम फेर देखिए, नूर झरोखे नूर बन।
नूर द्वार आए फेर, नूर नूरै नूर रोसन।। ६३ ।।

इस नूरी भोम को देखिए और फिर झरोखों से वनों को देखिए। घूम-फिरकर धाम दरवाजे पर आ जाइए। सब जगह नूर ही नूर दिखाई देता है।

कई चौक देखिए नूर के, कई सीढ़ियां नूर दिवाल।
कई थंभ गलियां नूर की, कई मोहोल नूर पड़साल।। ६४ ।।

कई चौक, कई सीढ़ियां, कई थंभ, कई गलियां हैं। दीवार, महल और पड़साल सब नूर के हैं।

नूर ऊपर तले माहें नूर, कई बेल फूल नूर नकस।
घोड़े कमाड़ी नूर चौकठ, भरया सागर नूर रस।। ६५ ।।

ऊपर, नीचे, अन्दर कई तरह की बेल, फूल, नक्शकारी, चौखट, घोड़े, किवाड़ सब नूर के रस से सागर के समान भरपूर हैं।

झरोखे नूर गिरदवाए, नूर सोभा कही न जाए।
कछू नूर स्वाद तो आवहीं, जो नूर लीजे दिल ल्याए।। ६६ ।।

बाहर की तरफ के झरोखे जो घेरकर आए हैं उनकी शोभा कही नहीं जाती। कुछ दिल में विचारकर देखो तो नूर का कुछ अनुभव आए।

नूर मन्दिर फेर देखिए, फेर देखिए नूर झरोखे।
तब नूर बन आवे नजरों, नूर पसु पंखी खेलें जे।। ६७ ।।

नूर से नूर के मन्दिरों को देखें। झरोखे से देखें तो सामने नूर के वन दिखाई देते हैं। जहां नूर के पशु-पक्षी खेल करते हैं।

भोम छठी नूर सुखपाल

भोम छठी नूर झिलमिले, सब ठौरों नूर नाम।
नूर रूहें खेलें नूर में, सब रह्या नूर में जाम।। ६८ ।।

छठी भोम का नूर सब ठिकानों पर जगमग करता है। इस नूर में रूहें खेलती हैं।

नूर चौक मन्दिर फिरते, नूर चबूतरों बैठक।
नूर बरसत कई हवेलियां, नूर बैठक रूहें हादी हक।। ६९ ।।

नूर के चौक और मन्दिर घेरकर आए हैं और नूर के चबूतरों पर ही सुन्दर बैठक है। नूर की कई हवेलियां हैं जहां श्री राजश्यामाजी की बैठक है।

Nijanand App

नूर बैठत नूर उठत, नूर चलते नूर निदान।
सब ठौरों नूर पूरन, जानों सब गंज नूर समान।। ७० ।।

उठना, बैठना, चलना सब नूरमयी ही होता है। सब ठिकाने पर नूर गंजान गंज भरा है।

एक मध्य चौक भरया नूर का, और फिरते मोहोल नूर तिन।
तिन गिरद नूर हवेलियां, ए नूर गिनती करूं जुबां किन।। ७१ ।।

मध्य का चौक नूर का है। उसके चारों तरफ फिरते महल नूर के हैं। उनके चारों तरफ हवेलियां नूर की हैं। यहां की जबान से कैसे बयान करूं?

तिन परे नूर नूर के परे, नूर मोहोल की गिनती नाहें।
नूर जिनसें कई जुदी जुदी, ए नूर आवे न हिसाब माहें।। ७२ ।।

उनके आगे नूर के महल हैं जिनकी गिनती नहीं है। उनमें अलग-अलग भांति की जिनसें हैं जिनका नूर बेहिसाब है।

जो मोहोल नूर किनार के, नूर लेखे में आवे क्यों कर।
ए नूर रूहें देखत, फेर फेर नूर नजर।। ७३ ।।

किनारों के मन्दिरों के नूर कैसे हिसाब में आएं। इन्हें रूहें बार-बार नजर भर के देखती हैं।

मोहोल झरोखे जो नूर के, आवत नूर बयार।
इन जुबां इन नूर को, ए नूर आवे न माहें सुमार।। ७४ ।।

महल का झरोखा जिससे ठंडी हवा अन्दर आती है, उसका नूर बेशुमार है। इस जबान से कैसे कहूं?

कई मोहोलों में नूर थंभ, तिन कई थंभों नूर नकस।
नेक नकस नूर देखिए, जानों ए नूर सबथें सरस।। ७५ ।।

कई महलों में नूर के थंभे हैं। उनमें कई नक्शकारियां हैं। एक नक्श को भी देख लें तो लगता है यह सबसे अच्छा है।

कई बन बेली नूर की, कई नूर पसु जानवर।
कई नूर कटाव तिन बीच में, नूर कहां लग कहूं क्यों कर।। ७६ ।।

वन, बेलि, पशु, जानवर की चित्रकारी कहां तक कहूं, सब नूर की हैं।

कह्यो न जाए नूर पात को, कई नूर कांगरी पात माहें।
कई नूर बेली एक पात में, सो कब लग कहूं नूर कांहें।। ७७ ।।

पत्ते का, कांगरी का, बेलि के पत्ते का नूर कैसे कहूं?

एक पात कांगरी नूर देखिए, नूर देखत उमर जाए।
तो सोभा देखत नूर कांगरी, रूहें नूर क्योंए न तृपिताए।। ७८ ।।

एक पत्ते की कांगरी (किनारे की चित्रकारी) देखने में उम्र चली जाती है। पूरी कांगरी देखने से भी रूहें किसी तरह से तृप्त नहीं होतीं।

Nijanand App

छठी भोम नूर पूरन, जित रेहेत नूर सुखपाल।
बड़ी बड़ी नूर हवेलियां, बड़े बड़े नूर पड़साल।।७९ ।।

यह छठी भोम नूर से भरी है। यहां नूर के सुखपाल रहते हैं। बड़ी-बड़ी हवेलियां और पड़सालें सब नूर की हैं।

फेर देखिए नूर द्वार को, मोहोल नूर चौक झलकत।
रूहें खेलें खुसाली नूर में, नूर नूरै में मलपत।।८० ।।

यह सब देखकर फिर धाम दरवाजे पर आ जाइए। जहां सुन्दर चौक दिखाई देता है। यहां पर श्री राजजी महाराज और रूहें बड़े हर्ष के साथ खेलते हैं।

भोम सातमी नूर हिंडोले

नूर भरी भोम सातमी, नूर मोहोल बिना हिसाब।
बिना हिसाब चौक नूर के, सो भर्यो सागर नूर आब।।८१ ।।

सातवीं भोम के महलों का नूर बेहिसाब है। यहां के चौक की भी सुन्दरता बेहिसाब है। लगता है नूर का सागर ही भरा है।

हिसाब नहीं नूर दिवालों, हिसाब नहीं नूर गलियां।
हिसाब नहीं बीच नूर थंभ, नूर आवे नूर बीच से चलियां।। ८२ ।।

यहां की दीवारों, गलियां, थंभ सब नूर के और बेहिसाब हैं। इनके बीच रूहें चल कर आती हैं।

नूर भरे ताक खिड़कियां, बारसाखें नूर द्वार।
कई मोहोल मन्दिर नूर के, ना गिनती नूर सुमार।।८३ ।।

यहां के गोल रोशनदान, चौखट, खिड़की, दरवाजों, महल, मन्दिर, जिनकी गिनती नहीं है, ऐसे बेशुमार नूर के हैं।

कई छूटक मन्दिर नूर के, कई मन्दिरों नूर मोहोलात।
कई फिरते मन्दिर नूर के, बीच बैठक नूर बिसात।।८४ ।।

अलग-अलग मन्दिर, मोहोलातें, उनमें फिरते हुए मन्दिर और बैठने की जगह सब नूर की शोभा देता है।

नूर झरोखे किनार के, तिन में नूर मन्दिर।
नूर थंभ दो दो आगूं इन, हर मन्दिर नूर अन्दर।।८५ ।।

रंग महल के किनारे के मन्दिर में नूर के झरोखे तथा मन्दिरों के आगे दो-दो थंभों की हार तथा मन्दिर के अन्दर सब जगह नूर ही नूर दिखाई देता है।

इन अन्दर मोहोल कई नूर के, कई जुदी जुदी नूर जिनस।
कई मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखूं सोई सरस।।८६ ।।

इसके अन्दर कई महल अलग-अलग तरीके के हैं। उनके अन्दर बने मन्दिर तथा गलियां सब नूर के हैं और अच्छे लगते हैं।

Nijanand App

ए जो मन्दिर नूर किनार के, दो हारें नूर मन्दिर।
साम सामी नूर हिंडोले, नूर झलकत है अन्दर।।८७ ।।

किनारे के मन्दिर की दो हारें हैं उनके आमने-सामने नूर के हिंडोले झलकते हैं।

यों फिरते नूर हिंडोले, नूरै के गिरदवाए।
नूर सरूप रूहें बैठत, झूलें नूर जुगल दिल ल्याए।।८८ ।।

इस तरह से नूर के हिंडोले घेरकर आए हैं जिनके अन्दर नूर के स्वरूप श्री राजश्यामाजी के साथ दिल लगाकर झूलते हैं।

दो दो सरूप नूर झूलत, नूर साम सामी मुकाबिल।
कड़े झनझनें नूर के, नूर खेलें झूलें हिल मिल।।८९ ।।

दो-दो स्वरूप एक-एक झूले में आमने-सामने बैठते हैं। झूलों के कड़े और झुनझुनों की आवाज सुन्दर स्वर नूर की ही है।

कई नूर चौक चबूतरे, कई नूर के थंभ दिवाल।
कई बार साखे ताके नूर के, क्यों कहूं नूर बिना मिसाल।।९० ।।

कई चौक, चबूतरे, थंभ, दीवार, चौखट, जोड़ी, रोशनदानों के नूर बेमिसाल हैं।

कई रंगों नूर झलकत, कई नूर रंग तले ऊपर।
सब तरफों नूर जगमगे, ए नूर जोत कहूं क्यों कर।।९१ ।।

नीचे से ऊपर तक कई रंगों का नूर चारों तरफ चमकता है।

कई गलियां नूर चरनियां, कई नूर मेहेराव झरोखे।
कई नूर अर्स की रोसनी, क्यों सिफत कहूं नूर ए।।९२ ।।

कई गलियां, सीढ़ियां, मेहराब, झरोखे सब नूर के हैं। इन सबकी सिफत कैसे बयान करूं?

भोम आठमी नूर हिंडोले

नूर गंज भोम आठमी, नूर चार तरफ झूलन।
चारों चौक नूर हिंडोले, रूहें झूलत नूर रोसन।।९३ ।।

आठवीं भोम में चारों तरफ से झूलने का नूर गंजान गंज भरा है। यहां हर एक चौक चार हिंडोलों की ताली पड़ती है, जहां रूहें झूलती हैं।

गिरदवाए नूर हिंडोले, झलकत नूर जंजीर।
क्यों कहूं झूले नूर के, रूहें हंसत मुख नूर नीर।।९४ ।।

चारों तरफ हिंडोले नूर के हैं जो सुन्दर जंजीरों में झलकते हैं। उन झूलों में हंसती हुई रूहों के मुखारबिन्द के नूर झलकते हैं।

रूहें झूलें जब नूर में, तब अर्स नूर झलकार।
बोलें नूर पड़छंदे नूर मन्दिरों, होत हांसी नूर अपार।।९५ ।।

जो रूहें झूला झूलती हैं तो उनके पैरों के पड़छंदे नूर के मन्दिरों में सुन्दर बोलते हैं और बेशुमार हंसी होती है तथा सिनगार की जगमगाहट होती है।

Nijanand App

यों गिरदवाए नूर सबन में, झनकत नूर झलकत।
ए जो हिंडोले नूर के, कही जाए ना नूर सिफत।।९६ ।।

चारों तरफ नूर के हिंडोले झलक रहे हैं तथा आवाज कर रहे हैं। इनकी सिफत कहने में नहीं आती।

हक हादी रूहें नूर में, झूलत नूर खुसाल।
इन समें नूर बिलंद का, किन विध कहूं नूर हाल।।९७ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें बड़े प्रसन्न मन से झूला झूलते हैं। उस समय की परमधाम की शोभा का कैसे बयान करूं?

ए झूले भोम नंग नूर के, गंज जाहेर नूर अम्बार।
जब नूर मोहोलों इत खेलत, अर्स नूर न आवत पार।।९८ ।।

इस भोम में नूर के नगों के झूले हैं जिनका बेशुमार नूर झलकता है। रूहें जब यहां पर खेलती हैं तो उस समय परमधाम की शोभा बेशुमार हो जाती है।

इन अंदर नूर कई बिध का, नूर बैठक मोहोल खेलन।
जुदी जुदी विध नूर जुगतें, हक सुख देत नूर रूहन।।९९ ।।

इस भोम के अन्दर कई बैठकें, कई महल तथा खेलने के ठिकाने अलग-अलग तरीके के शोभा देते हैं। जहां श्री राजजी महाराज रूहों को सुख देते हैं।

कई विध नूर चबूतरे, कई विध नूर मंदिर।
कई विध रोसन नूर किनारे, कई बिध नूर अंदर।।१०० ।।

कई तरह के चबूतरे, कई तरह के मन्दिर और कई तरह के किनारे की रोशनी जो अन्दर आती है, यह सब नूर की हैं।

बारे हजार रूहें नूर हिंडोले, हर नूर रूहें हक संग।
इन समें नूर क्यों कहूं, नूर होत उछरंग।।१०१ ।।

बारह हजार रूहें श्री राजश्यामाजी के साथ हिंडोलों में झूलती हैं। इस समय जो आनन्द होता है उसके नूर का कैसे बयान करूं?

चार चार हिंडोले नूर के, अर्स मावे ना नूर झनकार।
लेत लेहेरें नूर सागर, जानों नूर गंज भरे अंबार।।१०२ ।।

चार-चार हिंडोले नूर की आवाज करते हैं और सागर की लहरों के समान बेशुमार शोभा से भरपूर लगते हैं, यह सब नूर के हैं।

नूर हिंडोलों जंजीरों, कड़े खटकत नूर जुगत।
ए घाए पड़घाए नूर पड़छंदे, नूर हर ठौरों बोलें बिगत।।१०३ ।।

हिंडोलों की जंजीरें, कड़े सब नूर के नई तरह के दिखाई देते हैं। एक तरफ से पैर की ठोकर की आवाज और दूसरी तरफ से प्रतिध्वनि की आवाज हर ठिकाने पर बोलती है।

Nijanand App

भोम नौमी नूर गोख बैठक

भोम नौमी नूर नूरै, गिरदवाए नूर तखत।
ए नूर विचारे ना उड़े, हाए हाए नूर जीवरा बड़ा सखत।। १०४ ।।

नौवीं भोम में चारों तरफ नूर के सिंहासन छज्जों पर हैं। इनको विचार कर हाय! हाय! यह कठोर जीव क्यों तन के अन्दर बैठा है। निकल क्यों नहीं जाता?

इन नूर भोम की सिफत, कही जाए न नूर मुख इन।
ए नूर मंदिर नूर झरोखे, कई नूर फिरते सिंघासन।। १०५ ।।

इस नूर की भोम की सिफत मेरे मुख से नहीं कही जाती। यहां के मन्दिर, झरोखे, सिंहासन सब नूर के हैं।

ए मन्दिर झरोखे नूर एकै, फिरती नूर पड़साल।
तो कहूं नूर रोसन की, जो होवे नूर इन मिसाल।। १०६ ।।

मन्दिर, झरोखे तथा घेरकर आई पड़साल की रोशनी नूर की है और बेमिसाल है।

ए मन्दिर झरोखे नूर के, भोम नूर बराबर।
नूर द्वार ज्यों और मन्दिर, नूर रूहें आवें सीढ़ियों उतर।। १०७ ।।

मन्दिर, झरोखे, भूमि, दरवाजे, चढ़ने-उतरने की सीढ़ियां जहां से रूहें आती हैं, सब नूर की हैं।

हर हांसों हक नूर बैठक, हर हांसों नूर तखत।
हक हादी रूहें नूर मिलावा, हर हांसों नूर न्यामत।। १०८ ।।

हर हांस में श्री राजजी महाराज की बैठक का सिंहासन है जहां श्री राजश्यामाजी और रूहें मिलकर हर हांसों में नूर का आनन्द लेती हैं।

नूर थंभ गली देखिए, जानों नूर मंदिर द्वार।
माहें मंदिर झरोखे नूर एकै, हर बैठक नूर विस्तार।। १०९ ।।

थंभ, गली, मन्दिर, द्वार, झरोखा और पूरा विस्तार सब नूर का है।

नूर दूर से देखत, सो नूर बैठक इत।
दो सै हांसें नूर की, हक मेले नूर बरकत।। ११० ।।

यहां की नूरी बैठक में बैठकर सामने पच्चीस पक्षों के नूर दिखाई देते हैं। रंग महल की दो सौ हांसें नूर की हैं जहां श्री राजजी महाराज सखियों के साथ बैठते हैं।

सोभा हक नूर सिंघासन, नूर इन भोम बिराजत।
ए बात केहेते हक नूर की, हाए हाए नूर जीवरा न उड़त।। १११ ।।

श्री राजजी-महाराज के सिंहासन जो इस भोम में है, वह सब नूर के हैं। श्री राजजी महाराज की इस बात को कहते हुए हाय! हाय! यह जीव उड़ क्यों नहीं जाता?

और नूर मोहोल कई अन्दर, सो नूर बड़ो विस्तार।
कई नूर भांत विध जुगतें, नूर अलेखे बेसुमार।। ११२ ।।

अन्दर के कई महलों में कई तरह का विस्तार है और कई तरह की शोभा नूर की ही बेशुमार है।

Nijanand App

नवे भोम नूर बरनन, नूर क्यों कहूं ख्वाब जुबांए।
ए नूर हक हुकम कहे, ना तो नूर आवे ना सब्द माहें।। ११३ ।।

नौ भोमों के नूर का वर्णन सपने की जबान से कैसे करूं? यह तो श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवाता है, इसलिए कहती हूं अन्यथा यह शोभा शब्दों में नहीं आती।

अर्स नूर जरा जुबां कहे, अर्स मता नूर अपार।
सो नूर बरनन क्यों होवहीं, जिन नूर को न कहूं सुमार।। ११४ ।।

परमधाम के नूर का बयान जरा-सा भी जबान से कहा नहीं जाता। फिर वहां तो बेशुमार नूर ही नूर भरा है। फिर जिस नूर का शुमार नहीं उसका वर्णन कैसे हो?

दसमी भोम नूर चांदनी

नूर रूहें चढ़ चांदनी, नूर नवों भोमों पर।
खूबी नूर भोम दसमी, ए नूर सोभा न काहू सरभर।। ११५ ।।

नवीं भोम के ऊपर चांदनी नूर की आई है। यहां रूहें चढ़कर जाती हैं। इस दसवीं भोम के नूर की शोभा के समान और कोई शोभा नहीं है।

ऊपर जल नूर चेहेबच्चे, नूर कारंजे उछलत।
ऊपर नूर इत बगीचे, नूर क्यों कहूं हक न्यामत।। ११६ ।।

ऊपर के चेहेबच्चों में जल नूर का है और नूर के ही फव्वारे उछलते हैं। यह नूर के बगीचों में सुन्दर शोभा देते हैं। श्री राजजी महाराज की इस नूर की न्यामत का कैसे वर्णन करूं?

इत कई नूर सिंघासन, बीच नूर तखत बैठक।
हादी रूहें नूर मिलाए के, बैठत नूर ले हक।। ११७ ।।

यहां नूर के कई सिंहासन हैं और बीच में नूर के तख्त की बैठक है। श्री राजश्यामाजी और रूहें सब मिलकर इस नूर की बैठक में बैठकर आनन्द लेते हैं।

नूर भरया आकास में, सामी आया आकास नूर ले।
नूर भरया दरिया नूर का, माहें कई उठें तरंग नूर के।। ११८ ।।

इस नूर की बैठक का तेज आकाश तक जाता है और ऊपर से आकाश का नूर आता है जिससे कई तरंगें नूर की टकराती हैं और लगता है पूरा सागर ही नूर का भरा है।

दो सै एक गुरजें नूर की, नूर गुमटियां बारे हजार।
बीच नूर रूहें बैठक, थंभ नूर सोभा अपार।। ११९ ।।

दो सौ एक गुर्ज नूर के हैं। उनके अन्दर की तरफ बारह हजार गुमटियां नूर की हैं। बीच में श्री राजश्यामाजी की बैठक नूर की है और गुमटियों के नीचे थंभ सब नूर के हैं।

दसमी भोमे नूर चांदनी, नूर गुमटियां देखत।
ए मोहोल गिरदवाए नूर के, नूर में हक हादी रूहें खेलत।। १२० ।।

दसवीं भोम की चांदनी सब नूर की है। ऊपर गुमटियां भी सब नूर की हैं। गुमटियों के नीचे महल, जो चारों ओर आए हैं, सब नूर के हैं। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहें खेलती हैं।

Nijanand App

नूर गुरज हांसों पर, बीच कांगरी नूर किनार।
बीच बीच बैरखें नूर की, मौजें आवत नूर झलकार।। १२१ ।।

हांसों के दो सौ एक गुर्ज नूर के हैं। उनके किनारे की कांगरी तथा बीच-बीच की ध्वजा (पताका) सब नूर की है। इनकी सुन्दर शोभा झलकती है।

इत सोभित नूर कांगरी, और सोभित नूर कलस।
ए कलस कांगरी नूर के, सोभित नूर पर सरस।। १२२ ।।

गुर्जों की कांगरी और कलश सब नूर की शोभा देते हैं।

दसों दिसा नूर नूर में, नूरै नूर खेलत।
नूर उठें बैठें नूर में, नूर नूरै में चलत।। १२३ ।।

दसों दिशाओं में नूर ही नूर है। जहां रूहें खेलती, बैठती और चलती हैं।

नूर भरया आसमान में, नूर चांदनी नूर चौक।
नूर बिना कछू न देखिए, नूरै में नूर सौक।। १२४ ।।

चांदनी, नूर चौक नूर का और सब शौक की सामग्री नूर की है। यह आसमान तक भरा दिखाई देता है। बिना नूर के कुछ भी नहीं है।

नूर देख्या भोम दस में, नूर सबहीं के सिरे।
नूर ले नौमी भोम में, नूर नूरै में उतरे।। १२५ ।।

दस भोम तक शोभा नूर की देखी। अब सबके ऊपर श्रेष्ठ चांदनी की शोभा है। उसे देखकर अब नीचे नवीं भोम में उतरे जो नूर की है।

ए नूर सुख बैठक देख के, नूर भोम आठमी आए।
लिए नूर सुख हिंडोले, ए चारों नूर सुखदाए।। १२६ ।।

नवीं भोम में नूर की बैठक देखकर नूर की आठवीं भोम में उतरकर आए जहां चारों ओर सुख देने वाले सुन्दर नूर के हिंडोले देखे।

आए नूर भोम सुख सातमी, नूर सुख हिंडोले दोए दोए।
ए सुख नूर रूहें बिना, नूर सुख लेवे जो होवे कोए।। १२७ ।।

आठवीं भोम के हिंडोले देखकर उतरकर सातवीं भोम में आए। जिसके दो-दो हिंडोलों के सुख सब नूर के हैं। इनका सुख रूहों के अलावा कोई हो, तो ले।

नूर लिया छठी भोम में, भोम अर्स विवेक विचार।
मोहोल लिया सुख नूर का, नूर नूर में नूर न सुमार।। १२८ ।।

सातवीं भोम से उतरकर छठी भोम में रंग महल के नूर को विचारकर देखो और सब जगह महलों में नूर का विस्तार देखो।

नूर भरी भोम पांचमी, जित नूर सेज्या सुख।
रात सुख नूर अति बड़ा, हक सुख नूर सनमुख।। १२९ ।।

छठी भोम से उतरकर नूर भरी पांचवीं भोम में आए, जहां नूर सेज्या का सुख है। यहां श्री राजजी महाराज सबको बहुत बड़ा सुख देते हैं।

Nijanand App

भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत।
नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतन्त।।१३०।।

पांचवीं भोम से उतरकर चौथी भोम में आइए जो नूर की है। यहां पर श्री राजजी के सामने निरत का खेल होता है जो नूर का है।

तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल।
हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर–जलाल।।१३१।।

चौथी भोम से उतरकर आइए जहां नूर की पड़साल है। यहां पर श्री राजश्यामाजी और रूहें नूर की बैठक में बैठते हैं। तब अक्षर ब्रह्म दर्शन को आते हैं।

दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन।
हक हादी सुख नूर भुलवनी, देत नूर सुख अपने तन।।१३२।।

तीसरी भोम से उतरकर दूसरी नूर की भोम में आइए। यहां झीलने का नूरी चेहेबच्चा है तथा श्री राजश्यामाजी अपने ही तन सखियों को नूंर की भुलवनी का सुख देते हैं।

नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर।
फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर।।१३३।।

दूसरी भोम से उतरकर पहली नूरी भोम में नूर के दरवाजे पर आइए। यहां के सुख नूर से भरपूर हैं। चारों तरफ घेरकर नूर ही नूर का सुख है। मध्य में भी नूर ही नूर भरा है।

इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनों न्यामत।
नूर मेला मूल मोमिनों, बीच हक का नूर तखत।।१३४।।

इसी प्रथम भोम में श्री राजजी महाराज की खिलवत (मूल-मिलावा) नूर का है, जहां पर रूहों का मेला श्री राजजी महाराज के सिंहासन के सामने बैठा है। हवेली के बीच चबूतरे पर श्री राजजी महाराज का नूरी सिंहासन शोभा देता है।

हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत।
कहे महामत नूर बिलन्द में, ए अपनी नूर कयामत।।१३५।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह अपना परमधाम, श्री राजश्यामाजी और रूहें तथा सब ठिकाने श्री राजजी महाराज के नूर के हैं। यही हमारी नूर की कयामत है, अर्थात् अखण्ड स्थान है।

नूर की परिकरमा तमाम ।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। २१७९ ।।

धाम बरनन

बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित्त दे।
कई हुए ब्रह्माड कई होएसी, कोई कहे न हम बिन ए।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! मैं धाम का वर्णन करती हूं। तुम चित्त देकर सुनो। कई ब्रह्माण्ड हो गए, कई होंगे, परन्तु हमारे बिना कोई नहीं कहेगा।

Nijanand App

भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत।
नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतन्त।।१३०।।

पांचवीं भोम से उतरकर चौथी भोम में आइए जो नूर की है। यहां पर श्री राजजी के सामने निरत का खेल होता है जो नूर का है।

तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल।
हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें नूर-जलाल।।१३१।।

चौथी भोम से उतरकर आइए जहां नूर की पड़साल है। यहां पर श्री राजश्यामाजी और रूहें नूर की बैठक में बैठते हैं। तब अक्षर ब्रह्म दर्शन को आते हैं।

दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन।
हक हादी सुख नूर भुलवनी, देत नूर सुख अपने तन।।१३२।।

तीसरी भोम से उतरकर दूसरी नूर की भोम में आइए। यहां झीलने का नूरी चेहेबच्चा है तथा श्री राजश्यामाजी अपने ही तन सखियों को नूर की भुलवनी का सुख देते हैं।

नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अव्वल भोम नूर पूर।
फिरता सुख सब नूर में, मध्य नूर नूर नूर।।१३३।।

दूसरी भोम से उतरकर पहली नूरी भोम में नूर के दरवाजे पर आइए। यहां के सुख नूर से भरपूर हैं। चारों तरफ घेरकर नूर ही नूर का सुख है। मध्य में भी नूर ही नूर भरा है।

इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमिनों न्यामत।
नूर मेला मूल मोमिनों, बीच हक का नूर तखत।।१३४।।

इसी प्रथम भोम में श्री राजजी महाराज की खिलवत (मूल-मिलावा) नूर का है, जहां पर रूहों का मेला श्री राजजी महाराज के सिंहासन के सामने बैठा है। हवेली के बीच चबूतरे पर श्री राजजी महाराज का नूरी सिंहासन शोभा देता है।

हक हादी रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत।
कहे महामत नूर बिलन्द में, ए अपनी नूर कयामत।।१३५।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह अपना परमधाम, श्री राजश्यामाजी और रूहें तथा सब ठिकाने श्री राजजी महाराज के नूर के हैं। यही हमारी नूर की कयामत है, अर्थात् अखण्ड स्थान है।

नूर की परिकरमा तमाम ।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। २१७९ ।।

धाम बरनन

बरनन धाम को, कहूं साथ सुनो चित्त दे।
कई हुए ब्रह्माड कई होएसी, कोई कहे न हम बिन ए।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! मैं धाम का वर्णन करती हूं। तुम चित्त देकर सुनो। कई ब्रह्माण्ड हो गए, कई होंगे, परन्तु हमारे बिना कोई नहीं कहेगा।

Nijanand App

क्यों कहूं धाम अन्दर की, विस्तार बड़ो अतन्त।
क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखण्ड पार के पार जो सत।। २ ।।

रंग महल के अन्दर का विस्तार बहुत भारी है जो बेहद के पार अक्षर, अक्षर पार अक्षरातीत धाम के अन्दर की हकीकत है। मेरी जबान और तन झूठे संसार का है।

तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबां इन बुध।
अद्वैत अखण्ड पार की, करूं साथ के हिरदे सुध।। ३ ।।

इस संसार की जबान और बुद्धि के प्रमाण से सुन्दरसाथ के वास्ते थोड़ा कहना पड़ रहा है। बेहद भूमि के पार की सुध सुन्दरसाथ को दे रही हूं।

थंभ दिवालें गलियां, कई सीढ़ियां पड़साल।
मन्दिर कमाड़ी द्वार ने, माहें कई नंग रंग रसाल।। ४ ।।

थंभे, दीवारें, गलियां, सीढ़ियां, पड़साल, मन्दिर, किवाड़, दरवाजों के कई रंग के नग शोभा देते हैं।

गली माहें कई गलियां, कई चौक चबूतरे अनेक।
खिड़की माहें कई खिड़कियां, जित देखूं जानों सोई विसेक।। ५ ।।

गली के अन्दर गली, चौक, चबूतरा, खिड़कियां जो भी देखती हूं एक से एक सुन्दर लगती हैं।

दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन।
सोभा लेत अति सुन्दर, तीनों तरफों बन।। ६ ।।

दूसरी भोम का चेहेबच्चा (खड़ोकली) जिसके जल पर आए झरोखे तथा तीन तरफ के ताड़वन के पेड़ सुन्दर शोभा लेते हैं।

तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर।
एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अन्दर।। ७ ।।

ताड़वन की तीन तरफ की डालें खड़ोकली के जल पर छाया करती हैं और चौथी तरफ रंग महल के झरोखे हैं।

तीनों तरफों कठेड़ा, नेक नेक पड़साल।
चारों तरफ उतरती सीढ़ियां, पानी बीच विसाल।। ८ ।।

खड़ोकली के तीन तरफ कठेड़ा है। उनसे लगती छोटी सी पड़साल है। पानी के अन्दर सीढ़ियां उतरी हैं।

आगूं मन्दिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार।
इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार।। ९ ।।

आगे भुलवनी में सौ मन्दिर का चबूतरा है और चारों तरफ थंभों की शोभा है। रूहें यहां पर नहाने के बाद सिनगार करती हैं।

इत दाहिनी तरफ जो मन्दिर, गिनती बारे हजार।
इन मन्दिरों खेलें भुलवनी, हर मन्दिर द्वार चार।। १० ।।

खड़ोकली के दाहिनी तरफ भुलवनी के बारह हजार मन्दिर हैं और हर मन्दिर में चार दरवाजे हैं। यहां भुलवनी का खेल होता है।

Nijanand App

कर सिनगार इत खेलत, ए जो मन्दिर हैं भुलवन।
दौड़ें खेलें हंसें रूहें, देख अपनी आभा रोसन।। ११ ।।

सिनगार करके भुलवनी के मन्दिरों में खेलते हैं। जहां दौड़कर हंसते हुए अपने ही प्रतिबिम्ब को देखकर खेलते हैं।

कई फिरते चबूतरे, फिरते मन्दिर गिरदवाए।
थंभ तिन आगूं फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए।। १२ ।।

इसको घेरकर कई चबूतरे, मन्दिर, थंभे और चौक शोभा देते हैं।

कई चौखूंने चबूतरे, चारों तरफों मंदिर।
थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुन्दर।। १३ ।।

उनके आगे कई चौरस चबूतरे जिनके चारों तरफ मन्दिर हैं, चारों तरफ थंभ घूमते हैं, उनकी सुन्दर शोभा है।

कई चौखूंने चबूतरे, मन्दिर आठों हार।
चली चार गलियां चौक थें, हार आठ थंभ गली बार।। १४ ।।

पांचवीं भोम में कई चौरस चबूतरे बने हैं। जहां आठ हवेलियों की आठ हारें हैं। चार-चार गलियां एक-एक चौक से निकलती हैं। हर आठ थंभों के बीच बारह गलियां बनती हैं।

कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए।
चौक चबूतरे इन भोम के, कई जुगत क्यों कही जाए।। १५ ।।

यह एक ठिकाने के चौक की हकीकत बताई है जहां श्री राजजी महाराज आकर बैठते हैं। इस भोम के चौक और चबूतरों की युक्ति वर्णन करने में नहीं आती।

ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार।
सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार।। १६ ।।

थंभों के ऊपर की शोभा झलकती है। थंभों के नीचे की भोम की शोभा भी झलकती है। यहां की सब सामग्री, थंभ, दीवारें और दरवाजे झलकते हैं।

क्यों कहूं हिसाब मन्दिरन को, दिवालां चौक थंभ कई लाख।
अमोल अतोल अन गिनती, कछू कह्यो न जाए मुख भाख।। १७ ।।

मन्दिरों का हिसाब कैसे बताऊं? जहां लाखों दीवारें, चौखठ, थंभे हैं, ऐसे अनगिनत की शोभा मुख से कही नहीं जाती।

ए सुख इन मन्दिरन में, वाही सरूपों सुध।
विध विध विलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध।। १८ ।।

इन मन्दिरों के सुख की खबर वहीं की रूहों को है। इस धाम के तरह-तरह के विलास के सुख यहां की जबान और बुद्धि से कैसे करें?

Nijanand App

जो वस्त जिन मिसल की, सोई बनी ठौर तित।
सेज्या संदूक सिंघासन, कहूं केती कई जुगत।। १९ ।।

जो वस्तु जिस तरह की जहां चाहिए वह वैसी ही वहां बनी है। सेज्या, सन्दूक, सिंहासन कहां तक कहूं, कई तरह की शोभा बनी है।

कई जुगतें कई जिनसें, कई सामग्री सनंध।
क्यों करूं बरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद।। २० ।।

धाम में कई तरह की सामग्री की कई जिनसें हैं। इनका संसार की झूठी देह और मंद बुद्धि से कैसे वर्णन करें?

कई बेली एक दिवाल में, कई बेल फूल तिन पात।
तिन पात पात कई नंग हैं, एक नंग रंग कह्यो न जात।। २१ ।।

दीवार में कई बेलें हैं, बेलों में फूल और पत्ते हैं। पत्ते-पत्ते में कई नग हैं। एक-एक नग में कई रंग हैं जो कहे नहीं जाते।

पात पात को देख के, हंसत बेलि संग बेलि।
सैंन करे पंखी पंखी सों, जानों दौड़ करसी अब केलि।। २२ ।।

पत्ते-पत्ते को देखकर, बेलि बेलों को देखकर हंसती हैं। पशु-पक्षी के चित्र आपस में इशारे करते हैं, लगता है अभी दौड़कर खेलने लगेंगे।

फूल फूल कई पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कई नंग।
नंग देख नंग हंसत, फूल फूल के संग।। २३ ।।

कई तरह के फूल हैं। फूल में कई तरह की पांखुड़ी हैं। पांखुड़ी में कई तरह के नग हैं। नग को नग देखकर, फूल को फूल देखकर हंसते हैं।

अपनी अपनी जात ले, ठाढ़े हैं सकल।
करने खुसाल धनीय को, करत हैं अति बल।। २४ ।।

अपनी अपनी जातियों में सब सुन्दर शोभा बनी है जो अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार धनी को खुश करते हैं।

त्यों त्यों जोत बढ़त है, ज्यों ज्यों देखें नूरजमाल।
नाचत हरखत हंसत, देख धनी को खुसाल।। २५ ।।

जैसे-जैसे वह धनी को देखते हैं उनका तेज बढ़ता जाता है। वह नाचकर, प्रसन्न होकर, हंसकर धनी को खुश करते हैं।

करें खुसाल धनीय को, होंएं आप खुसाली हाल।
ए सोभा इन मुख क्यों कहूं, ए देखे सब मछराल।। २६ ।।

वह धनी को खुश करके स्वयं खुश होते हैं। उनकी इस मस्ती की शोभा को किस मुख से कैसे कहें?

Nijanand App

कई पसु पंखी जवेरन के, कई रंग बिरंग कई विध।
जानों के खेल पर सब खड़े, ए क्यों कही जाए सनंध।। २७ ।।

पशु-पक्षी जवाहरातों के बने हैं। उनमें कई रंग शोभा देते हैं लगता है यह सब खेल करने के लिए तैयार खड़े हैं।

होत कछू पड़ताल पांउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान।
पसु पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान।। २८ ।।

जब पांव की थोड़ी आहट मिलती है तो वह सब अपनी जबान से बोलने लगते हैं। यह सब पशु-पक्षी अपनी-अपनी तान में बोलते दिखाई देते हैं।

कछू थोड़े ही पड़ताल से, धाम सब्द धमकार।
बोलें पसु पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार।। २९ ।।

पांव की थोड़ी ही आहट से आवाज गूंजती है जिससे पशु-पक्षी अपनी बोली में तरह-तरह की आवाज से बोलते हैं।

जिमी चेतन बन चेतन, पसु पंखी सुध बुध।
थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कई विध।। ३० ।।

यहां की जमीन, वन, पशु-पक्षी, स्थावर, जंगम सब चेतन हैं। उन्हें हर तरह की सुध और बुद्धि है।

तो कह्या थावर चेतन, अपनी अपनी मिसल।
ए अन्तर आंखें खुले पाइए, परआतम सुख नेहेचल।। ३१ ।।

परमधाम में स्थावर (अचर) को चेतन कहा है। यह आत्मा की आंखें खुलें तो अपनी परआतम से इनके अखण्ड सुखों की लीला का ज्ञान हो।

एक थंभ कई चित्रामन, हर चित्रामन कई नकस।
नकस नकस कई पांखड़ी, जो देखों सोई सरस।। ३२ ।।

थंभ में कई चित्रकारी, चित्रकारी में कई नक्शकारी है। नक्श की पांखुड़ी जो भी दिखाई देती है वह श्रेष्ठ लगती है।

तिन हर पांखड़ी कई कांगरी, हर कांगरी कई नंग।
एक नंग को बरनन न होवहीं, तो सारे थंभ को क्यों कहूं रंग।। ३३ ।।

हर पांखुड़ी में कई तरह की कांगरी बनी है। कांगरी में कई नग हैं। जिसके एक नग का वर्णन नहीं हो पाता तो पूरे थंभों के रंगों का वर्णन कैसे करूं?

मोर मैना मुरग बांदर, कई जुदी जुदी सब जुबान।
नेक सब्द उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान।। ३४ ।।

मोर, मैना, मुर्गा, बन्दर सब अपनी-अपनी जबान से भूमि पर जरा सी चलने की आहट सुनकर अपनी-अपनी बोली में बोलने लगते हैं।

Nijanand App

एक सब्द के उठते, उठें सब्द अनेक।
पसु पंखी जो चित्रामन के, कई विध बोलें विवेक।। ३५ ।।

एक के बोलने से चारों तरफ से बोलने की आवाज आने लगती है। इस तरह के बने पशु-पक्षी कई तरह की बोली बोलते हैं।

कई जुदे जुदे रंगों पुतली, कई बने चित्रामन।
कई विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन।। ३६ ।।

कई अलग-अलग पुतलियों के चित्र बने हैं जो सुन्दर मीठी बोली बोलते हुए तथा कई तरह के खेल खेलते हुए दिखाई देते हैं।

सो भी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन।
सोभा सुन्दरता इनकी, केहे न सकों मुख इन।। ३७ ।।

इस खेल में बोलियों के स्वरों से बड़ा आनन्द होता है। उनकी सुन्दरता यहां के मुख से नहीं कही जाती।

चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खड़े गुमान।
जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहू भान।। ३८ ।।

सभी चित्र चेतन हैं और स्वाभिमान से खड़े दिखाई देते हैं जिनके तेज की किरणें आपस में टकराती हैं और एक-दूसरे को खण्डित नहीं कर पातीं।

करे जोत लड़ाई जोत सों, तेज तेज के संग।
किरन किरन सों लड़त हैं, आठों जाम अभंग।। ३९ ।।

जोत से जोत, तेज से तेज टकराते हैं और किरणों से किरणें रात-दिन टकराती हैं।

नूर नूर जहूर जहूर सों, करत सफ जंग दोए।
एक दूजे के सनमुख, ठेल न सके कोए।। ४० ।।

नूर से नूर, शोभा से शोभा, सब आपस में एक-दूसरे से महाजंग करते हैं और सामने से कोई भी एक-दूसरे को पीछे नहीं धकेल सकता।

जंग करत अंगों अंगें, साथ नंग के नंग।
रंग सों रंग लरत हैं, तरंग संग तरंग।। ४१ ।।

अंग से अंग, नग से नग, रंग से रंग, तरंग से तरंग टकराती हैं।

एक रंग को नंग कहावहीं, तामें कई रंग उठत।
ताको एक रंग कह्यो न जावहीं, आगे कहा कहूं विध इत।। ४२ ।।

एक रंग का नग कहलाता है। उसमें कई रंगों की किरणें उठती हैं। उसके एक रंग की शोभा नहीं कही जाती तो आगे की शोभा कहां तक कहूं?

जित देखूं तित सूरमें, एक दूजे थें अधिक देखाए।
कई ऊपर तले कई बीच में, याको जुध न समाए।। ४३ ।।

जहां देखती हूं वहां सब योद्धा ही योद्धा एक-दूसरे से अधिक बलशाली दिखाई देते हैं। कई ऊपर, कई नीचे, कई बीच में जो चित्र बने हैं, इनके युद्धों की शोभा देखने योग्य होती है।

Nijanand App

तेज जोत उद्दोत आकास लों, किरना न काहूं अटकाए।
देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा न पांउं फिराए।। ४४ ।।

इनके तेज की किरणें आकाश तक जाती हैं। कहीं अटकती नहीं हैं। इनके युद्ध को देखकर यही निर्णय किया कि इनमें से कोई भी पीछे नहीं हटेगी।

चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन।
कई कोट जुबां इत क्या कहे, कई बिध थंभ दिवालन।। ४५ ।।

परमधाम में चलने-फिरने से यह सब हिलते हैं, इसलिए यहां के थंभ और दीवारों की शोभा करोड़ों जबान से भी नहीं कही जा सकती।

एक सरूप के नख की, सोभा बरनी न जाए।
देख देख के देखिए, तो नेत्र क्यों ए न तृपिताए।। ४६ ।।

एक स्वरूप के नख की शोभा का वर्णन नहीं होता। लगता है बस देखते रहिए फिर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं।

तो सारे सरूप की क्यों कहूं, और क्यों कहूं इनों के खेलि।
बन बेली पसु पंखी, माहें करें रंग रस केलि।। ४७ ।।

पूरे स्वरूप की शोभा तथा इनके खेल कैसे कहें? वन की बेलियां, पशु-पक्षी सब आपस में आनन्द करते हैं।

जात न कही एक सरूप की, अति सोभा सुन्दर मुख।
तेज जोत रंग क्यों कहूं, ए तो साख्यातों के सुख।। ४८ ।।

इनके एक स्वरूप की जाति का वर्णन नहीं हो सकता। इनके तेज, जोत और रंग साक्षात् जैसा सुख देते हैं।

सोभा जाए ना कही बिरिख पात की, तो क्यों कहूं फल फूल बास।
क्यों होए बरनन सारे बिरिख को, ए तो सुख साथ को उलास।। ४९ ।।

एक वृक्ष के पत्ते की शोभा नहीं कही जाती तो फल-फूलों की सुगन्धि का कैसे बयान करूं? फिर सारे वृक्ष का कैसे बयान हो? यह तो सुन्दरसाथ खुद ही उमंग से अनुभव कर सकते हैं।

जो एता भी कह्या न जावहीं, तो क्यों कहूं थंभ चित्राम।
परआतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम।। ५० ।।

जब इतना भी कहने में नहीं आता तो थंभ के चित्रों की शोभा कैसे कहूं? यह हमारी परआतम ही जानती है जिनके यह अखण्ड सुख हैं।

एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कई थंभ दिवालें द्वार।
फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बड़ो विस्तार।। ५१ ।।

यह एक थंभ की हकीकत बताई है। यहां ऐसे कई थंभ और दीवारें और दरवाजे हैं तो फिर एक भोम को देखो तो बहुत बड़ा विस्तार है।

Nijanand App

पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालों पार।
ना कछू पार सीढ़ियन को, ना पार कमाड़ी द्वार।।५२।।

थंभों, दीवारों, सीढ़ियों, किवाड़ों और दरवाजों का पार नहीं है।

नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम विचार।
क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारे अपार।।५३।।

हे सुन्दरसाथजी! नौ भोमों को तुम अपनी आत्मा में विचार करके देखो। यह सभी बेशुमार हैं। यहां की जबान और अक्ल से इनका बयान करना सम्भव नहीं है।

चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूं केते रंग।
बन बेली फूल पात की, जुदी जुदी जिनसों नंग।।५४।।

एक थंभ के चित्र में कितने वन, बेलि, फूल, पत्ते हैं तथा उनमें कितने रंगों के नग हैं, कैसे कहूं?

पसु पंखी हाथ पांउं नैन के, कई विध केस परन।
कई खेल पुतलियन के, कई वस्तर कई भूखन।।५५।।

पशु-पक्षियों के हाथ, पांव, आंखें, कई तरह के बाल, पंख, पुतलियों के कई तरह के खेल तथा वस्त्र और आभूषण कई तरह के हैं।

कई बिध सोभा भोम की, कई रंग नंग नकस अनेक।
कई ठौर अलेखे जड़ित में, जो देखो सोई नेक से नेक।।५६।।

एक भोम में कई तरह की शोभा, रंग, नग की नक्शकारी दिखाई देती है। जिसे देखो वही अच्छी लगती है।

ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखे।
सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें।।५७।।

यह शोभा एक ही जिनस की बयान नहीं हो सकती तो यहां बेशुमार अखण्ड जिनसें हैं। परमधाम के सच्चे स्वरूप इन्हें देख-देखकर अपार सुख लेते हैं।

अति सोभा सुन्दर ऊपर की, कई नकस बेल फूल।
कई जिनसें कहा कहूं, होत परआतम सनकूल।।५८।।

ऊपर के बेलि, फूल की नक्शकारी में कितनी जिनसें और कितनी अधिक शोभा है यह परआतम समझती है।

कई जिनस जुगत थंभन में, कई जिनस जुगत दिवाल।
कई जिनसें द्वार क्यों कहूं, ए जो जिनस जुगत पड़साल।।५९।।

कई तरह के जिनस थंभों में हैं। कई तरह की दीवारों में कई तरह के दरवाजों में और कई तरह की पड़साल में शोभा देते हैं।

कई जिनसें जुगत सीढ़ियां, कई जुगतें जिनसें मंदिर।
कई जिनस झरोखे जालियां, कई जिनस जुगत अंदर।।६०।।

कई तरह की युक्ति की सीढ़ियां है। कई युक्ति के मन्दिर, झरोखे, जालियां और भी अन्दर कई तरह की शोभा है।

Nijanand App

सामग्री कई सनंधें, कई जिनसें सेज्या सिंघासन।
कई सनंधें चौकी संदूकें, कई बिध भरे भूखन।।६१ ।।

कई तरह की सेज, कई तरह के सिंहासन, कई तरह की चौकी, आभूषणों से भरी हुई सन्दूकें और कई तरह की दूसरी हकीकत शोभा देती है।

कई जिनसें वस्तर भरे, कई विध विध के विवेक।
वस्तर भूखन किन विध कहूं, कई विध जुगत अनेक।६२ ।।

इन सन्दूकों में कई तरह के वस्त्र, कई तरह के आभूषण अलग-अलग नमूने के भरे हैं।

कई विध प्याले सीसे सीकियां, कई डब्बे तबके दिवाल।
सोभित सुन्दर मंदिरन में, कई लटकत रंग रसाल।।६३ ।।

कई तरह के प्याले, शीशे (दर्पण, आइना), छीके (सिकहर), डिब्बे, तबके (तश्तरियां), दीवारें मन्दिर में शोभित हैं और आनन्द में लटक रहे हैं।

कई जुगतें हिंडोलों मंदिरों, कई जंजीरां झलकत।
माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कई विध झूलत बाजत।।६४ ।।

कई तरह के मन्दिर में हिंडोले हैं जिनकी जंजीर झलकती हैं। मन्दिरों के अन्दर डिब्बे, पुतलियां झुनझुना जब झूला झूलते हैं, तो बजते हैं।

कई मिलावे साथ के, सुन्दर झरोखे झांकत।
सोभा देखत बन की, मोहोल इन समें सोभित।।६५ ।।

सुन्दरसाथ मिलकर झरोखे से वन की शोभा देखते हैं। इनमें महल की शोभा बढ़ जाती है।

दौड़त खेलत सखियां, एक साम सामी आवत।
हांसी रमूज एक दूजी सों, अरस-परस ल्यावत।।६६ ।।

सखियां आमने-सामने दौड़ती खेलती हैं तथा आपस में हंसी-मजाक करती हैं।

नवों भोम के मन्दिरों, माहें सखियां खेल करत।
चारों जाम हांस विलास में, रंग रस दिन भरत।।६७ ।।

नौ भोम के मन्दिरों में सखियां खेलती हैं। पूरा दिन हंसी-विलास में बीतता है।

झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए।
निस दिन हेत प्रीत चित्त सों, मन वांछित सुख पाए।।६८ ।।

नवीं भोम के झरोखों में सब मिलकर बैठती हैं और रात-दिन प्रेम, प्रीति में मग्न होकर मन चाहे सुख लेती हैं।

विध विध के सुख बन में, सैयां खेलें झरोखों माहें।
वाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छांहें।।६९ ।।

सखियां झरोखों से तरह-तरह के खेल वनों में खेलती हैं। गर्मी की ऋतु में शीतल (ठंडी) सुगन्धित हवा और छाया का आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

सुख बरसाती और बिध, बीज चमके घटा चौफेर।
सेहेरां गरजत बूंदें बरसत, घटा टोप लिया बन घेर।।७०।।

बरसात में बिजली की चमक, चारों तरफ घटाओं की शोभा, बादलों का गर्जना, बूंदों का बरसना, काली घटाओं से घिरा बन सुन्दर शोभा देता है।

ज्यों ज्यों अम्बर गाजत, मोर कोयल करें टहुंकार।
भमरा तिमरा गान गूंजत, स्वर मीठे पंखी मलार।।७१।।

जैसे-जैसे बादल गरजते हैं मोर और कोयल आवाज करते हैं। भंवरे, झींगुर (तिमरा) की आवाजें गूंजती हैं और वर्षा ऋतु में पक्षियों की आवाज के मीठे स्वर सुनाई देते हैं।

सीत कालें सुख धूप को, पहेले पोहोंचत झरोखों आए।
इत आराम घड़ी दोए तीन का, प्रभात समें सुखदाए।।७२।।

शीतकाल में धूप सबसे पहले झरोखे से आकर सुख देती है। यहां दो तीन घड़ी प्रातःकाल बड़ी सुखदायी होती हैं।

दौड़ें कूदें सखियां ठेकत, कई अंग अटपटी चाल।
मटके चटके पांउं लटके, अंग मरोरत मुख मछराल।।७३।।

सखियां दौड़ती हैं, कूदती हैं, उचकती हैं और अटपटी चाल से अंग को मोड़ती हैं। मटक-चटक कर लटक दिखाती हुई मस्ती में अंग मोड़ती हैं।

जुदे जुदे जुत्थों प्रेम रस, अलबेलियां अति अंग।
हंसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग।।७४।।

सखियां टोली की टोली, अंग में उमंग भरे हुए, हंसती हुई धनी के चरणों में आती हैं और बड़ी खुश होकर आनन्द लेती हैं।

कई हाथों फिरावत छड़ियां, कई हाथों फिरावत फूल।
कई आवत गेंद उछालती, कई आवत हैं इन सूल।।७५।।

कई हाथ में छड़ी घुमाती आती हैं। कई फूल घुमाती आती हैं। कई गेंद उछालती आती हैं। इस तरह से बड़ा सुख लेती हैं।

सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगूं दूजी के।
ए बड़ा सुखकारी समया, सोभा लेत इत ए।।७६।।

सभी आ-आकर एक दूसरे से आगे निकल श्री राजजी के चरणों लगती हैं। यह समय बड़ा सुखदायक होता है। यहां की शोभा बढ़ जाती है।

बात बड़ी देख देखिए, प्रेम प्रघल भर पूर।
प्रेम अंग कह्यो न जावहीं, सूरों में सूर सूर।।७७।।

यहां बड़ी बात यह दिखाई देती है कि सखियों में प्रेम लबालब भरा है। उनके अंगों में प्रेम भरा है। उसकी महिमा नहीं कही जाती। वह मस्ती में एक-दूसरे से अधिक बलवंती हैं।

Nijanand App

रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवालें द्वार।
तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार।।७८ ।।

रंग तथा नग की नक्शकारी नहीं कही जाती तो थंभ, दीवारों, दरवाजों की और सबकी शोभा जो बेशुमार है, यहां की जबान कैसे बयान करें?

रंग नंग नकस अन-गिनती, कह्यो न जाए सुमार।
ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार।।७९ ।।

रंग, नग, नक्श अनगिनत हैं। जैसे बट का विशाल पेड़ एक छोटे से बीज में से होता है, उसी तरह से हे सुन्दरसाथजी! इस शोभा को जो मैंने बताई है बीज के समान विचारकर देखो।

कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार।
एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार।।८० ।।

कई दीवारें, चौक, थंभे, मन्दिर, किवाड़, दरवाजे एक भोम के वर्णन नहीं कर सकती हूं और इनका तो विस्तार नौ भोमों में है। कैसे कहा जाएगा?

दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत।
तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत।।८१ ।।

दसवीं भोम में चांदनी है। ऊपर कांगरी बनी है। जिसका तेज आकाश में नहीं समाता, ऐसा लगता है।

हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता।
नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता।।८२ ।।

सोना, जवाहरात, रंग, रेशम जो कुछ भी मुख से कहा है वह मेरी अक्ल, जबान में जितने आए उनके तेज की झलकार का वर्णन किया है।

महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन।
ले सको सो लीजियो, ए नेक कह्या तुम कारन।।८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! यह मैंने अपनी बुद्धि और जबान से वर्णन किया है। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है, इसलिए ले सको, तो इसे ले लेना।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। २२६२ ।।

प्रेम को अंग बरनन

प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन।।१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, सुन्दरसाथजी! प्रेम अपने मूल वतन परमधाम में ही है। वह मैं तुम्हें दिखाती हूं। प्रेम श्री राजजी महाराज का अंग है जो परमधाम के बिना और कहीं नहीं है।

प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, न तो प्रेम दुनी में कित।।२ ।।

प्रेम का नाम तो ब्रह्मसृष्टियों ने ही दुनियां में आकर बताया अन्यथा दुनियां में प्रेम कहीं था ही नहीं।

Nijanand App

रंग नंग नकस न जाए कहे, तो क्यों कहे जाएं थंभ दिवालें द्वार।
तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार।।७८ ।।

रंग तथा नग की नक्शकारी नहीं कही जाती तो थंभ, दीवारों, दरवाजों की और सबकी शोभा जो बेशुमार है, यहां की जबान कैसे बयान करें?

रंग नंग नकस अन-गिनती, कह्यो न जाए सुमार।
ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार।।७९ ।।

रंग, नग, नक्श अनगिनत हैं। जैसे बट का विशाल पेड़ एक छोटे से बीज में से होता है, उसी तरह से हे सुन्दरसाथजी! इस शोभा को जो मैंने बताई है बीज के समान विचारकर देखो।

कई दिवालें कई चौक थम्भ, कई मन्दिर कमाड़ी द्वार।
एक भोम को बरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार।।८० ।।

कई दीवारें, चौक, थंभे, मन्दिर, किवाड़, दरवाजे एक भोम के वर्णन नहीं कर सकती हूं और इनका तो विस्तार नौ भोमों में है। कैसे कहा जाएगा?

दसमी भोमें चांदनी, ऊपर कांगरी जोत।
तेज पुन्ज इन नूर को, जानों आकास सब उद्दोत।।८१ ।।

दसवीं भोम में चांदनी है। ऊपर कांगरी बनी है। जिसका तेज आकाश में नहीं समाता, ऐसा लगता है।

हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूं मुख जेता।
नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता।।८२ ।।

सोना, जवाहरात, रंग, रेशम जो कुछ भी मुख से कहा है वह मेरी अक्ल, जबान में जितने आए उनके तेज की झलकार का वर्णन किया है।

महामत कहे सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन।
ले सको सो लीजियो, ए नेक कह्या तुम कारन।।८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! यह मैंने अपनी बुद्धि और जबान से वर्णन किया है। यह सब तुम्हारे वास्ते ही किया है, इसलिए ले सको, तो इसे ले लेना।

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। २२६२ ।।

प्रेम को अंग बरनन

प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, सुन्दरसाथजी! प्रेम अपने मूल वतन परमधाम में ही है। वह मैं तुम्हें दिखाती हूं। प्रेम श्री राजजी महाराज का अंग है जो परमधाम के बिना और कहीं नहीं है।

प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, न तो प्रेम दुनी में कित।। २ ।।

प्रेम का नाम तो ब्रह्मसृष्टियों ने ही दुनियां में आकर बताया अन्यथा दुनियां में प्रेम कहीं था ही नहीं।

Nijanand App

ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेश्वर।
सास्त्र अर्थ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर।। ३ ।।

दुनियां ब्रह्मा, विष्णु, महेश को परमात्मा मानकर पूजा करती है। शास्त्रों से भी ऐसा अर्थ लेते हैं कि इनके ऊपर कोई और नहीं है।

सुक व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास।
प्रेम बसत ब्रह्मसृष्ट में, जो खेले सरूप बृज रास।। ४ ।।

शुकदेव मुनि और व्यासजी भागवत में कहते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पास प्रेम नहीं है। प्रेम केवल ब्रह्मसृष्टियों में है जिन्होंने बृज-रास में प्रेम का ही खेल, खेलकर बताया।

तो नवधा से न्यारा कह्या, चौदे भवन में नाहें।
सो प्रेम कहां से पाइए, जो रेहेत गोपिका माहें।। ५ ।।

प्रेम नवधा भक्ति से अलग है। यह प्रेम चौदह लोकों में नहीं है। यह मात्र गोपियों के अन्दर है, इसलिए दुनियां में प्रेम कहां से मिलेगा?

नाम खुदाए का कुरान में, लिख्या है आसिक।
पढ़े इस्क औरों में तो कहें, जो हुए नहीं बेसक।। ६ ।।

कुरान में खुदा को आशिक लिखा है, परन्तु पढ़े-लिखे लोग दूसरे ठिकानों में इश्क को ढूंढ़ते हैं, क्योंकि इनके संशय नहीं मिटे।

आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इसदाए।
इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए।। ७ ।।

यह तो शुरू से ही लिखा है कि अल्लाह अपनी रूहों के आशिक हैं, इसलिए इश्क खुदा के सिवाय और कहीं नहीं मिलता।

पढ़े तब पावें इस्क को, जब खुलें माएने मगज।
इस्क बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज।। ८ ।।

पढ़े-लिखे लोग जब कुरान के रहस्य को समझें तब तो उन्हें इश्क की पहचान हो। यह बन्दगी बिना इश्क के करते हैं और कहते हैं कि हम खुदा का कर्ज उतार रहे हैं।

मगज न पाया माएना, दुनी पढ़े कतेब वेद।
प्रेम दुनी में तो कहें, जो पावत नाहीं भेद।। ९ ।।

दुनियां के वेद, कतेब पढ़ने वाले लोगों ने इनके रहस्य को नहीं समझा, इसलिए वह प्रेम और इश्क के भेद को नहीं समझ पाते और कहते हैं कि प्रेम दुनियां में है।

प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं, सो दोऊ दुनी में नाहें।
पढ़े दोऊ बतावें दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों माहें।। १० ।।

प्रेम और पारब्रह्म एक ही स्वरूप हैं, इसलिए दोनों दुनियां में नहीं हैं। पढ़े-लिखे लोग शास्त्रों को नहीं समझते, इसलिए प्रेम और पारब्रह्म को दुनियां में बताते हैं।

Nijanand App

तो न्यारा कह्या सब्द थें, प्रेम ना मिनें त्रिगुन।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धनी बिन।। ११ ।।

प्रेम त्रिगुण के पास नहीं है। यह शब्दातीत है। यह प्रेम करोडों ब्रह्माण्डों में नहीं है। यह केवल धाम धनी (अक्षरातीत पारब्रह्म) में ही है।

प्रेम सब्दातीत तो कह्या, जो हुआ ब्रह्म के घर।
सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर।। १२ ।।

प्रेम पारब्रह्म का ही अंग होने के कारण शब्दातीत कहा गया है, इसलिए वह निराकार के पार के पार अक्षरातीत धाम में है तो फिर दुनियां उसे इस संसार में कहां से प्राप्त कर सकती है?

प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, पेहेले देखो धाम बरनन।
पीछे प्रेम बताऊं ब्रह्मसृष्ट का, जो धाम धनी के तन।। १३ ।।

मैं ब्रह्मसृष्टियों का प्रेम बतलाती हूं। उससे पहले दिव्य ब्रह्मपुर धाम की हकीकत देखो। ब्रह्मसृष्टि धाम धनी के ही अंग (तन) हैं और इसलिए वह भी प्रेम के ही स्वरूप हैं।

क्यों न होए प्रेम इनको, जिन सिर नूरजमाल।
कई कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका और हाल।। १४ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों के सिरताज नूरजमाल हैं उनको प्रेम क्यों नहीं होगा? जो प्रेम कई कोटि ब्रह्माण्डों में नहीं मिलता, वह ब्रह्मसृष्टि के अंग अंग में समाया है।

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी अछरातीत जिन सिर।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फेर फेर।। १५ ।।

जिनके धनी (खाविंद) खुद अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हैं उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा? करोड़ों ब्रह्मांडों में बार-बार देख लो, परन्तु प्रेम ब्रह्मसृष्टि के बिना कहीं नहीं मिलेगा।

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी राखत रुख।
धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख।। १६ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों की इच्छा स्वयं पारब्रह्म (श्री राजजी महाराज) पूरी करते हैं तो फिर उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा? इन ब्रह्मसृष्टियों को श्री राजजी महाराज परमधाम में सेज्या सुख भी देते हैं।

क्यों न होए प्रेम इनको, सोहागनियां बड़ भाग।
क्यों कहूं इन रूहन की, जाए देत धनी सोहाग।। १७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां सुहागिनी हैं और बड़ी भाग्यशाली हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज का अखण्ड सुहाग प्राप्त है। उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके घर एह धाम।
स्याम स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम।। १८ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों का घर ही परमधाम है और सदा श्री राजश्यामाजी के साथ विश्राम करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इनहीं में रहे हिल मिल।
सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल।। १९ ।।

जो ब्रह्मसृष्टियां सदा श्री राजजी महाराज से ही हिल-मिलकर रहती हैं और श्री राजजी महाराज अपने दिल से सभी अंगों का सुख देते हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहे इन मोहोल मंदिर।
दिल दे विहार करत हैं, ले दिल धनी अंदर।। २० ।।

ब्रह्मसृष्टियां जो रंग महल के मन्दिरों में रहने वाली हैं और जो अपना दिल देकर श्री राजजी महाराज का दिल लेती हैं और आनन्द विहार करती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए वस्तर भूखन।
साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन।। २१ ।।

जो ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी महाराज के वास्ते सब अंगों में वस्त्र आभूषण सजाती हैं, उनके अन्दर प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए सोभा सिनगार।
सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन लेत समार।। २२ ।।

जिन ब्रह्मसृष्टियों का प्रेम ही शोभा और सिनगार है और श्री राजजी महाराज से सब अंगों का सुख दिन-रात लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन धनी सों विहार।
निस दिन केलि करत हैं, सब अंगों सुखकार।। २३ ।।

जो सखियां सदा धनी से प्रेम-विहार करती हैं और रात-दिन अपने प्रीतम से प्रेम-क्रीड़ा से सब अंगों का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी।
रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी।। २४ ।।

जो सखियां रात-दिन अपने धनी को देखती हैं और अपने सब अंगों से रात-दिन सुख लेती हैं, तो इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी की सेंना लेत।
नैनों नैन मिलाए के, सामी इसारत देत।। २५ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के नैनों से नैन मिलाकर सैन (इशारे) समझती हैं और इशारे से ही अपने नैन देती हैं (स्वीकृति देती हैं), तो उनको प्रेम क्यों न होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी अरधंग।
अह निस अनुभव होत है, इन पिउ की सेज सुरंग।। २६ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और रात-दिन पिया की सेज्या का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मेले में बैठत।
अरस–परस रंग अहनिस, नए नए खेल करत।। २७ ।।

जो सखियां इस परमधाम के मेले (मूल-मिलावा) में रहती हैं और रात-दिन अरस-परस नए-नए खेल खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको ए धनी सरूप।
रात दिन सुख लेत हैं, जाके सब अंग अनूप।। २८ ।।

जो सखियां धनी के ही स्वरूप हैं और जिनके अंग बेशुमार सुन्दर हैं और जो रात-दिन धनी का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको निस दिन एही रमन।
सब अंगों आनन्द होत है, मिलावे धनी इन।। २९ ।।

जिन सखियों का रात-दिन धनी के साथ मिलकर सब अंगों से खेलना और आनन्द करना ही काम है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन धनी की गलतान।
निस दिन धनी खेलावत, विध विध की देत मान।। ३० ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के इश्क में ही गर्क हैं तथा जिन्हें श्री राजजी महाराज तरह-तरह से मान देकर दिन-रात खेल खिलाते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत धनी को सुख।
आठों जाम सेवा मिने, सदा खड़े सनमुख।। ३१ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की सेवा में रात-दिन हाजिर खड़ी रहकर सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन साथ में रस रंग।
निस दिन विहार करत हैं, धाम धनी के संग।। ३२ ।।

जो सखियां धाम धनी और सुन्दरसाथ के साथ में रात-दिन आनन्द विहार करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहें इन साथ के माहें।
निस दिन आराम पिउ का, न्यारे निमख न होवें क्याहें।। ३३ ।।

वह सखियां जो सदा सुन्दरसाथ में रहकर रात-दिन प्रीतम का सुख लेती हैं और एक पल भी धनी से अलग नहीं होतीं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को लेवें माहें नैन।
न्यारे निमख न करें, निस–दिन एही सुख चैन।। ३४ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज को अपने नैनों में बसाए हैं और एक क्षण भी उनको अपने नैनों से अलग नहीं करतीं और रात-दिन उसी में सुख और चैन का अनुभव करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखें धनी के अंग।
पलक ना पीछी फेरत, आठों-जाम उछरंग।। ३५ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के स्वरूप को ही निहारती रहती हैं और रात-दिन उसी में गर्क रहती हैं और एक क्षण के लिए नजर हटाती नहीं हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको याही साथ में खेल।
मन्दिर या मोहोलन में, पिउ सो रमन रंग रेल।। ३६ ।।

जो सखियां मन्दिर या महल में धनी से, रंगरेलियां करती हैं और दिन-रात यही खेल खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको मिलाप इन घर।
विहार करत अंग उछरंग, धनी सों बिध बिध कर।। ३७ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज के साथ तरह-तरह से परमधाम में मस्ती के साथ आनन्द विहार करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बैठत पिउ के पास।
निस-दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वांस।। ३८ ।।

जो सखियां रात-दिन प्रीतम के पास बैठती हैं और रात-दिन हंसी-विनोद ही करती हैं और एक सांस भी व्यर्थ नहीं जाने देतीं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, हांस विनोद में दिन जाए।
सेज्या संग इन धनी के, रस रंग रैन विहाए।। ३९ ।।

जिन सखियों का हंसी और विनोद में ही दिन बीतता है तथा धनी के साथ रात भर सेज्या का सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी के तन।
इन मोहोलों में इन पिउ संग, हींचत हिंडोलन।। ४० ।।

जो सखियां धाम धनी के ही तन हैं तथा उन्हीं के साथ महलों में झूला झूलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झांकत झरोखे इन।
झूलत हैं इन पिउ संग, बीच इन हिंडोलन।। ४१ ।।

जो सखियां धनी के साथ हिंडोले में झूलती हैं और झरोखे से झांकती है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें इन हिंडोलों विहार।
झूलत बोलें झनझनें, यों मन्दिर होत झनकार।। ४२ ।।

जो सखियां हिंडोले झूलती हैं और झूलते समय मन्दिरों में उनके पैरों की झनकार होती है और झुनझुनें बजते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, ऊपर झूलत हैं यों कर।
अरस-परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर।। ४३ ।।

जो सखियां धनी की नजर से नजर बांधकर झूला झूलती हैं, तो उन्हें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें इन हिंडोलों सुख।
झलकत भूखन झूलते, बैठत हैं सनमुख।। ४४ ।।

जिन सखियों के झूला झूलने में आभूषण झलकते हैं और श्री राजजी के सामने बैठती हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें झूलते रंग रस।
उछरंग अंग न मावहीं, अंक भर अरस-परस।। ४५ ।।

जो सखियां झूलते समय अरस-परस लिपटकर मस्ती के साथ झूलती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झूलते होंए मगन।
फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन।। ४६ ।।

जो सखियां झूलने में मग्न हो जाती हैं और अंग में प्रेम की मस्ती से मदहोश हो जाती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों झूलत।
इन समें सोभा मन्दिरों, कड़े हिंडोले खटकत।। ४७ ।।

जो सखियां हिंडोलों में झूलती हैं और झूलते समय मन्दिर में हिंडोलों की खटकने की आवाज आती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पौढ़त इन पिउ संग।
अरस-परस दोऊ हींचत, अंग लगाए के अंग।। ४८ ।।

जो सखियां धनी के साथ लेटकर अंग से अंग लगाकर झूला झूलती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत इतकी खुसबोए।
सिनगार कर सेज्या पर, केलि करें संग दोए।। ४९ ।।

जो सखियां सिनगार कर सेज्या पर प्रीतम का सुख लेती हैं और सुगन्ध लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों में नेहेचल।
दोऊ हिंडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल।। ५० ।।

जो सखियां अखण्ड परमधाम में रहती हैं और सातवीं तथा आठवीं भोमों के हिंडोलों में दिलचाहे सुख लेती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेवें इन हिंडोलों सुख।
अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख।। ५१ ।।

जो सखियां अखण्ड परमधाम के हिंडोलों में हमेशा सामने बैठने का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों पौढ़त।
मन चाहे इन मन्दिरों, अखण्ड केलि करत।।५२।।

जो सखियां इन मन्दिरों के मनचाहे हिंडोलों में पौढ़ती (लेटती) हैं और अखण्ड प्रेम-क्रीड़ा करती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो खेलत इन मोहोलन।
हिंडोलों या पलंगे, सुख लेवें चाहे मन।।५३।।

जो सखियां इन महलों में खेलती हैं और हिंडोलों में या पलंगों पर मनचाहे सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोंलों या पलंग।
चित्त चाहे सुख अनुभवी, इन धनी के संग।।५४।।

जो सखियां इन महलों में या पलंगों पर या धनी के साथ मनचाहा सुख लेती हैं, तो उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर।
प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर।।५५।।

जिन सखियों को धनी नजर भरकर देखते हैं और प्रेम के प्याले नजर से भर-भरकर पिलाते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सेज समारें हेत कर।
चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर।।५६।।

जो सखियां बड़े प्यार से सेज्या संवारती हैं और पूरी रात धनी को हृदय में लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो फूलन सेज बिछाए।
चारों पोहोर रंग रेहेस में, केलै करते जाए।।५७।।

जो सखियां फूलों की सेज्या बिछाती हैं और पूरी रात अपने धनी के साथ आनन्द से प्रेम-क्रीड़ा करने में बिताती हैं, उनमें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैंन भर।
आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर।।५८।।

जिन सखियों को श्री राजजी महाराज, नजर भरकर देखते हैं उन सखियों के अंग रात-दिन मस्ती में भरे होते हैं। इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, रंग रची सेज समार।
चारों जाम पिउ सब अंगों, देत सुख अपार।।५९।।

जो सखियां रस भरी सेज्या सजाती हैं और जिनको प्रीतम पूरी रात सब अंगों का सुख देते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउसों पीवें प्रेम रस।
कर कर साज सबों अंगों, पिउसों अरस–परस।। ६० ।।

जो सखियां सब अंगों का सिनगार सजाकर धनी से अरस-परस प्रेम रस पीती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ के सुने बंके बैन।
याके आठों जाम हिरदे मिने, चुभ रेहेत पिउ के चैन।। ६१ ।।

जो सखियां धनी के अटपटे वचन सुनती हैं और दिन-रात उन वचनों को हृदय में प्यार से रखती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी भूखन।
याही नजर अंगना अंग में, चुभ रेहेत निस–दिन।। ६२ ।।

जिन सखियों के आभूषणों को धनी देखते हैं, वही नजर अंगना के अंग में चुभकर रात-दिन सुख देती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको पिउ एती दिलासा देत।
सामियों तो अंग इस्क के, कोट गुना कर लेत।। ६३ ।।

उन सखियों को जिनको धनी इतना दिलासा देते हैं, सामने सखियों के अंग इश्क स्वरूप हैं। वह उसे करोड़ गुना अधिक अनुभव करते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी वस्तर।
सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खैंच नजर।। ६४ ।।

जिन सखियों के वस्त्रों को धनी देखते हैं और अपनी अंगना समझकर नजर भरकर देखते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी बरसत निज नजर।
ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर।। ६५ ।।

जिन सखियों के ऊपर धनी की मेहर भरी नजर होती है उनके अंगों के रोम-रोम में प्रेम लबालब भर जाता है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, धनीसों नैनों नैन मिलाए।
ताको इन सरूप बिना, पल पट दई न जाए।। ६६ ।।

जो सखियां श्री राजजी महाराज की नजर से नजर मिलाती हैं, वह धनी के बिना एक पल भी अलग नहीं रह सकतीं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके धनी निरखें नैन।
आठों–जाम याके अंग में, चुभ रेहेत बंके बैन।। ६७ ।।

जिन सखियों के नयनों को धनी देखते हैं, उनके हृदय में धनी की बांकी छवि के अटपटे वचन आठों पहर अंग में चुभे रहते हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ की निरखें बंकी पाग।
निस-दिन नजर न छूटहीं, पिउसों करें रंग राग।। ६८ ।।

जो सखियां धनी की तिरछी पाग (पगड़ी) को निहारती हैं और प्रीतम के साथ आनन्द करती हैं। उनसे वह छवि रात-दिन छूटती नहीं है, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत पिया को दिल।
ए निस-दिन पिएं सुधा रस, पिउसों प्याले मिल।। ६९ ।।

जो सखियां पिया के दिल को जीत लेती हैं और रात-दिन धनी के प्रेम प्याले से अमृत रसपान करती है, तो उन्हें प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए मोहोल ए सेज।
लें सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज।। ७० ।।

जो सखियां इन महलों में सेज्या का सुख सब अंगों से लेती हैं और जिन पर धनी फिदा होकर प्यार देते हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत।
आठों पोहोर सबों अंगों, अरस-परस रंग रमत।। ७१ ।।

जो सखियां धनी को आठों पहर सब अंगों से परस्पर खेलकर रिझाती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी सों अन्तर नाहें।
अरस-परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहें।। ७२ ।।

जिन सखियों का धनी से कोई अन्तर नहीं है और जो प्रेम में डूबी एक रूप हो गई हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ सों करें एकांत।
आठों-जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत।। ७३ ।।

जो सखियां अपने पिया से एकांत में रात-दिन तरह-तरह के सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पिउ को निरखें नीके कर।
आठों-पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर।। ७४ ।।

जो सखियां धनी को अच्छी तरह से देखती हैं और जिन पर उनकी अमृतमयी नजर आठों पहर रहती है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जिनका एह चलन।
आठों पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन।। ७५ ।।

जिन सखियों का धनी के साथ रात-दिन आनन्द में विभोर होकर खेलने का ही काम है, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

क्यों न होए प्रेम इनको, प्रेम वासा इन ठौर।
एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूं और।।७६।।

जिन सखियों के तन ही प्रेम के हैं और प्रेम में ही बसती हैं। यही धनी के प्रेम की पात्र हैं और इनके बिना प्रेम और कहीं नहीं है, इनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास।
निस-दिन इन धनीय सों, करत विनोद कई हांस।।७७।।

जो सखियां परमधाम के वनों में विलास करती हैं तथा रात-दिन धनी से कई तरह के विनोद-हंसी करती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बसत धाम बन माहें।
जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबूं नाहें।।७८।।

जो सखियां परमधाम के अखण्ड वनों में रहती हैं जहां एक पत्ता भी नहीं गिरता, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सदा खेलत इन बन।
एक पात की जोत देखिए, करें जिमी अम्बर रोसन।।७९।।

जो सखियां सदा इन वनों में खेलती हैं जहां के एक पत्ते का तेज जमीन आसमान में नहीं समाता, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें विलास।
सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास।।८०।।

जो सखियां इन वनों में धाम धनी के साथ प्रेम से भरपूर सुहागिनियों का सुख लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, करें धाम धनी सो केलि।
इन बन इन धनीय सों, रमन अह निस खेलि।।८१।।

जो सखियां इन वनों में रात-दिन धनी के साथ प्रेम-क्रीड़ा करती हैं और खेलती हैं, तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन बन में है हांस।
कमी कबूं न होवहीं, सदा फल फूल बास।।८२।।

जिन सखियों का ऐसे वनों में हांस-विलास है जो फल-फूल व सुगन्धि से भरपूर हैं तो उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन को रस लेत।
फल फूल सुगन्ध बेलियां, वाउ सीतल सुख देत।।८३।।

जो सखियां इन वनों में फल, फूल, सुगन्धित लताओं व शीतल वायु के सुख का आनन्द लेती हैं, उनको प्रेम क्यों नहीं होगा?

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।। ८४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मेहबूब! धाम धनी! अब इस फरामोशी के परदे को हटा दो और हमारी आत्मा को जगाकर हमें अपने गले से लगा लो।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। २३४६ ।।

धाम की रामतें–चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए।। १ ।।

एक सखी दूसरी सखी को चुटकी बजाकर ताली देकर वन की दीवारों पर बने चित्रकारी पर दौड़कर चढ़ती है और कहती है, आकर मुझे छू लो।

एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे।। २ ।।

एक सखी घर में ही उमंग से गलियों में परिकरमा लगाती है और दूसरी सखी का कपड़ा दौड़कर पकड़ती है और मनचाही तरफ खैंच ले जाती है।

छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए।
एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जे पाए।। ३ ।।

एक सखी छज्जे पर चढ़कर दूसरी को ठेका देकर दौड़ती है। एक दोनों पांव से उछलकर खास खेल खेलती है। लगता है जैसे इनका पांव छज्जे पर लगता ही नहीं है।

सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए।। ४ ।।

सब सखियां दौड़कर एक छज्जे पर चढ़ जाती हैं, लगता है छज्जे पर पूरी नहीं आएंगी। इस तरह का खेल खेलती हैं। कोई-कोई सखी दीवारों पर बने घोड़े पर चढ़कर दौड़ती हैं। नए-नए तरह के खेल बनाती हैं।

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यों पड़ियां तीनों गिर।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर।। ५ ।।

एक सखी दूसरी को धकेलती है और दूसरी तीसरी को धकेलती है। तो इस तरह तीनों एक के ऊपर एक गिर पड़ती हैं और सखियां भी आ-आकर इन पर गिर पड़ती हैं तो यह नीचे से उठ नहीं पातीं।

एक दौड़ियां जाए दई हांसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर।। ६ ।।

कई सखियां हंसती-हंसती दौड़ती हैं और दूसरी के ऊपर गिर पड़ती हैं, तो और आकर उनके ऊपर गिरती जाती हैं। कई सखियां खेल में हारकर अलग बैठ जाती हैं, दांव देने की वारी उनकी रहती है।

होवे इन विध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर।। ७ ।।

इस तरह से अंग में उमंग भरकर हंसती हैं कि हंसी से पेट दर्द करने लगता है। इस पेट दर्द से जमीन पर लेटती हैं। यह इस तरह का खेल है।

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए।।८४।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे महबूब! धाम धनी! अब इस फरामोशी के परदे को हटा दो और हमारी आत्मा को जगाकर हमें अपने गले से लगा लो।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। २३४६ ।।

धाम की रामतें–चरचरी

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए।। १ ।।

एक सखी दूसरी सखी को चुटकी बजाकर ताली देकर वन की दीवारों पर बने चित्रकारी पर दौड़कर चढ़ती है और कहती है, आकर मुझे छू लो।

एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे।। २ ।।

एक सखी घर में ही उमंग से गलियों में परिकरमा लगाती है और दूसरी सखी का कपड़ा दौड़कर पकड़ती है और मनचाही तरफ खैंच ले जाती है।

छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए।
एक दोऊ पांऊं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जे पाए।। ३ ।।

एक सखी छज्जे पर चढ़कर दूसरी को ठेका देकर दौड़ती है। एक दोनों पांव से उछलकर खास खेल खेलती है। लगता है जैसे इनका पांव छज्जे पर लगता ही नहीं है।

सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़े, नए नए खेल उपाए।। ४ ।।

सब सखियां दौड़कर एक छज्जे पर चढ़ जाती हैं, लगता है छज्जे पर पूरी नहीं आएंगी। इस तरह का खेल खेलती हैं। कोई-कोई सखी दीवारों पर बने घोड़े पर चढ़कर दौड़ती हैं। नए-नए तरह के खेल बनाती हैं।

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यों पड़ियां तीनों गिर।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर।। ५ ।।

एक सखी दूसरी को धकेलती है और दूसरी तीसरी को धकेलती है। तो इस तरह तीनों एक के ऊपर एक गिर पड़ती हैं और सखियां भी आ-आकर इन पर गिर पड़ती हैं तो यह नीचे से उठ नहीं पातीं।

एक दौड़ियां जाए दई हांसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर।। ६ ।।

कई सखियां हंसती-हंसती दौड़ती हैं और दूसरी के ऊपर गिर पड़ती हैं, तो और आकर उनके ऊपर गिरती जाती हैं। कई सखियां खेल में हारकर अलग बैठ जाती हैं, दांव देने की वारी उनकी रहती है।

होवे इन बिध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर।। ७ ।।

इस तरह से अंग में उमंग भरकर हंसती हैं कि हंसी से पेट दर्द करने लगता है। इस पेट दर्द से जमीन पर लेटती हैं। यह इस तरह का खेल है।

Nijanand App

एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर।
आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर॥ ८ ॥

एक हंसी के कारण पेट दर्द से लेटती है और दूसरी हंसते-हंसते उसका हाथ पकड़ कर उठाती है तो उसकी हंसी इतनी बढ़ जाती है कि इसको मारे हंसी के सांस काबू में नहीं आता। वह भी हाथ पकड़े-पकड़े गिर पड़ती है और हंसती है।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर॥ ९ ॥

इनके हंसते हुए मुख को तथा पेट के दर्द को जो हंसी से समाता नहीं, देखो। यहां पर सखियां बेहिसाब इकट्ठी होकर आनन्द लेती हैं। यह अपनी आत्मा की दृष्टि से देखो।

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हंसकर।
खेलें महामति देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर॥ १० ॥

श्री राजजी और श्री श्यामाजी उस समय आ गए। उन्होंने भी अच्छी तरह से इस खेल को देखा तो सब सखियां हंसते-हंसते उठीं। श्री इन्द्रावतीजी अपने तन से खेलकर दिखा रही हैं। श्री राजजी महाराज की पांच शक्तियों के स्वरूप महामतिजी इस संसार में इन्द्रावती के तन में बैठकर खेल का आनन्द ले रही हैं और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबके परदे खोल रही हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ २३५६ ॥

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल॥ १ ॥

कोई सखी मन में उमंग भरकर आती है और बाकी सखियों को खेल के सुन्दर वचनों से अच्छी तरह निर्देश देती है (समझाती हैं)। कोई सखी एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेल खेलती है।

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल॥ २ ॥

कोई सखी लटकती-मटकती चाल से मीठी बातें बोलती हुई आती है। कोई सखी मस्ती के रंग में डूबी हुई दिन-रात खुशी में मग्न रहती है।

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल॥ ३ ॥

एक सखी नाचती हुई, भंवरी फिरती हुई और पांव पटकती आती है जिससे उसके आभूषण बजते हैं। एक सखी गाती हुई, एक तान मिलाती हुई और एक उन्हीं के साथ स्वर पूरती हुई आती है।

एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल॥ ४ ॥

एक सखी रंग महल के अन्दर, थंभ, दीवार और चित्रों को देखती है। एक सखी अपने आभूषणों के तेज को देखती है और उनमें अपनी शोभा देखती है।

Nijanand App

एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर।
आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर॥ ८ ॥

एक हंसी के कारण पेट दर्द से लेटती है और दूसरी हंसते-हंसते उसका हाथ पकड़ कर उठाती है तो उसकी हंसी इतनी बढ़ जाती है कि इसको मारे हंसी के सांस काबू में नहीं आता। वह भी हाथ पकड़े-पकड़े गिर पड़ती है और हंसती है।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर॥ ९ ॥

इनके हंसते हुए मुख को तथा पेट के दर्द को जो हंसी से समाता नहीं, देखो। यहां पर सखियां बेहिसाब इकट्ठी होकर आनन्द लेती हैं। यह अपनी आत्मा की दृष्टि से देखो।

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हंसकर।
खेलें महामति देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर॥ १० ॥

श्री राजजी और श्री श्यामाजी उस समय आ गए। उन्होंने भी अच्छी तरह से इस खेल को देखा तो सब सखियां हंसते-हंसते उठीं। श्री इन्द्रावतीजी अपने तन से खेलकर दिखा रही हैं। श्री राजजी महाराज की पांच शक्तियों के स्वरूप महामतिजी इस संसार में इन्द्रावती के तन में बैठकर खेल का आनन्द ले रही हैं और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबके परदे खोल रही हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ २३५६ ॥

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल॥ १ ॥

कोई सखी मन में उमंग भरकर आती है और बाकी सखियों को खेल के सुन्दर वचनों से अच्छी तरह निर्देश देती है (समझाती हैं)। कोई सखी एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेल खेलती है।

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल॥ २ ॥

कोई सखी लटकती-मटकती चाल से मीठी बातें बोलती हुई आती है। कोई सखी मस्ती के रंग में डूबी हुई दिन-रात खुशी में मग्न रहती है।

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल॥ ३ ॥

एक सखी नाचती हुई, भंवरी फिरती हुई और पांव पटकती आती है जिससे उसके आभूषण बजते हैं। एक सखी गाती हुई, एक तान मिलाती हुई और एक उन्हीं के साथ स्वर पूरती हुई आती है।

एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल॥ ४ ॥

एक सखी रंग महल के अन्दर, थंभ, दीवार और चित्रों को देखती है। एक सखी अपने आभूषणों के तेज को देखती है और उनमें अपनी शोभा देखती है।

Nijanand App

एक मिल कर दौड़ें बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल।
एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल।। ५ ।।

कई सखियां एक साथ मिलकर होड़ बांधकर लम्बी पड़साल में दौड़ती हैं। कोई सखियां धनी को देखकर ही सुखी होती हैं और कहती हैं यही सबसे बड़ा आनन्द है।

एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल।। ६ ।।

एक सखी मस्ती में भरी हुई मीठी रस भरी वाणी से श्री राजजी महाराज के गुण गाती है। एक सखी बाजे बजाती है। कई सखियां अपने सुन्दर गले से मिलकर गीत गाती हैं।

एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल।
एक पिउसों हंस हंस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल।। ७ ।।

एक सखी अपनी कला के साथ स्वर पूरती है। दूसरी हाथ की कला दिखाकर स्वर तोड़कर स्वर पूरती है। एक धनी से हंस-हंसकर बातें करके आनन्द लेती है और तृप्त हो जाती है।

एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल।
एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल।। ८ ।।

एक धनी के अदभुत मनमोहक स्वरूप को देखती है जिनके स्वरूप का वर्णन कैसे करें ? एक धनी से गुझ बातें करती है और एक आनन्द मयी रसीली बातें करती है।

एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल।
एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल।। ९ ।।

एक बड़े प्यार से बड़ा रस पैदा करती है और अपनी हकीकत बताती है एक अलबेली है जो अकेली ही हाथ में लाल रंग के फूल लेकर पिया के पास आती है।

एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल।। १० ।।

एक अटपटी हालत में तिरछी चाल से आती है। एक हाथ में लाल छड़ी घुमाती आती है। एक अपने तिरछे नयनों से प्रेम रस में डूबी हुई श्री राजजी महाराज से सुख लेती है।

कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हंस दे ताल।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से आनन्द में डूबी सखियां हंसती हुई ताली देकर उठती हैं।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। २३६७ ।।

बड़ी रामत

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री।। १ ।।

अपना घर अखण्ड परमधाम है जो सदा सुख देने वाला है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहें रात-दिन आनन्द की लीला करते हैं।

Nijanand App

एक मिल कर दौड़ें बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल।
एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल।।५ ।।

कई सखियां एक साथ मिलकर होड़ बांधकर लम्बी पड़साल में दौड़ती हैं। कोई सखियां धनी को देखकर ही सुखी होती हैं और कहती हैं यही सबसे बड़ा आनन्द है।

एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल।।६ ।।

एक सखी मस्ती में भरी हुई मीठी रस भरी वाणी से श्री राजजी महाराज के गुण गाती है। एक सखी बाजे बजाती है। कई सखियां अपने सुन्दर गले से मिलकर गीत गाती हैं।

एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल।
एक पिउसों हंस हंस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल।।७ ।।

एक सखी अपनी कला के साथ स्वर पूरती है। दूसरी हाथ की कला दिखाकर स्वर तोड़कर स्वर पूरती है। एक धनी से हंस-हंसकर बातें करके आनन्द लेती है और तृप्त हो जाती है।

एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल।
एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल।।८ ।।

एक धनी के अदभुत मनमोहक स्वरूप को देखती है जिनके स्वरूप का वर्णन कैसे करें? एक धनी से गुझ बातें करती है और एक आनन्द मयी रसीली बातें करती है।

एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल।
एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल।।९ ।।

एक बड़े प्यार से बड़ा रस पैदा करती है और अपनी हकीकत बताती है एक अलबेली है जो अकेली ही हाथ में लाल रंग के फूल लेकर पिया के पास आती है।

एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल।।१० ।।

एक अटपटी हालत में तिरछी चाल से आती है। एक हाथ में लाल छड़ी घुमाती आती है। एक अपने तिरछे नयनों से प्रेम रस में डूबी हुई श्री राजजी महाराज से सुख लेती है।

कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हंस दे ताल।।११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से आनन्द में डूबी सखियां हंसती हुई ताली देकर उठती हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ २३६७ ॥

बड़ी रामत

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री।।१ ।।

अपना घर अखण्ड परमधाम है जो सदा सुख देने वाला है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहें रात-दिन आनन्द की लीला करते हैं।

Nijanand App

नित इत विश्राम, पूरन हैं प्रेम काम।
हिरदे न रहे हाम, इस्क आराम री।।२।।

यहां सदा ही प्रेम की भरपूर मस्ती में आनन्द करते हैं जिससे हृदय में कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती। यही सबसे बड़ा इश्क का आराम है।

आराम तो इन विध लेवें, सबे भरी अहंकार।
पूरन हित पिउसों चित्त, जिनको नहीं सुमार।।३।।

सब सखियां अपने स्वाभिमान में अपने चित्त में पिया का बेशुमार पूरा प्रेम लेकर इस तरह का आनन्द लेती हैं।

एक जुत्थ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख केहेत न आवे पार।
कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहें पिउ को विहार।।४।।

सखियों का एक जुत्थ (समूह) मिलकर बैठता है। इनका सुख बेशुमार है। कोई-कोई सखियां छज्जे पर मिलकर बैठी हैं और धनी के आनन्द लेने की बातें करती हैं।

एक लम्बे हिंडोलें, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार।
एक झरोखे माहें, मिल बैठत जाहें, करें रती रेहेस विचार।।५।।

कोई सखी लम्बे हिंडोलों में बैठकर झूलती है और शीतल सुगन्धित हवा का आनन्द लेती है। कई सखियां झरोखों में मिलकर बैठती हैं और रति रहस्य लीला पर विचार करती हैं।

एक पिउ मद मतियां, आवें ठेकतियां, कंठ खलकते हार।
एक जुदी जुदी आवें, स्वांत देखलावें, करें नूर रोसन झलकार।।६।।

एक प्रीतम में मद मस्त है और उछलती हुई आती हैं। उससे उनके गले के हार हिलते हैं। एक अलग-अलग आती है और बड़ा शान्त स्वभाव दिखाती है, उसके मुख की शोभा झलकती है।

एक बांहें सों बांहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार।
एक दूजी के साथें, लिए कण्ठ बाथें, भूखन उद्दोतकार।।७।।

कुछ सखियां बाहों में बांहें मिलाकर बड़े स्वाभिमान में आती हैं। वह एक दूसरे के गले में हाथ डाले हैं जिससे उनके आभूषण चमकते हैं।

एक कण्ठ हाथ छोड़ें, आगूं दौड़ें, कहे आइयो मुझ लार।
एक चढ़ें गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार।।८।।

कुछ सखियां अपने गले से हाथ छुड़ाकर आगे भागती हैं और कहती हैं, मेरे साथ आओ। कोई सखियां रोशनदान से चढ़कर झरोखों से झांककर वनों को देखती हैं।

एक बैठत पलंगें पिउजीके संगें, खेलत प्रेम खुमार।
आप अपने अंगें, करत हैं जंगें, कोई न देवे हार।।९।।

कोई सखी धनी के साथ पलंग पर बैठती है और प्रेम के मद में खेलती है। इस तरह से सभी सखियां आपस में लड़ाई का खेल खेलती हैं और कोई अपनी हार नहीं मानती।

Nijanand App

एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूं ए मनुहार।
अति उछरंगें, होत न भंगें, सत सुख संग भरतार।। १० ।।

एक सखी अपने तन में काम की मस्ती भरकर पतंगे की तरह अपने धनी पर बड़ी चाहना के साथ अभंग न होने वाली मस्ती से ऐसे फिदा होती है कि उसकी इस रिझाने की वृत्ति का कैसे वर्णन करूं?

एक प्रेम तरंगें, मद मछरंगें, बांहोंड़ी कण्ठ आधार।
एक अंग मकरंदें, काढ़त निकंदें, आवत नाहीं पार।। ११ ।।

एक सखी इश्क की तरंगों में मस्ती के गर्व से अपने प्राण वल्लभ के गले में हाथ डालती हैं। एक सखी अपने अंगों से काम की भरी शक्ति से हाथों को मरोड़ते हुए अंगड़ाई लेकर दिखाती है। जिसका पारावार नहीं है।

बादलियां आवें, रंग देखलावें, करें मोर कोयल टहुंकार।
अति घन गाजें, अम्बर बिराजे, सोभित रुत मलार।। १२ ।।

बादल घिरकर आसमान में आते हैं, गरजते हैं और अपना रंग दिखाते हैं। इससे मोर और कोयल आवाज करते हैं। ऐसी मलार (वर्षा) ऋतु की शोभा है।

रुचिया मेह, बढ़त सनेह, ए समया अति सार।
एक केहे सखी सीढ़ियां, दौड़ के चढ़ियां, होत सकल भोम झनकार।। १३ ।।

वर्षा बहुत प्रिय लगती है। इसमें प्रेम बढ़ता है। ऐसा मौसम अति प्यारा है। एक सखी दूसरी से कहकर दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ जाती है जिससे धरती पर झनकार की आवाज आती है।

एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूं चंचल आकार।
एक दौड़ के धसियां, बन में निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार।। १४ ।।

कुछ सखियां आमने-सामने से आती हैं, किन्तु अपनी चंचलता से बिना एक-दूसरे को छुए निकल जाती हैं। कुछ सखियां वर्षा ऋतु को देखकर मस्ती में दौड़कर वनों में घुस जाती हैं।

एक आइयां सघन में, धाए चढ़ी बन में, खेल करें अपार।
एक झूलें डारी चढ़ के, और पकड़ के, क्यों कहूं खेल सुमार।। १५ ।।

कुछ सखियां घने वनों में आकर उन पर चढ़कर बेशुमार खेल करती हैं। कुछ सखियां पेड़ों की डालियों को पकड़कर झूलती हैं। ऐसे खेल की शोभा को कैसे बताएं?

एक भांत बांदर की, ठेक दे चढ़ती, करती रंग रसाल।
एक दौड़ें पातों पर, करें चढ़ उतर, खेलत माहें खुसाल।। १६ ।।

कुछ सखियां बन्दर की तरह छलांग लगाकर पेड़ पर चढ़ जाती हैं और बड़ा आनन्द करती हैं। कुछ सखियां पत्तों पर दौड़ती हुई चढ़ती-उतरती हैं और बड़ी खुशी से खेलती हैं।

एक ठेक देली, बनसें रेती, कहा कहूं इनको हाल।
एक आइयां दौड़ रेती, इतथें जेती, खेलें एक दूजीके नाल।। १७ ।।

कुछ सखियां वन की रेती में ठेक देकर खेलती हैं। उनकी हालत को कैसे बताऊं? कुछ सखियां रेती में दौड़कर आती हैं और एक दूसरे के साथ खेलती हैं।

Nijanand App

एक जाए गड़ें रेती, निकस न सकती, देवें एक दूजी को ताल।
एक काढ़ें घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूं इनकी चाल।। १८ ।।

एक रेती में धंस जाती है। जहां से निकल नहीं पाती, तो एक दूसरे को हाथ पकड़कर खींचती है। कुछ सखियां उन्हें निकालकर घसीटती हैं। कुछ ऊपर लेट जाती हैं। इनकी चाल की शोभा कैसे बताएं?

खेलते दिन जाए, हांसी न समाए, प्रेम पिएं संग लाल।
एक ठेक देतियां, रेती में गड़तियां, खेल होत कमाल।। १९ ।।

खेलते-खेलते दिन बीत जाता है और हंसी नहीं समाती। ऐसी श्री राजजी महाराज के प्रेम में गर्क होकर आनन्द लेती हैं। कुछ सखियां छलांग लगाकर रेती में धंस जाती हैं। इस तरह से कमाल का खेल होता है।

केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुन्झार।
एक दौड़ के जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार।। २० ।।

कुछ सखियां खेलकर निकलती हैं और अपने मद के रूप को दिखाती हैं। कुछ सखियां दौड़कर हौज कौसर तालाब में एक-दूसरे के साथ कूद जाती हैं।

एक आवें दौड़ कर, गिरें उपरा ऊपर, किन विध कहूं ए रंग।
एक लरें पानी सें, जुत्थ जुत्थ सें, देखो इनको जंग।। २१ ।।

कुछ सखियां दौड़ती-दौड़ती आती हैं और एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़ती हैं। उनके इस तरह के आनन्द को कैसे कहूं? कुछ सखियां टोले-टोले पानी उछालकर लड़ती हैं। इनकी जल की लड़ाई को देखो।

पानी ऐसा उड़ावें, जानो अम्बर बरसावें, खेल करें न बीच में भंग।
क्यों ए न थकें, ऐसे अंग अर्स के, आगूं सोहें पुतलियां नंग।। २२ ।।

पानी ऐसा उछालती हैं जैसे यह आकाश से बरस रहा हो। ऐसा लगातार उछालती रहती हैं। यह परमधाम के तन किसी तरह से थकते नहीं हैं। लगता है कि यह नगों की पुतलियां हों।

एक खेल छोड़ें, दूजे पर दौड़ें, अंग न माए उछरंग।
एक खिन में अर्स परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग।। २३ ।।

कुछ सखियां पानी का खेल छोड़कर दूसरे खेल की तरफ दौड़ती हैं। इनके तनों में मस्ती नहीं समाती। इनके अंग में इतनी उमंग है कि एक क्षण में घर से दूर जाकर खेल करती हैं।

परिकरमा कर आवें, पल में फिर आवें, आए कदमों लगें सब संग।
कहे महामती, सब रंग रती, क्यों कहूं प्रेम तरंग।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सभी सखियां एक पल में घूम-फिरकर श्री राजजी के चरणों में वापस आती हैं। यह सब प्रेम में मगन हैं इनकी प्रेम की तरंगों का वर्णन कैसे करूं?

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ २३९१ ॥

Nijanand App

सागरों रंग मोहोलात मानिक पहाड़

नूर कुन्जी अगिन मुसाफकी, कले कुलफ खोलत हकीकत।
सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत रूहों खिलवत।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के अगिन कोन में श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का सागर नूर सागर है। कुरान के अन्दर श्री राजजी महाराज के स्वरूप के बारे में लिखा है कि खुदा खुद आकर अपने स्वरूप की पहचान कराएगा। इस छिपे रहस्य पर जो ताला पड़ा है उसको मैं जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की कुंजी से खोलती हूं जिससे श्री राजजी महाराज की शोभा तथा रूहों के खिलवत खाना की पहचान हो जाएगी।

नूर दखिन सुख सागर, नूर वाहेदत मुख नीर।
पाइए मारफत मुसाफ की, अर्स अंग असल सरीर।।२।।

श्री राजजी महाराज के तन ब्रह्मसृष्टियों के मुखारबिन्द का सागर नीर सागर है जो दक्षिण दिशा में है। कुरान में अर्श की मारफत में रूहों के असल तन होने का बयान है। इसके छिपे रहस्य को मैं खोलकर बताती हूं।

नूर नैरित अंग उजले, सोभा सुन्दर सागर खीर।
हक इलम देखावे उरफान, पिएं इस्क प्याले सूरधीर।।३।।

रंग महल की नैरित दिशा में ब्रह्मसृष्टि के एकदिली के सुन्दर शोभा का खीर (क्षीर) सागर है। यह तारतम वाणी पहचान कराती है कि यह रूहें श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले बड़े आराम से पीती हैं।

नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन।
ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन।।४।।

रंग महल की पच्छिम की दिशा में हमेशा बेशुमार शीतल सुख देने वाला ब्रह्मसृष्टि के सुन्दर सिनगार का सागर दधि सागर है।

नूर वाइब–बल पूरन, नूर जहूर समन सागर।
परख पूरन सुख सुन्दर, सब बिध नूर नजर।।५।।

रंग महल की वायब दिशा में घृत सागर है जो रूहों के भरपूर इश्क के बल का स्वरूप है। इससे सब तरह की पहचान हो जाती है और श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द नजर आने लगता है।

नूर मीठा मधु उत्तर, सुख अतंत अंगों अंग।
ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग।।६।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में मीठा मधु का सागर, इलम का सागर है। जिससे रूहों के अंग-अंग के बेशुमार सुख मिलते हैं। इस हकीकत के रस का स्वाद रूहें ही जानती हैं।

नूर अमृत सागर ईसान, सुख सीतल सुन्दर।
नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अन्दर।।७।।

रंग महल के ईसान कोने में अमृत सागर (रस सागर) है जो सुख, शीतलता और सुन्दरता से भरपूर है। आत्मा की दृष्टि से देखें तो इस सागर में सब तरह के सुख भरे हैं (यह श्यामा महारानी के स्वरूप का सागर है)।

Nijanand App

नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरव सुखदाए।
ए सबरस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए।। ८ ।।

रंग महल की पूरब दिशा में बेहद सुख देने वाला सागर सर्वरस सागर है जिससे सब अंगों के हर प्रकार के सुखों की पूर्ति होती है। यह श्री राजजी महाराज की मेहर का सागर (श्री राजजी महाराज के स्वरूप का सागर) है।

ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक।
ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक।। ९ ।।

रंग महल की आठों दिशाओं में यह आठ सागर हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से विचार करने पर अपार सुख मिलता है और श्री राजजी महाराज का स्वरूप हृदय में भर जाता है।

आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस।
नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस।। १० ।।

आठों सागरों के बीच में आठ अलग-अलग जमीन हैं जो एक-दूसरे से अधिक अच्छी लगती हैं। इन दो जमीनों के बीच सागर और दो सागरों के बीच जमीन की सिफत बेशुमार है।

पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहू इंतहाए।
नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अर्स गिरदवाए।। ११ ।।

यहां न जमीन का पारावार है, न सागर का और न सुन्दरता का ही अन्त है। इस जमीन के सागर के जो रंग महल की आठों दिशाओं में आए हैं, बेहद शोभा है।

नूर पसु पंखी नूर में, जिमी जुदी जुदी नई सिफत।
नई कहूं हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत।। १२ ।।

यहां के पशु, पक्षी, जमीन सब नूरमयी हैं जिनकी शोभा सुन्दरता हमेशा ही नई दिखती है। नई तो संसार के हिसाब से कही है। परमधाम तो नया पुराना होता ही नहीं। सदा एक रस रहता है।

पार न जिमी अर्स को, पार ना पसु जानवर।
पार नहीं बिरिख बाग को, पार ना पहाड़ सागर।। १३ ।।

परमधाम की जमीन, पशु, जानवर, वृक्ष, बाग, पहाड़, सागर सभी बेशुमार हैं।

सब सुख एक एक चीज में, सब की सिफत नहीं पार।
अर्स पहाड़ या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार।। १४ ।।

परमधाम में सभी सुख एक ही चीज में मिल जाते हैं, इसलिए सभी की सिफत बेशुमार है। रंग महल हो या पहाड़ हो या तिनका हो, इन्हें देखते ही बेशुमार सुख मिल जाते हैं।

ए पाल आड़े जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान।
इंतहाए नहीं गिरद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान।। १५ ।।

सागर और जमीन के बीच में पाल आई है जिसमें रांग की बड़ी मोहोलातें आसमान को छूने वाली बनी हैं। यह रांग की हवेली घेरकर आई है जिसकी शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूं आवत।
पार आवे जिन चीज को, तिनकी होए सिफत।। १६ ।।

रांग की सिफत का बयान यहां की जबान से नहीं होता, क्योंकि जो चीज सीमा में हो तो सिफत उसी की हो सकती है। यह रांग की हवेलियों की शोभा बेशुमार है।

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए।
सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहें।। १७ ।।

जिस चीज का अन्त ही न हो उसकी सिफत जबान से कैसे की जाए? जब सिफत शब्दों में नहीं आती तो फिर विचार कैसे करें?

हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अर्स अपार।
सो अर्स दिल मोमिन का, ए किन बिध कहूं सुमार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम की इस बेशुमार शोभा को शुमार में लाए हैं जिसे ब्रह्मसृष्टियों के दिल जिनमें श्री राजजी महाराज बैठे हैं, ही जानते हैं। मैं उनका वर्णन कैसे करूं?

ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार।
और खूबी खुसाली ज्यों खिड़कियां, कहूं गिनती न आवे पार।। १९ ।।

सागरों के किनारे रांग की हर एक हवेली में बारह हजार दरवाजे और बेशुमार खूब खुशाली हैं। वैसे ही बेशुमार खिड़कियां हैं जिनकी किसी तरह से गिनती नहीं होती।

यों अर्स जिमी अपार के, सोभित गिरदवाए द्वार।
रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार।। २० ।।

परमधाम की जमीन ऐसी बेशुमार है। इसके चारों तरफ दरवाजे शोभा देते हैं। आत्मा की दृष्टि से देखो तो बेशुमार सुख मिलते हैं।

आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर।
ए गिन देख द्वार दिल अर्स में, पार न आवे क्यों ए कर।। २१ ।।

आठों तरफ नूरी जमीन है। आठों तरफ आठ नूरी सागर हैं। अर्श दिल से विचार करके इन दरवाजों को गिनकर देखो तो यह बेशुमार हैं।

नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल।
कई पहाड़ मोहोल बाग नेहेरें, जिमी बराबर टेढ़ी न तिल।। २२ ।।

रांग के आगे की नूरी जमीन यदि रूह की नजर से देखें तो कई तरह के पहाड़, महल, बगीचे, नहरें दिखाई देती हैं यहां सब जमीन समतल है। तिल मात्र भी टेढ़ी नहीं है।

ज्यों फिरती थाल अर्स उज्जल, यों ही साफ सिफत बराबर।
अर्स जिमी कही नूर की, कहूं गढ़ा न ऊंची टेकर।। २३ ।।

परमधाम की जमीन एक गोल थाल के समान समतल है। इस नूरी जमीन में कहीं गड्ढा या टीला नहीं है।

Nijanand App

पार नहीं बीच थाल के, गिरदवाए ना चौड़ी तूल।
मोहोल पहाड़ नेहेरें सरभर, मुख सिफत कहा कहे बोल।। २४ ।।

इस थाल जैसी जमीन के बीच की शोभा बेशुमार है। यह चारों तरफ से गोलाकार है। जरा भी लम्बी चौड़ी नहीं है। इसके अन्दर महल, पहाड़, नहरें सब एक समान दिखाई देते हैं। मुख से इसकी महिमा कैसे कहूं?

तो नूर रांग पार की क्यों कहूं, जाको सुमार नहीं वार पार।
वह मोमिन देखें दिल अर्स में, जो दिल अर्स परवरदिगार।। २५ ।।

रांग की हवेलियों के पार की शोभा बेशुमार है। कैसे कहूं? जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं, वही इस शोभा को देखते हैं।

कई जातें नूर पंखियन की, कई जातें नूर जानवर।
जैसा रंग नूर जिमी का, पसु पंखी रंग सरभर।। २६ ।।

यहां कई जाति के नूरी पक्षी, कई जाति के नूरी जानवर हैं। जिस रंग की नूरी जमीन है उसी रंग के पशु-पक्षी दिखाई देते हैं।

नए नए रंगों नूर बाग बन, इंतहाए नहीं बिरिख नूर।
ना इंतहाए नूर पसु पंखी, क्यों कहूं इन अंग जहूर।। २७ ।।

नए-नए रंगों से भरपूर नूर के बगीचे, वन, बेशुमार नूरी वृक्ष, बेशुमार नूरी पशु-पक्षी हैं। उनकी शोभा कैसे कहूं?

नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत।
कहूं जुबां अर्स गिनती, अंग अर्स के जानें सिफत।। २८ ।।

नूरी जमीन या इसकी लम्बाई-चौड़ाई का पार नहीं है। इसका बयान अर्श की जबान से और गिनती से कहूं तो परमधाम के अंग ही इसकी सिफत को जान सकते हैं।

एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर।
अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्यों ए कर।। २९ ।।

एक जमीन की सिफत देखें तो पूरी नूरी उम्र निकल जाए, फिर भी जमीन की सिफत का वर्णन किसी तरह से नहीं हो सकता।

नूर जिमी बराबर अर्स की, कहूं चढ़ती नहीं उतार।
दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अम्बर झलकार।। ३० ।।

परमधाम की जमीन सब बराबर है। कहीं ऊंचाई-नीचाई नहीं है। इसकी शोभा, इसका तेज आसमान तक झलकता है।

कई रंग जिमी केती कहूं, और कई रंग नूर दरखत।
सोई जिमी रंग पसु पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत।। ३१ ।।

कई रंग की जमीन है और कई रंग के नूरी वृक्ष हैं। उसी रंग के पशु-पक्षी 'पिया पिया', 'तूही तूही' का जिक्र करते है।

Nijanand App

ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर।
मुख चोंच सुन्दर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के नामों की गिनती नहीं है। पक्षी श्री राजजी महाराज का जिक्र हर नाम से करते हैं। उनके मुख, चोंच सुन्दर लुभावने हैं। वह मिश्री जैसी बड़ी मीठी बोली बोलते हैं।

नूर वाउ चलत बहु विध की, सुगंध सोहत सीतल।
सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल बन जल।। ३३ ।।

यहां पर बहुत तरह की शीतल सुगन्धित हवा चलती है जिससे सभी चीजें खुशबू से भरपूर हैं चाहे वह जमीन हो, महल हो, वन हो या जल हो।

फल फूल बन पसु पंखी बेहेकत, कोई चीज न बिना खुसबोए।
सदा सुगन्ध सबे सुख दायक, याकी सिफत किन विध होए।। ३४ ।।

फल, फूल, वन, पशु, पक्षी सभी सुगन्धित हैं। बिना खुशबू के कोई चीज नहीं है। इनकी सुगन्धि बड़ी सुखदायक है। इसकी सिफत कैसे करें?

नूर चीज सब चेतन आसिक, बाए बादल बीज अम्बर।
सब बिध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कह्यो क्योंए कर।। ३५ ।।

यहां की सब चीजें नूरी है, चेतन हैं और इश्क से भरपूर हैं। हवा, बादल, बिजली, आकाश में सब तरह के स्वाद मिलते हैं। जिनके सुखों को कहना सम्भव नहीं है।

पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत।
पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत।। ३६ ।।

न सागर की शोभा का पार है, न टापू के महल का पार है और न रांग की हवेलियों का। सागर के अन्दर के टापू और किनारे पर बने रांग की हवेलियों की शोभा का नूर आसमान तक झलकता है।

अर्स सूर कई एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार।
एक मोहोल अम्बर कई बीच में, जुबां क्यों कहे गिनती सुमार।। ३७ ।।

परमधाम के एक ही महल में कई सूर्य चमकते हैं। वैसे ही टापू महल में तथा रांग की हवेलियों में एक-एक महल में कई आसमान की शोभा आती है। यहां की जबान से कैसे गिनती बताएं?

जो कोई होसी अंग अर्स की, और जागी होए हक इलम।
तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम।। ३८ ।।

जो कोई परमधाम की अंगना हो और जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागी हो और उसे श्री राजजी महाराज का हुकम मदद करे, तो उसे इसकी कुछ पहचान हो सकती है।

पर जो स्वाद हक उरफान में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग।
जो हक मेहर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग।। ३९ ।।

पर जो स्वाद श्री राजजी महाराज की वाणी में है, वह इस अंग की जबान से कहने में नहीं आता। यदि श्री राजजी महाराज ही मेहर करके इश्क के प्याले दें तो श्री राजश्यामाजी के साथ आनन्द मिल सकता है।

Nijanand App

हक मेहेर बड़ी न्यामत, रूह जिन छोड़े एह उमेद।
ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अर्स भेद।।४०।।

श्री राजजी महाराज की मेहर ही बड़ी भारी न्यामत है, इसलिए रूहें इस उम्मीद को कभी नहीं छोड़तीं। यह सब उनकी बन्दगी का फल है जो परमधाम के छिपे रहस्यों को जाहिर करती हैं।

जिन दिल हुआ अर्स हक का, सोई लीजो इन अर्स सहूर।
कहे हक हुकम ए मोमिनों, नूर पर नूर सिर नूर।।४१।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, वही इस अर्श का विचार करें। श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं कि मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही बेहद पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत का वर्णन किया है।

इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूं जुबां इन मुख।
द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमिन सुख।।४२।।

इन रांग की हवेलियों के नूर का तेज यहां की जबान से कैसे वर्णन करें? इन हवेलियों के द्वार, खिड़कियां, कलश, कंगूरों का सुख श्री रांजजी महाराज के हुकम से ही मोमिन लेते हैं।

दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के।
ए छोटे बड़े मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूं सिफत ए।।४३।।

दो-दो गुर्जों के बीच बड़े दरवाजे हैं। जिनके बड़े मेहेराब और खिड़कियों के छोटे मेहेराबों की शोभा की सिफत कैसे कहूं?

सोभा देत देखाई आसमान में, ऊंची सीढ़ियों नहीं सुमार।
चार चार आगूं द्वार चबूतरे, दो दो बन के रंग नहीं पार।।४४।।

यह शोभा आसमान तक दिखाई देती है। जिनकी ऊंची सीढ़ियां बेशुमार हैं। हर एक दरवाजे के आगे चार चबूतरे दो ऊपर दो नीचे हैं। नीचे वाले दो चबूतरों पर लाल हरे रंग के वृक्षों की शोभा बेशुमार है।

दोए मुनारों लगते, कई छातें चबूतरों पर।
दोए बीच सीढ़ियां आगूं द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर।।४५।।

गुर्जों से लगते हुए जो ऊपर दो चबूतरे हैं उनकी छतें बेशुमार हैं। दोनों चबूतरों के बीच सीढ़ियां उतरती हैं जिसकी सिफत इस जबान से कैसे कहें?

बिरिख बाग आगूं सब चबूतरों, कई जुदे जुदे बागों रंग बन।
आगूं देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन।।४६।।

वृक्षों की, बागों की तथा दरवाजों के आगे चबूतरों की और बागों के अलग-अलग रंगों की खूबी इन दरवाजों के आगे है जिनके वनों की रोशनी आसमान तक जाती है।

सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ़ नाहीं हार।
कई चौक मोहोल मन्दिरन के, कई गली चली बांध किनार।।४७।।

हर बगीचे में सुन्दर रास्ते हैं। इनकी कतारों में कहीं कमी-बेशी नहीं है। कई चौक, महल, मन्दिर और गलियां एक सीध में हैं।

Nijanand App

लाल जिमी नूर लाल बन, सोभित पसु नूर लाल।
लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल।।४८ ।।

दक्षिण दिशा में नीर सागर का रंग लाल है जिससे यहां की जमीन, वन, पशु, जानवर, फल, फूल सब लाल रंग के हैं।

नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसु जरद जोत।
फल फूल पीले बिरिख बेलियां, नूर पीला आकास उद्दोत।।४९ ।।

नैरित दिशा में खीर सागर है जिसका रंग पीला है। यहां की जमीन, जानवर, पशु, फल, फूल, बेलि, वृक्ष तथा आकाश में सब जगह पीला रंग है।

नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसु जानवर।
नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर।।५० ।।

पच्छिम की दिशा में दधि सागर का रंग हरा है। यहां की जमीन, पशु, जानवर, आसमान सब हरे हैं। इनकी खूबी कैसे बताएं?

सेत जिमी सेत पसु पंखी, नूर आकास उज्जल।
उज्जल नंग नूर सबे, बिरिख बेल सेत फूल फल।।५१ ।।

रंग महल के अगिन कोने में नूर सागर का रंग सफेद है। यहां जमीन, पशु, पक्षी आकाश, वृक्ष, बेलि, फल, फूल सभी सफेद रंग के हैं।

नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसु पंखी नूर।
फल फूल स्याम नूर बिरिख बेली, नूर पसु पंखी सब जहूर।।५२ ।।

रंग महल की उत्तर दिशा में मधु सागर है जिसका रंग काला है (इलम का सागर है)। यहां की जमीन, पशु, पक्षी, फल, फूल, वृक्ष, बेलि सब श्याम रंग के हैं।

नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसु पंखी नूर आसमान।
फल फूल बिरिख बेली सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान।।५३ ।।

रंग महल की वायब दिशा में घृत (इश्क) सागर है जिसका रंग आसमानी है। इस इश्क के सागर की जमीन, आसमान, पशु, पक्षी, फल, फूल, बेलि सब आसमानी रंग की हैं।

दस दस रंग बिरिख बेल में, फल फूल रंग दस दस।
रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसु पंखी याही रंग रस।।५४ ।।

ईशान कोने में अमृत सागर (रस सागर) है। इसमें दस रंग हैं। यहां के वृक्ष, बेलें, फल, फूल, जमीन, आकाश, पशु, पक्षी सब दस रंग के हैं।

कई रंगों जिमी कई आकासें, पसु पंखी बन कई रंग।
सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों में जंग।।५५ ।।

पूरब दिशा में मेहर सागर में सभी रंग हैं (श्री राजजी का सागर है)। यहां के आकाश, जमीन, पशु, पक्षी, वन सभी रंगों के हैं। सबकी शोभा के नूर की किरणें आपस में टकराती हैं।

Nijanand App

अगिन ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन।
नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन।। ५६ ।।

अगिन कोने और ईशान कोने में नूर सागर और रस सागर हैं जिनमें नूर सागर का रंग सफेद है और रस सागर में दस रंग हैं, परन्तु जब रूहें सिनगार सजाकर दधि सागर में खड़े होकर श्री राजजी और श्यामाजी की ओर देखती हैं तो सखियों के मुखारबिन्द की लालिमा से नूर सागर और रस सागर लाल रंग के दिखाई देते हैं। दक्षिण दिशा में नीर सागर का रंग लाल है। उसमें रूहों की एकदिली का सागर क्षीर सागर है जिसकी आभा पड़ने से रंग पीला दिखाई देता है। नैरित दिशा में क्षीर सागर में जिसका रंग पीला है, उसमें सखियों के सिनगार की शोभा का सागर जिसका रंग हरा है की आभा पड़ने से क्षीर सागर हरा दिखाई देता है। पच्छिम दिशा में दधि सागर जिसका रंग हरा है सखियों के सिनगार का सागर है। सखियां जब सिनगार सजाकर खड़ी होती हैं तो श्री राजजी महाराज नूर सागर से उनको देखते हैं और तब दधि सागर का रंग बदलकर सफेद हो जाता है।

घृत वाइवबल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर।
दस रंग अमृत ईसान, रस पूरव रंग सरभर।। ५७ ।।

वायब दिशा में घृत सागर का रंग आसमानी है जो रूहों के इश्क का सागर है। इसमें श्री राजजी महाराज के इलम के सागर की आभा पड़ती है जिससे उसका रंग काला दिखाई देता है। उत्तर की दिशा में श्री राजजी महाराज के इलम का मधु सागर है जिसका रंग काला है, परन्तु घृत सागर (इश्क का सागर) का रंग आसमानी है और यह रूहों के इश्क का सागर है। इसकी आभा पड़ने से मधु सागर का रंग आसमानी दिखाई देता है। ईशान कोने में श्री श्यामा महारानी का सागर है जिसमें दस रंग हैं तथा पूरब दिशा में सर्वरस सागर (मेहर सागर) है जिसमें सब तरह के रंग हैं।

ए-साफ अगिन नूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल।
नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल।। ५८ ।।

वैसे अगिन कोने में नूर सागर का रंग उज्ज्वल व सफेद है। नीर सागर जो दक्षिण दिशा में है, उसका रंग लाल है। नैरित दिशा में क्षीर सागर का रंग पीला है। पच्छिम दिशा में दधि सागर का रंग सुन्दर हरा कमाल का है।

रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान।
ले इस्क गिन अगिन से, ज्यों सब होए अर्स पेहेचान।। ५९ ।।

जमीन के ऊपर हर एक दिशा में दोनों तरफ के सागरों की छाया आती है, इसलिए आधी जमीन एक रंग की और आधी जमीन दूसरे रंग की दिखाई पड़ती है। इस तरह से अगिन कोने से गिनकर आखिर तक, अर्थात् मेहर सागर तक एक ऐसी ही शोभा जानो! हे रूहो! इश्क लेकर अपने परमधाम को देखो तो सब पहचान हो जाएगी।

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर।
रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और।। ६० ।।

नूर सागर, नीर सागर, क्षीर सागर, दधि सागर, घृत सागर, मधु सागर, रस सागर और सर्वरस सागर सब एक ही ठौर हैं। यह सुख मोमिनों के बिना और किसी दूसरे को नहीं मिलते।

Nijanand App

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।। ६१ ।।

दो सागरों के बीच एक जमीन है। इस तरह से दो जमीनों के बीच एक सागर है। इस तरह से आठ सागरों के बीच आठ जमीन हैं। गिनकर देखी जा सकती हैं।

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार।
देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार।। ६२ ।।

सागर और बड़ी रांग की परे की जमीन जो घेरकर आई है, की शोभा बेशुमार है। जमीन को देखो या सागर को देखो। इनकी सिफत बेशुमार है। गिनती नहीं हो सकती।

और कही जो बिध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान।। ६३ ।।

और रांग की हवेली की जो हकीकत बताई है, उनके कलश, कंगूरे आसमान को छूते दिखाई पड़ते हैं। दरवाजे, खिड़कियों की गिनती तो बताई है, परन्तु इन हवेलियों की सिफत कैसे बयान करें (हकीकत कैसे बताएं)?

|| प्रकरण || ४३ || चौपाई || २४५४ ||

मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मानिक पहाड़ में मानिक महलों को देखो जिनके दरवाजे बारह हजार बताए हैं। इनकी शोभा और सुन्दरता बयान करने में नहीं आती।

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार।। २ ।।

एक मानिक महल देखने पर बड़े दरवाजे बारह हजार दिखाई देते हैं। छोटे दरवाजों का तो पार ही नहीं है। इनकी शोभा और सिफत बेशुमार है।

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें।। ३ ।।

जमीन से ऊपर मानिक महल तक सभी महलों की, जल की, वन की, हिंडोलों की शोभा एक समान है। कहीं कम-ज्यादा नहीं है।

कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित।
ऊपर झरोखे सब विध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत।। ४ ।।

कई जगह नहरें और कई जगह चादरें (जल की मोटी धारा) गिरती हैं। कई जगह फल, फूल, वन शोभा देते हैं। ऊपर के तालाब झरोखों से देखने से बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

Nijanand App

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।।६१ ।।

दो सागरों के बीच एक जमीन है। इस तरह से दो जमीनों के बीच एक सागर है। इस तरह से आठ सागरों के बीच आठ जमीन हैं। गिनकर देखी जा सकती हैं।

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार।
देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार।।६२ ।।

सागर और बड़ी रांग की परे की जमीन जो घेरकर आई है, की शोभा बेशुमार है। जमीन को देखो या सागर को देखो। इनकी सिफत बेशुमार है। गिनती नहीं हो सकती।

और कही जो बिध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान।।६३ ।।

और रांग की हवेली की जो हकीकत बताई है, उनके कलश, कंगूरे आसमान को छूते दिखाई पड़ते हैं। दरवाजे, खिड़कियों की गिनती तो बताई है, परन्तु इन हवेलियों की सिफत कैसे बयान करें (हकीकत कैसे बताएं)?

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। २४५४ ।।

मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार।।१ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मानिक पहाड़ में मानिक महलों को देखो जिनके दरवाजे बारह हजार बताए हैं। इनकी शोभा और सुन्दरता बयान करने में नहीं आती।

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार।।२ ।।

एक मानिक महल देखने पर बड़े दरवाजे बारह हजार दिखाई देते हैं। छोटे दरवाजों का तो पार ही नहीं है। इनकी शोभा और सिफत बेशुमार है।

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें।।३ ।।

जमीन से ऊपर मानिक महल तक सभी महलों की, जल की, वन की, हिंडोलों की शोभा एक समान है। कहीं कम-ज्यादा नहीं है।

कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित।
ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत।।४ ।।

कई जगह नहरें और कई जगह चादरें (जल की मोटी धारा) गिरती हैं। कई जगह फल, फूल, वन शोभा देते हैं। ऊपर के तालाब झरोखों से देखने से बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

Nijanand App

मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास।
नूर पूरन पूर भरया, रूह खोल देख नैन प्रकास।।५ ।।

इस मानिक महल की ज्योति आकाश तक जगमगाती है। यह एक ही मानिक नग का है। हे रूहो! अपनी आत्मा की नजर से देखो तो यह शोभा से भरा दिखाई देगा।

मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गिरदवाए।
बड़े बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए।।६ ।।

पहाड़ के मध्य में मानिक महल है जो चारों तरह घेरकर आया है। बीच में पहाड़ जैसा नूर का थंभ है। यहां बड़े-बड़े और छोटे-छोटे महल सब युक्ति से शोभित हैं।

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले।।७ ।।

महल के चारों तरफ आकाशी में ताल की शोभा है जिसके चारों तरफ हिंडोले लगे हैं। एक-एक हिंडोले में श्री राजश्यामाजी और बारह हजार सखियां मिलकर झूलती हैं।

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत।
अर्स अजीम के बीच में, मोहोल अम्बर जोत धरत।।८ ।।

चारों तरफ ऐसे ही झूले आए हैं जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें खेलती हैं। परमधाम के बीच में इस महल की शोभा आकाश तक जाती है।

बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग।
छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग।।९ ।।

बड़े-बड़े महल चारों तरफ घेरकर आए हैं और बड़ों के साथ छोटे-छोटे मन्दिरों का तेज भी आसमान में टकराता है।

कई हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान।
कई सागर मोहोलों माहें, गिनती नाहीं मान।।१० ।।

कई हजारों, लाखों दीवारें हैं जिनका तेज आकाश तक टकराता है। इसी तरह से महलों के बीच सागर के समान बड़े-बड़े कुण्ड हैं जिनकी गिनती नहीं है।

ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच बीच मोहोल गिरदवाए।
इन बिध मोहोल भरयो अम्बर, फेर बिध कही न जाए।।११ ।।

ऊपर, नीचे, बीच में, चारों तरफ महल ही महल हैं। इस तरह महल बेशुमार हैं। इनकी हकीकत कहने में नहीं आती।

पहाड़ थंभ जो पहाड़ थुनी, पहाड़ै मोहोल मंडान।
कई मोहोल मोहोलों मिले, कहूं जिमी न देखिए आसमान।।१२ ।।

पहाड़ के मध्य में जल स्तम्भ (थूनी) के समान हैं और महलों के ऊपर पहाड़ जैसी शोभा है। कई महल महलों से मिले हैं जिससे जमीन और आसमान दिखाई नहीं देते।

Nijanand App

चौड़े देखे चारों तरफों, ऊंचे लग आसमान।
ऐसे और मोहोल तो कहूं, जो कोई होवे इन समान।। १३ ।।

चारों तरफ से चौड़े महल आसमान तक गए हैं। इनके समान दूसरा कोई महल उपमा के लिए नहीं है।

अन्दर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत।
ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत।। १४ ।।

यह मानिक पहाड़ अन्दर से, बाहर से तथा सभी किनारों से, सब ठिकानों से सुन्दर दिखाई देता है। यह सदा अखण्ड शोभा है। इसे वही देख सकता है जिस पर धनी की मेहर हो।

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक।। १५ ।।

पहले चबूतरे पर घेरकर आई दीवार को देखो। इसके अन्दर बेशुमार महलों को देखो। इनकी खूबी देखने से लगता है कि यही सबसे अच्छी है।

एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए।
ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए।। १६ ।।

एक हवेली चौरस है तथा दूसरी गोल है। ऐसी हवेलियां घेरकर आई हैं। इस खूबी को मोमिन ही देख सकेंगे।

अर्स हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज।
जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज।। १७ ।।

रंग महल और हौज कौसर ताल दोनों पुखराज पहाड़ और मानिक पहाड़ के बीच में हैं। हौज कौसर तालाब रंग महल से जितना पास है उतना ही हौज कौसर के आगे मानिक पहाड़ शोभा देता है।

ए चारों हुए दोरी बन्ध, सामी अछर नूर सोभित।
ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत।। १८ ।।

पुखराज पहाड़, रंग महल, ताल तथा मानिक पहाड़ सब एक सीध में हैं। रंग महल के सामने अक्षर धाम शोभा देता है। यह श्री राजजी महाराज जी का हुकम कहलवा रहा है, इसलिए कह रही हूं। यहां और किसी की सिफत नहीं पहुंच सकती।

ए कह्या कौल थोड़े मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात।
दिल मोमिन से ना निकसे, चुभ रेहेसी दिन रात।। १९ ।।

यह शब्द मैंने थोड़े में कहे हैं। रूहें इसे विस्तार में समझ लेंगी। यह मोमिनों के दिलों में दिन-रात चुभे रहेंगे। कभी निकलेंगे नहीं।

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात।। २० ।।

मानिक पहाड़ के बारह हजार महल घूमकर आए हैं। उन हर महलों के बीच में बारह-बारह हजार मन्दिर हैं जिनकी हकीकत हुकम से ही बताई है।

Nijanand App

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनों दिल।
इन अर्स रूहों वास्ते एता कह्या, विचार करें सब मिल।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो इसे देखकर ही अटक गई थी, परन्तु मोमिनों के वास्ते इतना बयान किया है। आगे सब मोमिन विचार करके सुख लेंगे।

जो मोमिन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल विचार।
अर्स दिल एही मोमिनों, तो ल्याए बीच सुमार।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के सब संशय मिटाये हैं। वह इसे दिल में विचार कर ग्रहण करेंगे। मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श है, इसलिए बेशुमार को शुमार में लाकर बताया है।

आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत।
तिन पीछे नदियां मोहोल बन की, जाए सागरों बीच मिलत।। २३ ।।

इसके आगे भंवर के समान घूमकर सब नदियां मिलती हैं। उसके बाद यह एक महानद वन की नहरों में जाकर सागरों में मिलता है।

क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे।
देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए।। २४ ।।

मानिक पहाड़ की सीढ़ियां झरोखे जो देखे हैं वह बेशुमार हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली।
जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी।। २५ ।।

मैंने गोल और चौरस हवेली बताई है, परन्तु इन हवेलियों में बेशुमार महल हैं। बेशुमार मेहराबें, रास्ते और हर तरह की शोभा है जो कैसे गिनी जाए?

जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर।
दिल अर्स मार्या इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर।। २६ ।।

रूह को जब श्री राजजी महाराज की याद आती है तभी वह महल को देखना चाहती है। ऐसे सुन्दर महलों की शोभा मोमिनों के दिल में घाव करती है। फिर यह संसार के मुरदार जीव कैसे सहन कर सकते हैं?

देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाए।
करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अगर तुम हक इलम से जग गए हो, तो जागकर परमधाम को देखो और श्री राजजी महाराज के इश्क का रस स्वयं पिओ और दूसरों को पिलाओ।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। २४८१ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन

।। प्रकरण ।। ४२४ ।। चौपाई ।। १३०३७ ।।

।। परिकरमा सम्पूर्ण ।।

Nijanand App